

वियतनाम
का
स्वातन्त्र्य-सघर्ष

इस शताब्दी के
भयानक और दारुण यथाय को
भाँकने और परछने की
एक जीवन्त कोशिश है
यह विचारोत्तेजक कृति ।



नेशनल पब्लिशिंग हाउस • दिल्ली

वियतनाम
का
स्वातन्त्र्य-सघर्ष

अर्थात्
हिन्द-चीन मे
सयुक्त राज्य अमरीका का
हस्तक्षेप

डॉ० धीरेन्द्र

मेजरदस पम्बिनसिग हाउस
२३ दरियागज सिन्सी ११०००६
द्वारा प्रकाशित

प्रथम संस्करण १९७३ • मूल्य १५.००
© डॉ० धीरेन्द्र •

भारती प्रिंटर्स दिल्ली ११००३२
द्वारा मुद्रित

VIETNAM KA
SWATANTRYA SANGHARSII
(A history and critical study of
world crisis)
by Dr Dharendra

शहीद ।

इमान शहीद होता है न ।

लेकिन वियतनाम के स्वतन्त्र्य संग्राम में—

जमे-अनजमे वच्चे,

गभवती माताएँ,

खेत में धान बोती स्त्रियाँ

छप्पर के कगार पर बठे बूढ़े

गिरजा और पगोडों में ध्यानावस्थित भक्तजन,

जंगल में उमुक्त भसे, हाथी, लंगूर,

पानी में तैरती मछलियाँ,

आकाश में उड़ते पक्षी,

खलिहान में पड़ा अनाज,

खेत में लहलहाती धान की बाले,

पहाड़ों के ढलान पर खड़ी कुशा की ऊँची दूब,

देवदार के पेड़ और स्वयं खड़ी चट्टानें,

आगत म भेड़ने वच्चे और वाया म रँवा पानी,

किमाना के भोपड़े, कुत्ते सूअर, मुगियाँ,

ये सब शहीद हुए हैं,

क्याकि उन सब का, हजारों लाजों का, जड़ और चेतन का,

वस एक अपराध था—

वे सब वियतनामी थे ।

उन सब शहीदों की स्मृति में

प्रतिशोध के आसू । ।



नितान्त व्यस्त होकर भी प्राप्तेसर नोम चाम्स्की से हम जो सहयोग और प्रोत्साहन मिला है। उसके लिए हम किन शब्दों में उनको धन्यवाद दें ! इमोजेटिक रिपब्लिक ऑफ वियतनाम के नयी दिल्ली स्थित दूतावास से हम चित्र और अन्य सूचनाएँ प्राप्त हुई हैं जिनके हम आभारी हैं। सप्रू हाऊस की इंडियन कौंसिल आफ वर्ल्ड अप्पेयस तथा अमरीकी सूचना विभाग के लायब्रेरी व कमचारिया का भी मैं विशेष आभारी हूँ जिन्होंने सदैव तत्परता से मेरे अध्ययन की सामग्री जुटाने में भरमक सहयोग लिया है।

वियतनाम का स्वातन्त्र्य-सङ्घ हमारे युग की सबसे अधिक चर्चित कहानी है। इसीलिए कोई आश्चर्य की बात नहीं कि यह छोटी-सी पुस्तक बड़े विवादों का विषय बन जाय। लेकिन नेशनल पब्लिशिंग हाउस के मालिक श्री मलिक परिवार ने इस विवादामुक्त विषय पर पुस्तक प्रकाशित करने का साहस दिखाया है। यह हिन्दी के लिए गौरव और हमारे लिए विशेष सन्तोष की बात है।

मेरे मित्र श्याम विमल ने अनेक तरह की सहायता दी है जिसे औपचारिकता के शब्दों से दूषित नहीं करना चाहूँगा।—और निमला ने इसकी सहायक ग्रंथसूची तयार की है। और उससे भी अधिक इसलिए कि उसने मेरी खानाबदागी को स्नेहित पञ्जलाहट में निभाय रखा।

अपनी बात

जिहे एशिया में प्रजातांत्रिक प्रवृत्तियाँ को पनपते देखने की चाह है उह वियतनाम और हिंद चीन में संयुक्त राज्य अमरीका की नीतियाँ से आघात पहुँचा है। लेकिन एक भारतीय हानक नाते भुझे इस बात से और भी अधिक ठेस पहुँची कि पिछले दशक में जहाँ कि विश्व साहित्य राजनीति सन्निव अंतर्राष्ट्रीय सम्बन्ध अथशास्त्र अंतर्राष्ट्रीय कानून और समाचार सप्ताह वियतनाम के स्वातन्त्र्य संग्राम से किसी न किसी रूप में प्रभावित हुए बिना न रह सके—और विश्व भाषाओं में सक्डा पुस्तकें और हज़ारा लेख प्रकाशित हो चुके हैं—हमारी राष्ट्र भाषा और हिंदीतर भाषाओं में एक भी आधिकारिक पुस्तक या लेख इस विषय पर उपलब्ध नहीं है।

वियतनाम युद्ध में लड़ने (दक्षिण) अमरीका के पदलित दशा में नयी आशा और उत्साह का जन्म दिया है—ता पश्चिम में मृजनात्मक साहित्य में उसने कथानक कविता और कथा साहित्य में नयी-नयी प्रवृत्तियों को इनसे प्रेरणा मिली है। स्वयं अमरीकी लोक साहित्य और उद्देश्यहीन अमरीकी जन जीवन का 10 000 मील दूर लड़ी जा रही तडाई की आग में झुनसाकर नव जीवन की सम्भावित नयी दिशा दशायी है। लेकिन—इतनी बड़ी वास्तविकता से और इतने लम्बे समय तक—कम से कम दिसम्बर 1971 तक जबकि 7वें ब्रेड के परमाणु शक्ति चार्जित विमानवाहक एण्टरप्राइज ने बंगाल की खाड़ी में घुसने की धृष्टता दिखनायी—हमारा समाचार समाज और बुद्धिजीवी अछूता, असरोकारी भावना में भरा कम रह पाया ? यह कोई बहुत बड़ी अनसुलझी पहेली तो नहीं है हाँ हमारे देश की वस्तुस्थिति की एक बड़ी विडम्बना है।

जिन लोगों के हाथ में कलम थी और प्रचार में माघन थे उहान भी देश में बह सख्यक लोग तो वियतनाम में अमरीकी हस्तक्षेप की सच्चाई न पहुँचने दी। दरअमल वास्तविकता तो यह थी कि अमरीकी एजेंसियाँ के प्रभावशाली प्रचार काय के कारण स्वयं अमरीकी जनता भी यही समझती रही कि चीन की शर्त पर उत्तरी वियतनाम में अमरीकी ब्रेड पर गहरे समुद्र में अकारण गोलाबारी की है। चीन के प्रति मन्त्रेशीन प्रवृत्ति के कारण भी हमने वियतनाम के स्वातन्त्र्य-संग्राम के प्रति

सहानुभूति महसूस नहीं की। नयी ट्रिली के एक सुप्रसिद्ध प्रधान सम्पादक का कहना था कि 'हमारा दुश्मन (चीन) का दुश्मन (अमरीका) हमारा दोस्त होता है। और हमारे चितका और बुद्धिजीविया न अमरीका की आनामक कार-वाइयो को 'प्रजातन्त्र और अधिनायकवाणी द्वन्द्व का पयाय मान लिया। हमारे देश की जनता को वियतनाम मन्वद्धी वाम्पविक्रता स अपरिचित बनाये रखन म वन्तुस्थिति की अनानता एक विशेष कारण रही है।

और कुछ थोड़े अशा म हमारे शक्तिशाली लेखका और सम्पादका के निजी स्वाय एव सद्धान्तिक पक्षपात न भी उह इतने अहम ममले पर 'सच्चाई' के प्रति विश्वासघात करन पर विश्वास किये रखा।

भारतीय बुद्धिजीवी स (1971 दिसम्बर स भी पहले) अपक्षा की जाती थी कि वह अंतर्राष्ट्रीय 'याय और वियननाम क प्रश्ना पर उन्ही मानवीय मूल्या और सिद्धांता के प्रति लगावपरक जाण का परिचय देना जो कि उमन गोआ, और वाग्ना देश पर प्रकट किया। हम सद्धान्तिक मताघटा के शीतयुद्ध का प्यादा-भर बनकर नहीं रह जाना है। छोट दशा की प्रभुसत्ता अन्तर्राष्ट्रीय 'याय एव मान-वीयाधिकारा के सवाल ऐसे हैं जिन पर कि भारत के बुद्धिजीविया स दूसरे राष्ट्र पय प्रदर्शन की कामना कर सकत हैं।

दशन का विद्यार्थी होने क नात मेरा आग्रह प्रमाणपरक ता अवश्य है कि तु मय असत्य क बीच तटस्थता का नहीं। एक महान प्रजातान्त्रिक दश की सरकार न जिस अयाय अदूरगिता दूरता, क्षुद्रता और मूखता स वियतनाम म हस्तभेप किया है उमने प्रमाण इतने अविक है कि कोई चाहकर भी अमरीका को निर्दोष नहीं कह सकता। फिर सवाल यह नहीं है कि रूस न चकोम्नावाकिया म क्या किया? प्रश्न तो यह है कि एक प्रजातान्त्रिक कहलानवाल देश की सरकार और पौजा न 'प्रजातान्त्रिक सिद्धान्ता की हत्या कस की? और इतन बड़े दश के शिषित सभ्य, प्रजातन्त्र की प्रणाली म पल नागरिका का, ननाआ को, साटरा को पत्रकारा को युद्ध कस बनाया जा सका? आज अमरीका क चितक अपनी सरकार की इसी धानेवाजी की आलोचना कर रहे हैं।

मैं तटस्थता और पक्षपातशून्यता का दावा नहीं करना चाहता। क्याकि प्रमाण सिद्ध होने पर भी मपक्षता न सिद्धाना स्वायपरता तथा बापरता का लक्षण होता है। हाँ, यह दावा अवश्य करूँगा कि इस पुस्तक म काइ भी बात बिना प्रमाण के नहीं लिखी गयी है। फिर चाह हर बात के साथ फुटनाट न दकर उम पण्डिताऊपन का जामा न पहनाने का काशिश ही क्या न की गयी हा। अमरीकी सनिका (जा मेर विद्यार्थी रहे थे), वियतनाम के युवक युवतिया व बौद्ध भिक्षुआ, और

वियतनामी नताजा स भर निजी एण्टर-गू तथा जमरीनी सनिक्-स्तावजा स प्राप्त सामग्री पर यह पुस्तक आधारित है।

वियतनाम और हिंद चीन समस्या का अन्तक पहलू है—राजनीतिक औपनिवेशिक आर्थिक सामाजिक अंतर्राष्ट्रीय सनिक व सामरिन् एतिहासिक तथा राष्ट्रीय जीर सबसे बड़ा पहलू है इ-माणियत था। जमरीना की हिंसक प्रवृत्तियां न मानव को एक खूबवार मशीन म बल डाला है। इन सभी पहलुओं का यथामुम्भव पाठन तक पहुँचाना हमारा लक्ष्य रहा है और इसलिए इग पुस्तक की म्य एन शली सी बन जायी है जा सम्भव है कुछ पाठन का जन्चिकर लग। और इसी कारण अक्सर किसी एन ही तथ्य को जनेन चार दाहराना भी पडा है।

जाति प्रथा और साम्प्रदायिक विद्वेष की आलाचना करने स मैं भारत विरोधी नहीं बन जाता। उसी तरह अमरीका की रगभेद नीति और सनिक्वाद की आलाचना होन स यह पुस्तक अमरीका विरोधी नहीं मानी जानी चाहिए। वास्तव म इसको लिखने की प्रेरणा मुझे प्राफेसर नोम चोम्स्की स मिली जा अमरीका म वियतनाम युद्धविरोधी आ-दालन के प्रमुख नेता हैं। 5,00,000 लोगो के बीच जब हम दोना ने वाशिंगटन म माच विया तो उनका उलाहना था कि भारत म युद्ध विरोधी आ-दालना का जोर क्यों नहीं जबकि अमरीका म इतनी उग्रता है।

स्वयं अमरीका के कुछ शक्तिशाली तत्त्वो ने जपन राष्ट्रीय आन्शों की बडे धिनोन ढग से हत्या की है। वियतनाम के स्वातन्त्र्य सघष ने विश्व मानवता को राष्ट्रीयता क सक्तीण दायरो स निकालकर, भ्रातृत्व के रिश्तस जोड दिया है। सवाल अमरीका व गर-अमरीका का नहीं अयाय व याय का ह। हम अमरीका के पतन स इतना सरोकार नहीं। हमारा आग्रह तो वियतनाम के ग्रामीणा के उज्ज्वल भविष्य की सम्भावनाआ से है। उन्होंने पृथ्वी की सबसे बडी सनिक्वादी ताकत को चुनौती देकर मानव जाति क इतिहास मे एक नयी मिसाल कायम की है। जब देखना यह है कि उनकी कुर्बानिया बकार न जाने पायें।

इस पुस्तक की अपूर्णताएँ भी मेरी जानकारी मे हैं। वियतनाम के जन जीवन क बारे मे यहा कुछ भी नहा लिखा जा सका है। वहा के लोक साहित्य, प्राकृतिक और भौगोलिक सुंदरता का बणन नहीं जोडा गया है। वियतनाम क लोगो ने किस वीरता त्याग और लगन से जमीन के अदर सुरग खोदकर पहाडा क बीच गुफाएँ बनाकर स्कूल अस्पताल और फक्टरिया चलाकर अपनी आजादी की नडाई और दैनिक जीवनचर्या बनाये रखी है दिन रात अमरीकी बमबारिया क बावजूद किस तरह रूस म बने टका का लेकर और 122 मिलीमीटर की 25 मील दूर तक मार करनेवाली विशाल तोपो क सहारे 30 माच 1972 को उत्तर

वियतनामी सनिका जीर दक्षिण वियतनाम के मुक्ति मोरच न एन लाक, को तुम और क्वात्ती का मुक्त करवा दिखाया—यह सामरिक इतिहास का एक चमत्कारी रहस्य है। सम्भव है 50,100 मील लम्बी सुरमें खोदकर ये टैंक 17वीं समानांतर रेखा के दक्षिण म हायफाग म पहुँचाये गये हा। ये सब ऐसे पक्ष ह जिन पर विस्तार से पृथक लिखन की याजना हे। इस पुस्तक म ता हमारा लक्ष्य मुख्यतया सयुक्त राज्य अमरीका की हमनावर नीतिया जीर अमरीकी प्रवृत्तियो सम्बन्धी तथ्या का पाठको के सामने रखना है।

अनक महत्वपूर्ण ऐतिहासिक दस्तावेज परिशिष्ट म दिये गये है। और अंत म बट्टेण्ड रसल की 'अमरीकी जनता के नाम अपील जिसे वास्तव मे इस पुस्तक का सिद्धांत पत्र (थीसिस) समझना चाहिए।

● ●

पिछले 6 महीना मे कुछ बड़ी ही जनहोनी बातें हुई है। प्रसिडेण्ट निकसन न हनाइ हायफाग पर भयकर बमबारिया करवायी। 7 नवम्बर, 1972 को रिचड निकसन का भारी बहुमत से दोबारा प्रेसिडेण्ट चुना गया। चुनाव जीतन क हथकण्डा म निकसन ने हर उचित अनुचित तरीका मे काम लिया। अंतर्राष्टीय व्यापारिक समझौता के रहस्य बतान और टकम म रियायत करने की एवज म बड़ी-बड़ी बम्बनिया स करोडो का गुप्त चंदा इकटठा करके 4 कराड डालर (बाई 32 कराड रुपय) निकसन क चुनाव म खच किये गये। एफ० बी० जाइ० जीर मी० आई० ए० के एजण्ट द्वारा प्रतिद्वन्दी सेनेटर मैकगवन के आदोनन के द्रा पर जासूसी कारवाइया की गयी—उनक दफतरा को बग' किया और टलिफोन को टेप किया। जीर सब स बड़ी चाल वियतनाम म शांति-स्थापना का झासा दिया गया। 22 अक्टूबर का ह्वाइट-हाउस न 'शांति का समविदा तयार किया है और कुछ ही दिना म उस पर हस्ताक्षर हा जायेंगे' की घोषणा की। 4 साल के शासन म जो शांति का समझौता नहीं हो सका, उसे चुनाव स 10 दिन पहले तयार हा जाना—निकसन की नीयत का प्रतीक था। हनाई की एक घोषणा क अनुसार समझौते की शर्तें पूरी तरह स निश्चित हो चुकी थी और हस्ताक्षर हान की तारीख दा बार स्थगित की जा चुकी थी। 31 अक्टूबर, 1972 'अन्तिम तिथि' तय हो चुकी थी। 27 अक्टूबर का श्री किसिगर न बहा कि बस एक वार परिम म जीर मीटिंग करनी हांगी तथा मतभेद ज्यादा नहीं हैं। लेकिन परिम म किसिगर क हनोई क प्रतिनिधि श्री थी के बीच लम्बी गुप्त-वार्ताआ म सब शर्तों क अन्तिम रूप म तय हा जान क बावजूद शांति समझौते' पर निकसन न हस्ताक्षर नहीं ही किये। शांति वार्ताआ को नम्बा चलाकर 'शान्ति' के नाम पर चुनाव जीतने के साथ-साथ अमरीका ने बड़े पमान पर सर्वांग शानन को हथियार भेजे।

वियतनामी नेता आस मर निजी इण्टरव्यू तथा अमरीकी सनिक-स्तावजा स प्राप्त मामग्री पर यह पुस्तक आधारित है।

वियतनाम और हिन्द चीन समस्या के अनेक पहलू है—राजनीतिक औपनिवेशिक आर्थिक सामाजिक अंतरराष्ट्रीय, सनिक व सामरिक ऐतिहासिक तथा राष्ट्रीय और सबसे बड़ा पहलू है इ सामन्यत का। अमरीका की हिंसक प्रवृत्तिया ने मानव का एक खूबवार मशीन म बदन डाला है। इन मभी पहलुआ को यथासम्भव पाठक तक पहुँचाना हमारा लक्ष्य रहा है और इसलिए इस पुस्तक की स्वय एक शली सी बन आयी है जा सम्भव है कुछ पाठना का जरूरीकर लग। और इसी कारण अक्सर किसी एक ही तथ्य को अनेक बार दोहराना भी पडा है।

जाति प्रथा और साम्प्रदायिक विद्वेष की आलोचना करने से मैं भारत विरोधी नहीं बन जाना। उसी तरह अमरीका की रणभेद नीति और सनिकवाद की आलाचना हाने से यह पुस्तक अमरीका विरोधी नहीं मानी जानी चाहिए। वास्तव म इसको लिखन की प्रेरणा मुझे प्रोफेसर तोम चोम्स्की स मिनी जो अमरीका मे वियतनाम युद्धविरोधी आन्दोलन के प्रमुख नेता है। 5,00 000 लोगो क बीच जब हम दोनो ने वाशिंगटन म माच किया तो उनका उलाहना था कि भारत म युद्ध विराधी आन्दोलना का जोर क्या नहीं जबकि अमरीका म इतनी उग्रता है।

स्वय अमरीका के कुछ शक्तिशाली तत्त्वो ने अपने राष्ट्रीय आशों की बडे घिनौन ढग स हत्या की है। वियतनाम के स्वातन्त्र्य सघष न विश्व मानवता को राष्ट्रीयता के सक्तीण दायरा स निकालकर धातृत्व क रिस्तेस जोड़ दिया है। सवाल अमरीका व गर-अमरीका का नहीं अयाय व याय का है। हम अमरीका क पतन स इतना सरोकार नहीं। हमारा जाग्रह तो वियतनाम के ग्रामीणा क उज्वल भविष्य की सम्भावनाआस है। उहाने पृथ्वी की सबसे बडी सनिकवादी ताकत को चुनौती दकर मानव जाति क इतिहास म एक नयी मिसाल बायम की है। अब देखना यह है कि उनकी कुर्बानियाँ बेकार न जाने पायें।

इस पुस्तक की अपूर्णताएँ भी मरी जानकारी म हैं। वियतनाम के जन जीवन के बारे म यहाँ कुछ भी नहीं निखा जा सका है। वहाँ क लाक-साहित्य प्राकृतिक और भौगोलिक मुन्दरना का वणन नहीं जाडा गया है। वियतनाम क लागान जिस वारना त्याग और लगन म जमीन क अदर मुरग खोकर पहाडा क बीच गुयाए वनाकर स्कूल अस्पताल और फकरियाँ चलाकर अपनी आजादी की लडाईँ और दैनिक जीवनचर्या बनाय रखी है दिन रात अमरीकी बमगरियाँ क वावजूद तिम तरह रुम म बन टका का लकर और 1 22 मिलीमीटर की 25 मान दूर तक मार करनेवाली विशान तापा क सहार 30 माच 1972 का उत्तर

वियतनामी सनिका जीर दक्षिण वियतनाम के मुक्ति मोरचे न एन लाक, को तुम और क्वाली का मुक्त करवा दिधाया—यह सामरिक इतिहास का एक चमत्कारी रहस्य है। सम्भव है 50,100 मील लम्बी सुर्रों छोदकर य टक 17वी समानांतर रेखा क दक्षिण म हायफाग न पट्टेचाये गव हा। ये सब ऐसे पक्ष है जिन पर विस्तार से पृथक लिखने की याजना हे। इस पुस्तक म ता हमारा लक्ष्य मुख्यतया सयुक्त राज्य अमरीका की हमनावर नीनिया और अमरीकी प्रवृत्तियो सम्बन्धी तथ्यो को पाठको क सामन रखना है।

अनेक महत्त्वपूर्ण ऐतिहासिक दस्तावेज परिशिष्ट म दिये गय है। और अन्त मे बटेण्ड रसल की अमरीकी जनता क नाम जपील जिमे वास्तव मे इस पुस्तक का सिद्धांत पक्ष (थीसिस) समझना चाहिए।



पिछत 6 महीना म कुछ बडा ही अनहानी बातें हुई है। प्रेमिडण्ट निक्मन ने हनोइ हायफांग पर भयकर बमबारिया करवायी। 7 नवम्बर, 1972 को रिचड निक्मन को भारी बहुमत से दोबारा प्रेसिडेण्ट चुना गया। चुनाव जीतने के हथकण्डा म निक्मन न हर उचित-अनुचित तरीको से काम लिया। अंतर्राष्ट्रीय व्यापारिक समझौता के रहस्य बतान और टकम म रियायत करने की एवज म बड़ी-बड़ी कम्पनिया से करोडो का गुप्त चंदा इकट्ठा करव 4 कराड डालर (कोई 32 करोड रुपय) निक्मन क चुनाव म खच किय गये। एफ० बी० आइ० जीर मी० आइ० ए० क एजेण्टा द्वारा प्रतिद्वन्दी सेनेटर मैकगवन क आदोनन कद्रा पर जामूमी कारवाइया की गयी—उनक दफतरो को बग' किया और टलिफान का टेप किया। और सब स बड़ी चाल वियतनाम म शांति-स्थापना का याँसा दिया गया। 22 अक्टूबर को ह्वाइट-हाउस न शांति का मसविदा तयार किया है और वृछ ही दिना म उस पर हस्ताक्षर हा जायेंगे' की घोषणा की। 4 साल के शासन म जा शांति का समझौता नही हा सका उसे चुनाव स 10 दिन पहले तयार हो जाना —निक्मन की नीयत का प्रतीक था। हनार्ई की एक घोषणा क अनुमार समझौते की शर्तें पूरी तरह स निश्चित हो चुकी थी और हस्ताक्षर हान की तारीख दा बार स्थगित की जा चुकी थी। 31 अक्टूबर 1972 अंतिम तिथि' तय हो चुकी थी। 27 अक्टूबर को श्री किमिगर ने कहा कि बम एक बार परिम म और मीटिंग करनी हागी तथा मतभेद ज्यादा नही है। लेकिन परिम म किमिगर व हनोई के प्रतिनिधि श्री थी क बीच लम्बी गुप्त-वार्ताज्रा म सब शर्तों क अंतिम रूप म तय हा जाने के बावजूद 'शांति समझौते' पर निक्मन न हस्ताक्षर नही ही किय। शांति वार्ताज्रा को लम्बा चनाकर शांति क नाम पर चनाव जीतने के साथ-साथ अमरीका ने बडे पैमान पर सगाँव शासन का हथियार भन्न।

7 महीन व भीतर भीतर 2 000 से अधिक जेट बमबारी को संगाव की वायुसेना के अधीन कर दिया गया और इस समय सगाव की कुल फौज 10 00,000 की जा चुकी है। शस्त्रास्त्रा और हवाई जहाजों की संख्या में सगाव रूस अमरीका को छोड़कर तीसरे नम्बर पर है। संख्या की तुलना में उमका नम्बर पाचवाँ है। क्योंकि सगाव की अपनी कोई औद्योगिक शक्ति नहीं है—इसलिए यह स्पष्ट है कि इतनी बड़ी फौज का रखने का मतलब है कि दक्षिण वियतनाम अमरीका की आर्थिक व सैनिक सहायता के बिना टिक नहीं सकेगा। और इस प्रकार अमरीका सगाव में अपने पर जमाव रखने की कोशिश करेगा। 16 दिसम्बर 1972 को अमरीका ने फिर से हनोई को दोपी ठहरा शांति-वार्ता भंग कर दी और उसके जेट विमानों ने हनोई हायफाय इलाके पर बमबारी शुरू कर दी है। वियतनाम की गणभेती तोपो ने दजना जेट मार गिराये हैं। इसका मतलब है कि वाशिंगटन की सरकार बमबारी के आतक से हनोई को अमरीकी शर्तें मनवाने को विवश करना चाहती है और वियतनाम की जन शक्तियाँ का एक ही जवाब है

देखना है जोर कितना बाजुए कातिल में है। विश्व-जनमत 'सत्य के साथ है और सत्य वियतनाम की जनता के साथ। हमारी लोकसभा के 74 सन्स्यो ने एक घोषणा में अमरीकी नीति की निंदा की है। भारत के अनेक राज्या की विधानसभाओं में वियतनाम स्वातन्त्र्य सघष व समथन में प्रस्ताव पाम किय गय है और हमारी प्रधानमन्त्री श्रीमती इन्दिरा गांधी ने घोषणा की है अततो गवा विजय वियतनाम की होगी। भारत की जनता वियतनाम की जनता व साथ है। राष्ट्रसघष व महामन्त्री ने भी अमरीकी बमबारी की आलाचना की है। अमरीका नतिक दष्टि स हार चुका है। सैनिक दष्टि में भी वह अपने लक्ष्य में अमथन रहा है। और वियतनाम की जनता का उसे कोई समथन नहीं है। इस लिए उमकी पराजय मुनिश्चित है। किन्तु अभी कितना और समय और बलिदान—यसमें जनात और अनिश्चित है। इस समय—हजारों टन बम फिर से वियतनाम पर बरस रहे हैं और व हैं मड इन यू० एम० ए०।

२ दिसम्बर १९७२

समाज रात्रनयिक प्रवृत्ति संस्थान

एम १२ बटार कनाथ १

नयी दिल्ली ११ ४८

—धीरेन्द्र

अनुक्रम

1	पश्चिमी साम्राज्यवादके आने से पहले का वियतनाम	1
2	पश्चिम का एशिया में विस्तार और फ्रान्स का हिंद चीन में प्रवेश (1500-1907)	11
3	द्वितीय महायुद्ध और वियतनाम का स्वातन्त्र्य-संघर्ष (1939-1946)	18
4	अमरीकी विस्तारवाद और एशिया	24
5	दीया वीर्या फू का पतन और जेनेवा-सम्मेलन (1950-1954)	34
6	हिंद चीन में सी० आई० ए० और ए० आई० डी० की हस्तगतें	42
7	उत्तरी वियतनाम पर अमरीकी हमला और पेंटागान के दस्तावेज (1964-1968)	52
९	अमरीकी आक्रमण का प्रभाव और टेट का प्रत्याक्रमण	64
७	अमरीकी सैनिक बनाम दक्षिण वियतनाम का मुक्ति-भारत और जन विश्वास	78
10	प्रजातंत्र के हिमायतियों की दुश्मन वियतनाम की जनता	95
11	अमरीकी साम्राज्यवाद का अंतिम पड़ाव (1864-1972)	123
12	उपसंहार	137
	परिशिष्ट	
13	वियतनामी स्वतन्त्रता का घोषणापत्र (2 सितम्बर 1945)	147

14	जेनेवा-सम्मेलन का अंतिम घोषणापत्र (5 जुलाई 1954)	150
15	लाआम सम्बन्धी जेनेवा घोषणा 1962 के कुछ अंश	154
16	पृथ्वी पर संयुक्तराज्य अमरीका की सैनिक स्थिति के आकड़े	158
17	अमरीकी युद्ध नीति हिंद चीन और अमरीकी जीवन पर दुष्प्रभाव	160
18	वियतनाम के राष्ट्रपिता डॉ० हा ची मिन्ह	162
19	दार्शनिक बर्ट्रैंड रसेल की अपील	173
20	ऐतिहासिक तिथियाँ	183
21	सहायक ग्रंथ-सूची	188

• •

वियतनाम
का
स्वातन्त्र्य-सघर्ष

पश्चिमी साम्राज्यवाद के आने से पहले का वियतनाम

“चीन के विशाल क्षेत्र में ईसाई धर्म और व्यापार के विस्तार के लिए यह आवश्यक है कि हिंद चीन में प्रवेश हो। और हिंद चीन में घुसने के लिए यह जरूरी है कि कम्बोडिया, मेकांग और कोचीन-चीन पर यूरोपियों का कब्जा रहे।”

मे-दोसा, क्रूज तथा पाइरेज
(मालहवा सगे व चीन प्रसिद्ध मिशनरी व व्यापारी
सतानियों के एशिया से भ्रमण के दिनों के आधार पर)

“भौगोलिक दृष्टि से वियतनाम पृथ्वी के एक बड़े भाग—दक्षिण पूर्वी एशिया के ऊपर बसा हुआ है जिसकी कुल आबादी कोई 25 करोड़ है। वियतनाम पर जिस किसी का अधिकार रहेगा वह पूर्व में फारमोसा व फिलापीन, पश्चिम में थाईलैण्ड व बर्मा के चावल के भण्डार और दक्षिण में मलयेशिया और इण्डोनेशिया के रबर, कच्चा लोहा, खनिज पदार्थ और तेल पर अधिकार पायेगा।—इस प्रकार वियतनाम केवल स्वयं ही नहीं, बल्कि उस पर आधिपत्य रखकर दक्षिण-पूर्वी एशिया के महान् सम्पत्ति भण्डार और करोड़ों लोगों को प्रभावित किया जा सकता है और उस पर प्रभुत्व रखा जा सकता है।”

हेनरी बेचेट सॉज
(सर्जन नियत अमरीकी राष्ट्रपति 27 फरवरी 1965)

भौगोलिक स्थिति और स्वातन्त्र्य युद्ध

दक्षिण-पूर्वी एशिया का एक भाग वियतनाम कहलाता है जो द्वितीय महायुद्ध के अंत तक फ्रांसीसी साम्राज्य हिंद चीन का पूर्वीय भाग था। हिंद चीन या इण्डो चाइना में तीन छोटे देश जाते हैं—वियतनाम, कम्बोडिया और लाओस। हिंद चीन की 70 फीसदी जनता वियतनामी है जिसका अधिक भाग वियतनाम में बसा हुआ है। यही क्षेत्र फ्रांसीसिया के शासन में तीन विभागों में बँटा था—कोचीन चीन अनाम और टाकिन। सार्वभूमिक दृष्टि से वियतनाम के अधिकतर लोग चीन से जुड़े हैं जबकि कम्बोडिया और लाओस की जातियाँ स्याम, बर्मा और भारत के नजदीक हैं।

वियतनाम हिंद चीन के पूर्वी समुद्र-तट पर एशिया महाद्वीप के हृदयस्थल पर स्थित है। उसके उत्तर में खड़ा है विशाल चीनी गणतंत्र पश्चिम में है उसके पड़ोसी लाओस और कम्बोडिया और पूर्व और दक्षिण की सीमाओं को प्रणाल मथासागर की लहरों निरंतर चूमती है। सामरिक दृष्टि से इसका बड़ा महत्त्व है और इसीलिए हिंद चीन और चीन पर जाक्रमण करनेवाले विदेशियों ने इसी को पहले अधिकार में करने के यत्न किये हैं।

वियतनाम का कुल क्षेत्रफल 3 29 000 वर्ग किलोमीटर अर्थात् 1 27 000 वर्गमील है। इसका आकार अंग्रेजी के S अक्षर की तरह है किंतु उसके दोना छोर चौड़े हैं और बीच का भाग पतला। सबसे अधिक चौड़ाई उत्तरी भाग की है 600 किलोमीटर। और सबसे कम चौड़ाई मध्य क्षेत्र की है 50 किलोमीटर। उत्तर में चीन की सीमा में लेकर दक्षिण में का माउ के समुद्री छोर तक इसकी कुल लम्बाई है 1,650 किलोमीटर।

फ्रांसीसी राज के अधीन वियतनाम को जिन तीन प्रशासनिक इलाक़ों में बाँटा गया था उन्हें वियतनाम भागों में कहा जाता है

बेक बो (उत्तर फ्रांसीसी—टाकिन)

चुड बो (मध्य, फ्रांसीसी—अनाम)

नाम बो (दक्षिण फ्रांसीसी—कोचीन चीन)।

वियतनाम की जलवायु समशीतोष्ण और नमी से भरी है। उसमें प्रति वर्ग मण्टीमीटर पर सूर्यनिप कोई 100 मिला बनारी प्रतिवर्ष मिलता है। अतएव वर्ष के बारह माहने हरियाली छापी रहती है और अनेक फसलें पैदा की जाती हैं। सालाना औसत वर्षा 1 500 मदाना में और पहाड़ों पर 2 000 से 3 000 तक। नमी अधिक में अधिक 80-90 प्रतिशत तक पहुँच जाती है। ये नमी और समशीतोष्ण तापमान वियतनाम के भौगोलिक आकार प्रकार और मानव जीवन की प्रकृति और प्रवृत्तियों का निर्धारण करते हैं।

वियतनाम की दो बड़ी नदियाँ हैं साल नदी और मेकांग। दोनों का उदगम चीन से होता है किन्तु उनका मुहाना वियतनाम में ही है। मेकांग का दक्षिण-पूर्वी एशिया की गंगा कहा जाता है। वह चीन से निकलकर बर्मा, थाईलैण्ड, लाओस और कम्बोडिया होती हुई वियतनाम के नाम वा (दक्षिणी) तट पर प्रशान्त महासागर में जा मिलती है। मेकांग 1,400 10⁹ घनमीटर जल प्रतिवर्ष बहा ले जाती है। दूसरी अनेक छोटी और बरसाती नदियाँ भी हैं जो खेती के लिए विनाशकारी और सहायक दाना ही हैं।

वियतनाम की मिट्टी लाल और पीले रंग की होती है और पर्याप्त मात्रा में नमी के कारण बड़ी उपजाऊ भी। नदियाँ के जल में विशेष खनिज तत्व भी पाए जाते हैं जिनमें खती और मछली उत्पादन में सहायता मिलती है।

वियतनाम के जंगल में अनेक प्रकार की वनस्पतियाँ और पशु-पक्षी बहुतायत में पाए जाते हैं। 438 प्रतिशत भूमि जंगल वन-सम्पन्न और घनी टापिकल वनस्पति से भरी हुई है।

पशुओं में 200 से अधिक प्रकार के जानवर पाए जाते हैं। हाथी, बाघ, गधेरा, चीता, भालू, जंगली भैंसे आदि बहुतायत में पाए जाते हैं। पेड़ों पर बदर व वनमानुष बहुत पाए जाते हैं। पक्षियों में 1,000 से अधिक तरह के प्रकार मिलते हैं— मुँदर पंखवाले मार तीतर तोत आदि। काले पशियाँ में कोयल बहुत लोकप्रिय है।

वियतनाम में समुद्री पानी में नदियाँ में नाला में, नहरों में शीतल विशेष कर दक्षिणी भाग नाम वा में 200 से अधिक तरह की मीठे पानी की मछलियाँ और 800 प्रकार की खार पानी की (समुद्री) मछलियाँ पायी जाती हैं।

बरसात का बड़ा विचित्र रूप रहता है। नवम्बर में अचल तक सन्ध्या का मौसम होता है जिसमें चीन के माइवेरिया की सख और सूखी हवाएँ उत्तरी वियतनाम पर छा जाती हैं। लेकिन क्षणिक वातावरण की नमी में मिल जाने के कारण वर्षा भी बहुत होती है। नवम्बर का महीना सर्दी में सबसे अधिक बारिश का समय होता है। मई-अक्तूबर के महीने में गरमियाँ की बरसात पड़ती है जिसमें धुँध घुटन और नमी ज्यादा होती है। इन दिनों दक्षिणी हवाएँ हिन्द महासागर और प्रशांत महासागर से उठकर समूचे वियतनाम पर छा जाती हैं। आकाश प्रायः बालू से घिरा रहता है।

हवा में दमा और गरमी दस्तनी ज्यादा हो जाती है कि जो ऐसी जलवायु के जादी न हों उनके लिए रहना और काम करना मुश्किल हो जाता है। और आकाश साफ न होने के कारण हवाई जहाजों और हेलिकॉप्टरों का उड़ना और जमीनियों की गतिविधियाँ में बाधा पाने जाना स्वाभाविक होता है। यही कारण

हे कि अमरीकियों और सगाँव के खिलाफ उत्तरी वियतनाम और दक्षिणी वियतनाम का राष्ट्रीय मुक्ति मोर्चे ने इस वर्ष प्रत्याक्रमण 30 मार्च, 1972 का शुरू किया था।

प्राकृतिक दृष्टि से वियतनाम और हिन्द चीन का क्षेत्र बहुत सुन्दर और आकर्षक है। वियतनाम का एक चौथाई क्षेत्र पर्वतों और पहाड़ियों से भरा पड़ा है जिनके बीच बीच में तराई के जंगलों, झीलों और नदियों पायी जाती हैं। यहाँ के पर्वत बहुत ऊँचे नहीं हैं। 1000 मीटर से ऊँचे पहाड़ केवल 10 प्रतिशत होंगे जबकि सबसे बड़े की ऊँचाई 3,142 मीटर है जिसे 'फन्सिपेन की चोटी' कहा जाता है। प्रशान्त सागरीय समुद्र-तटों से लेकर समूचे देश पर पर्वतों का जाल-सा बिछा है जो कि सामरिक दृष्टि से वियतनामिया के लिए शत्रु से बचाव का महत्वपूर्ण साधन है। ये पहाड़ियाँ ही अमरीकी बमों के सामने वियतनामी देशभक्तों की सुरक्षा की ढाल हैं और ये ही वे पहाड़ियाँ हैं जिन्हें मिट्टी में बदल डालने के लिए अमरीकी बी 52 ने बमबारी के 'संचूरेशन' बमबारी के तौर पर अपनाये हैं।

अमरीकी सैनिकों ने जब दक्षिण वियतनाम और लाओस के गाँवों और कस्बों को उजाड़ दिया तब उन उन देशों के राष्ट्रीय मुक्ति मोर्चे के लड़ाकों ने इन्हीं पहाड़ियों का गुफाओं में अपने सैनिक कम्प हस्पताल, स्कूल, फक्टोरियाँ चलाकर अपना स्वतन्त्रता की लड़ाई जारी रखी है। और पूरे के पूरे पहाड़ों को मिटाने में अमरीका साम्राज्य को अभी कम से कम और 50 साल तथा 50 000 बमबारी चाहिए। अमरीकियों के पास न इतना समय है, न ही धीरज। लेकिन वियतनामियों की तो प्रकृति ही शक्ति और धैर्य की है और ये सुन्दर पहाड़ सुरम्य घाटियाँ और वन-सम्पदाएँ हमेशा से उनकी सुरक्षा और विकास की गारण्टी देते हैं।

आजकल वियतनाम को अस्थायी रूप से 17वीं समानांतर रेखा पर दो भागों में बाँट दिया गया है। यह विभाजन 1954 में जेनेवा सम्मेलन में हुआ था जबकि 62 000 बर्गमील का उत्तरी भाग जिस पर कि राष्ट्रवादी हो ची मिन्ह का प्रभुत्व उत्तरी वियतनाम के रूप में स्वीकृत किया गया। 1962 में इसकी जनसंख्या 1 62,00 000 थी। दूसरी ओर 65 000 बर्गमील का क्षेत्र जिसकी जनसंख्या 1963 में 1 53,17 000 आकी गयी थी, को जेनेवा-समझौते के अन्तर्गत दक्षिण वियतनाम का क्षेत्र माना गया। इस प्रकार पूरे वियतनाम की कुल जनसंख्या 3,15 17 000 है। भौगोलिक दृष्टि से वह इटली से क्षेत्रफल में बड़ा है और जनसंख्या की दृष्टि से स्पेन के बराबर।

प्राचीन इतिहास

इसा से कोई 400 साल पहले जिसे कि आजकल संयुक्त राज्य अमरीका कहा

जाता है वह एक घना जंगल था। तब सम्भव है कि रैड इण्डियन (आदिवासी) अमरीकी महाद्वीप पर घूमा करते हो। तब जब पश्चिम अभी शायद उभरा भी न था, अनक जातियाँ सुदूर उत्तरी एशिया से विश्व में फली। सम्भवत बौरग स्ट्रेट से होकर कुछ अलास्का होते हुए अमरीकी महाद्वीप में जा बसी जिन्होंने माया सस्कृति की स्थापना की और उन्हीं के उत्तराधिकारिया को आजकल 'रैड इण्डियन' कहा जाता है। दूसरी कुछ जातियाँ दक्षिण की ओर बनी और यागत्सी नदी के आसपास बस गयी जिन्हें कि आज चीन का चिनयांग प्रान्त कहा जाता है। इनमें स्याम के येंक परिवार के लोग थे जिन्होंने आगे चलकर एक नये साम्राज्य की स्थापना की थी। दूसरी जातियाँ के बढ़ते हुए प्रभाव के कारण ये लोग येंक यांग से दक्षिण की ओर बढ़े और क्वाक चाऊ में पहुँचे। अनुमान है कि कोई तीसरी शताब्दी ईसा से पूर्व ये टोकिन और उत्तरी अनाम में आ बसे। अन्तर्जातीय विवाह होने के कारण चीन से आयी हुई इन जातियाँ और टोकिन के आदिवासियों में मेल जोल बनता गया और आगे चलकर एक नयी जाति का प्रादुर्भाव हुआ जिसको कि ऐतिहासिक दृष्टि से आनामी या अनाम के लाग कहा जाता है।

उत्तरी वियतनाम में चीन से आये हुए यू हे या व्हीट लोगों ने स्थानीय आदिवासियों से मिलकर जिस नये राज्य की स्थापना की उसका नाम था अनाम याई जाति के लोग जा दक्षिण चीन में बस गये थे, उनको बाद में 221 ईसापूर्व के आसपास चीन के प्रभावशाली शी हुआंग ती ने अपने में मिला लिया। उसके बाद चीनी साम्राज्य ने दक्षिण की ओर परफलाये और अनाम के छोटे राज्य के प्रतिष्ठ ऐतिहासिक स्थान ह्वे को अपने चीनी साम्राज्य में मिला लिया।

कोई 1000 वर्ष तक अर्थात् 939 ईस्वी तक अनाम की जनता चीनी राजा-जा के शासन के अधीन रही। किंतु इस लम्बी अवधि में अनाम का शिक्षित वर्ग चीनी सांस्कृतिक परम्पराओं में डल गया और अनियोग और अनामियों के बीच अन्तर्जातीय विवाह भी होत रहे। चीन की सस्कृति उस समय सुदूर पूर्व के देशों में सबसे महान थी और इसलिए उत्तरी वियतनाम के क्षेत्र में उसका स्वागत हुआ। चीन के सांस्कृतिक विस्तार के साथ-साथ वियतनाम में जहाँ कनफ्यूशस और दाओ के दार्शनिक सिद्धान्त फले वहाँ बौद्ध धर्म का भी प्रचार हुआ और इसके साथ-साथ लिपि और तकनीकी विकास भी आया।

चीन के साथ इन सम्बन्धों के कारण जहाँ अनाम में सांस्कृतिक प्रगति हुई वहाँ उसकी प्रतिव्रियास्वरूप राष्ट्रीय भावना का भी प्रादुर्भाव हुआ। चीन की राजधानी से अनाम का फासला बढ़त था। इसलिए अनाम में चीनी गवर्नर या शासन अधिकारी मनचाही करत थे और इस कारण शासन में भ्रष्टाचार बढ़ा। वियतनामी जनता पर चीनी गवर्नरों का दमन उग्र रूप से होने लगा और दमन की उप्रता के साथ-साथ अनाम की जनता के मन में विदेशी चंगुल से बच निकलने

की भावना भी उग्र होनी लगी ।

• दमयी अनामकी क आसनाम चीन म तांग राज-परिवार का शासन था । तांग शासन म दुर्बलता व कारण भयानक अराजकता पनप गयी और उग्रता लाभ उठाकर अनाम व तांगा एव स्वतंत्र जातमी प्रभुगता की स्थापना की । आन वाल कर्दवीच ती वपी म अनाम स्वातंत्र्य म अपना ही राजा व अधीन रण । लेकिन वहाँ की राज्यसत्ता और व्यवस्था चीन की शासन-मण्डलि पर हासिलता रहती थी । हालांकि चीनी शासन अ उठ चुता था किन्तु उग्रता मांसृष्टि प्रभाव अनाम की राजशाही पर कायम रहा ।

दक्षिण वियतनाम म अधिच मण्डल मलय भागा की धी जीर उनका चम्प या चम्पा कहा जाता था । उनका स्थापना पर आग वारण भारतीय मण्डलि का बहुत प्रभाव पडा । भारत के व्यापारिया और बौद्ध भिक्षुओं द्वारा भारतीय मण्डलि का इस शक्त म प्रसार हुआ । हिन्दू राजा श्री मार न चम्प राज्य का स्थापना की जीर भारतीय राजाओं व अधीन चम्प जाति का वदुन तजी म विनाम हुआ । चम्प जातियागिया न गितार और मद्रनी मारा व आत्मि जीवन स ऊार उठार भारत स श्रुति और व्यापार तीघा । व्यापार म अधिच प्रगति व कारण चम्प व विनासशील तांगा चीन स बराबरी व सम्बन्ध स्थापित किय और सुग जाति के शासनकाल म 960 म 1269 तक चीन स उनका सम्बन्ध वदुन मैत्रीपूर्ण और समानतापूर्ण रह । 13वीं मती व आत-जान अनाम व चम्प साम्राज्य पर बम्बोज अथानु जाजवन व बम्बोजिया व घामर साम्राज्य की प्रभुसत्ता स्थापित हो गयी जीर शासकीय दृष्टि स वह बम्बाज का एव प्राप्त मात्र बनकर रह गया ।

13वीं शताब्दी म चीन म सुग राज-परिवार व पतन व साथ-साथ मंगोला न जब चीन पर अधिकार कर लिया तो एव वार फिर वियतनाम की स्वतंत्रता को बाहरी आक्रमण स छतरा पनप हुआ । कुरुयात कुबलाई खान अनाम पर तीन बडे आक्रमण किये और एव आक्रमण चम्प पर । उत्तरी अनाम और दक्षिणी चम्प दाना राज्या को भयकर आक्रमण जीर लूट का मुराबला करना पडा लेकिन दोना के बीच मैत्री व एतता के कारण मंगोल आक्रान्ताओं को हार माननी पडी । फल स्वरूप अनाम और चम्प जातिया के बीच घनिष्ठता और बढ गयी जीर दोनो राज्या के बीच मित्रता जीर आंतर परिवार विवाह के कारण राष्ट्रीय एतता को बढावा मिला ।

15वीं शताब्दी म एव वार फिर चीन के मिंग सम्राट न अनाम को चीन के अधीन करने का प्रयत्न किया और आनेवाले वर्षों म अनाम पर चीन का शासन स्थापित हो गया । फलस्वरूप अनाम की राष्ट्रीय भावना ने फिर जाश मारा और अनाम की जनता ने चीन व आक्रान्ताओं के विरुद्ध गुरिल्ला युद्ध लडे । 10 वर्षों

तब यह युद्ध चला और 1413-1428 में राजा ली लोय वं नेतृत्व में अनाम की जनता ने हनाइ शहर पर चीनी सैनिकों को शिवस्त थी। चीन के मिंग वंशीय राजा युंग ला की 1424 में मृत्यु हो जाने पर उसके उत्तराधिकारियों में दक्षिण-पूर्वी एशिया में चीनी साम्राज्य को गायब रखने की इच्छा समाप्तप्राय हो गयी थी। ली लाय ने अनाम में एक नये ली राजवंश की स्थापना की और इसी वंश के शासकों ने अनाम पर आनेवाले एक सौ वर्ष तक शासन किया। चीन से उनके सम्बन्ध मैत्रीपूर्ण थे।

ली वंश के शासन के समय अनाम का सांस्कृतिक विकास हुआ और अनाम में चीनी चित्रलिपि का प्रयोग इसी युग में प्रचलित हुआ। साहित्य, कला शासन तंत्र, मित्रों और माप-तौल आदि का प्रचलन और अनाम की राष्ट्रीय भावना में उन्नता चीनी प्रभाव के माध्यम-साथ बढ़ती गयी। ठीक उसी प्रकार जैसे कि अंग्रेजी व साथ माध्य भारतीय राष्ट्रीय भावना का उदय हुआ था।

पन्द्रहवीं शताब्दी में अनाम का राज्य अपने सांस्कृतिक व आर्थिक विकास के कारण चारों तरफ फलने लगा और उसने चम्प के राज्य पर अधिकार कर लिया। चम्प का अंतिम राजा गिरफ्तार कर लिया गया और उसके चारों प्रान्तों को अनाम का भाग बना लिया गया। किन्तु उसका पश्चिमी भाग 17वीं शताब्दी तक स्वतंत्र रहा। बाद में उसको भी अनाम राज्य का भाग बनना पड़ा। सोलहवीं शताब्दी में, यूरोप में एशिया को ईसाई बनाने का बड़ा आन्दोलन चल पड़ा था और विशाख स्पेन और पुर्तगाल के बीच प्रतियोगिता और सहयोग दोनों ही एशियावासियों के धर्म परिवर्तन के लिए लग हुए थे।

हिंद चीन और खासकर कम्बोडिया को चीन में प्रवेश पाने और व्यापार के लिए आवश्यक समझा जाता था। उस समय की स्थिति का वर्णन साहित्यिक व्यापारियों भूले भटके नाविकों-सैनिकों तथा मिशनरियों की जुबानी तथा उनके लेखों में मिलता है। डोमिनिकन फादर यास्पर क्रूज पिण्टा पीयस और मेन्जाजा 16वीं सदी के कुछ प्रमुख लेखक हैं जिनसे हम लाओस, कम्बोडिया स्याम, चम्पा या काचीन चीन की भौगोलिक व सांस्कृतिक स्थिति के बारे में पता चलता है।

तत्कालीन लेखकों और दस्तावेजों से यह पता चलता है कि यूरोपीय उस समय में भी यह मानते थे कि सम्पूर्ण दक्षिण-पूर्वी एशिया और विशाल चीन की सन्धि में व्यापार और धर्म प्रसार के लिए हिंद चीन में प्रवेश पाना जरूरी है और हिंद चीन में घुसने के लिए कम्बोडिया पर प्रभाव रखना आवश्यक।

उस समय भी हिंदचीन अंतर्राष्ट्रीय व्यापार में काफी महत्वपूर्ण था और श्रेष्ठ किस्म का चावल इमारती लकड़ी, गोशत मछली और हाथी दात का बहुत मात्रा में निर्यात होता था।

पादर क्रूज वं लेखा स पता चलता है कि स्पेन और पुतगाल की राजकीय सहायता से मिशनरी भी हिंद चीन भेजे गये थे और यूरोप में लोगों को यह बसाया गया था कि हिंद चीन की ये असभ्य जातिर्षा ईसाई बनने के लिए तयार बठी हैं। किंतु स्वयं क्रूज को कम्बोडिया में पहुँचकर निराशा हुई। उसे हिंदू धर्म और महायान बौद्ध सिद्धांतों का ज्ञान हिंद चीन में हुआ और लम्बे अर्से तक वहाँ रहकर जब निराशा लौटा तब केवल एक व्यक्ति को ही ईसाई बनाने में सफल हुआ था। और वह भी उसके रवाना होने से पहले ही मर चुका था। आनेवाले सालों में स्पेन से और अधिकांश मिशनरी, सैनिक व हथियार भेजे गये और मनीला (फिलीपीन) और मलाका में अड्डा बनाकर दक्षिण-पूर्वी एशिया व हिंद चीन में बराबर अतिक्रमण किये जाते रहे।

उत्तरी राज्या की राजधानी प्रायः हनोई होती थी जबकि दक्षिण की राजधानी हूँ। राज-परिवारों में अक्सर लड़ाई-झगड़े रहते थे और यह कोई अनहोनी बात भी नहीं थी। 200 वर्षों तक 17वीं और 18वीं शताब्दी के बीच टाकिन अर्थात् उत्तरी भाग और दक्षिणी भाग के चम्प राज परिवारों के बीच मनमुटाव रहने लगा। 18वीं शताब्दी के आते आते फ्रांसीसी पादरी बड़ी संख्या में आने लगे। दक्षिण के एक राजा यूइन हान ने भागकर थाई देश में शरण ली थी। अब फ्रांसीसी कैथोलिक मिशनरी की सहायता से उसने दक्षिण वियतनाम को लेने की कोशिशें की और अंत में सफल हुआ। 1801 में फ्रांसीसी राज की सहायता से हान ने उत्तरी भाग की राजधानी हनोई पर भी हमले किये और पूरे हनोई पर अपना अधिकार जमा लिया। हान ने अपना राजकीय नाम जिया लांग घोषित किया और एक संपन्न वियतनाम स्थापित करके आधुनिक वियतनाम की नींव डाली। उसने राज्य व्यवस्था और सामाजिक हित के कामों की शुरुआत की। जिया लांग ने पश्चिमी विज्ञान और तकनीक का प्रयोग जापानियों से 70 साल पहले अनाम में शुरू कर लिया था। तब फ्रांसीसी मिशनरी जिमने जिया लांग का राज्य-सत्ता हथियाने में सहायता दी थी अब अनाम के राजा से फ्रांस को धर्म प्रचार और व्यापार में विशेषाधिकार देने की माँग की। पत्रस्वरूप जिया लांग ने कैथोलिक ईसाई पादरियों को धर्म प्रचार की सुविधाएँ दी और फ्रांसीसी सलाहकारों और विद्वानों का अपना राज्य में ऊँचे पदों पर नियुक्त किया। ईसाई पादरी बड़े ही उग्र रूप में वियतनामियों के धर्म परिवर्तन के कामों में लग गये और कुछ ही वर्षों में इस पत्रस्वरूप वियतनाम की जनता में यूरोपिया और फ्रांसीसीयों के प्रति घना और भय की भावनाएँ जोर पकड़ने लगीं।

इसी बीच अग्रजान मिगापुर पर 1819 में कब्जा कर लिया था जिसके पत्रस्वरूप जिया लांग ने 1820 में अपने उत्तराधिकारी मित्र मैन को इस बात की चेतावनी और टिप्पण दी कि वह फ्रांसीसीयों और पश्चिमी साम्राज्यवादीयों से

सचेत हा जाय। फलस्वरूप आनवाल शासकी न अगल 50 वर्षों मे इस बात की असफल काशिश की कि वे फ्रांसीसी आक्राताओं से अपन राष्ट्रीय हिता को बचायें और चीन से सहायता लेने की कोशिश करें। इस बीच चीन ने अनाम पर अपने थोड़े बहुत शासकीय प्रभाव कायम रखने का असफल प्रयत्न किया और बढ़ते हुए पश्चिमी विकास को रोकना न जा सका। चीन की माचू राजशाही और अनाम के राजा इस बात को न समझ सके कि उनकी शासकीय व्यवस्था पुरानी पड चुकी है, उनका शासक बग ध्रष्ट हो चुका है और उनका मुकाबला पश्चिम की बढ़ती हुई औद्योगिक क्रांति तथा ऐसे सशक्त लोगा मे है जा नूर महत्वाकांक्षी और निष्ठुर हैं। स्वयं चीन का साम्राज्य पश्चिम की औद्योगिक शक्ति के सामन लडखडा रहा था।

लेकिन वियतनाम के राजा चीन के प्रभाव म और पश्चिम से बचाव की इच्छा मे चीन के अधिक समीप जाने का यत्न करते रह और चीन और अनाम दोना की राजशाहियों न पश्चिम के लोगा को असम्भव, खूबार आक्राता मानकर उनस अलग रहने की काशिश की। लेकिन इस बीच वियतनाम मे बहुत तेजी से सुधार भी हुए। अनाम के हर नागरिक को समान अधिकार दिये गय चाहे प्रभु सत्ता राजा के अधीन थी। शिक्षा का व्यापक रूप से प्रसार हुआ। शासक आम जनता म से चुनकर लिये जाने लगे जसाकि सदिया पहले चीन मे होता था। लेकिन समय हाथ से निकल चुका था और पश्चिमी साम्राज्यवादी शक्तिया बहुत तेजी से एशिया को हडप रही थी।

उस समय की स्थिति ऐसी थी कि यूरोप के देश सामाजिक, आर्थिक और राजनीतिक क्रांतिया मे स होकर गुजर रहे थे। एशिया म अभी भी राजाओ और सामन्तशाही का बालबाला था। 5000 वष पुराने कनफ्यूशस के सिद्धांत और जीवन मूल्य वियतनाम के सामाजिक जीवन की पृष्ठभूमि थी। सामाजिक जीवन म और ग्रामीण जनता मे पचायती शासन व्यवस्था थी। परिवार समाज की महत्वपूर्ण इकाई माना जाता था और राजा की सत्ता सिद्धांत रूप से बाहरी प्रभाव रखती थी जबकि गावों के लोग अपनी पचायतो द्वारा शासन करते थे।

दूनरे देशा की अपक्षा 19वां शताब्दी के इस चरण म जबकि फ्रान्स व साम्राज्यवादिया ने वियतनाम पर अपना अधिकार जमाया वहाँ के लोग सयुक्त थे, शासन उदार था और तुलनात्मक दृष्टि स वहाँ के लोग सुमम्पन थे। वियतनाम एक हँसता-खेलता स्वावलम्बी देश था। राज्य सत्ता काफी मजबूत थी और अनाम का राज्य कम्बोडिया और लाओस पर अपना अधिकार जमाने के लिए तयार था। उसकी राजधानी हनोई न होकर ह्वे मे थी और कोरिया की तरह अनाम चीन की छत्रछाया को स्वीकार करते हुए भी प्रभुसत्ता की दृष्टि से स्वतन्त्र

था। चीन की छत्रछाया और सामूहिक प्रभाव नेत्र में हाने के कारण आक्रान्ताओं से आभरना का उसको भरोसा था। इतिहास का मत में यह कहना सही होगा कि यदि पश्चिमी साम्राज्यवादी ने 19वां सदी में जाक्रमण करके धरता, नशमता शोषण धाव और दमन से अनाम का न कुचला हाना तो आज वियतनाम जापान की तरह ही विमान और तकनीक में एक विकसित सुमम्पन्न और प्रभावशाली राष्ट्र होता।

• •

पश्चिम का एशिया में विस्तार और फ्रान्स का हिन्द चीन में प्रवेश (1500-1907)

1494 में पोप ने एक दलील घापणा करके पृथ्वी को दो भागों में बाँट दिया था—
आधा भाग स्पेन के राजा को और दूसरा आधा पुतगाल के शासक को। महात्मा
प्रभु ईसा के घम में सारी पृथ्वी को बदल देने के लिए तभी से यूरोप के देशों में यह
एक आम धारणा पायी जाती है कि पृथ्वी के उन इलाकों में विशेषकर एशिया,
अफ्रीका और अमरीकी महाद्वीप जहाँ कि भर इसाई लोग रहते थे, वे सांस्कृतिक
और आध्यात्मिक दृष्टि में ईसाइया से नीचे हैं और यह उनका एक धार्मिक-
सांस्कृतिक कृतव्य है कि गर ईसाइया की आत्मा का उद्धार किया जाये। तभी
से यूरोप के देशों में एक होड़ सी चली जिसका उद्देश्य अधिक से अधिक लोगों को
ईसाई धर्म में बदलना था। पश्चिम की साम्राज्यवादी प्रवृत्तियों के पीछे यह
धार्मिक तत्त्व महत्वपूर्ण होने के साथ ही साथ प्रगति में बाधक सिद्ध हुआ है।

पिछले युग में यूरोप के देशों में खाने पीने की चीजों के अभाव में भी उनकी
विस्तारवादी प्रवृत्तियाँ को उत्साहित किया। उन दिनों यूरोप में फल और शाक
सब्जियाँ बहुत कम पायी जाती थी। अक्तूबर-नवम्बर के महीनों में हज़ारों-लाखों
जानवरों को मार डाला जाता था क्योंकि आनेवाली भयंकर सर्दियों में उनका
खिलाने के लिए चारे की कमी हो जाती थी। मार हुए पशुओं का मांस बर्फ में
जमाकर सर्दियों के महीनों में धीरे धीरे खाया जाता था। किसी भी तरह के
ममाला की कमी के कारण मांस बेस्वाद और बजायका होना था। इसलिए भारत
और अन्य एशियाई देशों से मँगायें गये मसालों की कीमतें यूरोप में बाजारों में
बहुत अधिक होती थी। काली मिर्च, तेज-पत्र, इलायची आदि मसाले यूरोप की
मण्डियों में जब पहुँचते थे तब इनकी नीलामी के लिए बड़े बड़े रईस, राजे और
महाराज जमा हुआ करते थे। पंद्रहवीं शताब्दी में एशिया के देशों की मण्डियाँ
अन्तर्राष्ट्रीय व्यापार के माने हुए बन्दरगाहें बन आकरत थीं। सोना, चाँदी, हीरे-जवाहरात,
रेशम, चीनी, चावल, तरह-तरह के कपड़े, बतन और इमारती सामान एशिया

की मण्डियां स दुनिया व हर वान म पहुचता था। इ हा कारण म परिश्रम के मनुष्या म एशिया व साथ यापार और मन्मथ वद्वान की प्रवृत्ति पदा हुई। अग्रजी मुहावर म इसे कहत हैं गोल्ड, र्नारी एण्ड गाड यानी धन, यग और धम पाने की इच्छा स पश्चिम व र्शा न अपनी सीमाआ म याहर निरलगर अफ्रीका एशिया और अमरीका के लोग पर अपना साम्राज्य पनाया।

स्पेन और पुतगाल के वाट यूरोप व दूसरे देशा ने अपने अपन उपनिवेशवाट स्थापित किय और एशियाई देशा पर अधिगार के कारण जत्र वहाँ व राजाआ का और ऊँची जातिया को अमरीकिया का आधिक लाभ हुआ ता दूसरे दगा पर अपन अधिकार को राष्ट्रीयता और राष्ट्रभक्ति का जामा पहना दिया गया। एशियाई देशा पर अत्याचारा को अपन देश के लोग की गुरक्षा और अपन देश व अधि कारा की रक्षा के नाम पर अनिवाय आवश्यकता माना गया और वहाँ तत्र कि यूरोप के विचारका का भी एक हद तक विवग होकर अपन राजाआ व राष्ट्रवाट, स्वाथपरता और शूरताआ को राष्ट्रभक्ति व नाम पर स्वीकार करना पडा। 17 18वीं शताब्दी के आने तक यूरोप म एक नय धम का प्रादुभाव हुआ जिस राष्ट्रीयता का नाम दिया जा सकता है। इस प्रकार राष्ट्रीयता आधुनिक युग की एक ऐसी देन है जिसके नाम पर किये गये अनेक बुरे काम भी अक्सर उस देश के लोग स्वीकार कर लेत हैं और आम तौर पर बुरी कही जानवाली कारवाइयाँ भी सहन कर ली जाती हैं।

1791 म फ्रांस की जनता ने बेकारी भूखमरी गरीबी और राज्य सामंत परिवार के अत्याचारा के विरुद्ध एक प्रजातान्त्रिक शक्ति की थी। उस शक्ति का नारा था बहुत्व एकता और समानता। किंतु वही फ्रांस की जनता जिसने नय युग का नया दशन—एकता समानता और बहुत्व—मानव जाति के राजनतिक चिंतन म दिया था आगे चलकर ब्रिटेन, जमनी और दूसरे देशा की होड मे स्वयं मय अय एशियाई और अफ्रीकी देशा पर किये गय अत्याचारो और उपनिवेशवाद की कर्ता बन बठी। इसका कारण था कि उस देश के लोगो को एहसास हुआ कि फ्रांस का भाग्य आर्थिक विकास और स्वतंत्रता तथा उनके जन-जीवन का बढ़ता हुआ जीवन-स्तर इसी बात पर आधारित है कि वे बढ़ते हुए औद्योगीकरण के साथ साथ दूसरे देशो की मण्डिया म अय यूरोपीय देशा के मुकाबले मे पीछे न पड जाये।

उनीसवीं शताब्दी व अंतिम चरण म फ्रांस और ब्रिटेन इन दो बडे साम्राज्य वादी देशा के बीच भारत और एशिया के दूसर भागा म अनेक झड़पे हुइ। पुतगाल, के साथ भी ब्रिटेन और फ्रांस की लडाइयाँ हुइ और अनेक युद्धो के बाद पुतगाल फ्रांस ब्रिटेन अमरीका और रूसी जारा न चीन क इद गिद घेरा डाल दिया। 19वीं शताब्दी के अंतिम चरण म उन सब की गध-दृष्टिय चीन की मण्डिया और

विशाल बाजार पर केंद्रित थी। इसीलिए आपस के झगडा को नजरअंदाज करके एक सयुक्त मीरचा-सा इन देशो का बन चुका था। भारत का विशाल साम्राज्य अंग्रेजो के हाथ मे आ ही चुका था और फ्रांस की साम्राज्यवादी सनाएँ दक्षिण-पूर्वी एशिया के बहुत उपजाऊ क्षेत्र अनाम और हिंद चीन पर हावी हो चुकी थी। इन इलाका मे खनिज पदार्थ रबर, चावल, चाय, अफीम आदि बहुत अधिक मात्रा मे पाये जाते हैं। इसके अलावा इस क्षेत्र की सुरम्प घाटियां मे हाथी बहुत अधिक संख्या मे पाये जाते थे। हाथी दांत तथा जंगलो मे पायी जानेवाली इमारती लकडी को उन दिना यूरोप मे बहुत माग हाती थी। इसके समुद्री तट जहाजरानी के लिए बहुत उपयोगी है क्याकि जहाजो के गहरे पानी मे होने पर भी खुले समुद्री तूफाना से बचाव मिलता है।

1850 के उन अशुभ वर्षो मे जबकि पश्चिमी देशो की एशिया पर हमला की बहुतायत थी, हालण्ड की सेनाआ ने इण्डोनेशिया के हजारो द्वीप-समूहा पर अपना एक्च्छत्र साम्राज्य स्थापित कर लिया। ब्रिटेन ने भारत के प्रथम स्वातन्त्र्य संग्राम को असफल करके हमारी भूमि पर महारानी विक्टोरिया का एक्च्छत्र साम्राज्य कायम कर लिया था। स्पेन की सेनाएँ फिलिपीन और उसके आसपास हवाई और प्रशांत महासागर के द्वीपो पर अपने झण्डे पहले से ही गाड चुकी थी।

उधर अमरीकी जगी जहाजी बेडे कारिया और जापान की घेराव दी करने की कोशिश मे थे और चीन की उत्तरी सीमाआ पर रूस के जार की सेनाएँ हमले कर रही थी। ऐसी अवस्था मे एशिया के लोग अपनी अपनी सुरक्षा की चिंता मे पडे थे। हमारे देशो को एक्-दूसरे के बारे मे कोई ज्ञान न था। बहुत से भारत वासिया को तो शायद यह भी पता न था कि अंग्रेजो ने भारत मे अफीम की खेती शुरू कर दी थी जिसे वे चीन और दूसरे एशियाई देशो मे बडे मुनाफे पर बेचा करते थे। इसी तरह यूरोप के देशो की सेनाएँ चीन और वियतनाम पर हमलो की तयारियां भारत, फिलीपीन, इण्डोनेशिया मलयेशिया और दूसरे अधिदृत क्षेत्रो मे करती थी।

जहाँ तक अश्वेत जातियो के राजनतिक स्वातन्त्र्य-संग्राम का सवाल है यह एक ऐतिहासिक सत्य है कि बाल्टेयर और रूसो तथा जफसन के देशो की सेनाआ ने कभी भी उनका साथ नहीं दिया। बल्कि सच ता यह है कि फ्रांस और सयुक्त राज्य अमरीका दोना ही पश्चिमी साम्राज्यवाद के समर्थक रहे हैं। फिर चाहे स्वतंत्र विचारवा ने उन उन देशो मे शोषण और अत्याय का विरोध क्या न किया हो।

मिसनरिया और व्यापारिया की सहायता के लिए भेजे गये फ्रांस के जगी बेडा ने 1859 मे सर्गाव पर कब्जा कर लिया और फिर फ्रान्स की सेनाएँ उत्तर-पश्चिमी क्षेत्रो की ओर बढ़ी गयी। कोचीन चीन (1862) बम्बोडिया (1867)

लाओस (1888-1893) जनाम ती राजधानी ह्वे (1884) टोकिन (1884) और अकोर (1907) क सारे इलाके पर उनका कजा हो चुका था। अगले 80 वर्षों तक वियतनाम के लोगो ने जब-जब जाजादी की माँग की तब तब उनको मिला खून दमा और अधिक शापण। एशिया के लोग यूरोप के इन विरोधाभासो में बहुत परिचित है कि यूरोप के लोगो ने मानवता प्रजातन्त्र और आर्थिक और बानानिक विकास के नाम पर एशिया, अफ्रीका और दक्षिणी अमरीका के देशो को पिछले दो सौ वर्षों में घुरी तरह लूटा है। स्कूल और अस्पताल खोलने के बजाय फ्रांसीसिया ने जेला की स्थापना की और वियतनाम की सुसम्पन्न धरती का शोषण किया।

फ्रांस ने जसाकि अंग्रेजी राज के अधीन भारत में हुआ हिंद चीन की समुची अर्थ-व्यवस्था को फ्रांस के आर्थिक हिता की पूर्ति के लिए बदल डाला। फ्रांस का उपनिवेशी शासन जल्पसह्यक नागरिकों जिनका कि शिक्षा-दीक्षा द्वारा पश्चिमीकरण हुआ चुका था और जो कि अपने देश की ग्रामीण बहुसह्यक जनता से रिछड़ चुके थे की राजभक्ति पर आधारित था। फ्रांस के अधिकारी और उनकी सनाओ को हिंद चीन के समूचे धरत पर प्रभुसत्ता प्राप्त थी।

फ्रांस का शासन में वहाँ के किसानों को सबसे अधिक कष्ट उठाने पड़े। हालाँकि हिंद चीन का विश्व में खर और चावल के निर्यात में तीसरा स्थान था। उसकी जनता निधनता से पिसती रही और मुनाफा फ्रांसीसिया को जाता रहा। 1939 में—द्वितीय महायुद्ध के आने तक—हिंद चीन ने 15 लाख टन चावल का निर्यात किया जो कि उसने उत्पादन का 40 प्रतिशत था। लेकिन 1900 से 1939 के बीच वहाँ की जनता की सुराक में 30 प्रतिशत की कमी आयी—जबकि चावल वहाँ का मुख्य भाजन है।

फ्रांस द्वारा जैसे तरह का टकम लागे गये। भारत में नमक-कर की तरह ही हिंद चीन और विशेषकर वियतनाम में नमक-कर ही ग्रामीणों में राग और अशांति का मुख्य कारण था। टकम भूमिस्वर तथा जमागारी व्यवस्था का कारण फ्रांस का शासन काल में भयानक निधनता बनी। प्रतिवर्ष हजारों किसानों का जमीनें छीन ली जाती थी—क्याकि वे टकम और कर न चुका पाते थे।

उपनिवेशवादी नीतियों का परिणाम हुआ कि कुछ बड़े परिवारों का छाडकर बहुसंख्यक गरीबों की चकरी में पिमती चली गयी और गरीबों की सन्धा उत्तरात्तर बढ़ती गयी।

फ्रांस का शासन में 81 वर्षों की स्थापना हुई जबकि 2 प्रतिशत से कम बच्चा का प्राथमिक शिक्षा उपलब्ध था। आधा प्रतिशत में भी कम बच्चों हायर मस्टर की शिक्षा पाते थे और मात्र हिंद चीन में बचन एक युनिवर्सिटी थी। पूरे लाओस में बचन एक ट्रैन्स डायर था। 1943 में फ्रांस का उपनिवेशी शासन न फारीस का

व्यापार पर जा खच किया वह जिया, स्वास्थ्य तथा पुस्तकालया पर किये गये कुल खच मे पाच गुना अधिक् था। लेकिन लेखका और विचारको का प्रान्त के ऊचे जादश—समानता और धानृत्व, की बात करना मना पा। और हजारों की सध्या मे राष्ट्रभक्ता को नजरबंद रखा जाता था। हिंद चीन की स्थिति ठीक वैसी ही थी जसीकि हम भारतवासिया की ब्रिटिश राज के समय।

वियतनाम और हिंद चीन म आनेवाने वर्षों म क्या हुआ और उसकी प्रवृत्तिया और शक्तियाँ किस ओर बनी, इसका आभास हम वियतनाम के सबसे पहले राष्ट्रपति डॉ० हो ची मिन्ह की वियतनाम स्वतंत्रता का घोषणा के अवसर पर दिये गये निम्न भाषण स मिलता है

‘ फ्रांसीसी साम्राज्यवादियों ने आजादी, समानता और बहुत्व का नारा लेकर 80 वर्ष स अधिक् धाखे से हमारी पवित्र पितृभूमि के अधिनारा की अवहेलना करके हमारे नागरिकों को पराधीनता की वेडिया म जकड़ा है। उन्होंने पाप और मानवता के आदर्शों के विरुद्ध कारवाइयाँ की।

“ राजनीति के क्षेत्र म भी उन्होंने हमारी जनता को हर नागरिक अधिकार से वंचित किया था।

‘ उन्होंने अमानवीय कानून हम पर लादे जिससे कि हमारी जनता म एकता और राष्ट्रीय जागति की भावना न पनपन पाये और इसलिए उन्होंने हमारी उत्तर मध्य और दक्षिण वियतनाम म तीन तरह की भिन्न भिन्न नीतियाँ अपनायी।

“ हमारे देश म साम्राज्यवादियों ने स्कूला स अधिक् कदखाने बनवाये। उन्होंने हमारे राष्ट्रभक्ता को निन्दयता स भरवा डाला। उन्होंने हमारे क्रांतिकारी इलाका का निरपराध खून से डुबो दिया। उन्होंने जनता की भावना की अवहेलना की और हमारे देश मे निरक्षरता को बढावा दिया।

‘ हमारी ताति को कमजोर करने के उद्देश्य से उन्होंने हमारे देश मे अपने यहाँ की बनी हुई शराबों और अफीम के विनय को बढावा दिया और उसका प्रचार किया।

‘ आर्थिक क्षेत्र मे भी उन्होंने हमारे नागरिकों को उनकी हर चीज स वंचित किया और हमारी निधनता को बढावा देकर हमारे सम्मान को धक्का पहुँचाया। उन्होंने हमारे धान के खेतों का लूटा। उन्होंने हमारी खाना हमारे जंगलात और खनिज पदार्थों के भण्डारा को अपने अधिकार मे ले लिया। वका क नोटा को छापने और हमारे देश क निर्यात और जायात पर उन्होंने एवाधिकार बनाये रखा। उन्होंने अनेक तरह के सरकारनती टकम लगाय जिससे कि जनता, विशेषकर हमारे गावों की जनता का भयकर गरीबी म पीम दिया गया।

“ उन्होंने हमारे व्यापारियों के रास्ते में अडचनें डाला जिससे उनका व्यापार

बढ़ने न पाय और हमारे मजदूर बग का बड़ी शिष्टता से शासन किया।

“ 1940 की गणतन्त्र के समय जबकि जापान की साम्राज्यवादी नीति चीन की सीमाओं का उल्लंघन किया तो उस समय फ्रांस के साम्राज्यवादियों ने अपने घुटा टेबल पिये और आत्मसमर्पण कर दिया था। बढ़ती हुई जापानी गनाओ के आगे पास न हम निष्कम्भ समर्पित कर दिया था। इस तरह से फ्रांसीसी साम्राज्यवादियों की जगह एक और साम्राज्यवादी शक्ति, जापान हम पर घोषित किया गया। उस दिन के बाद वियतनाम की जनता ने जो कठिनाइयाँ मही उनका इतिहास में कोई दूसरा उदाहरण नहीं है। जब उन्हें दुर्गम अत्याचारों का सामना करना पड़ा। बर्माओ से लेकर उत्तरी सीमा तक योग लाय लागा को 1945 में भूमे मार डाला गया।

“ 9 मार्च 1945 को फ्रांसीसी गनाओ का जापानियों ने निष्कम्भ कर दिया था। फ्रांसीसी या तो डरकर भाग छोड़े हुए या उन्होंने बिना शर्त हथियार डाल दिये और इस तरह उन्होंने यह दिया कि व हमारी सुरक्षा करने में असमर्थ हैं। उन्होंने यह भी सिद्ध कर दिया कि व बन्ते हुए जापानी फासिस्टों के सामने हम निराश्रित छाड़ सकते हैं।

“ फिर भी मार्च के उस दिन के पहले कई बार वियतमिंह ने फ्रांसीसियों से इस बात की माँग की थी कि व जापानियों के विरुद्ध उनका साथ दें लेकिन उपनिवेशवादी फ्रांसीसियों ने हमारी अपील का कोई जवाब न दिया। उल्टे उन्होंने अत्याचार करनेवाली नीति को जोर तज कर दिया। भागने से पहले फ्रांसीसियों ने हमारे अनेक राष्ट्रभक्ताओं को मौत के घाट उतार दिया जो कि फ्रांसीसियों की जेलों में बंद थे।

“ इन सब के बावजूद हमारी जनता हमेशा से फ्रांस की जनता के प्रति सहनशीलता और मानवीय भावनाओं के सम्बन्ध बनाय रखने की कोशिश करती रही। मार्च 1945 में जापानियों की सफलता के बाद भी वियतमिंह ने अनेक फ्रांसीसियों को सुरक्षित क्षेत्रों में पहुँचाने में मदद दी। बहुता को उन्होंने जापानियों की जेलों से भी भागने में सहायता दी। फ्रांसीसियों की जान माल की रक्षा करने में हमने कभी कोई कसर उठा न रखी।

“ आज सम्पूर्ण वियतनाम की जनता हमारी गणतन्त्रीय सरकार के प्रति समकित रूप से वफादार है और वह फ्रांसीसी साम्राज्यवादियों की काली करतूतों को पूणतया समाप्त कर देने के लिए दृढ़प्रतिज्ञ है।

हमें पूरा विश्वास है कि मित्र राष्ट्र जिन्होंने तेहरान और सान फ्रांसिस्को सम्मेलनों में आत्मनिर्णय और समानता के सिद्धांतों को सभी देशों पर लागू करने की बात को मायता दी है वियतनाम की स्वतंत्रता को स्वीकार करने से पीछे नहीं हटेंगे।

जिन लोगों ने साहस और धीरता से 80 वर्षों से भी अधिक फ्रान्सीसी गुलामी को कभी स्वीकार नहीं किया और बराबर उसका विरोध किया है और जिस जनता ने हाव के माला में मित्र राष्ट्रों से कंधे में कंधा मिलाकर फामिस्टा के खिलाफ लड़ाई लड़ी है उस जनता की आजादी को कौन रोक सकता है ? एसी जनता का आजाद रहने का जन्मसिद्ध अधिकार है।

‘ इन ऐतिहासिक कारणों के आधार पर हम दुनिया को यह बता देना चाहते हैं कि वियतनाम का स्वतंत्र रहने का अधिकार है और सच तो यह है कि वह अब एक स्वतंत्र देश बन चुका है। हम यह भी घोषणा करते हैं कि वियतनाम की जनता अपनी आजादी को कायम रखने के लिए बड़े स बड़ा त्याग करने के लिए भी दृढ़प्रतिज्ञ है।

इन शर्तों में वियतनाम की आजादी के सेनानी डा० हो ची मिन्ह ने यह स्पष्ट कर दिया था कि दूसरे देशों की तरह वियतनाम पर भी उपनिवेशवादी देशों ने भारी अत्याचार किये हैं और वियतनाम को जाधुनिक युग की क्रांतिक प्रगति के साथ जागे बढने का अवसर नहीं दिया। दूसरी बात यह भी स्पष्ट है कि पश्चिमी साम्राज्यवादी बढते हुए जापानी सैनिकवाद के सामने वियतनाम की जनता को असुरक्षित छोड़कर भाग उठे थे।

तीसरी महत्त्व की बात यह है कि यदि मित्र राष्ट्रों—फ्रांस, ब्रिटेन और अमरीका की मेनाएँ—को जापान को हाराने के लिए एशियाई जनता का सहयोग जरूरी था तो जा जनता जापान के सैनिकवाद के खिलाफ लड़ सकती थी वह अपने ही देश की आजादी के लिए भी सघन कर सकती है।

• •

द्वितीय महायुद्ध और वियतनाम का स्वातन्त्र्य-सघर्ष (1939-1946)

सन 1940 में जब द्वितीय महायुद्ध छिड़ा और जर्मनी यूरोप में हिटलर की सनाआन फ्रांस पर कूच किया तो फ्रांस का अपनी रक्षा की चिन्ता स्वाभाविक थी। एशिया में उन्होंने हिन्द चीन को जापानिया के हवाले करके फ्रांस की वीची सरकार में फ्रान्मिस्टो से सहायता करने की नीति अपनायी। लेकिन जापान के अधीन हो जाने के बाद भी हो ची मिन्ह ने अनुयायियों ने वियतनाम की आजादी की लड़ाई जारी रखी और हो ची मिन्ह ने जो स्वयं कई बार हमारे भारतीय नेताओं की तरह साम्राज्यवादी जेलों में बंद रहे युद्धकाल में वियतनाम की जनता का वियतमिन्ह पार्टी के अधीन संगठित करके जापानियों के खिलाफ लड़ाई जारी रखी।

मार्च 1945 में जबकि जापान की सनाएँ पीछे हट रही थी हो ची मिन्ह की सेनाएं सुसंगठित रूप से वियतनाम की शासन सत्ता का अपने हाथ में संभाल थी। 1940-1945 के दिनों में वियतमिन्ह की राष्ट्रीय सेनाओं ने भूमिगत रहकर जापानियों के खिलाफ लड़ाई जारी रखी। उनकी जापान विरोधी गुप्त कारवाइयों में उन्हें 'मित्र' सनाआ और अमरीकी जासूसी संगठन ओ० एस० एस० का सहयोग मिला। लेकिन 1945 का जून होते होते एक बार फिर से हो ची मिन्ह की सेनाएँ फ्रांसीसिया द्वारा दुबारा वियतनाम को अपने अधिनार में लाने के प्रयत्न के खिलाफ लड़ रही थी।

2 सितम्बर 1945 को हो ची मिन्ह ने स्वतंत्र वियतनाम की घोषणा करके दुनिया के देशों से मायता देने की अपील की। लेकिन मित्र राष्ट्रों ने जिन्होंने द्वितीय महायुद्ध के समय बार-बार इस बात की घोषणा की थी कि वे सभी देशों के जातिघात की राजनीतिक स्वतंत्रता के लिए लड़ रहे हैं युद्ध समाप्त होने के बाद सभी का स्वतंत्रता मिलनी हो ची मिन्ह की अपील की अवहलना की। डॉ० हो ची मिन्ह ने अमरीकी राष्ट्रपति ट्रूमैन को भी एक तार भेजकर फ्रांस के

सैनिकवाद के खिलाफ विपतमिन्ह को मायता देने की अपील की थी। लेकिन यह एक एतिहासिक विडम्बना है कि जा अमरीकी राष्ट्रपति जापानिया पर अणुबम गिरान से नही झिझका वह फ्रान्सीमिया के सैनिकवाद के खिलाफ वियतनाम की जनता की आजादी की लड़ाई के समयन म कुछ भी करने के लिए तयार न था।

वियतमिन्ह' के स्वयसेवक देशभक्त लडाक' जो अत्र तक 'मित्र राष्ट्रा अग्नेजा, फ्रांसीमियो और अमरीकी फौजा क' मित्र थे जापान के हारत ही अव 'दुश्मन बन चुके थे। गारी जातिया क' सम्य 'प्रजातांत्रिका' न मुनीबत की घडिया म दिय गय वचन समय गुजर जाने के बाद भुला दना ही उचित समझा।

वियतमिन्ह की मेनाआ ने टाकिन जीर अनाम के मुख्य मुख्य शहरा और फ्रांसीसा ठिकाना की घेरार दी शुरू कर दी। सैगाव जीर एक दो बड़े-बड़े शहरा का छाडकर प्राय सार ही वियतनाम पर हो ची मिन्ह और उनकी वियतमिन्ह पार्टी का एकाधिकार स्थापित हा चुका था। शुरू शुरू म फ्रांसीसी अधिकाऱिया न वानचीत का दौर शुरू करके वियतमिन्ह को धोखे म तान की काशिश की। यह मुझाव ग्वा गया कि यदि हो ची मिन्ह और उनके वियतमिन्ह नेता इस बात का आश्वासन दें कि स्वतन्त्र वियतनाम, फ्रांसीसी कामनवल्थ म रहेगा ता व त्रिना युद्ध किये वियतनाम की आजादी का मायता दे देंगे। क्याकि वियतमिन्ह नेता जीर हो ची मिन्ह युद्ध नही चाहते थ इसलिए समझौत की बातचीत शुरू हुई।

6 माच, 1946 को फ्रान्स के प्रतिनिधि जोन सेण्ट म जीर हा ची मिन्ह, के बीच हनाई म एक समझौत पर हस्ताक्षर हुए। इसके अनुसार फ्रांस न वियतनाम को एक स्वतंत्र राज्य क' रूप म मायता दी जिमकी कि अपनी सरकार अपनी ससद, अपनी सना जीर अपनी स्वतंत्र जय व्यवस्था होगी। वियतनाम की सरकार ने स्वीकारा कि वह फ्रांस की सेनाआ के साथ मैत्रीपूण व्यवहार करगी और उसके सांस्कृतिक जीर आर्थिक हिता को स्वतंत्र वियतनाम म यथासम्भव सुरक्षित रखेगी। फ्रांस ने अपनी मेनाआ का धीर धीर पाच वर्षों के भीतर वियतनाम से हटा लेन का वचन दिया। ऐसा भालूम दता था कि युद्ध ध्वस्त एशिया के इस क्षत्र पर शान्ति की आशाएँ हावी हो जायगी और हो ची मिन्ह और उनक वियतनामी नेताआ का विश्वास था कि उनका सघप समाप्त हो चुका है जीर वे फ्रांस क' साथ मैत्रीपूण जीर समानता क' सम्बन्धों की उम्मीदें लगाये थे। उन्हें फ्रान्स से घणा न थी। व तो फ्रांसीसी साम्राज्यवाद स छुटकारा पाने के इच्छुक थे। वास्तविकता ता यह थी कि जिस प्रकार भारत के प्राय सभी राजनीतिक नेताआ का अग्रजी सस्कृति जीर शासन व्यवस्था से नगाव था उसी प्रकार वियतनाम के सभी राष्ट्रीय नेताआ की शिक्षा-दीक्षा फ्रांस म हुई थी और व भी फ्रान्स के साम्कृतिक जीर दाशनिक प्रभाव म वियतनाम को बढत देखना चाहत थ।

समझौते क' आधार पर वियतमिन्ह न फ्रांसीसी सनिका का उत्तरी वियतनाम

म शान्तिपूर्ण ढंग से इधर उधर जाने की अनुमति दी। लेकिन फ्रांसीसी अधिकारियों ने इस मौके का लाभ उठाकर अपनी सैनिक स्थिति को और भी मजबूत बनाने की काशिश की। फ्रांसीसी अधिकारियों के मन में समझौते को पालन करने का कोई इरादा नहीं था और उन्होंने दक्षिणी वियतनाम में एक नयी वियतनामी सरकार की स्थापना की घोषणा कर दी। अगस्त 1946 में फ्रांस ने वियतनाम पर एक और सम्मेलन की घोषणा की जिसमें अपने दक्षिण वियतनामी गुणा, सैनिक अधिकारियों और पूँजीपतियों के प्रतिनिधियों का वियतनाम की जनता का प्रतिनिधि मानकर इस सम्मेलन में बुलाया। और दक्षिण वियतनाम में एक नयी सरकार की स्थापना की योजना बनायी। इस बीच फ्रांस की सनाएँ तजी के साथ उत्तर वियतनाम की बंदरगाह हाई फांग पर अपनी स्थिति को मजबूत करने उत्तरी वियतनाम के उन क्षत्रों में जहाँ वियतमिन्ह सनाएँ मजबूती से मोरचाबंदी कर रही थी आगे बढ़ने की काशिश करने लगी। हालाँकि हुनाई के समझौते का उल्लंघन करके फ्रांस की सेनाएँ नयी बंदरगाहों पर आ रही थी हो ची मिन्ह ने शांति आशा और विश्वास का परिचय दिया और इस बात का पूरी काशिश की कि युद्ध को किसी प्रकार टाला जाये। वे इस बात के लिए तैयार थे कि एक स्वतंत्र वियतनाम को फ्रांसीसी कामनवेलथ में रखा जाय। लेकिन फ्रांस और वियतनाम के बीच जैसे भी हो दोस्ती के सम्बन्ध कायम रहे। हो ची मिन्ह को पेरिस सरकार से समझौते की आशा थी और वह स्वयं पेरिस गम और जनवरी 1947 में एक बार फिर फ्रांस से समझौते के आधार पर संधि को खत्म करने की अपील की। लेकिन फ्रांस की सरकार खबर चाबन तथा दूसरे फ्रांसीसी व्यापारियों के हितों के दबाव के कारण समझ-बूझकर भी सत्य और न्याय का पालन न कर सकी।

नवम्बर, 1946 में फ्रांस की सनाओं में बड़ी क्रूरता के साथ बिना कारण और बिना चेतावनी दिए हुए हाई फांग की बंदरगाह पर अचानक बमबारी शुरू कर दी जिसमें हजारों नागरिक मारे गये। वियतमिन्ह की सेनाओं ने हुनाई पर फ्रांसीसी सनाओं का डटकर मुकाबला किया। समुद्र-तट पर जो कि हुनाई से बहुत दूर नहीं था हाई फांग बंदरगाह पर फ्रान्सीसियों को अमरीकी जमी बेडा से मदद और हथियार मिल रहे थे। पत्रस्वरूप उस मुठभेड़ में फ्रांसीसी सनाओं की विजय हुई। लेकिन वियतमिन्ह की सनाओं का होसना और उत्साह अभी टूटा नहीं था। वे हाई फांग और हुनाई के शहर छोड़ खना और जंगलों में चले गये और इतिहास के नामी वियतमिन्ह सनाओं की जनरल ज्युप के नेतृत्व में वियतनाम की जनता को गाँव गाँव में उठारकर संगठित करके एक नये और बड़े युद्ध की तैयारियाँ में लग गये।

जनता का एक नया युद्ध छिद्र खुला था। सारे टाबिन और उत्तरी अनाम में वियतमिन्ह और फ्रान्सीसी सनाओं के बीच झड़पें शुरू हो चुकी थी और चाबिन

चीन तथा दक्षिण वियतनाम में स्वतन्त्रता-नेतानिया न गुरिल्ला लडाइयाँ छेड दी थी। इस प्रकार हो ची मिन्ह जो कि द्वितीय महायुद्ध के बाद न इस बात की सतत कोशिश करते थे कि रक्तपात से हताश हानर दंग रहे थे कि मारा वियतनाम एक बार फिर युद्ध की आग में जल उठा है।

एतिहासिक प्रमाणा से यह स्पष्ट है कि फ्रांस के अधिवासीयों ने मन्चे दिल में वियतमिन्ह के साथ समझौता नहीं किया था। उनके द्वारा देनापात्र था। यह साबित हो चुका है कि जिस प्रकार याह्या खाँ ने बंगला देश के नेता शेख मुजीबुद्दौला से मार्च, 1971 में समझौते की बातचीत का दौर शुरू किया था लेकिन उनका द्वारा समझौता करना नहीं था किंतु बका टालना था ताकि कम बीच व अपनी सेनाओं का समुद्री रास्ते से लाकर बंगाल में जमा कर सकें उसी प्रकार फ्रांस की समझौता-वार्ता के पीछे भी इरादा यही था कि वे सैनिक व शस्त्रास्त्र पहुँचाकर अपनी स्थिति मजबूत कर लें। जब वह सब हो चुका तो फिर उन्होंने हमने की ठानी। लेकिन जनता फ्रान के साथ न होकर हो ची मिन्ह के साथ थी। इस बीच हो ची मिन्ह के साथिया ने वियतनाम के गणतंत्र की राष्ट्रीय ससद के लिए सबसे पहला चुनाव किया और जनवरी 1947 में हो ची मिन्ह की मिली जुली पार्टियों के राष्ट्रीय मगठन ने 300 सीटों में से 230 पर सफलता प्राप्त की। नवम्बर 8 को एक नये गणतन्त्रीय सविधान की घोषणा की गयी जिसका आधार था

विना किसी जाति, वर्ग, धर्म, सम्पत्ति और सेक्स के वियतनाम देश में मारी शक्ति वियतनामी जनता के हाथों में है।

6 जनवरी 1947 को वियतनाम की सरकार ने एक घोषणा जारी की जिसमें उसने विश्व के मरस्त राष्ट्रों से इस बात की अपील की कि वे वियतनाम की आजादी को मायता दें। उन्होंने मित्र राष्ट्रों को यह बताया कि हालाँकि हुनोई की सरकार न मार्च 6 1946 को दोस्ती का हाथ बढ़ाया और समझौते पर हस्ताक्षर करके फ्रांसीसी कामनवैलथ में बने रहने की बात को मान लिया था लेकिन फ्रांसीसी सरकार न घोषणा देकर फिर से दमन और अत्याचार शुरू कर दिये हैं। वियतनाम की जनता इसके लिए दृढ़ प्रतिन है कि वह अपना जन्मदिन राजनीतिक स्वतन्त्रता व अधिवासी के लिए और अपनी राष्ट्रीय सुरक्षा और पवित्रता को बनाये रखने के लिए हर सम्भव उपायों में काम लेंगी और वह बड़ी म बड़ी कुर्बानियों को मार है। 13 फरवरी, 1947 को फ्रान के प्रधानमंत्री पान रमदियर न पेरिस में यह घोषणा की कि फ्रांस मार्च 1946 के समझौते के अस्तित्व को स्वीकार नहीं करता। इस प्रकार फ्रांस न लडार्ड के मैदान में वियतनाम के भाग्य का निणय करने का एलान किया। अंतरराष्ट्रीय कानून व माय व्यवस्था की दुहाई देनेवाले पश्चिमी राष्ट्रों ने इस समझौते के उल्लंघन पर कोई विरोध-पत्र नहीं भेजा।

अमरीका द्वारा दिये गये द्वितीय महायुद्ध के बीच हथियारों, शक्तिशाली ताप और हवापटा की सहायता से आधुनिकतम सैनिक उपकरणों से लस फ्रांसीसी सेना एशिया के एक छोटे में निधन देश के अप्रशिक्षित और अशिक्षित फ्रांसीसी गुरिल्ला विधतनामी सैनिकों से लड़ने के लिए उतर जायी थी। सैनिक फ्रांस के साम्राज्यवाद्या ने इतिहास का वह पाठ लिखने भुला दिया था कि कितना भी शक्तिशाली, सुसम्पन्न तथा आधुनिक हथियारों से लस देश क्या न हो वह जनता की इस पवित्र भावना को कुचल नहीं सकता कि स्वतंत्रता पाने का उनको जन्मसिद्ध अधिकार है। फ्रांस की सुमगठित और अमरीका में सहायता प्राप्त सैनिक शक्ति का सामना करने में अममथ बियनमिह सैनिकों ने छापामार गुरिल्ला युद्ध का रास्ता अपनाया और पहाड़ों की दुर्गम घाटियाँ जंगल और धान के खेतों के बीच में फ्रांसीसी मशीनगनों और टैंकों का मुकाबला किया। उन्हें इस बात का पूरा भरोसा था कि आखिर में उनके राष्ट्रीय हित और सत्यमेव जयते के सिद्धांत बड़ी से बड़ी सैनिक शक्ति और आधुनिकतम हथियारों पर विजय प्राप्त कर लगे। सैनिक दृष्टि से सुसम्पन्न होने पर भी फ्रांस ही चीनमिह की सेनाओं को न हरा सका।

इस बीच जनता का राजनीतिक समर्थन पाने की असफल कोशिशों में फ्रांस ने अनाम के एक छोटे में भूतपूर्व राजा बाओ दाई को अप्रैल 1949 में बियतनामी राज्य का राजा स्वीकार कर लिया। फ्रांस ने यह समझा कि यदि वह बाओ दाई को फ्रांसीसी राज्य के इस भाग का सर्वोच्च अधिकारी मान लें तो फिर हो चीमिह के बजाय बाओ दाई से ही वह समझौता कर लेगा। बल्कि सच तो यह है कि इसी बाओ दाई ने अगस्त 1945 में स्वेच्छा से अपनी प्रभुसत्ता को बियतनाम के गणतंत्र के अधीन कर दिया था।

इस बीच भारत स्वतंत्र हो चुका था। ब्रिटेन की प्रगतिशील समाजवादी पार्टी सोशलिस्ट पार्टी ने साम्राज्यवादी चर्चिल को चुनावों में हराकर पहली बार एटली के नेतृत्व में ब्रिटेन का मन्त्रिमण्डल बना लिया था। एटली ने ब्रिटिश लोकसभा में इण्डिया बिल प्रस्तुत करके भारत के राजनीतिक नेताओं को जेला से रिहा करके भारत में राज्य सत्ता को यहाँ के प्रतिनिधियों का हस्तांतरित करने की घोषणा कर दी थी। उधर इण्डोनेशिया में डा० सुकर्ण के नेतृत्व में वहाँ की जनता ने इण्डोनेशियाई गणतंत्र की घोषणा कर दी थी और हालण्ड की लोकसभा में भी वहाँ के समाजवादी दल के मन्त्रिमण्डल ने इण्डोनेशिया की स्वतंत्रता को मान्यता देने की घोषणा की। इस प्रकार जहाँ चारों तरफ एशिया के देशों में आजादी की लहर दौड़ रही थी चीन में माओत्स तुंग के नेतृत्व में साम्यवादी शक्तियों का आग बौड़ के भ्रष्ट शासन का धराशायी कर रही थी। कुछ ही महीनों में सार का सारा चीन माओसे तुंग के अधीन होनवाला था। अमरीका

ने, साम्यवाद के एशिया में बढ़ते हुए प्रभाव को न देख सचन की लातसा से वियतनाम में अपनी मारी ताकत फ्रान्सीसी साम्राज्यवाद के समयन में लगा दी।

अमरीकी समयन में फ्रांस ने राजा वाओ दाई में एक समझौता करके वियतनाम को फ्रान्सीसी कामनवन्थ का एक भाग घोषित कर लिया। इसी प्रकार कम्बोडिया और लाओस में जनता की इच्छावा की अवहेलना करके छोटे छोटे राजाओं को वहाँ का शासक नियुक्त किया जाने लगा। लेकिन लडार्ड के मैदान में फ्रांस की सनाएँ वहाँ की जनता के सहयोग से बटना हुई जन शक्तिवा या जिनजा कि नेतृत्व वियतमिन्ह के हाथों में था, मुकाबला करने में जमपन रही। 1949 का अंत हात-हाते वियतनाम का बहुत बड़ा भाग सैनिकों और शामकीय दृष्टि में हाथों में मिन्ह के वियतनामी गणतन्त्र के अधीन आ चुका था। जनवरी, 1950 में वियतनामी गणतन्त्र की प्रभुमत्ता को चीनी गणतन्त्र और मावियत सघ ने मायता प्रदान कर दी और दूसरे सारे ही साम्यवादी देशों ने इसको स्वीकार कर लिया। अमरीका के विदेश मंत्रा एचिसन और अमरीका की सरकार पर इसकी प्रति क्रिया बड़ी ही निराशाजनक हुई। एचिसन ने कहा कि ही ची मिन्ह वियतनामी जनता के नेता न होकर वहाँ की जनता की आजादी के सच्चे दुश्मन हैं और वे वियतनाम में रूसी साम्यवादी अत्याचारों के साधन बनेंगे।

जून, 1950 में जबकि अमरीका के सत्त्ववाद ने कोरिया में युद्ध शुरू कर दिया था उसके पीछे भी यही भावना काम कर रही थी। कि बल्ले हुए साम्यवादी बदमाशों का रक्षा जाय और एशिया में इसको सफन न होना दिया जाये। तब अमरीकी राष्ट्रपति ट्रूमन ने इस बात की घोषणा की कि वे वियतनाम, कम्बोडिया और लाओस में फ्रांस द्वारा स्थापित सरकार को मायता देंगे और वे फ्रांस की हर सम्भव सहायता करके इस बात की पूरी कोशिश करेंगे कि हिन्द चीन में साम्यवाद का प्रसार का रक्षा जाय। श्री ट्रूमन ने कहा कि जहाँ तक अमरीका का सवाल है कारिया में छिन्न हुआ युद्ध और फ्रांस के खिलाफ हिन्द चीन में हा रहा सघप दाना एक ही युद्ध हैं। इसके बाद का इतिहास और लडार्ड वियतनाम में अमरीकी साम्राज्यवाद के विरुद्ध होनेवाली लडार्ड का इतिहास है।

• •

अमरीकी विस्तारवाद और एशिया

अगर हमने हिंद चीन खो दिया—तो टोन और टगस्टीन, जिसका हमारे लिए इतना महत्व है—मिलना बंद हो जायेगा। इसलिए जब हम (फ्रांसीसियों को) युद्ध के लिए 40 करोड़ डालरों की सहायता देते हैं तो हम व्यर्थ पसा नहीं फेंकते। वह सहायता हम अमरीका के लिए एक भयानक अनहोनी से बचने को देते हैं। हमारी सुरक्षा हमारी शक्ति और उन पदार्थों का जिनकी कि हमें बहुत जरूरत होती है सस्ते से सस्ते में हासिल करने के लिए अमरीका को हिंद चीन और दक्षिण पूर्वी एशिया की भूमि पर पायी जानेवाली सम्पदा की जरूरत है।

—प्रेसिडेंट आइज़नहावर

4 अगस्त 1953

इस (हिंद चीन) में टान, तल रबर, कच्चा लोहा, तथा अन्य खनिज पदार्थ बहुतायत में उपलब्ध हैं। यह क्षेत्र सामरिक दृष्टि से बड़ा महत्व का है। वहाँ पर जल व वायुसेना के प्रमुख अड्डे हैं।

—जान फास्टर डलेस

21 मार्च 1954

संयुक्त राज्य अमरीका भी अंग्रेजों का उपनिवेश रहा था और उसकी स्थापना 1776 में बड़े ही नातिकारी ढंग से हुई थी। यदि अमरीका के नक्शे को देखा जाय तो यह स्पष्ट हो जाता है कि 1776 में वह 13 राज्यों का एक छोटा

सा सगठन था। लेकिन आज वह 50 राज्यों और दजना उपनिवेशों, जिनको कि टैरीटरी कहा जाता है का एक विशाल साम्राज्य बन चुका है और इसका विस्तार भी उन्ही काग़्पा से हुआ है जिनको कि हमन घन, घम और राष्ट्रीय गौरव का नाम दिया है।

सन 1871 में अमरीकी जगो बेडा न कारिया पर सत्रसे पहला हमला किया था। अमरीका के इतिहास की किताबा में क्पतान परी द्वारा जापान में 1853 में की गयी सबसे पहली सनिक घुमपठ को एक आवश्यक स्व रक्षात्मक और मान बोचित कारवाई बताया जाता है। अपने देश की सीमाओं से कोई बारह हजार मील दूर एक छोटे-से देश पर जो कि उस समय सनिक और आर्थिक दृष्टि से कोई विशप महत्त्व नहीं रखता था और जिसने विधर्मियों और विदेशियों को अपनी घरती पर उतरने न देने की नीति अपनायी थी जोर जबरदस्ती से अपने जगो बेडो को उतारकर जापान के शासका को किसी भी प्रकार की सैनिक आर्थिक और व्यापारिक संधि पर हस्ताक्षर करने के लिए मजबूर करना अंतर्राष्ट्रीय कानून की दृष्टि से एक कमजोर देश की प्रभुमत्ता की अवहेलना करना था। किन्तु अमरीकी इतिहास की पुस्तकों में पताया यही जाता है कि वह हमला न था किन्तु जापान की 'असभ्य सरकार को एक गवक मिथाना था कि वह समुद्र की थोड़ा में सताय गये हुआश नाविका के साथ किस तरह का मानबोचित व्यवहार करे। इतिहास हमका साथी है कि उस घटना के बाद अमरीका ने जापान में जो पर रवे उसे जापान फिर द्वितीय महायुद्ध (1940-45) तक अपनी भूमि से निकाल सका।

1840 में अमरीकी सरकार न मक्सिको पर हमला किया और कलिफोर्निया पू मक्सिको और टेक्सास, फ्लोरिडा का हडप लिया। उस समय अमरीका के राजनतिक नेताओं तथा विचारकों ने यही कहा था कि कलिफोर्निया और टेक्सास अमरीका की नसर्गिक सीमाएँ होनी चाहिए क्योंकि भगवान ने ही उन्हें अमरीका की सीमाएँ बना दिया है। पूव में अटलाण्टिक महासागर अमरीका को यूरोप से व्यापार का व्यापारिक जहाजरानी का जवसर देता है तो कलिफोर्निया और टेक्सास अमरीका को प्रशांत महासागर और एशिया की मण्डिया और बाजारों में पहुँचन का मौना देगे।

इस तरह ऐतिहासिक दस्तावेजों को पढ़न से यह स्पष्ट हो जाता है कि अमरीका की गोरी जातियां में सत्ता में साम्राज्यवादी प्रवृत्तियां ठीक उसी प्रकार जमी हुई हैं जिस प्रकार कि यूरोप की जातियों में थी। अमरीकी साम्राज्यवाद का विस्तार उन्नीसवीं शताब्दी के अन्त में अपनी चरम सीमा पर पहुँचता है जबकि अमरीका ने अपने पड़ोसी देश क्यूबा पाटोरीको तथा दूसरे दक्षिण अमरीकी राज्यों पर अपना अधिकार जमाकर यूरोपीय साम्राज्यवाद को उखाड़

दो को दुहाइ दे हवाई द्वीप समूह पर जोर मुद्दर पूव एशिया मे फिलीपीन और गाआम द्वीप समूहो पर कजा निया। यह इतिहास की एक विगप कहानी है कि 1898 स आज तक अमरीकी सेनाएँ इन इलाओ मे वापस नहीं लौटी हैं। बल्कि द्वितीय महायुद्ध के बाद प्रशासक सागर म फल सबडा द्वीप समूहो जा कि माइनाशिया द्वीप क नाम मे जान जाते है पर भी अमरीकी सेनाओ न अपना जाल बिछा निया।

1898 म अमरीका के तत्कालीन राष्ट्रपति मकेनन न फिलीपीन पर अधिकार जमाने क कारणो का स्पष्टीकरण करत हुए एक भाषण म कहा

मुझे कई रात नींद नहीं आयी और व्हाइट हाउस क कमरो म टहलते हुए मैंन भगवान स प्रार्थना की कि मुझे प्रशास दी। फिर एक रात आशा की किरण दिखाई दी और सीधे भगवान न ही मुझे यह प्रेरणा इस प्रकार दी। प्रभु जानता है कि हमन फिलीपीन को नहीं चाहा। वह तो स्वयं हमारी गोद म भगवान के वरदान के रूप म जाकर गिर पडा है। अब सवाल है कि हम क्या करें? क्याकि

(1) फिलीपीन क लाग स्वतंत्रता के लायक नहीं ह। हम उहे आजादी दे देत है ता उनकी हालत स्पेन की उपनिवेशवादी सरकार से भी बुरी होगी।

(2) अगर हम फिलीपीन को छाड़ दें तो फ्रान्स और जर्मनी उस पर अधिकार कर लेंगे और यह अमरीका क लिए व्यापारिक दृष्टि से हानिकारक होगा क्योंकि फ्रान्स और जर्मनी एशिया म व्यापार के क्षेत्र म प्रतिद्वंद्वी है।

(3) भगवान की इच्छा यही लगती है कि हम पूर फिलीपीन पर कजा कर लें और समूचे का समूचा फिलीपीन अपने शासन म लेकर भगवान के नाम पर ईसाई धर्म को फलावर वहाँ क इमाना का जितना भी हमम हो सके भजा करें। एसी ही प्रभु की इच्छा है।

य मार्मिक शब्द एक भयंकर साम्राज्यवादी अमरीकी प्रसिद्धेण क।

द्वितीय महायुद्ध और एशिया

1940-45 म जर्मन साम्राज्यवादी तथा क बीच जिनम उम समय का जापान भी शामिल है युद्ध हुआ ता भयंकर तबाह्या क परिणामस्वरूप एशिया की औपनिवेशिक जनता का यह जहगाम हा गया कि जापान फ्रान्स जर्मनी और अमरीका की गारी तातिया क नागार्क दवा शक्ति और भगवान क ऊँचे आत्मा क तत्पर नया है। बरमनी अपूर्ण और तुरंत मानस है जर्मन हम। हमनिण उपनिवेशी जनता का भाग्य अपने भविष्य और भाग्य क निर्माण का अधिकार जाना चाहिए। जब जर्मन जर्मन साम्राज्यवादी मनाए जायन म सड़ गये या ता दाता या फ्रान्स न उपनिवेशी जनता का मन्दाग पान की वाणि का भी। एक बार अमरीकी अधिका और यूरोपीय शक्तिया न जित

कि मित्र राष्ट्रों की सेनाएँ कहा जाता था एशिया के लोगों में सैनिक सहायता मांगी तो दूसरी ओर जापान और जर्मनी की सेनाओं में भी समर्थन की मांग की। दोनों ही पक्षा ने इस बात के एलान किये कि वे उपनिवेशों की आजादी के लिए लड़ रहे हैं और यदि वे इसमें सफल हुए तो वे उपनिवेशों को स्वतंत्र कर देंगे।

हवाई द्वीप जो कि उस समय संयुक्त राज्य अमरीका का एक उपनिवेश था, के बन्दरगाह पर हाबर पर जब जापान के बमबारा ने 1941 में हमला किया उस समय उनका दावा यही था कि वे हवाई द्वीप को अमरीकी साम्राज्यवाद से मुक्त कराना चाहते हैं। पश्चिमी साम्राज्यवाद के सबसे बड़े ठेकेदार सर विन्स्टन चर्चिल जो उस समय ब्रिटेन के प्रधान मंत्री थे वे हुकूम पर अगस्त, 1942 में शांति के मसीहा महात्मा गांधी और जवाहरलाल नेहरू आदि भारत के नेताओं का 80,000 से भी अधिक हिंदुस्तानियों के साथ जेल में ठूस दिया गया था। 1942 और 1945 के बीच का यह वह समय था जबकि भारतवासियों ने अंग्रेजी साम्राज्यवाद के खिलाफ आजादी की लड़ाई का आखिरी दौर छेड़ दिया था। यह इतिहास का वह दौर था जबकि इण्डोनेशिया में डा० सुकर्णो व नतृत्व में राष्ट्रीय आंदोलन चल रहा था बर्मा में डॉ० ऊनू अपनी जद्दोजहद जारी रखे हुए थे, नेताजी सुभाषचंद्र बोस ने बर्मा और मलाया के मैदानों में आजाद हिंद फौज और आजाद हिंद सरकार की स्थापना कर दी थी और फिलीपीन की जनता ने अमरीकी साम्राज्यवाद के खिलाफ फिलीपीन गणतंत्र की घोषणा कर ली थी। इधर चीन की विशाल युद्ध भूमि में माओत्स तुंग की अगुआई में जन शक्ति च्यांग काई शेक और जापानी सैनिकों के मुकाबले में लड़ रही थी।

उसी समय वियतनाम के रणभेद में वहाँ के दुग्ध और अजेय सनानी डा० हा ची मिह के नेतृत्व में वहाँ की जन शक्तियाँ ने आजादी का संग्राम साम्राज्यवादी शक्तियों के खिलाफ बड़ी सफलता के साथ कायम रखा हुआ था। द्वितीय महायुद्ध का अंत हाते-हीते हा ची मिह की जन शक्तियों का संगठन और उनका शासन वियतनाम के सभी क्षेत्रों में पूर्णतया कायम हो चुका था।

युद्ध के शुरू में ही जापानी सेनाओं के सामने फ्रान्सीसी सेनाएँ टिक न मरी और उहाँ हथियार डाल लिये थे। अब जब द्वितीय महायुद्ध का अंत होने का था तब ही ची मिह की सेनाओं ने वियतनाम गणराज्य की घोषणा कर ली और 80 वर्ष बाद अपने लक्ष्यों को फ्रान्सीसी और जापानी साम्राज्यवाद से मुक्त तथा स्वतंत्र करा लिया। किंतु इतिहास की यह विडम्बना है कि मित्र राष्ट्रों के प्रतिनिधि एक अंग्रेज बमबर्दर ने जापान द्वारा हथियार डाल देने के समय सैनिक नजरबंदी बर्मा से रिहा किये गए फ्रान्सीसी सैनिकों को हथियार देकर स्वतंत्र एशियाई वियतनाम का शासन फिर से फ्रान्स के हाथों में लिया।

डॉ० हा ची मिह के राष्ट्रीय सनानियों ने जिन्होंने कि जापान को हराया

मित्र-भेनाजा को बहुत बड़ा योग दिया था फ्रांस के द्वारा वियतनाम को अपने अधीन करने के प्रयत्न के विरुद्ध सैनिक कारवाही जारी रखी। जब वियतनाम का मुकाबला जापानी सेनाओं से होकर फिर से फ्रांसीसी सेनाओं के खिलाफ था। लेकिन फ्रांस यूरोप में बुरी तरह मार खा चुका था। न उसके पास बंदूकें थीं न जंगी जहाज थे जिनमें कि वह फ्रांस की धरती से 10 000 मील दूर सेनाएं और हथियार भेजकर वियतनाम की जनता पर फिर से अपना अधिकार जमा सके। ऐसी हालत में वियतनाम की आजादी और फ्रांस की हार एक पूर्व निश्चित वास्तविकता थी। लेकिन वियतनाम की एशियाई जनता की आजादी की लड़ाई का दौर अभी और बाकी था और पश्चिमी साम्राज्यवाद का आखिरी पड़ाव अभी पूरा नहीं हो पाया था। यूरोप के साम्राज्यवादी जहाँ अपने बड़े वापस बुला रहे थे वहाँ अमरीकी साम्राज्यवादियों ने फ्रांस को वियतनाम में जमे रहने और उसके लिए हर सम्भव सैनिक सहायता देने का आश्वासन दिया।

जापान के पतन के बाद जो बड़े-बड़े अमरीकी हथियारों के भण्डार एशिया में मौजूद थे वे सब अब फ्रांस के लिए उपलब्ध हो गए और अमरीका के जंगी जहाजों में भर भरकर फ्रांसीसी सेनाएँ वियतनाम के तटों पर उतरने लगीं। डा० हो ची मिन्ह की घोषणा थी कि 'जनता की आवाज और जन शक्ति को बढ़ी में बढ़ी सेनाएँ भी नहीं कुचल सकती और जब तक वियतनाम की जनता अपनी आजादी के लिए जान देने को तैयार है तब तक फ्रांसीसी और अमरीकी साम्राज्यवादी भी उम हरा नहीं सकेंगे। एशिया के उस महान नेता की यह घोषणा सब मिट्टे हूँ लेकिन इस सच्चाई को साबित करने के लिए वियतनाम की जनता ने जो बलिदान दिया है उसका इतिहास में और कोई उदाहरण नहीं मिलता।

इसी बीच चीन में 1949 में अमरीकी सहायता से कायम छोट और क्रूर जनरल च्यांग काई शक के शासन का पतन हुआ। अमरीका के धर्मार्थ सांगा के च्यांग काई शक के शासन में एक ईमाइधमपरायण सच्चे राष्ट्रभक्त के भाव का एहसास होता था जसकि माओम तुंग की साम्यवादी नीतियों में उह जाधमि कता श्रुता और अमरीका के आधिकारिता की हत्या सिखाई पड़ता थी। इस लिए माओम तुंग का सफरता में अमरीका तथा अमरीकी उद्योगपतिया और अमरीकी पूंजीपतिया का सार एशिया में जपन व्यापारिक शिना का आघात पञ्चन की सम्भावनाएँ सिखाई लीं।

एशिया में यूरोप के साम्राज्यवाद की पराजय का अमरीकना न गतती में पश्चिम के पूंजीवादी शिना की तथा अमरीका की हार समझा। इतिहास के इस माय का व न समझ मक कि वियतनाम की जनता का मध्य आजादी की लड़ाई है और वियतनामियों ने वह लड़ाई स्वयं चान के राजाओं के खिलाफ ही करार

वध तक लड़ी थी। 1946 से 1950 के बीच जबकि हो ची मिन्ह की सेनाएँ फ्रांसीसी सनाओं के दौरे खटटे कर रही थी और अमरीकी बेडो की सहायता स फ्रांस वियतनाम पर दमवारी कर रहा था तब कहने हैं कि हो ची मिन्ह का सलाह दी गयी कि वे चीन की सनिक सहायता स्वीकार कर लें। उनका उत्तर था कि बेचार फ्रांसीसियो का 10,000 मील दूर स आना पडता है कि जबकि चीन हमारा पडोसी है। अगर एक चार चीन के सनिक हमारी धरती पर आ जायें ता फिर उनको निवालना जीर भी कठिन होगा। मैं फ्रांस स लड सकता हूँ लेकिन चीन से लडाई मोल लेना मेरे लिए कठिन है।' हो ची मिन्ह ने कभी भी चीन की सेनाजा को वियतनाम म निमत्तण नही दिया। लेकिन फिर भी अमरीकी सरकार ने अपन सनिक विस्तारवाद को जमल म लात हुए पिछले 20 सालो म यही दावा किया है कि वियतनाम म हा ची मिन्ह चीन क सहायग से साम्यवादी साम्राज्यवाद फलाने की कोशिशें कर रह हैं और चीन की बागडोर मास्को के हाथा म है। उसको रोकना ही 'प्रजातंत्र की रक्षा करने के लिए सबसे जरूरी बात है।

लेकिन फ्रान्स के सनिक वियतनाम की जन शक्ति के सामने बहुत दिन न टिक सके और जो हाल च्याग कई शेक की सेनाआ का हुआ वही फ्रांसीसिया का वियतनाम म हुआ। दानाको ही अमरीकी साम्राज्यवादी सहायता प्राप्त थी। लेकिन जनता का विश्वास व खो चुके थे।

कोरिया युद्ध के समाप्त हाते हात अमरीका क सनिक सगठन म खुलकर हिंद चीन म फ्रान्स की सहायता या बिना सहायता के भी अमरीका की अंतर्राष्ट्रीय साम्यवाद विरोधी नीति और शीतयुद्ध को एशिया म ला खडा किया। वाशिंगटन सरकार ने यह घोषणा की कि वह अंतर्राष्ट्रीय साम्यवाद और सोवियत सघ के बढत हुए प्रभाव को रोकने की हर सम्भव काशिश करेगा। राष्ट्रपति हा ने विवश होकर सयुक्त राज्य अमरीका की आत्मानक नातिया की आलोचना शुरू कर ली। उन्होंने अमरीका पर वियतनाम के स्वातन्त्र्य-युद्ध के खिलाफ हस्तक्षेप का आरोप लगाया और वियतनाम के समाचारपत्रो न और वहा के चिन्तका और लेखको ने फ्राम के स्थान पर वाशिंगटन की आलाचना शुरू कर दी।

दक्षिण अमरीकी देशा म भी अमरीकी हिता के विरुद्ध आन्दोलन चल रहे थे और अमरीका के दक्षिणी तट फ्लोरिडा से कोई 70 मील दूर स्थित क्यूबा मे फिडल कास्त्रा और शे गवारा के नेतृत्व म जन शक्ति सफल हो चुकी थी। वहा के अत्याचारी क्रूर तानाशाह बतिस्ता अमरीकी हथियारो की सहायता के बावजूद जन शक्ति के सामने हार मान बठा था। क्यूबा म जन शक्ति की इस सफलता से अमरीका के शासक म और सनिक सस्थाना म भयकर निराशा छा गयी और वहाँ के लोगो म एक् ऐसी भावना बठ गयी थी कि जैसे चारा ओर से शक्ति की लहरें

उठ रही हैं जोकि अमरीकी पूजीवादी साम्राज्य को लील लगी। अमरीका को काल माकम और लनिन की यह ऐतिहासिक घापणा कि रूस के बाद चीन और चीन क बाद भारत और भारत क बाद सारी दुनिया साम्यवाद के अधीन आ जायेगी सच होती दिखलायी दी।

डलेस और उसके सनिक सलाहकारा ने ऐसी योजनाएँ बनायी जिनस लगता था कि किसी भी समय ततीय महायुद्ध की आग म यह धरती जल उठेगी। यदि हम आज इतिहास क इस विश्लेषण को लिखन के लिए जिदा हैं तो इसका श्रेय सोवियत सघ क तत्कालीन प्रधानमंत्री श्री स्टालिन और श्री जवाहरलाल नेहरू की नीतिया का है। इन नेताआ की दूरदर्शिता ने अमरीका की अदूरदर्शितापूर्ण नीतिया को सफल न होने दिया।

अमरीका क नीतिया ने साचा कि क्यूबा भल ही हाथ स निकल जाय लेकिन अगर वे चीन क खिलाफ वियतनाम म लडत रहें और अड रहें ता इससे दूसर छोटे दशा को इस बात का एहसास हो जायगा कि अमरीका जन फ्रातिया को सफल नही हानेगा। इसीलिए इतने बडे पमाने पर वियतनाम मे जभे रहन की नीति बनायी गयी। लेकिन व इतिहास का यह सबक भूल गये कि जन फ्रातिया अयाय का हटान स घमती है बडी फौजा स नही।

अमरीका की सर्वोच्च राष्ट्रीय सुरक्षा कौंसिल ने 1952 के प्रारम्भ म ही दक्षिण-पूर्व एशिया म अमरीका के उद्देश्य व भावी कारवाई पर एक गुप्त रिपोर्ट म कहा था

(अमरीकी सरकार की) दक्षिण-पूर्व एशियाई नीति का उद्देश्य है 1 स्वतन्त्र विश्व (फ्री वर्ल्ड) को मुण्ड बनाना 2 उस साम्यवाद क भीतरी व बाहरी हमला स मुरमित रचना और 3 दक्षिण-पूर्व एशिया को साम्यवाद की प्रभाव परिधि म जान स रचना। क्याकि किसी भी तरीक स अगर साम्यवाद न दक्षिण पूर्व एशिया पर अधिकार पा निया ता उसस अमरीका की सुरक्षा का भयकर खतरा पना हा जायगा।

(क) दक्षिण-पूर्व एशिया क किमी भी दश पर यदि साम्यवादी आक्रमण का सफलता मिलती है—ता उसस मनावगानित राजनीतिक व जाधिक दुष्प्रभाव हाने। यदि प्रभावशाला दश स साम्यवाद का रोका न गया ता किसी एक दश क पतन म एम शत्रु क अय दश भा साम्यवाद क आग झुक जायेगे या कि उसस संधिपूर्वक रहन का हाड लग जायगा। और किमी एन दश का साम्यवादिता म मिन जान का अर्थ हागा समूच दक्षिण-पूर्व एशिया (बर्मा स्याम हिन्द चीन मय एशिया और फिलिपिना) और भारत का पतन और आग उनकर मध्य पस्चिम एशिया (पाकिस्तान और तुर्की गायक जगवा मिट्ट हा) भा साम्यवादा हा जायगा। और इस ध्यापन रूप म साम्यवाद का आर शकाव का दुष्परिणाम

हागा—यूरोप की स्थिरता और सुरक्षा को खतरा ।

(ख) दक्षिण-पूर्व एशिया में साम्यवाद की स्थापना से प्रशांत महासागर के द्वीपों के समूह पर अमरीकी सत्ता के लिए कठिनाइयाँ उत्पन्न हो जायेंगी । और इससे सुदूरपूर्व में अमरीका के सुरक्षा हितों का गम्भीर खतरा होगा ।

(ग) सामरिक आवश्यकताओं के लिए महत्त्वपूर्ण चीजें तथा पेट्रोल टीन व प्राकृतिक खनिज, दक्षिण-पूर्व एशिया, खासकर मलयेशिया व इण्डोनेशिया में बहुत बड़ी मात्रा में पाया जाता है । वमा और म्यांमर बहुत मात्रा में चावल पैदा करते हैं जो कि मलेशिया, श्रीलंका तथा हांगकांग के लिए जरूरी है, और जापान तथा भारत के लिए भी उसका महत्त्व है और यमव दश 'स्वतन्त्र विश्व' के महत्त्वपूर्ण भाग हैं ।

(घ) दक्षिण-पूर्व एशिया, विशेषकर मलेशिया व इण्डोनेशिया के साम्यवादी हो जाने का अर्थ है कि जापान का साम्यवाद की ओर चुकने से रोकना बहुत मुश्किल हो जायगा ।

4 यदि फ्रांस वियतनाम के विद्रोह को दवान में सफल न हुआ तो हिंद चीन में हालत गिरावट सकती है जिससे समूचे दक्षिण-पूर्व एशिया में खतरों की शुरुआत हो सकती है ।

5 दक्षिण-पूर्व एशिया को गर साम्यवादी तत्त्वों के अधीन रखने के लिए यह जरूरी है कि टावियन की सफलतापूर्वक रक्षा की जाय । लेकिन अगर वर्मा साम्यवादियों के हाथ आ जाता है तो स्याम से होकर आगे बढ़ती हुई उनकी सनाआ से टावियन को बचाना मजबूत दृष्टि से असम्भव हो जायगा ।

भविष्य में कारवाही करने के सुझाव

संयुक्त राज्य अमरीका (सरकार) को करना चाहिए कि वह दक्षिण-पूर्वी एशिया के देशों में

(अ) ऐसे सांस्कृतिक कार्यक्रमों और प्रायोगिक कार्यक्रमों को चलावे जो वहाँ के लोगों को स्थानिक स्वतन्त्र विश्व (पश्चिमी विनियमित देशों) के प्रति बढ़े ।

(ब) ऐसी आर्थिक व तकनीकी सहायता की योजनाएँ बनाये जिससे कि इस क्षेत्र की गर-साम्यवादी सरकारों के हाथ में मजबूत हो ।

(ग) दक्षिण-पूर्व एशिया के देशों का ऐसा प्रोत्साहन दे कि वे आपस में व्यापार में सहयोग बढ़ायें और इन बातों की काशिश की जाय कि इन देशों का बच्चे माल का बहाव 'स्वतन्त्र विश्व' (विनियमित पूँजीवादी देशों) की ओर रहे ।

(घ) अगले दशकों में कम से कम प्रशांत त्रिअंगुलीय व यूजीलण्ड में समझौता कर कि वे सब मिलकर चीन को चेतावनी दें कि अगर उसने दक्षिण पूर्व एशिया पर हमला किया तो उसके परिणाम बुरे होंगे ।

‘दीयाँ वीयाँ फूँ’ का पतन और जेनेवा-सम्मेलन (1950-1954)

जिस प्रकार भारत में स्वतन्त्रता-आन्दोलन को ब्रिटेन उदारवादी विचारका चिन्तका और लेणको का समर्थन प्राप्त था उसी प्रकार फ्रांस के दमनकारी उपनिवेशवाद के विरुद्ध वियतनाम के सभ्य को फ्रांस के उदारवादी चिन्तका लखका और विचारको का पूरा समर्थन मिला। दिनादिन यह माँग जोर पकड़ती चली गयी कि फ्रांस की सरकार वियतनाम की स्वतन्त्रता का मायता दे। लेकिन फ्रांस के कट्टरपथी सनिकवादिया ने आशिक्र पूजीवादी स्वार्थी को बनाये रखन की दष्टि से अपने उदारवादी चिन्तको की अवहेलना करके भी ऐसे आन्दोलन को अराष्ट्रीयतावादी और अराजकतावादी (अराजभक्त) कहकर अपनी सनिकवादी कारवाइयाँ वियतनाम में जारी रखी।

1954 के आते-आते 85 प्रतिशत से भी अधिक फ्रांस के सनिक खच को अमरीका वहन कर रहा था और ऐसा लगता था कि फ्रान्स की सेनाआने वाले हुए वियतमिह के राष्ट्रीय आन्दोलन को सफलता से कुचल दिया है। लेकिन वास्तविकता इसके विपरीत थी। सनिक और राजनीतिक दोनों ही दष्टियो से वियतमिह के पाँव और मजबूती से जमते जा रहे थे और वियतनाम की बहुसंख्यक जनता वियतमिह और उसके नेताजा को सच्चा राष्ट्रभक्त मानकर पूरी शक्ति से तन मन और धन लगाकर वियतमिह की सहायता कर रही थी। हो ची मिह वियतनाम के एकच्छद्र सबलोकप्रिय नेता बन चुके थे। हो ची मिह को वियतनाम का जाज वाशिंगटन कहा जाने लगा और हिंद चीन में उनके प्रति लोगो में वही आदर भाव था जो कि भारत में गांधी नेहरू और सुभाष तीनों को मिलाकर उनके प्रति था। लेकिन इतने आदर का कारण कोई साम्यवादी चाल न थी जसाकि वाशिंगटन की सरकार मानती रही बल्कि हो के नेतृत्व में वियतमिह द्वारा दिये गये शिक्षा भूमि और जन-जीवन में व्यापक सुधार थे। जिन जिन इनामों में,

गाँवा और नेता में वियतमिन्ह का अधिकार होता जाता था वहाँ ये बड़ी तेजी से और दृढ़ता के साथ जन-जीवन, शिक्षा और भूमि सम्बन्धी मुद्दारा का लागू करते जाते थे। फ्रांसीसी उपनिवेश के समय वियतनाम की 80 प्रतिशत जनता भूमिहीन और अल्पसंख्यक जमादारा तथा फ्रांसीसी प्रवासियों की मुहताज थी। वियतमिन्ह के आते ही वह स्वयं अपनी भाग्य विधाता बन जाती थी। इही कारणों से वियतमिन्ह और उनके सफल राष्ट्रीय नेता स्वर्गीय हो चुकी मिन्ह की लोकप्रियता।

जनवरी, 1953 में समुक्त राज्य अमरीका में जनरल आइज़नहावर का नया शासन आया और उनके विदेश मन्त्री श्री डलेम की ओर भी अधिक उग्र नीतियाँ अंतराष्ट्रीय सम्बन्धों में दिखायी दीं। वार्शिंगटन के सैनिक संस्थान खुलकर अमरीकी राष्ट्रपति जनरल आइज़नहावर को इस बात के लिए विवश करने लगे कि वे वियतनाम में और अधिक जोर जोर से युद्ध की भूमिका से काम लें।

जुलाई 27, 1953 को कोरिया में युद्ध विराम संधि पर हस्ताक्षर होने के बाद वियतनाम में अमरीकी सैनिकवाद का मुकाबला करने के लिए साम्यवादी चीनी गणतन्त्र ने भी वियतनाम के राष्ट्रवातियों का सैनिक सहायता देने की नीति अपनायी। सितम्बर 1953 में वार्शिंगटन में इस बात की घोषणा की कि वह फ्रान्स का 385 करोड़ डालर की सैनिक सहायता वियतनाम युद्ध के लिए देगा। वार्शिंगटन के एक सैनिक अधिकारी के अनुसार 1954 के अंत तक अमरीका ने फ्रान्स को हिंद चीन में अपना उपनिवेश बनाए रखने के उद्देश्य में 15 अरब डालर से भी अधिक की सैनिक सहायता दी थी।

लेकिन जितनी बड़ी अमरीकी सैनिक सहायता और पूरे अमरीकी साम्राज्य के सैनिक समर्थन के बावजूद फ्रान्स की अत्याचारी सनाएँ वियतनाम की जनता की सहायता से उठनेवाले वियतमिन्ह छापाकारों के सामने टिक सकी।

मार्च 1954 के आते-आते वियतमिन्ह के सैनिक अत्यंत दृढ़ हो चुके थे कि वे केवल छापाकार युद्ध ही करने की स्थिति में थे बल्कि धुलकर फ्रांसीसी सैनिकों में मुठभेड़ भी करने लग गये थे। दोनों के बीच बड़ी-बड़ी लड़ाइयाँ होने लगी और मई 7 1954 शायद अप्रवृत्त जातियों के स्वतन्त्रता-संग्राम के इतिहास में यह सुनहरा दिन है जबकि 10 000 से अधिक गोर फ्रांसीसी सैनिकों ने वियतमिन्ह के किसानों की मशरूफ सना के आगे हथियार डाले। इतिहास में ऐसी घटना पहली बार हुई जबकि इतने अधिक पश्चिमी सैनिकों ने अमरीकी साम्राज्य के सैनिक संस्थान पटागान के पूरे जन बल और वायुसेना का सहयोग होने हुए भी एक छोटे-से पिछड़े हुए वृषि प्रधान वियतनाम के राष्ट्रीय सैनिकों के सामने आत्म समर्पण किया।

फ्रान्स के कोई ढाई सौ वर्ष के साम्राज्यवादी इतिहास में यह सबसे पहली और

शमनाक शिस्त थी। णसी ही बरारी हारें बाद म प्राग वा अत्जीरिया म मिली और अमरीका का दक्षिण वियतनाम म। इतिहास म इस हार वा दीयाँ वीयाँ फूँ के नाम से पुकारा जाता है। दीयाँ वीयाँ फूँ के पहाड़ी इलाका म फ्रांस व सनिका को जनरल ज्येप के सनिको ने चारा तरफ से घेरकर उनकी नाकेबन्दी करके शिस्त दी थी। पेरिस पर इसका घुरा प्रभाव पडा और श्री बेडाल्त की सरकार का पतन हुआ। मैडस फ्रांस की नयी सरकार ने वहाँ का शासन-सूत्र संभाला। इस सरकार वा दावा था कि वह जल्दी ही वियतनाम म शांति व समझौता करके युद्ध को समाप्त कर देगी।

फ्रांस की जनता शांति के लिए आतुर हो उठी थी। वहाँ के अधिकारिया ने दीयाँ वीयाँ फूँ की हार से यह मान लिया था कि हिट् चीन म समस्या को लडाई से नही सुलझाया जा सकता, उसके लिए कोई राजनीतिक समाधान खोजना होगा। लेकिन वाशिगटन के विदेश मंत्री श्री डलस जोर उनक सनिक और सी० आई० ए० के सलाहकारा ने इतिहास व इस सबक को शिरोघाय करने स इन्कार किया और दुराग्रह के साथ फ्रांस की सरकार वा यह सलाह दी कि वह सनिक बारवाई जारी रखकर वियतनाम म लडाई को अवश्य जीते जोर यदि जरूरी हुआ ता अमरीका चान की सीमा के नजदीक उत्तरी वियतनाम पर परमाणु बम गिराने के लिए तयार रहेगा। लेकिन विषम जनमत और दूसरे सभी प्रगतिशील दल हिरा शिमा जोर नागासाकी तथा कोरिया के भयानक नर सहार को वियतनाम म दोहराने व पक्ष म न थे।

जत जेनेवा म ग्रीटेन जोर सावियत सघ द्वारा मयुक्त रूप स हि द चीन पर एक शांति सम्मेलन जायाजित किया गया। उसम इन दोना के अतिरिक्त 7 और देशा व प्रतिनिधि उपस्थिति थे—सयुक्त राज्य अमरीका गणतंत्र चीन फ्रांस डेमोक्रेटिक रिपब्लिक आफ वियतनाम फ्रांस द्वारा सस्थापित सगगाँव की सरकार (दक्षिणी वियतनाम) कम्बोडिया और लाओस।

युद्ध बिराम और जेनेवा-सम्मेलन व समय युद्ध स्थिति स्पष्ट रूप से वियतमिह की गणतंत्री संनाजा के पक्ष म थी। सत्रहवी समागतरेखा के उत्तर म प्राय सारा ही उत्तरी वियतनाम उनकी प्रभुसत्ता के अधीन था और दक्षिणी भाग वा 40 प्रतिशत से अधिक भाग उनके अधीन था। ऐतिहासिक, सांस्कृतिक और राष्ट्रीय दृष्टि स वियतनाम एक इकाई था और वियतमिह की माँग थी कि वियतनाम को अविभाजित रखा जाये। लेकिन अमरीका व फ्रांस कोरिया की तरह वियतनाम का भी दो भागा मे स्थायी रूप से बाट देने की कोशिश कर रहे थे। शांति बनाये रखने की इच्छा से और कुछ हद तक कोरिया के युद्ध मे हुए नर-सहार से सन्नस्त सावियत सघ के प्रतिनिधि श्री मोनोटोव और चीन के प्रधान मंत्री (तब विदेश मंत्री) श्री चाऊ एन साई क दवाव मे आकर वियतमिह ने देश के अस्थायी

विभाजन वा स्वीकार कर लिया। फ्रांस ने यह मुझाव स्वीकार कर लिया था कि 1956 में एक राष्ट्रीय चुनाव किया जायेगा जिसके फलस्वरूप उत्तरी और दक्षिणी भाग फिर से एक इकाई बन सकते हैं।

जुलाई 20, 1954 का शांति संधि की शर्तों पर हस्ताक्षर करने हिन्दू चीन वं इस युद्धस्थल पर जिसमें वियतनाम, लाओस और कम्बोडिया सम्मिलित हैं, युद्ध विराम श्री घोषणा की गयी। इस ऐतिहासिक संधि की मुख्य मुद्दों द्वारा हैं

1 वियतनाम को दो अस्थायी भागों में मग्नहवी समानान्तर रखा पर वाट दिया जायगा जिसका उत्तरी भाग वियतनामी गणतन्त्र के अधीन होगा और दक्षिणी भाग वियतनाम राज्य होगा जिसके कि अध्यक्ष राजा बाआ दाई होंगे।

2 वियतमिन्ह की सेनाएँ दक्षिणी भाग से हटकर उत्तर में चली जायेंगी और फ्रांस की सेनाएँ उत्तर से दक्षिण में।

(इस धारा में अन्ततः कोई 90 000 वियतमिन्ह जो अधिक सत्या में दक्षिणी भाग में निवासी थे को विवश होकर उत्तर में चले जाना पडा। लेकिन बहुत बड़ी सत्या में वियतमिन्ह छापाकार अपन-अपने गाँवों में ही बन रहे और दक्षिण में छत छोड़कर न गये।)

3 उत्तर और दक्षिण दोनों भागों में जुलाई 20 1956 में पहले-पहले एक अंतर्राष्ट्रीय कमीशन में निरीक्षण में आम चुनाव गुप्त मतदान द्वारा एक ही समय में किया जायेगा और इस अंतर्राष्ट्रीय कमीशन में भारत, कनाडा और पोलैण्ड के प्रतिनिधि होंगे।

4 युद्ध विराम व्यवस्था की देखरेख के लिए एक कंट्रोल कमीशन स्थापित किया जायगा जिसकी अध्यक्षता भारत करेगा।

5 उत्तर और दक्षिणी दोनों ही क्षेत्रों पर कोई भी विदेशी सैनिक अड्डे स्थापित नहीं किया जायेगा और न ही दोनों भाग किसी भी देश से सैनिक गठबन्धा कर सकेंगे।

6 उत्तर और दक्षिणी दोनों ही भाग सैनिक तयारिया न कर सकेंगे और न ही वे शस्त्रास्त्र और सैनिक सामान प्राप्त करेंगे।

7 दोनों ही क्षेत्रों में बदले की भावना से विपक्षी दल अपने विरोधी संगठनों के विरुद्ध कोई कारवाही नहीं करेंगे।

8 उनके नागरिक अधिकार सुरक्षित रहे जायेंगे।

राष्ट्रीय स्वतन्त्रता और मानवीय अधिकारों में महान प्रगति जफरसा 1 टामपेन और अग्राहम लिबन के देश के विदेश मन्त्री डलेस ने जनवा सम्मेलन का बहिष्कार किया और यह एलान किया कि अमेरिका जेनेवा-सम्मेलन में बवल एक प्रेक्षक के रूप में भाग ले रहा है। श्री डलेस का आदेश पर एक छोटे अधिकारी

का प्रेक्षक के रूप में जनेवा सम्मेलन में भेजा गया।

श्री डलेम ने एक एलान में कहा कि उनकी सरकार जेनेवा सम्मेलन के इस संधि पत्र पर हस्ताक्षर करने के लिए तैयार नहीं है लेकिन फिर भी अमरीका इस शांति-संधि की धारा-जा के विरुद्ध सैनिक शक्ति का प्रयोग नहीं करेगा। राष्ट्रपति आइज़नहावर ने भी ऐसा ही एक वक्तव्य में दुनिया को इस बात का आश्वासन दिया था कि उनका दश शांति बनाय रखने का यत्न करेगा और वे इस शांति संधि के खिलाफ कायवाही करने से बचेंगे। लेकिन जख़ारा की स्याही अभी सूखने में नहीं आयी थी कि अमरीका के इस युग के सबसे बड़े ज़रूरदर्शी विदेश मंत्री श्री टेलम ने एक स्पष्टीकरण प्रकाशित किया जिसमें कहा गया था कि शांति बनाय रखने से उनका मतलब यही है कि किसी तरह साम्यवाद का दक्षिण-पूर्व एशिया और दक्षिण पश्चिम के प्रशांत महासागर के क्षेत्र में बढ़ने में रोक जाय। फिर यह आवश्यक नहीं कि उन देशों के निवासी साम्यवाद या समाजवाद के प्रतिवादी शांति और अस्थिर-स्थिति का स्वीकार करते हैं या नहीं। जहाँ तक अमरीका का सम्बन्ध है वह दक्षिण वियतनाम में साम्यवाद की स्थापना नहीं होने देगा फिर चाहे जनेवा संधि की अन्तर्राष्ट्रीय देखरेख में चुनाव कराये उत्तर और दक्षिण का समुक्त यत्न की धारा का ठुकराना ही क्या न पड़े।

राष्ट्रपति आइज़नहावर ने कई वर्षों में अपने सम्मेलन में यह स्वीकार किया है कि उनकी सरकार ने 1956 में दक्षिण वियतनाम में चुनाव इसलिए नहीं होने दिये क्योंकि वाशिंगटन की सरकार का यह स्पष्ट पता था कि हा ची मिन्ह बहुत लोकप्रिय है और उनकी सरकार 80 प्रतिशत से अधिक वोटों से चुनाव जीत सकती थी।

इसमें यह स्पष्ट हो जाता है कि जेनेवा-सम्मेलन के घोषणा-पत्र की धारा-जा का यत्न इमानदारी से पालन किया जाता तो दक्षिण पूर्व एशिया में शांति स्थापित हो सकती थी और यह भी सम्भव था कि इस वक्त हुए नर महार और विध्वंस से वियतनाम का बचाया जा सकता था। इसमें कोई सन्देह नहीं है कि यदि चुनाव होने तो हा ची मिन्ह की जनता अपना नाम चुनती और साम्यवादी राष्ट्रवादी शांति के जनगत एक समुक्त वियतनाम स्थापित हो जाता। लेकिन वह सरकार राष्ट्रवादी होती और यह भी सही है कि वह सावियत संधि और चीन दोनों से इस सम्बन्धिता के मिटाने पर सम्बन्ध कायम रखने की कोशिश करता क्योंकि हा ची मिन्ह का व्यक्तिगत युगान्ताविया के मासल टोटो के समान ही उग्र राष्ट्रवादी और दण्ड था। यह भी सम्भव है कि हा ची मिन्ह वियतनाम को एशिया का स्वयं बना दे। इस बात की भी सम्भावना और जामाए नियायी देनी है कि सावियत संधि और चीन दोनों का एक तटस्थ दक्षिण-पूर्व एशिया का स्वायत्त बनने और उग्र समय की स्थिति में हा ची मिन्ह और श्री जवाहरलाल नेहरू के

आपसी सम्बन्ध भी काफी गहरे थे ।

अमरीका के नेताओं ने बार-बार इस बात की दुहाई दी कि वे दक्षिण-पूर्व एशिया और वियतनाम में चीन की विस्तारवादी आक्रामक नीतियाँ को रोकने के लिए ही लड़ रहे हैं । अमरीका के विदेश मन्त्री ने और रक्षा सेनाध्यक्ष ने अनेक बार ऐसे बक्तव्य दिये कि यदि हम वियतनाम में न लड़ें तो फिर हम चीनी और एशियाई आक्राताओं से कलाफोनिया की गलियों में लड़ना पड़ेगा । इस बात का अर्थ भी एसा कोई प्रमाण नहीं मिलता कि साम्यवादी चीन ने अभी भी इस बात की इच्छा जाहिर की है कि वह दक्षिण-पूर्व एशिया का चीन का एक भाग बनना चाहता है । फिर फरवरी, 1972 के दिनों में जबकि नक्सन ने पीकिंग की यात्रा की और वियतनाम पर अमरीका के हवाईवाजों में भयंकर बमबारियाँ की तब व बमबारियाँ किसको रोकने के लिए की जा रही थी ?

वियतनाम के मानवतावादी राष्ट्रीय नेता श्री हा ची मिह को इस बात में कोई सन्देह नहीं लग रहा था कि फ्रान्स जेनेवा-सन्धि की शर्तों का पालन करेगा । लेकिन उन्हें इस बात का एहसास न था कि डलस और अमरीका इतनी शूरता और अदूरदर्शिता से फ्रान्स द्वारा हारे हुए युद्ध का अमरीका की जीत में बदल देने की हर सम्भव काशिश करेगा ।

1955 में फ्रान्स की सनाएँ दक्षिण वियतनाम से हटने लगीं और जब हो 1956 के चुनावों की आशा नगाय बठे थे अमरीका ने अपने पिछले गठबंधनों से मिलकर एशिया में साम्यवाद के प्रसार को रोकने की दुहाई देकर दक्षिण-पूर्व एशिया सन्धि सगठन (सीटो) की स्थापना की घोषणा कर दी और दक्षिण वियतनाम को इस सगठन का अनियमित सदस्य बना लिया । सीटो एशियाई सैनिक सुरक्षा सन्धि पर 8 सितम्बर, 1954 को 8 देशों ने हस्ताक्षर किये जिनमें समुक्त राज्य अमरीका ब्रिटेन, फ्रांस आस्ट्रेलिया, यूजीलण्ड, स्याम, फिलीपीन और पाकिस्तान थे । इन नामों में यह स्पष्ट है कि 3 को छोड़कर बाकी सभी गरीब जातियाँ के देश थे और इन 3 एशियाई देशों—स्याम, फिलीपीन और पाकिस्तान में भी लोकप्रिय सरकारें नहीं थीं । अतः एस सैनिक सगठन को एशिया के स्वातन्त्र्य प्रिय देशों को और जनता का समर्थन प्राप्त नहीं हो सकता था । सीटो घोषणापत्र में यह कहा गया था कि इस सैनिक सगठन का उद्देश्य है बाहरी आक्रमणों और आन्तरिक तोड़ फोड़ (विद्रोह) की कारवाइयों का विरोध करना । स्पष्ट रूप से इसका उद्देश्य यह था कि कल्पनाजय चीन के विस्तारवाद का रोकना और साथ ही यदि इस बात की सम्भावना है कि कहीं पर साम्यवादी शक्तियाँ स्थानीय जनता के सहयोग से चुनाव द्वारा भी शासन-सत्ता में आ सकती हैं तो उसको भी सैनिक कारवाइयों द्वारा रोका जा सके । उस समय राष्ट्रपति आल्बर्ट लुवर ने पाकिस्तान को सीटो के अधीन दिये गये शस्त्रास्त्रों की सफाई देने हुए यह

जायमान किया था कि उसका दी गयी सैनिक सहायता का उद्देश्य केवल साम्यवादी चीन व खिलाफ उसकी रक्षा करना है। लेकिन भारत की जनता इस बात से परिचित है कि पाकिस्तान न इन्ही शस्त्रास्त्रों के बल पर साहस बटारा और भारत पर हमला करने का दुस्साहस किया।

जेनेवा-संधि की धाराओं में उत्तर और दक्षिण दोनों ही भागों का आरम्भवाडिया और लाओस का भी किसी भी सैनिक संगठन में शामिल होने से मना किया गया था। इसलिए कम्बोडिया, लाओस और दक्षिण वियतनाम से सीटों की सम्मति पर हस्ताक्षर तो नहीं कराये गये लेकिन एक नयी बात चली गयी। सीटों संधि की एक धारा में यह बात जोड़ दी गयी कि उसका उद्देश्य विशेष रूप से कम्बोडिया लाओस और दक्षिण वियतनाम की रक्षा करना है। वास्तव में सच यह है कि डलेस और वाशिंगटन इस प्रोटोकॉल के द्वारा बंधनित छूट पाया जायत से नाकि अमरीका के प्रतिद्वन्द्वित हिन्दू चीन के क्षेत्र में मनचाहा हस्तक्षेप कर सकें। और अमरीका की सरकार इस बात पर आमादा था कि वह उत्तर और दक्षिण की एकता न होने दे क्योंकि उसका अर्थ यह होता कि माक्सवादी समर्थक क्विथिया वियतनाम पर शासन करना। इसलिए जेनेवा सम्मेलन की घोषणा के तुरन्त बाद पेंटागन की इच्छाओं का पूरा करने के लिए प्रजातन्त्रीय अमरीका की सरकार ने वियतनाम, कम्बोडिया और लाओस की इच्छाओं और वहाँ की राष्ट्रीय प्रजातान्त्रिक शक्तियों की बलि चढ़ा दी।

वियतनाम के प्रजातन्त्रीय गणतन्त्र ने सीटों सैनिक संगठन का विरोध किया और इस जनवा-संधि की अवहेलना और वियतनाम की आजादी पर कुठाराघात बनाया। लेकिन अमरीकी विदेश मंत्री डलेस ने इस प्रजातन्त्रवादी की रक्षा का सूत्र और दक्षिण-पूर्व एशिया के 'मनरो मिडान' में इगवा तुलना की। मनरो मिडान अमरीकी इतिहास का वह काला पृष्ठ है जबकि 1812 के जासपास तत्कालीन अमरीकी राष्ट्रपति मनरो ने दक्षिण अमरीका तथा प्रजातन्त्रवादी प्रभाव क्षेत्र कहकर किसी भी दूसरी यूरोपीय शक्ति का इन क्षेत्रों में अगले अड्डे या राजनातिक और आर्थिक केंद्र कायम न करने इन की घोषणा की थी। इस अमरीका साम्राज्यवादी मिडान का मनरो डॉक्ट्रिन या मनरो मिडान कहा जाता है।

भारत के तत्कालीन प्रधानमंत्री श्री जवाहरलाल नेहरू ने जो एशिया के क्षेत्र में अन्वेषण और एशियाई देशों के आपसी सहयोग और एकता के हामी थे उनका सम्मेलन का कार्यक्रम में बड़ी स्थिति बनायी। श्री नेहरू का इनमें जो आशयक अन्वेषणात्मक और सुदृष्टिपूर्ण नीति में बल प्रदान किया। उद्देश्य मीमांसा के अन्तिम मकसद की घोषणा पर प्रान्त प्रतिनिधियों द्वारा करण दृढ़ बनाया कि मुम्बई और पानि के नाम पर मुम्बई एशियाई एशिया तथा अन्वेषण

में सैनिक गुटबन्दी करके शांति का खतरा म डाला जा रहा है। 'इस प्रकार के सैनिक गठबन्धन करने जेनेवा सम्मेलन के परिणामस्वरूप जिस शांति की आशा बँधी थी उसकी नींव पर ही कुठाराघात कर दिया गया है। उन्होंने इस पर दुःख प्रकट करते हुए कहा था कि जेनेवा-सन्धि द्वारा युद्धरत विराधी तत्त्वों में सहअस्तित्व स्थापित करने का यत्न किया गया है। सीटों का आधार उसी सहअस्तित्व का समाप्त करना है। और इसलिए यह बड़े दुःख की बात है कि दक्षिण-पूर्व एशिया के इस सन्नस्त क्षेत्र में अमरीका ने गम और शीत युद्ध के जहर के बीज बो दिए हैं।

• •

हिन्द चीन में सी० आई० ए० और ए० आई० डी० की हरकतें

अमरीका की दक्षिण पूर्व एशियाई नीति के लक्ष्य हैं (1) स्वतंत्र विश्व (फ्री वर्ल्ड) को मजबूत बनाना (2) उसे साम्यवाद व भीतरी व बाहरी हमले से सुरक्षित रखना, (3) दक्षिण पूर्व एशिया को साम्यवाद की प्रभाव परिधि में जाने से रोकना।

दक्षिण पूर्व एशिया में उक्त लक्ष्यों की पूर्ति के लिए की जाने वाली गुप्त व जासूसी हरकतों को यथोचित रूप से बढ़ावा दिया जाना चाहिए।

—अमरीकी राष्ट्रीय सुरक्षा कौंसिल द्वारा
1952 में दिये गये गुप्त मुद्राव।

अमरीका की सहायता के बिना 1955-56 में डियेम दक्षिण वियतनाम पर अपना कब्जा नहीं जमा सकता था।

दक्षिण वियतनाम वास्तव में अमरीका ने पदा किया है।

—पेंटागन के एक विशेषज्ञ का मत
पेंटागन पपर्स प० 25

मई 1954 में जनवा-मधि व जनमत वियतनाम कम्बोडिया और लाओस व क्षत्रा का विसा भी सैनिक संगठन में शामिल न हान और उन्हें सैनिक सहायता न देने की शर्त रखी गयी थी जिसका उद्देश्य यह था कि इस देश में हाल ही में स्वतंत्र रूप से जागृत हुए जागृत की हाड शुरू न हो जाय और धीरे धीरे शांतिमय स्थिति कायम की जा सके। यहां बात भारत और पाकिस्तान व बीच भी तथा दूसरे एशियाई देशों व आपसी सम्बन्धों व बार में पण्डित नहरू का पंचशील नीति व जनमत महत्त्व की भावना का आधार थी। किन्तु जनवा-मधि सरकार ने जनवा-मन्मथन का भावना का उल्लंघन करने का निश्चय किया ता

उसकी बाहरी शक्ति का बेहतर प्रभाव से बचने के लिए अमरीका ने सी० आई० ए० (सेंट्रल इण्टेलिजेंस एजेंसी) अर्थात् अमरीका के अन्तराष्ट्रीय गुप्तचर संगठन का इस्तेमाल किया।

अमरीका सरकार को दक्षिणी वियतनाम में अल्पसंख्यक 15 प्रतिशत में भी कम लोपा का समर्थन प्राप्त हुआ है। इन अल्पसंख्यकों में अधिकांश सख्त ईसाइयों की हैं और रईस जमींदारों की जिनके परिवारों में अधिकतर व्यक्ति फ्रांसीसी व्यापारी कम्पनियाँ या फिर फ्रांसीसी उपनिवेशों के उपनिवेशवादी जैविक संरक्षकों पर और फ्रांस की सैन्य में उच्च पदों पर हैं। ऐसी ही एक व्यक्ति रईम परिवार में एक व्यक्ति का डिप्टी डायरेक्टर अमरीका के गुप्तचर विभाग में सगाँव पर धोपन का फसला किया। और उम उमने साधियों का वार्षिक गणना में बुनावर विज्ञान मलाह दी गयी और उसकी सरकार स्थापित करने और राजनीतिक ताकत बनाने और वापस रखने के लिए वार्षिक गणना में उसकी रूप रखाएँ तैयार की गयी। धन, सैन्य और मनाहवारों की बड़ी सहायता के साथ डियम का बाओ दाई का सलाहकार और प्रधानमन्त्री बनाने सगाँव भजा गया।

बाओ दाई के मजबूत व्यक्ति के व्यक्ति के विरुद्ध फिर भी राजवश का खून उनकी रण में बहने के कारण वियतनाम की आजादी के प्रति उनकी लगाव था। अतः इतिहास के इस मोड़ पर बाओ दाई ने ही ची मिन्ह को वियतनाम का एक मात्र नेता स्वीकार कर लिया और ही मिन्ह की सरकार ने देश की एकात्मता बनाए रखने के उद्देश्य से राजा बाओ दाई को संयुक्त वियतनाम का उपराष्ट्रपति का पद देना स्वीकारा। फलस्वरूप बाओ दाई दक्षिणी क्षेत्र को भी उत्तरी वियतनाम में मिलाने के लिए तैयार हो गया। ऐसी स्थिति में बलेस और उसके पिछलग्गुओं ने डियम को इस बात की सलाह दी कि इस समय यही उचित होगा कि बाओ दाई का पदच्युत कर दिया जाये।

डियम ने बाओ दाई को हटाकर स्वयं को सगोन की सरकार का राष्ट्रपति घोषित कर दिया। अब सवाल यह था कि डियम जिसका वियतनाम की जनता ने नाम भी न सुना था शासन कैसे कायम रखा जाये? गस्तापो की तरह के सशक्त दमनकारियों को ड्रैड करने के लिए अमरीका द्वारा एक सलाहकार टीम भजी गयी। डियम की सरकार को वापस रखने के लिए यह जरूरी था कि आधुनिक हथियारों को चलाने में सुदक्ष लोग उसके सहायक हों। फिर यह सरकार जो कि लोकप्रिय न थी, केवल दमन के आधार पर ही टिक सकती थी। अतएव वार्षिक गणना में एक नयी योजना तैयार की गयी जिसमें अंततः एक विश्व विद्यालय मिशिगन स्टेट यूनिवर्सिटी में एक नया विभाग खोला गया जिसका नाम 'अन्तराष्ट्रीय केन्द्र' रखा गया। इस विभाग के अधीन वियतनाम में शिक्षा के कार्यों को बढ़ावा देने के लिए वार्षिक गणना की सरकार ने आर्थिक सहायता देने का

बचन दिया। सरकार की इस आर्थिक सहायता के द्वारा शिक्षा सामग्री, शिक्षक तथा ऊँच सलाहकार संगान जान लग।

डियम का एक निजी सलाहकार मिशिगन स्टेट यूनिवर्सिटी का राजनीति के प्राफेसर श्री फिशल थे। कई वर्षों के बाद इस बात का रहस्य खुला कि विश्व विद्यालय की शिक्षा सहायता के अंतगत वास्तव में गुप्तचर विभाग का सदस्य को प्राफेसरा का बाना पहनाकर संगान भेजा गया था और उन वक्ता पर जिन पर कि शिक्षा सम्बन्धी सामग्री, पुस्तकें जादि लिखा था वास्तव में शस्त्रास्त्र थे। जिन शिक्षा को भेजा गया था वे वास्तव में शिक्षक न थे बल्कि खुफिया पुलिस के आदमी तथा सनिक् सलाहकार थे।

इस विश्वविद्यालय के तत्कालीन उपकुलपति का नाम था श्रीजान हना। यह एक विशेष उल्लेखनीय बात है कि बापू म 1969 में जान हना की ए० आई० डी० अर्थात् एजेन्सी आफ इटरनशनल डिवेलपमट यानी अंतर्राष्ट्रीय विकास संगठन का डायरेक्टर बनाया गया। वार्शिंगटन पोस्ट (दैनिक) के सामवार 8 जून 1970 के अंक में प्रकाशित एक लेख के अनुसार जान हना ने एक मुलाकात में यह स्वीकार किया था कि 10 वर्षों में अधिक ए० आई० डी० सस्था ने लाओस और हिंद चीन के क्षेत्र में सी० आई० ए० की कारवाइया में हिस्सा लिया है। उन्होंने कहा कि अमरीका के राष्ट्रीय हिता के लिए यह आवश्यक था कि लाओस में सी० आई० ए० की कारवाइया जारी रहे और चूकि यह किसी अन्य रूप में सम्भव नहीं हो सकता था अतएव हमने अन्तर्राष्ट्रीय विकास संगठन की सहायता ली और बमबारियाँ जालसाजी गुप्तचरी और तोड़ फोड़ आदि सभी काम किये गये। इन सबकी ट्रेनिंग लाओम में ए० आई० डी० के कायककर्ताओं ने दी जा वास्तव में सी० आई० ए० के सदस्य थे।

अमरीकी गुप्तचर सस्था का द्वारा वार्शिंगटन की सरकार ने अमरीकी शिक्षा सस्थाओं के सहायक में संगान में डिप्टेटर डियम का 15 000 से अधिक खुफिया पुलिस का शस्त्रास्त्रा से सुमज्जित करके दमन कारवाइया की ट्रेनिंग देने में सहायता दी। ए० आई० डी० के वर्तमान डायरेक्टर हना 1955 में मिशिगन स्टेट यूनिवर्सिटी का प्रेसिडेंट (वाइस चान्सेलर) थे और उन्होंने सरकारी आदेशों पर वार्शिंगटन में साठगाँठ करके हिन्द चीन में हस्तक्षेप की इस व्यापक योजना का क्रियान्वित किया था। अमरीकी सरकार ने उम समय बरोनो हालरा की गुप्त सैनिक जामूनी और अमनकारी महायना संगान का सरकार का इस विश्वविद्यालय और सी० आई० ए० के द्वारा पढ़ाया था। इसी महायना के बन्तून पर आग बनकर डियम ने अर्थात् वियतनाम के स्वातन्त्र्य-आन्दोलन का बुचनन का उद्देश्य में वहाँ का बुध्दमय्य बौद्ध जनता का प्रजानान्त्रिक माँग का क्रूरता का साथ टुरराया था। इस डिप्टेटर का नीतियाँ जनता में इतनी अनाश्रिय हैं खुशी थी कि अन्त

शासन का वायम रखने के लिए डियेम न नजरवादी कम्युनिज्म कायम रिया जिनम पाँच लाख म अधिक लोगो को बिना मुरतमे चनाथ ठूस रिया गया । इन नजर रन्नी कम्युनिज्म म वियतनाम के उठ प्रभावणानी लेखन चित्तप, वीठ भिणु तथा विद्याथिया के नेता भी थे ।

आग चलकर जय डियेम की नीतियाँ और उनका दमन चक्र बहून उग्र हुआ तो सर्गाव के सनिक कम म भी उनके प्रति अशांति और हाहाकार मच गया । फन्स्वरूप अमरीका के तत्कालीन उदारवादी प्रेसिडेण्ट श्री कनेडी न डियेम का अपनी दमनकारी नीति म परिवतन करन का आणेश दिया । यह भी कहा जाता है कि डियेम अमरीकी खगुल स दक्षिण वियतनाम का उत्तर वियतनाम म मिला देने की तयारियाँ करन लगे थे । पूरी सच्चाई अभी भी उपलब्ध नहीं है किन्तु इस बात के प्रमाण मौजूद हैं कि डियेम के जुल्मा से जनता ऊब चुकी थी और नये अमरीकी राष्ट्रपति कनेडी उसका और अधिक समय तक सर्गाव का डिक्टेटर बने रहना नहीं देना चाहते थे । फन्स्वरूप सी० आई० ए० ने डियेम की हत्या करवा दी और एव नये सनिक डिक्टेटर को सर्गाव का शासक बनवाया ।

लाओस म सी० आई० ए० की हरकतें सी० आई० डी० के वेश में छुप रही और 1969 और 1970 म जाकर अमरीकी सरकार न खुले रूप म स्वीकार किया कि 10 वर्षों स अधिक स वह लाओस म हस्तक्षेप करती था । कम्बोडिया के उदारवादी तटस्थ शासक थे लोकप्रिय राष्ट्रपति सिहानुक था वही कुशलता के साथ अमरीकी हस्तक्षेप और चीन की मध्य दृष्टि म दखल देना कम्बोडिया को श्री महत्त्व की नीति के अनुकूल महत्त्व अस्तित्व और तटस्थ रखन की कोशिश कर रहे थे । लेकिन वाशिंगटन के सनिक सगठन का तटस्थता की नीति नापसंद थी । अतः 1968 और 1969 के बीच अमरीकी सरकार ने श्री सिहानुक की लोकप्रिय सरकार का तखला उखाड़ा और हटा दिया ।

कुछ ही दिना बाद 1969 के एक दिन, दुनिया का इस बात का अर्थ सिद्ध कि कम्बोडिया के सनिक अधिकागिया ने श्री सिहानुक का हटा देना ठीक था । उन दिना श्री सिहानुक सोवियत संघ की सरकारी यात्रा पर थे और चीन के दौरे पर जानवाते थे । एक आरता वाशिंगटन का अर्थ सिद्ध था कि वह वियतनाम म युद्ध-बढ़ा करना चाहती है और चीन को हटा लेन का आरादा रखती है और दूसरी ओर लाओस और कम्बोडिया को पनामी क्षेत्रा म भी सी० आई० ए० द्वारा पडयत्त और सरकार का हस्तक्षेप करवायी गयी । इस बीच कम्बोडिया के सनिक शासन के हाथ म दखल देन के लिए अमरीकी सनिक और हवाबाजो की सहायता से घुमरा करन के पमान पर सनिक हरकतें शुरू कर दी गयी । इस प्रकार इतिहास का एक नया अध्याय शुरू हुआ ।

सिमटने के बजाय और दूसरे इलाका में आग फैलानेवाली साबित हुई। अमरीका ने कम्बोडिया की छोटी-सी सुरक्षा सना को 80,000 से बढ़ाकर अब 2 50,000 कर दिया है और इतने छूटे से देश पर इतनी बड़ी फौज का भार वह अभी तो स्वयं उठा रहा है। इस प्रकार जनरल लोन को नोमपेन पर थोपकर अब कम्बोडिया को भी एक सैनिक समस्या बना दिया गया है। आर्थिक विकास के स्थान पर अब कम्बोडिया में भी सैनिक तयारी चल रही है।

इस प्रकार की घड़यत्नकारी जामूसी हरकतों का एक विशाल जाल-भा विद्यमान हुआ है जिसमें अमरीका के बड़े-बड़े विश्वविद्यालय और वहाँ के सुप्रसिद्ध फाउंडेशनों का भी हाथ माना जाता है। पिछले 25 वर्षों के अन्दर वहाँ के प्रमुख 12 विश्वविद्यालयों में से 11 में अंतर्राष्ट्रीय अध्ययन के केंद्रों और विभाग खोल गये हैं। जिनका ज्यादातर खर्च अमरीकी रक्षा विभाग तथा फोड फाउंडेशन देता है। उनमें कालम्बो, शिकागो, बकल लास एजलिस, कोरनेल हावर्ड इंडियाना मसीच्यूटस इन्स्टीट्यूट आफ टेक्नोलॉजी मिशिगन स्टेट यूनिवर्सिटी और विस्कॉन्सिन विश्वविद्यालयों के नाम प्रमुख हैं। इन विश्वविद्यालयों में एशिया अफ्रीका और लैटिन अमरीका तथा साम्यवादी देशों के अध्ययन की विशेष सुविधा उपलब्ध की गयी और इनके कोई 95 विभाग खोले गये। इनमें से फोड फाउंडेशन 83 विभागों को आर्थिक सहायता प्रदान करता है कारनगी फाउंडेशन 5 को और ए० आई० डी० 2 का।

शायद सबसे पुराना अंतर्राष्ट्रीय अध्ययन केंद्र कोलम्बिया यूनिवर्सिटी में 1946 में खोला गया था जो कि द्वितीय महायुद्ध के समय के सैनिक स्कूल का नया रूप था। इस यूनिवर्सिटी ने 1960 में एक पुस्तिका प्रकाशित की जिसमें बताया गया था कि कोलम्बिया यूनिवर्सिटी के अंतर्राष्ट्रीय अध्ययन संस्थान से शिक्षा प्राप्त लोगों के लिए जिन बड़ी बनी संस्थाओं में नौकरियां मिलती हैं उनमें प्रमुख हैं सी० आई० ए० यू० एस० आई० एस० अमरीका के विदेश स्थित दूतावास सूचना विभाग ए० आई० डी० वहाँ की केंद्रीय सरकार का विदेश मंत्रालय अमरीकी तेल कम्पनियां तथा अमरीका के बड़े-बड़े बैंक जिनका अंतर्राष्ट्रीय आर्थिक क्षेत्रों में जाल विद्यमान है।

इन शिक्षा केंद्रों के डेढ़ा प्रायः ऐसे लोग हैं जो कि अमरीका के सेना विभाग में या उसके गुप्तचर विभाग में काम कर चुके हैं। विद्यार्थियों को सी० आई० ए० द्वारा छात्रवृत्तियां दी जाती हैं। स्वयं इस लेखक का अनन्व ऐसे विद्यार्थियों से मिलने का अवसर मिला है जो कि सी० आई० ए० के पास से कोलम्बिया और दूसरे विश्वविद्यालयों में चीन भारत तथा अन्य एशियाई तथा दक्षिण अमरीकी विकासशील देशों के आंतरिक मामलों पर पी एच० डी० की उपाधियां प्राप्त कर रहे थे। वहाँ के कारनगी, रामफेल्डर

और फोड आदि फाउंडेशनो की आर्थिक सहायता से अमरीकी साम्राज्य के विस्तार में किस प्रकार शिक्षा-संस्थाएँ अपना योग देती हैं, इस पर हाल ही में वहाँ के प्रगतिशील विद्यार्थियों द्वारा की गयी कारवाही के फलस्वरूप जो दस्तावेज उपलब्ध हुए हैं उनसे यह स्पष्ट हो जाता है कि मध्य एशिया, अफ्रीका दक्षिण अमरीका और दक्षिण-पूर्व एशिया के देशों में समाजवादी और प्रगतिशील विचारों को दबाये रखने और अमरीकी प्रभाव को बढ़ाने में सहायता देने के उद्देश्य से बाहरी दृष्टि से ऊँचे-ऊँचे शीपक देकर गुप्त काय किये जाते हैं। हावर्ड विश्वविद्यालय के प्रगतिशील विद्यार्थियों के हाथ एक दस्तावेज लगा जिसमें कहा गया था कि हावर्ड विश्वविद्यालय के अन्तर्राष्ट्रीय केन्द्र का उद्देश्य था कि अमरीकी शिक्षण संस्थाएँ ऐसे शोधकाय करें जिससे कि सरकार के हाथ मजबूत हो और रिसर्च स्कॉलर को तीन चार महीने के भीतर भीतर इस बात की टैनिंग दी जा सके कि वे किस प्रकार साम्यवादी देशों की 'लोह की दीवार' का भेदकर वहाँ की जनता में अमरीकी विचारों को फला सकते हैं।

जबकि वे लोग जो बाद में वाशिंगटन में सरकार के विदेश विभाग के सलाहकार बन प्रो० रस्तोव डा० हजरी किंसिगर जिनके नामों से भारत की जनता बंगला देश के युद्ध के समय अमरीकी हस्तक्षेप के कारण सुपरिचित हो चुकी है अन्तर्राष्ट्रीय अध्ययन केन्द्रों से ही निकले थे और उनके संस्थापक रहे हैं। श्री किंसिगर हावर्ड विश्वविद्यालय के सहयोगी डायरेक्टर रहे हैं और डीन रस्क 'राफेलर फाउंडेशन' के डायरेक्टर थे। स्वयं जॉन फास्टर डेलेस पहले इसी फाउंडेशन के डायरेक्टर थे और बाद में जाकर वह विदेश मंत्रालय के सचिव बने। इसी प्रकार जेम्स ए० पकिन्ज का कारनामा कारपोरेशन के अधिकारियों में थे वहाँ में कारनेल यूनिवर्सिटी के अध्यक्ष और चेस मेनहैटेन अन्तर्राष्ट्रीय बैंक के डायरेक्टर बना दिये गए। इस प्रकार अमरीका के शिक्षा संस्थानों के अन्तर्राष्ट्रीय केन्द्र और विश्वविद्यालयों के प्रभावशाली व्यक्तियों सी० आई० ए० ए० आई० डी० और विदेश मंत्रालय तथा सैनिक संस्थानों, पेंटागन और वहाँ की अन्तर्राष्ट्रीय तेल कम्पनियों तथा बड़े-बड़े कारपोरेशनों के बीच आपसी मिलीभगत रही है और इस तरह से यह बहना कि वहाँ की शिक्षा संस्थाएँ स्वतंत्र रूप से अनुसंधान का काम कर पाती हैं कठिन है। उदाहरण के लिए विलियम बडी सी० आई० ए० में थे और उनके भाई मेग जॉन बडी फोड फाउंडेशन के अध्यक्ष। इसी प्रकार श्री घडवानस मिल पतरे जा 1949 तक गुप्तचर विभाग और सी० आई० ए० में प्रमुख थे बाद में राफेलर फाउंडेशन में रहे और एक दूसरे श्री रिचर्ड विम्सल जिन्होंने क्यूबा पर जानमण की योजना तयार की थी उनके बहनोई। कोन्सिग्रा व रूसी अध्ययन केन्द्र के प्रमुख पहले फोड फाउंडेशन में रहे और उसके बाद सी० आई० ए० में। यह हम पहले बता चुके हैं कि रस्तोव और किंसिगर इन्हीं श्रेणियों में हैं

मिमटने के वजाय और दूसरे इलाको में आग फलानेवाली साबित हुई। अमरीका ने कम्बोडिया की छोटी सी सुरक्षा सेना को 80,000 से बढ़ाकर अब 2 50 000 कर दिया है और इतने छोटे से देश पर इतनी बड़ी फौज का भार वह अभी तो स्वयं उठा रहा है। इस प्रकार जनरल लोन को 'नोमपेन' पर थोपकर अब कम्बोडिया को भी एक सैनिक समस्या बना दिया गया है। आर्थिक विकास के स्थान पर अब कम्बोडिया में भी सैनिक तयारी चल रही है।

इस प्रकार की पड़यत्नकारी जासूसी हरकतों का एक विशाल जाल-सा विद्युत् हुआ है जिसमें अमरीका के बड़े-बड़े विश्वविद्यालय और वहाँ के सुप्रसिद्ध फाउंडेशनों का भी हाथ माना जाता है। पिछले 25 वर्षों में अन्दर वहाँ के प्रमुख 12 विश्वविद्यालयों में से 11 में अन्तर्राष्ट्रीय अध्ययन के केंद्र और विभाग खोले गये हैं। जिनका ज्यादातर खर्च अमरीकी रक्षा विभाग तथा 'फोड फाउंडेशन' देता है। उनमें कोलम्बो शिकागो, बकले लास एंजलिस, कोरनेल हावर्ड इंडियाना मसीच्यूटस इन्स्टीट्यूट ऑफ टेक्नोलॉजी मिशिगन स्टेट यूनिवर्सिटी और विस्कासिन विश्वविद्यालयों के नाम प्रमुख हैं। इन विश्वविद्यालयों में एशिया अफ्रीका और लैटिन अमरीका तथा साम्यवादी देशों के अध्ययन की विशेष सुविधा उपलब्ध की गयी और इनके कोई 95 विभाग खोले गये। इनमें से फोड फाउंडेशन 83 विभागों को आर्थिक सहायता प्रदान करता है कारनेगी फाउंडेशन 5 को और ए० आई० डी० 2 को।

शायद सबसे पुराना 'अन्तर्राष्ट्रीय अध्ययन केंद्र' कालम्बिया यूनिवर्सिटी में 1946 में खोला गया था जो कि द्वितीय महायुद्ध के समय के सैनिक स्कूल का नया रूप था। इस यूनिवर्सिटी ने 1960 में एक पुस्तिका प्रकाशित की जिसमें बताया गया था कि कालम्बिया यूनिवर्सिटी के अन्तर्राष्ट्रीय अध्ययन संस्थान से शिक्षा प्राप्त लोगों के लिए जिन बड़ी बड़ी संस्थाओं में नौकरियां मिलती हैं उनमें प्रमुख हैं सी० आई० ए० यू० एम० आई० एस० अमरीका के विदेश स्थित दूतावास सूचना विभाग ए० आई० डी० वहाँ की केंद्रीय सरकार का विदेश मंत्रालय अमरीकी तेल कम्पनियां तथा अमरीका के बड़े बड़े बैंक जिनका अन्तर्राष्ट्रीय आर्थिक क्षेत्रों में जाल विद्युत् है।

इन शिक्षा केंद्रों के इंचार्ज प्रायः ऐसे लोग हैं जो कि अमरीका के सेना विभाग में या उसके गुप्तचर विभाग में काम कर चुके हों। विद्यार्थियों को सी० आई० ए० द्वारा छात्रवृत्तियां दी जाती हैं। स्वयं इस लखव को जनेव ऐम विद्यालयों में मिलान का अवसर मिला है जो कि सी० आई० ए० के पास से कोलम्बिया और दूसरे विश्वविद्यालयों में चीन, भारत तथा अन्य एशियाई तथा दक्षिण अमरीकी विकासशील देशों के आंतरिक मामलों पर पी० एच० डी० की उपाधियां प्राप्त कर रहे थे। वहाँ के कारनेगी, राउफ्लर

और फोड आदि फाउंडेशन की आर्थिक महायता में अमरीकी साम्राज्य के विस्तार में किस प्रकार शिक्षा-संस्थाएँ अपना योग देती हैं इस पर हान ही में वहाँ के प्रगतिशील विद्यार्थियों द्वारा की गयी कारवाई के फलस्वरूप जास्तावेज उपलब्ध हुए हैं उनसे यह स्पष्ट हो जाता है कि मध्य एशिया, अफ्रीका, दक्षिण अमरीका और दक्षिण-पूर्व एशिया के देशों में समाजवादी और प्रगतिशील विचारों को दबाये रखने और अमरीकी प्रभाव का बढाने में सहायता देना व उद्देश्य में बाहरी दृष्टि से ऊँचे ऊँचे शीपक देकर गुप्त काय किये जाते हैं। हावर्ड विश्वविद्यालय के प्रगतिशील विद्यार्थियों के हाथ एक दस्तावेज लगा जिसमें कहा गया था कि हावर्ड विश्वविद्यालय व अंतर्राष्ट्रीय केन्द्र का उद्देश्य था कि अमरीकी शिक्षण संस्थाएँ ऐसे शोधकाय करें जिससे कि सरकार के हाथ मजबूत हो और रिमच स्थापना का तीन चार महीने के भीतर भीतर इस बात की ट्रेनिंग दी जा सके कि वे किस प्रकार साम्यवादी देशों की 'लोहे की दीवार' का भेदकर वहाँ की जनता में अमरीकी विचारों को फला सकते हैं।

जबकि वे लोग जो बाद में वाशिंगटन में सरकार के विदेश विभाग के मलाहकार बन, प्रो० रस्तोव डॉ० हनरी किंसिगर जिनके नामों में भारत की जनता बंगला देश के युद्ध के समय अमरीकी हस्तगतता के कारण सुपरिचित हो चुकी है, अंतर्राष्ट्रीय अध्ययन केन्द्रों से ही निकले थे और उनके संस्थापक रहे हैं। श्री किंसिगर हावर्ड विश्वविद्यालय के सहयोगी डायरेक्टर रहे हैं और हीन रम्ब 'राफेल्स फाउंडेशन के डायरेक्टर थे। स्वयं जान फास्टर डलेम पहले इसी फाउंडेशन के डायरेक्टर थे और बाद में जाकर वह विदेश मंत्रालय के सचिव बने। इसी प्रकार जेम्स ए० पर्किंसन का कारनेगी कारपोरेशन के अधिकाधिकारी में वे बाद में कारनेल यूनिवर्सिटी के अध्यक्ष और चेम मेनहैटेन अंतर्राष्ट्रीय बैंक के डायरेक्टर बना दिये गये। इस प्रकार अमरीका के शिक्षा संस्थानों के अंतर्राष्ट्रीय केन्द्र और विश्वविद्यालयों के प्रभावशाली व्यक्तियों सी० आई० ए०, ए० आई० सी० और विदेश मंत्रालय तथा सैनिक संस्थानों में वहाँ की अंतर्राष्ट्रीय तेल कम्पनियाँ तथा बड़े-बड़े कारपोरेशनों के बीच आपसी मिलीभगत रही है और इस तरह से यह कहना कि वहाँ की शिक्षा संस्थाएँ स्वतंत्र रूप से अनुसंधान का काय कर पाती हैं कठिन है। उदाहरण के लिए विनियम वही सी० आई० ए० में थे और उनका भाई भेग जाज वडी फोड फाउंडेशन के अध्यक्ष। इसी प्रकार श्री चेड वान मिल पतरे जो 1949 तक गुप्तचर विभाग और सी० आई० ए० में प्रमुख थे बाद में राफेल्स फाउंडेशन में रहे और एक दूसरे श्री रिचर्ड विस्मल जिन्होंने क्यूबा पर आक्रमण की योजना तयार की थी उनका कहनाई। कोनम्बिया के इसी अध्ययन केन्द्र के प्रमुख पहले फोड फाउंडेशन में रहे और उसका बाद सी० आई० ए० में। यह हम पहले बता चुके हैं कि रस्तोव और किंसिगर इन्हीं श्रेणियों में हैं

और जान हना, जो 28 वष ग अधिन मिशिंगन स्टेट विश्वविद्यालय के अध्यक्ष व डलेस व शासन-वात म अमरीका व उपगुरगत सन्नि भी रहे । उही की अध्यक्षता म मिशिंगन विश्वविद्यालय द्वारा सी० आई० ए० की नीतिया का वियतनाम म वार्यावित किया गया था । य वही व्यक्ति है जा 1969 व बाद सी० आई० डी० के अध्यक्ष बनाय गय जिनका हवाना हम ऊपर दे चुक हैं । हमारा उद्देश्य यहाँ पर सी० आई० ए० का पूरा चिट्ठा पश करना नहो किन्तु ववल यह निगना है कि विग प्रसार जमरीना के व्यापक साम्राज्यवादी इराता की पूर्ति करने के लिए जनेर वषों ग वहाँ व प्रमुख शिक्षाशास्त्री सरकार के सलाहकार प्रसिद्ध वक और उद्योगपति सन्नि सस्थान पटागान जोर सी० आई० ए० को सहयोग प्रदान करत रहे हैं जोर वियतनाम की ताता भी दक्षिण अमरीका जोर अफ्रीका की तरह एक व्यापक अन्तराष्ट्रीय पडयत्न की शिपार हुई है ।

इम पडयत्न के अतगत विरामशील देशो की प्रगतिवादी तथा लोकप्रिय सरकारा के तन्ने उलट दन की योजनाएँ बनायी गयी और वायावित की गया ।

अमरीका की विदेश नीति और विस्तारवादी प्रवृत्ति का समझन के लिए यह आवश्यक है कि पहले वहाँ की आर्थिक वयस्था और विश्वास म अमरीका व आर्थिक हितो का अध्ययन किया जाये जोर उसने साथ-साथ अमरीका के सनिक् अड्ड उसक सनिक् समन्ती और जमरीनी पूँजीपतिया स उनके सम्बन्ध को समना जाय । सबसे प्रमुख बात यह है कि जमरीना की सरकारी एजेंसिया वहाँ के दानिया के फाउण्डेशन वहाँ की यूनिवर्सिटिया वहाँ की सरकार के ऊँचे मलाहकार जोर सनिक् अधिनागिया व आपसी सम्बन्ध जोर स्वाथ क्या रहे हैं ।

प्रश्न यह नही है कि एक शिक्षाशास्त्री अपने देश की सरकार की नीतिया को जिनसे वह उचित समझता है वार्यावित करन म अपनी टनिग जोर अपने जान तथा प्रतिभा का सत्याग न दे । लकिन प्रश्न यह है कि क्या मिशिंगन स्टेट विश्वविद्यालय जोर दूसरे अमरीकी शिक्षा केन्द्र जो विदेशा म सी० आई० ए० के पस से उन देश की जनता व हितो के विरुद्ध वारवाई करत है वह उचित है ? और प्रश्न यह है कि व छुपकर शिक्षा सहायता व नाम पर एक बाहरी शक्ति की नीतिया को उन देश की जनता पर जप्रजातात्त्रिण ढग से लोकप्रिय सरकारा व तहत उलटकर अपनी नीतियो को उन सरकारा तथा जनता पर धोपने का माध्यम बनत हैं । शिक्षाशास्त्रिया का क्या यही कत्तय है ? सबसे महत्त्वपूर्ण सवाल यह है कि मिशिंगन स्टेट विश्वविद्यालय के शिक्षाशास्त्री वियतनाम म पुस्तका की जगह बन्दूकी और दमनकारी शस्त्रास्त्र भेजकर वियतनाम मे 10 000 मील दूर बठे सर्गाव म कर क्या रहे थे ?

जून 1 1954 को सी० आई० ए० के एक अधिकारी एडवड लेनस्टेडल के नेतत्व मे एक अमरीकी सनिक् मिशन सगाव भेजा गया जिसका उद्देश्य जेनेवा

सन्धि' के अंतगत फ्रान्स की सेनाओं के वियतनाम से हटने से पहले ही समूचे देश पर खुफिया जासूसों और पडयंत्रकारियों का जाल बिछा देना था। लेनस्टेल 1950 के आसपास फिलीपीन के प्रेसिडेंट मागासायसे को भी गेस्टापो सरीखे गुप्त सघटन की स्थापना करने में सहायता दे चुका था। उसकी ट्रेनिंग और फिलीपीन के अनुभवों को अब वियतनाम में लोहराने का हुकम मिला।

यूनायटेड टाइम्स द्वारा प्रकाशित पेंटागन पपर्स' के गुप्त दस्तावेजों में 1954-55 के बीच लेनस्टेल की देख रेख में 'ए० म० ग०' अर्थात् अमरीका के 'सगाव मिलिट्री मिशन' ने जो पडयंत्रकारी कारवाइयाँ की उनकी रिपोर्ट का कुछ अंश इस प्रकार है

1954 के शुरु में जबकि अभी दीया बीर्या फू का पतन नहीं हुआ था, वार्शिंगटन में 'सगाव मिलिट्री मिशन' (समम) की योजना तयार की गयी जिसका उद्देश्य था कि फ्रांस के बाद वियतनामिया का गुप्त युद्ध करने की सहायता दी जा सके।

समम छद्म रूप से वियतनाम में घुसगा। उसके सदस्यों का काम होगा परासैनिक कारवाइयाँ करना और शत्रु (वियतमिह) के खिलाफ राजनैतिक—मनोवैज्ञानिक युद्ध करना

1 जून, 1954 को अमरीकी वायुसेना के बनल एडवर्ड लेनस्टेल सगाव पहुँचे और समम का काम शुरू हो गया। अमरीकी दूतावास के कायवाहक श्री रोब मैकलिटोक न आधिकारिक रूप में लेनस्टेल को एक नियुक्ति-पत्र दिना दिया जिसमें उसे सगाव स्थित 'एसिस्टेंड एयर अटॉचे' का पद दिखाया गया था। लेनस्टेल सी० आई० ए० को वार्शिंगटन से गुप्त संचार व्यवस्था भी मुहैया की गयी। वियतनाम में हालात खराब थे। दीया बीर्या फू का पतन हो चुका था और फ्रांस वियतमिह के आगे हार मान चुका था। सगाव के हवाई अड्डे पर गोला-बारूद के बड़े भण्डार को वियतमिह के छापामारों ने उड़ा डाला था। अमरीकी दूतावास के कायवाहक मैकलिटोक ने लेनस्टेल को वियतनामी (दक्षिण पश्ची) पॉलिटिकल नेताओं से मिलवा दिया। वे लेनस्टेल के फिलीपीन में नाम-काम से पहले ही परिचित थे। थोड़े से समय में ही सक्डों वियतनामियों से लेनस्टेल का सम्बन्ध कायम हो चुका था।

यू० एम० आई० एम० (संयुक्त राज्य अमरीका का सूचना विभाग) के चीफ श्री जॉर्ज हेन्वियर के साथ मिलकर हनोई और वियतनामी सेना के लिए (के खिलाफ) एक मनोवैज्ञानिक युद्ध की ट्रेनिंग दी जाने लगी। सगाव के सूचना विभाग के लोगों के लिए भी एक कोर्स तयार किया गया और हनोई में अफवाहें फलाने की कारवाइयाँ की गयीं। सबसे पहली अफवाह जो फलवायी गयी वह यह थी कि टोंकिन के एक गाँव में कम्युनिस्ट चीनी रेजिमेंट आया और उसने वियतनामी लड़कियों के साथ बलात्कार किया। जब गाँववाला ने उसका विरोध किया तो

चीनिया न मारे गाँव के गाँव का सफाया कर दिया। इस अपवाह से वियतनामियों का 1945 में व्याग वाई शेक की सेनाओं द्वारा किये गये अत्याचारों की याद हो जाये और उन्हें लगा कि 'वियतमिन्ह' के शासन में चीनी सारे वियतनाम पर कब्जा कर लेंगे।

एमी अपवाहों फलाने के लिए 'वियतनामी मनोवैज्ञानिक युद्ध सैनिक' कम्पनी का जवानों का सुफुत्पोश हितायतें दी गयी और वे हनोई की जनता में जा मिले।

7 जुलाई 1954 को (अमरीका से) डियेम आ पहुँचे। स्विति निराशाजनक था। फामोमी मनाओ न टाकिन प्रांत के कथोलिक शतक पट डियेम के नाम डिट्टे का खाली कर लिया था। वियतनामी कथोलिक लोगों के अधिसैनिक स्वयंसदक (गुरुणा के लिए) हनोई और हांगनाम की ओर भाग रहे थे।

डियेम त्रिभुल हुआ था। उनके बाड़ीगाड़ भी उसको छोड़ चुके थे।

अमरीकी राजदूत श्री हीथ के आदेश पर समम ने डियेम को गुप्त रीति से आर्थिक सहायता दी ताकि वह वाओ टाई आन् (अल्पसङ्ख्यक) बनाये जायता की फौज खड़ी कर सके। समम ने दशभक्त वियतनामिया (अल्पसङ्ख्यक) की एक गुप्त मना तयार की जो बाद में सगाँव को सौंप दी जा सके। दूसरे सारनिर नाम लिया गया मिह। एक अमरीकी नौसना के जहाज ने हार्दपांग पर गुप्त रीति में 13 मिहों को छुपकर उतार लिया।

मिन्तम्बर 1954 का अन्त आत पता चला कि हनोई की सबसे बड़ी प्रिंटिंग पम्प ने उत्तर में रहकर वियतमिन्ह के साथ व्यापार करने का निश्चय लिया है। समम ने कागिशा की उम विशाल प्रेस मशीन का उडवा लिया जाय। लेकिन वियतमिन्ह के गुरुता एजटा ने हमारे पडयन्त्रकारिया में पहुँचने पर हमारी कागिशों नाराज कर दी।

उनका कारवाँ एक वियतनामी प्रेशभक्त द्वारा की गयी थी जिगजा हम यहाँ ध्यू नाम में पुरारेंगे। ध्यू का (अमरीकी) अरगर था कप्तान अरगल। दूसरे पहल उहाने हनोई में वाता मना युद्ध (इन्क गाई-वार) लिया था जिगम वियतमिन्ह के हस्तांतरण में छाने बॉटनर टाकिन जनता का हितायतें दी गयी थी कि वियतमिन्ह की मना द्वारा हनोई शतक का शासन संभालने के लिए मने के गंगा बर्ताव करे। नये सम्पत्ति कानून करेगी के नियम और कि सभी कायकर्ताओं मद्रदुरा का उन्नि का लक्ष्मि मनानी वागि। परिणामतः सापाम भगन्ड मच ग्नी और वियतमिन्ह करेगा का भाव आधा गिर गया। वियतमिन्ह ने रडिया में जनता का बगाना कि वे उन्हें झूठे थे। और पन्नीमिया की धाम था। हनोई के एक और पुत्रिम अरगर का शिट ने अरगना गीम में मिना विना था ताकि किमी भी मन्था का पहर जन पर जन में भगाना जा सके।

9 अक्टूबर 1954 का प्रामामा पत्रों के साथ समम की टीम ने भी हनोई

खाली कर दिया। कपड़े के जूता में वियतमिन्ह के सादे सनिक सजीदगी से माच करत आगे बढ़ रहे थे और पश्चिमी शस्त्रास्त्रों से लस फ्रांसीसी लोहे की आबाजा में पीछे हट रहे थे। पश्चिम के हथियार और युद्ध नीतियाँ साम्यवादिया के सनिक राजनीतिक-आर्थिक सघप के आगे हार चुकी थी।

समम की उत्तरी टीम ने हनोई में अपन अंतिम दिन वहाँ के पट्रोल के भडारा में मिलावट करने में लगाये ताकि उनकी बसा के इजत खराब हो जायें। उनकी रेन-व्यवस्था के खिलाफ तोडफोड और बाद में नष्ट किये जाने की कारवाइया की। (इस काम में जापान स्थित सी० आई० ए० की एक खास टेक्निकल टीम न हमें बड़ी सहायता दी।) हमने उनके विजलीघरा, पानीघरा टकिया, पुला और बंदरगाहो आदि सम्भावित हमले के निशानो पर रिपोर्ट तयार की जिनको बाद में जरूरत पडने पर एजेंटो से नष्ट करवाया जा सके।

इसी बीच जेनेवा-संधि के अनुमार दक्षिण के वियतमिन्ह सनिका का टोकिन (उत्तर) में ल जाने के लिए रूस और पोलैण्ड के जहाज दक्षिणी समुद्र तट पर आ पहुँचे थे। कप्तान अरुण्डेल की सहायता से 'विह' ने एक पर्वत तयार करवाया जिसमें वियतमिन्ह की ओर से सनिका को हिदायत दी गयी थी कि वे हवाई हमले से बचाव के लिए नीचे के डैक पर सफर करें और अपने साथ गम बडिया अवश्य लावें। बाद में हमारे एजेंटो ने अफवाह फला दी कि उह चीन में रेलवे बनाने के लिए मजदूरी करने भेजा जा रहा है इसीलिए गम बडी साथ ले जान को कहा गया है।

फिलीपीन के प्रेंसिडेण्ट मागसायसे की सहायता से एक फ्रीडम कम्पनी की स्थापना की गयी जिसके द्वारा ट्रेण्ड फिलीपीन नागरिको का गुप्त रीति से दूसरे देश में साम्यवाद के खिलाफ लडने भेजा जावे। प्रशांत महासागर के टापुआ (और फिलीपीन) में समम के सदस्या न वियतनामिया को तोड फोड की गुप्त ट्रेनिंग देकर उनका छुपे तरीको से उत्तरी वियतनाम में भिजवान का इतजाम किया। हमारे वियतनामी एजेंट कुलिया (मजदूरो) के भेष में लागू में मिल जाते थे।

• •

उत्तरी वियतनाम पर अमरीकी हमला और पेंटागान के दस्तावेज (1964—1968)

एशियाई लोगों से औसतन पाँच गुना प्रति व्यक्ति की खुराक तक अमरीकी खाता है और अमरीकी स्त्रियों के शृंगार का वार्षिक खर्च अफ्रीका के स्वतन्त्र राष्ट्रों के कुल वार्षिक राष्ट्रीय बजट से भी अधिक है।

अत्यधिक सम्पत्तिशाली होने की सजा है जन साधारण के घातत्व, अनुभूति एवं जनजीवन से कट जाना। इस अर्थ में घनिक व्यक्ति अनायास ही अपने जन्मसिद्ध अधिकार—विशाल मानव परिवार की सदस्यता—से पदच्युत होकर 'अछूत' बन जाता है।

—आर्नोल्ड टायन बी
(महान् इतिहासकार)

श्री डलेस जब तत्कालीन अमरीकी विदेश मंत्री थे तब उन्होंने युद्धप्रिय, आक्रामक नीतियाँ चलायीं। साथ ही प्रेसिडेंट आइज़नहावर के शासन-काल में अमरीका ने 1956 के चुनाव न होने दिये और डियेन की डिक्लेरेशन ने सगाव और दक्षिण वियतनाम की जनता पर अपना दमन चक्र उग्र रूप में चाल किया। इस सबका परिणाम यह हुआ कि दक्षिण वियतनाम की जनता ने 1958 और 1960 के बीच संयुक्त रूप से एक राष्ट्रीय मोरचा स्थापित किया जिसको नेशनल लिबरेशन फ्रण्ट कहा जाता है। इस संगठन के अंतर्गत बौद्ध भिक्षुजा, माम्मवादिया

ममाजवादियो, किसानों, महिलाओ, स्कूला, विश्वविद्यालयों के छात्र-छात्राजा, अध्यापक-अध्यापिकाजा आदि के प्रतिनिधि सम्मिलित थे । इसी राष्ट्रीय मोरचे को अमरीकियो न 'वियतकाग' नाम से पुकारा जिम्का सीधा-सा मतलब हाता है 'वियतनामी कम्युनिस्ट' ।

इधर डियम के अत्याचारी शासन को समाप्त कराने की भूमिगत कारवाइया तेजी से बढ रही थी और उमकी अलोकप्रियता क कारण सगाव की सरकार का पतन सन्निकट दिखायी दे रहा था । इसी समय वहाँ क सनिक कमण्डरा द्वारा डियम की हत्या कर दी गयी और इस बात की आशा थी कि एक लोकप्रिय मिली-जुली सरकार स्थापित हो जायेगी । यदि तब यह सम्भव हो जाता तो शायद आगे के निरए रक्तपात की सम्भावनाएँ कम हो जाती । किन्तु सी० आई० ए० और अमरीका के सनिक सस्यान पेंटागान के लोगो ने राष्ट्रपति कनेडी को और उनक सलाहकारो को गलत राय दी । अमरीका के सनिक सस्यान न 1962 मे क्यूबा पर आक्रमण की तयारियाँ को और उसी समय यह भी तय कर लिया गया कि वे वियतनाम मे अपनी सनिक कारवाइया को बनाकर उत्तरी वियतनाम पर हमले शुरू कर देंग । लेकिन प्रेसिडेण्ट कनेडी न दूरदर्शिता से काम लिया और पेंटागान और सी० आई० ए० द्वारा की गयी माँग को ठुकरा दिया । फिर भी सगाव की सरकार को मुद्दुढ बनाय रखने के लिए अंतर्राष्ट्रीय साम्यवाद के हौबे को अमरीका की जनता के दिमाग पर बनाय रखने की नीति से विवश होकर कनेडी शासन ने बारह हजार सनिक सलाहकार सगाव भेजने का फसला किया ।

उस समय अमरीकी सरकारी अधिकारिया के अनुसार उत्तरी वियतनाम के 300 सलाहकार दक्षिण वियतनाम के राष्ट्रीय जादोलन और वियतकाग सनिका का सहायता द रहे थे । उत्तरी वियतनाम के 300 सलाहकारो के मुकाबले अमरीका ने 12 000 सलाहकार सगाव भेजे । इमवे अतिरिक्त अरबो डालरा की आर्थिक व सनिक सहायता बमबारा की सहायता और जग्गी जहाजो के सातवें बडे का वियतनाम के निकट टाकिन खाडी मे आगमन, सब इस बात के सूचक थे कि वाशिंगटन के इराद नापाक हैं । लेकिन जिम प्रकार बँगला दश और भारत की जनता को सातवाँ बडे न डरा सका उसी तरह इम प्रकार की भभकियाँ दक्षिण वियतनाम की जनता के हीसले पस्त न कर सकी । धीरे धीरे दक्षिण वियतनाम के प्राय सारे ही ग्रामीण क्षत्र को राष्ट्राय मुक्ति मोरचे की जन सेनाओ ने मुक्त करा लिया और इम बात क आसार लिखायी देन लग कि किसी भी क्षण सगाव के नगरा पर भी उसका अधिकार हा जायेगा । अमरीका के सगाव स्थित प्रतिनिधि थ्रो क्वेट लाज तथा अमरीकी सेनापति जनरल टेलर को निजी सुरक्षा भी एक बडी समस्या बन गयी और आये दिन अमरीकी सनिक और सलाहकार सडका पर दिन दहाडे मारे जाने लग ।

इतिहास की बहुत सी बातें अभी भी स्पष्ट नहीं हो पायी हैं। उदाहरण के लिए इस बात के प्रमाण उपलब्ध हैं कि कोरिया युद्ध की शुरुआत उत्तरी कोरिया से न होकर उस समय के अमरीकी मुफ्रीम कमाण्डर जनरल मैकायर ने की थी। जनेक इतिहास की खाज करनेवालों का अभी तक वाशिंगटन के सैनिक दस्ता वेजा की लाइब्रेरी में उन फाइलों को देखन नहीं दिया गया है जिनसे पूरा रूप से यह बात प्रमाणित की जा सके। इसी प्रकार अभी भी 1961 और 1963 के महत्वपूर्ण सालों में क्या कुछ हुआ है उसके पूरा प्रमाण हमें उपलब्ध नहीं हैं। लेकिन प्रेसिडेंट कनेडी के एक एशिया सम्बन्धी मामलों के सलाहकार ने 'यूयार्क टाइम्स' के सम्पादक के नाम एक पत्र में यह कहा है कि उस समय सी० आई० ए० और पेंटागान की सलाह को प्रेसिडेंट कनेडी ने स्वीकार नहीं किया था और वियतनाम पर हमले तथा 3 00 000 अमरीकी सैनिक भेजने की माँग को ठुकरा दिया था। कुछ विद्वानों का यह भी मत है कि प्रेसिडेंट कनेडी की उदारवादी नीतियों के कारण ही वहाँ की अदरूनी पड़ोसकारी शक्तियों ने कनेडी की हत्या की थी।

कनेडी की हत्या के बाद पड़ोसकारियों को रास्ता साफ मालूम दिया और 1963 और 1964 के बीच जबकि तत्कालीन कायदाहक प्रेसिडेंट लिण्डन जानसन 1964 के चुनाव की तयारियाँ कर रहे थे, विदेश विभाग सी० आई० ए० तथा सैनिक संस्थान पेंटागान ने मिलकर वियतनाम में आक्रामक तयारियों की एक योजना बनायी। लिण्डन जानसन ने उसको स्वीकृति तथा प्रदान कर दी लेकिन राष्ट्रपति का चुनाव होने तक प्रतीक्षा करने की सलाह दी। ये तथ्य हम पेंटागान के गुप्त दस्तावेजों में मिलते हैं जिन्हें यूयार्क टाइम्स ने, एक अनुसंधानकर्ता डा० डेनिस एल्सबर्ग से प्राप्त करके जुलाई 1971 का प्रकाशित किया।

डा० एल्सबर्ग प्रारम्भ में पेंटागान के सलाहकार और सैनिक मामलों का विशेषज्ञ थे और वे इस बात में विश्वास रखते थे कि अमरीका को सभ्य जातियाँ और प्रजातन्त्र की रक्षा के लिए भगवान का आशीर्वात् प्राप्त था। इसी भावना से उन्होंने अमरीका द्वारा किये गये वियतनाम में हस्तक्षेप और आक्रमण का पूरा दिल से समर्थन दिया था। लेकिन ज्यों-ज्यों उन्हें उसकी गहराई और सच्चाई का पता चलता गया व किन्तु यह उठ और उठ इस बात का एहसास हुआ कि वास्तव में यह प्रजातन्त्र की रक्षा और अमरीका के आदर्शों का पालन नहीं बल्कि एक ध्वज से अधिबिभक्त एशियाई देश की स्वतन्त्रता की लड़ाई का कुचलन की कोशिशें हैं। इसलिए जन जान और राष्ट्रद्रोह के खतरे को मान लेकर भी उन्होंने अपनी आत्मा की पुकार पर पेंटागान के गुप्त दस्तावेजों की कापियाँ करके अमरीका के बड़े-बड़े नेताओं का पढ़न वादी। उन्होंने कहा कि सच्चाई यह है कि हम एक जन-आन्दोलन और आजागी के युद्ध का कुचलन

की कोशिशों में व्यस्त हैं। लेकिन किसी भी अमरीकी नेता को यह साहस नहीं हुआ कि इन दस्तावेजों को कांग्रेस के सामने पेश कर सके और लोगों को सच्चाई बता सकें। आखिर में विवश हो डॉ० एल्सबर्ग ने 'यूनाइटेड टाइम्स' और 'वाशिंगटन पोस्ट' जो कि अमरीका के दो बहुत महत्वपूर्ण दैनिक हैं उनका यह दस्तावेज दे डाला क्योंकि वे कागजात 'कॉन्सिफाइड' थे और सरकार द्वारा बहुत ऊँचे स्तर पर गोपनीय श्रेणी में रखे जा चुके थे। अतएव उनके द्वारा किया गया यह रहस्योद्घाटन एक भयंकर वधार्थक अपराध था।

'यूनाइटेड टाइम्स' द्वारा प्रकाशित पेंटागन के कागजात का पढ़ने से यह स्पष्ट हो जाता है कि अमरीका के शासक सी० आई० ए० और सैनिक संगठन के लोगों को एशिया के स्वातन्त्र्य संग्राम के इतिहास का कोई ज्ञान नहीं था और नहीं उनके मन में एशियावासियों की राजनीतिक स्वतन्त्रता और उनके मानवीय अधिकारों के प्रति कोई सहानुभूति थी। जैसा कि डॉ० एल्सबर्ग ने स्वयं कहा कि हज़ारों पन्नों की इन योजनाओं के दस्तावेजों में जहाँ कि अरबा डालरों तथा लाखों लोगों पर हमले और विनाश की योजना थी वहाँ वहाँ पर भी हम एक भी वाक्य ऐसा देखने को नहीं मिलता जिसमें कि इन वाशिंगटन के ऊँचे ऊँचे अधिकारियों ने नताओं और विद्वानों को भी यह सबाल उठाया हो कि इन सब तयारियों और हमलों का प्रभाव वियतनाम या अमरीका के लोगों के जीवन पर क्या पड़ेगा। कितने लोग मारे जाएँगे, कितने घर बरबाद हो जाएँगे, कितने परिवार उजड़ जाएँगे और कितने लोग अपाहिज होकर एशिया की धरती पर आनवाले युग में भिखमग की तरह घूमेंगे इन मानवीय प्रश्नों पर वाशिंगटन ने कभी कोई विचार नहीं किया।

अमरीका की वियतनाम सम्बन्धी नीति बनानेवालों के सामने केवल एक धर्मोपदेश था और वह यह कि चाहे कुछ भी हो अमरीका हर कीमत चुकाने के लिए तैयार है लेकिन वह एक इंच भूमि भी साम्यवादियों के हाथ में पृथ्वी के किसी भाग में जाने नहीं देगा। लेकिन यह एक इतिहास की विडम्बना है कि जितना ही अधिक वाशिंगटन ने अपनी धर्मोपदेशों के कारण जुर्म और आक्रमण करने की योजना बनायी उतना ही अधिक साम्यवादी शक्तियाँ और जन विकास की राजनीतिक नीतियों का वियतनाम और दूसरे देशों में समर्थन मिला।

पेंटागन के इन दस्तावेजों का पढ़ने से यह भी मालूम होता है कि जहाँ एक ओर लाखों लोगों की जानें गयीं, अग्नि की सम्पत्ति का नाश हुआ लाखों अपाहिज बन गये, रक्तपात हुआ नर-संहार हुआ वहाँ दूसरी ओर अमरीकी सेनाएँ विजय में नहीं दूर ही रहीं। उनकी भारी शक्ति केवल इस बात पर लगी रही कि किस प्रकार एशिया के इस प्रायद्वीप में अमरीकी हार और अपमान से बचा जा सकता है।

अमरीका के संविधान में सेना का नागरिक शासन के आधीन रखा गया है और युद्ध घोषणा का अधिकार केवल वहाँ की कांग्रेस को है, प्रेसिडेंट का नहीं। लेकिन वियतनाम में संविधान को ताक पे रखकर 10 साल से यह युद्ध चलाया जा रहा है। इसमें कोई 10 00 000 से अधिक अमरीकिया न सीधे भाग लिया है और अरबों डॉलर का खर्च हुआ है। लेकिन आज तक कांग्रेस ने युद्ध का घोषणा नहीं की है। यह ऐसा युद्ध है जिसमें सना के हित नागरिक शासन पर हावी हो गये हैं और प्रजातान्त्रिक संविधान और राज्य-व्यवस्था की उपेक्षा की जा रही है।

पेंटागन कागजात 7 000 पृष्ठा से भी अधिक सरकारी अस्तावजा का काला चिट्ठा है जिसमें 1945 से लेकर 1968 के बीच जा नीतियाँ और याजनाएँ बनीं उनका आधार कौन-कौन व्यक्ति और कौन-कौनसे विचार थे और किन मूल कारणों से अमरीका ने वहाँ हस्तक्षेप किया। इसका पता लगाने की कोशिश की गयी है। यह स्पष्ट है कि अमरीका ने वियतनाम में भूल से नहीं किन्तु जानबूझ कर हस्तक्षेप किया। शुरू के दिनों में कुछ अमरीकी सैनिक अधिकारी इसके पक्ष में थे किन्तु वाशिंगटन के सलाहकारों और नेताओं ने वियतनाम में हस्तक्षेप का फसला कर लिया था जबकि सैनिक दृष्टि से यह स्पष्ट था कि अमरीका कभी भी लड़ाई नहीं जीत सकेगा। पेंटागन के सैनिक शासक कोरिया के युद्ध में इसका पाठ सीख चुके थे। लेकिन जब एक बार पहल कर चुके तो फिर अमरीका के नेताओं में इस बात की एतिहासिक परम्परा का विश्वास जमा हुआ है कि अमरीकी झण्डा अभी तक कभी वहीं पर झुका नहीं और इसी धोखे में वहाँ के सलाहकारों और सतकता विभाग के विशेषज्ञों ने एक के बाद एक ऐसी नीतियाँ बनायीं जिनका परिणाम युद्ध की आग को बढ़ानेवाला सिद्ध हुआ और वियतनाम के युद्ध के दलदल में अमरीका घँसता ही चला गया।

वियतनाम और हिंद चीन की राजनीतिक समस्याओं और कठिनाइयों पर शांति प्रस्तावों से सोचने के बजाय अमरीका के सैनिक और आर्थिक हितों पर अधिक जोर दिया गया। अमरीका वहाँ युद्ध की शुरुआत कर उमसे बाहर निकलने को तैयार नहीं था अतएव धीरे धीरे सर्गाव के अल्पसंख्यक स्वार्थी पद लालुष राजनीतियों तथा सैनिक पडयन्त्रकारियों के निजी स्वार्थों के दावों में अमरीका फसता गया।

वाशिंगटन सरकार अमरीकी जनता और दुनिया के सामने यह दावा करती रही कि वह तो समाव की जनता की सरकार का उत्तरी वियतनाम के हमलों से सुरक्षित रखने के लिए केवल मानवीय दृष्टि से सैनिक कारवाइ करने पर विवश हुई है। अमरीकी नेताओं ने वास्तव में खुद पहल की और फिर जाब के बदले जाब वाली नीति अपनाकर पडयन्त्रकारियों, गुण्डा स्वार्थी सैनिक सेनापतियों

और वहाँ के पद-लोलुपा को खरीदने और हिंद चीन के क्षेत्र में वहाँ की जनता पर थोपने की नीति अपनायी। इन पद-लोलुप स्वार्थी गुणों को अमरीकी सरकार ने अपने आदेशों को एशिया में व्यापक ममथन देने का जगुआ समझा। वास्तव में ये लोग नीच और तुच्छ बुद्धिवाले सिद्ध हुए और यद्यपि अमरीकी सरकार उन पर अरबाँ रुपया लुटाया, वे अमरीका के उद्देश्यों की पूर्ति में सहायक न हाकर केवल बाधक ही सिद्ध हुए। ऐसे तुच्छ बुद्धि लोगो के कंधों पर बंदूक रखकर अमरीका उनको चलवा तो सका लेकिन वियतनाम की जनता का आदर और स्नेह प्राप्त न कर सका।

अमरीकी विचारकों पर अनेक वर्षों से दोहरायी गयी इस भ्रामक नीति, जिसे कि 'डामिनो थ्योरी' कहा जाता है का ऐसा अमर पडा कि व स्वयं यह मान बैठे कि चीन के साम्यवादी होने के बाद सारे एशिया और उसके वास्तविक आतवाले कुछ वर्षों में स्वयं अमरीका भी साम्यवादी प्रभाव से न बच सकेगा। इसलिए भय और आत्मविश्वास के अभाव में अमरीकी नेता भताघ्न होकर एक अवास्तविक नीति का सत्य मानकर मुद्धात्मक कारवाइयाँ करने पर आमादा हुए। वास्तव में एशिया की जनता को 'डामिनो थ्योरी' इस रूप में दिखायी दी कि 1776 में सयुक्त राज्य अमरीका के 13 देश अब 50 हो चुके हैं और दजनों और भागों पर अधिकार करके सयुक्त राज्य अमरीका अब एशिया के हृदय पर अधिकार जमान की काशिश कर रहा है। जिन एशियाइयों को दाँतों से अधिक समय लगा कि व यूरोपीय साम्राज्यवादियों से अपना पीछा छुड़ा सकें, अब उनको यह एक नयी समस्या दिखायी दी कि उन्हें अमरीकी सनाओं से भी आजादी के लिए लड़ना पडा।

अमरीकी राष्ट्रपतियों को वियतनाम में एक बार सनिक कारवाइ कराने के बाद दाँतों से सतानी रही। एक तो यह कि वही उह सावियत संघ और चीन की सनाओं में सोधा मुकाबला न करना पडे जिसका परिणाम तृतीय महायुद्ध हो सकता है और दूसरा यह कि किस प्रकार एक छोटे में एशियाई देश जिसने अभी कुछ ही वर्ष पूर्व फ्रांस की सनाओं को दीया वीर्याँ फूँ मकरारी मात दी थी में हार मान ले जाये। क्योंकि यदि ऐसा हुआ तो अन्तर्राष्ट्रीय क्षेत्र में अमरीका का बडा भारी धक्का लगेगा। अमरीकी नेताओं की हमेशा द्वितीय महायुद्ध के शुरू में ब्रिटन के प्रधानमंत्री श्री चेम्बरलेन द्वारा हिटलर के अकोस्तावाकिया पर आक्रमण के समय शान्ति के प्रयत्न (आततायी को खुश करने की नीति) जसी नीति न अपनाने की इच्छा रही। वियतनाम के स्वातन्त्र्य-आंदोलन का सच्चा रूप न समझ सकने के कारण वे इनको एक अन्तर्राष्ट्रीय साम्यवाद के विस्तार का ही रूप देते रहे। अतएव इस बात का भय दिखाया जाता रहा और धमकियाँ दी जाती रही कि यदि आवश्यक हुआ तो वे परमाणु युद्ध के प्रयोग से शिझकेंगे नहीं। लेकिन

जब इनके गुप्तचरो सनिक हथियारो, बमबारो और जहाजी बेडे के आक्रमणो से भी वियतनाम के राष्ट्रीय मुक्ति मोरचे की लोकप्रियता कम न हो सकी और वह बरती ही गयी तो वार्शिंगटन के नेताओ ने इस बात का हवाला देना शुरू किया कि वाम्पव म वियतनाम की जनता वियतकांग के साथ नही है किन्तु आतंकवादी हथकण्डा द्वारा जनता को डराया धमकाया जा रहा है और अमरीका समर्थित सर्गाव सरकार के प्रति अराजभक्त होने के लिए विवश किया जा रहा है।

प्रेसिडेण्ट आइज़नहावर का जब शासन काल समाप्त होने को था तब इस बात के आसार स्पष्ट नजर आ रहे थे कि लाओस अमरीका-समर्थित नीतियो से हटकर समाजवादी तत्त्वा के हाथ म चला जायेगा। जब श्री कनेडी राष्ट्रपति चुने गये तब वार्शिंगटन की सरकार क्यूबा को मुक्त कराने के लिए दृढप्रतिन थी। लगता ऐसा था कि भले ही कोई देश कितना भी छोटा क्या न हो, अमरीका की सुरक्षा के लिए और उसके आर्थिक हितो की सुरक्षा के लिए यह आवश्यक है कि वह साम्यवादिया के प्रभाव म न जाने पाये और अगर ऐसा होता है तो वह अमरीका के अन्तर्राष्ट्रीय सम्मान के लिए एक घातक बात है।

आर्थिक व सनिक सहायता, जालसाजी और दूसरी तरह के पड्यत्र जब सफल न हुए तब अमरीका का सनिक सगठन खुले रूप म वियतनाम म और क्यूबा म हस्तक्षेप क लिए तयार हो गया। पेंटागान के दस्तावेज स यह निश्चित रूप से स्पष्ट हो जाता है कि अमरीकी सेनाओ के सामने अन्तर्राष्ट्रीय साम्यवाद का भूत नाच रहा था और वे सनिक कारवाई करके चीन के बन्ते हुए साम्यवादी माघ्राज्य वाद को रोस्तन के उन्त विचारा स आतप्रोत थे।

उत्तममय की अमरीकी सरकार के इस नीति सिद्धात को 1966 तब अमरीका क बहुमत का समयन प्राप्त था। लेकिन फिर भी अमरीकी प्रेसिडेण्टो ने वियतनाम म जो कुछ भी किया वहाँ की कांग्रेस की अनुमति क बिना ही किया और केवल सनिक सगठन पेंटागान क सलाहकारा की इच्छा पर किया। सबसे अधिक अदूर दक्षिता पाण्डओर घमण की भावना स ओतप्रान जा नीति वियतनाम म वायान्वित की गयी उसके प्रणेता थ प्रेसिडेण्ट जानसन और उनकी नीति की अमफनता क दुष्परिणाम स्वय उनक त्रिण बहुत बुर हुए जबकि उन्हाने 1965 म ही अपनी पनी का इन शब्दा म पत्र लिखकर कहा

मैं दमम बचकर नही निवृत्त सकना और न ही मैं किसी तरह स इमरा समाधान कर सकता हूँ न तो सनिक और न ही राजननिक। ता फिर मैं कर ही क्या सकना हूँ ?

दुनिया की मरम बडी ताकत और भगवान क वाण मरम थडा शक्तिशाली मनुष्य अमरीकी राष्ट्रपति जाना है। और यह एनिहाग की विद्वम्वना है कि इनन बडे शक्तिशाली जॉनसन वियतनाम क स्वातन्त्र्य-मुद्ध को कुचम दन

की नीतियों की असफलता पर स्वयं को हताश पाने हैं। समुक्त राज्य अमरीका न प्रेसिडेंट कॅनेडी की हत्या व बाद और 1964 में श्री लिंकन जॉनसन के प्रेसिडेंट बनने के तुरंत बाद जिस तरह से दुनिया के सामने झूठ बोलकर और स्वयं अमरीकी जनता और अमरीकी कांग्रेस का धोखा देकर भारी पमान पर दक्षिण वियतनाम और उत्तरी वियतनाम में सैनिक बारबादिया शुरू की उसकी शुरुआत स्वयं में एक बड़ी राबक कहानी है।

उत्तरी वियतनाम पर बमबारी

9 अक्टूबर, 1964 को तत्कालीन विदेश मंत्री डीन रस्क ने इस बात की घोषणा की कि अमरीकी नीति में बहा के चुनाव के बाद एक नया परिवर्तन होगा। 13 फरवरी 1965 को सबसे पहला खुला हवाई हमला उत्तरी वियतनाम पर किया गया और उसके बाद बराबर बमबारियां जारी रही। सांचा यह गया था कि बमबारी के डर से उत्तरी वियतनाम के हौसले पस्त हो जायेंगे और पूरे वियतनाम कम्बोडिया और लाओस में अमरीकी नीति को स्वीकार कर लिया जायगा।

हमले की तयारियां किस तरह लोपा का बताया जायें और कौनसा बहाना ढूँढा जाये इसकी पूरी तयारी अमरीकी सरकार ने पहले ही कर रखी थी। वियतनाम की पश्चिमोत्तर सीमा पर स्याम में अमरीकी सैनिक हवाई अड्डों पर और दक्षिणी वियतनाम के सैनिक अड्डों पर 4000 से अधिक हेलीकाप्टर तथा जट बमबारा और बी 52 बमबारा को बना और गाला-बालूदा के भण्डारा से तयार कर लिया गया था। वाशिंगटन में अमरीकी सलाहकारों ने मिलकर एक प्रस्ताव की रूपरेखा तयार कर ली थी कि काल्पनिक उत्तर वियतनाम के हमले की खबर का अप्रबारा में प्रकाशित करवाया जाय और उसके तत्काल बाद अमरीकी प्रेसिडेंट बहा की ससद (कांग्रेस) के सामने वह प्रस्ताव रखें।

अगस्त 1964 का अमरीका की समाचार एजेंसिया ने सगात्र से दुनिया भर में उत्तरी वियतनाम की गनबोटों द्वारा दा विशाल अमरीकी विध्वंसका पर गाली चलाय जाने की खबर प्रसारित की। फलस्वरूप अमरीकी कांग्रेस व सदस्या और जनता में त्रीध की सहर दौड़ गयी कि किम प्रकार एक छोटा-सा एशियाई देश चीन की शह पर समुक्त राज्य अमरीका जैसी महान शक्ति के जगी वेण पर गोले बरसाने का दुस्माहस कर रहा है! लेकिन किमी को तब यह पता न था कि टोकिन की खाड़ी में वास्तव में हुआ क्या? अमरीकी राष्ट्रपति ने कांग्रेस में प्रस्ताव रखा कि व अमरीकी जनता के प्रतिनिधियों से इन बातों की मांग करते हैं कि उन्हें यह अधिकार दिया जाय कि व जा भी उचित कारवाई हो, करके अमरीकी

सुरक्षा और उसके सम्मान को सुरक्षित रख सकें। काग्रस ने बड़े उत्साह से प्रेसिडेंट की इस मांग को स्वीकार कर लिया। वास्नव में टोर्किन की खाड़ी में जा हुआ वह केवल एक कपोल कल्पित घटना थी।

अमरीका का विध्वंसक पान 'मैडोक्स' पहली जगस्त को उत्तरी वियतनाम के समुद्री तटों के समीप पहुँचा और उसकी छाया में दो तारीख को दक्षिण वियतनाम की गनबोटा न उत्तरी वियतनाम के समुद्री तटों पर हमले किये। फल स्वरूप गाली चलाने की आवाजें जायीं और मैडोक्स के कप्तान ने अधिकारियों को सूचना दी कि उत्तरी वियतनाम की तोपें उस पर गाली बरसा रही हैं। दर असल सच तो यह है कि महीना पहले से अमरीकी सातवें बेड के जमी जहाज उत्तरी वियतनाम के समुद्री तटों के बीच घुसपठ कर रहे थे और अपने यंत्रों का उनके समुद्री तटों पर जाल बिछाकर सैनिक सुरक्षात्मक रहस्या को पाने की कोशिश में बहुत समय से लगे थे। अमरीका के विमान उत्तरी वियतनाम पर उड़ रहे थे और समुद्री जहाज और हेलिकाप्टर तथा पी० टी० बोटों द्वारा उत्तरी वियतनाम की सुरक्षा सीमाओं का एक असें में उल्लंघन चल रहा था।

अमरीका के तत्कालीन रक्षा मंत्री श्री मकनमारा स जब पूछा गया कि क्या उन्हें मालूम है कि उनके ही आदेश पर अमरीकी जमी जहाज मैडोक्स की छाया में दक्षिणी वियतनाम की नौसना ने और अमरीकी सलाहकारों ने उत्तरी वियतनाम की सीमाओं का कर्द वार उल्लंघन किया है तो उन्होंने काग्रस की एक जाँच समिति के सामने यह साफ झूठ बोला कि उन्हें ऐसी हरकत का कोई पता नहीं।

वजाय इसमें कि अमरीकी जमी बड़े मैडोक्स का उत्तर वियतनाम की जल सीमा से हटा दिया जाता 3 अगस्त 1964 का अमरीकी अधिकारियों ने एक दूमरे जमी वेडे को मडाक्स के पास भेज दिया जिमका नाम था 'टनर जाय'। इससे यह स्पष्ट हो जाता है कि अमरीका के इराते लडाईं छेदन के थे।

3 अगस्त को फिर दुबारा दक्षिणी वियतनाम की जल यन सेनाजा ने उत्तर वियतनाम के सैनिक तटों पर हमले किये। पेंटागान के दस्तावेजों में अब यह सिद्ध हो चुका है कि अमरीकी जहाजों का पहले में इस बात की गजर थी कि 2 3 और 4 अगस्त का दक्षिणी वियतनाम की सेना अमरीकी सलाहकारों के साथ उत्तरी वियतनाम पर हमल करेगी।

दोना तरफ तनाव बढ़ चुका था और 4 अगस्त की रात का टनर जाय जमी जहाज ने अपने अधिकारियों का यह सूचना दी कि उन पर उत्तर वियतनाम की समुद्रा ताणा ने हमला किया है। इस का पनिक हमल की घटना की गजर के 6 घण्टे के भीतर भीतर गाआम जापान स्याम और मगाव म्थिन अमरीकी मनिर हवाई अड्डा में और उमक मानवें बड के विमानवाहक जहाजों से अमरीका विमानों ने उत्तरी वियतनाम पर भयंकर बमबारियाँ शुरू कर दीं। ये बमबारियाँ

भी प्रमाणित करती हैं कि अमरीका द्वारा हमले की तयारियाँ पहले से की जा चुकी थी अथवा 6 घण्टे के भीतर-ही भीतर ऐसे सगठित रूप से हवाई हमले की सम्भावना नहीं है। सवती थी जिममे सैकड़ों बमबारा ने बड़े योजनाबद्ध रूप से अलग-अलग हवाई अड्डों से उड़कर उत्तरी वियतनाम पर गोलें बरसाये।

हमले के शुरू होने के एक घण्टे के भीतर भीतर मध्य रात्रि को प्रेसिडेंट जॉनसन ने बड़े नाटकीय ढंग से टेलिविजन पर यह एनाउन्स किया कि उत्तर वियतनाम ने अमरीकी जमी जहाज पर बिना पूरे उत्तेजना के अतर्पीय गहर समुद्र में हमले किये हैं और आत्मरक्षा के लिए अमरीका का उत्तर वियतनाम पर बदले की कार्रवाई करने पर विवश होना पडा है। अमरीकी प्रेसिडेंट ने कांग्रेस से किमी भी भावी युद्धात्मक कार्रवाई के समय उचित बंद उठाने और सनिक कार्रवाई करने का अधिकार दिय जान की अपील की। उन्होंने उत्तरी वियतनाम द्वारा दक्षिण-पूर एशिया और दक्षिण वियतनाम पर किये गये तथाकथित हमले की कटु निंदा भी की। फलस्वरूप 3 दिन के भीतर भीतर अमरीकी कांग्रेस ने बिना किसी बहस के प्रेसिडेंट जॉनसन को मनचाही कार्रवाई करने का अधिकार दे दिया। एशिया में शांतिवादी नीतिया के नारे पर राष्ट्रपति पद का चुनाव जीते जानसन का 60 दिन भी नहीं हा पाये थे कि योजनाबद्ध रूप से उन्होंने वियतनाम के स्वातन्त्र्य-आन्दोलन को कुचलने के लिए वियतनाम गणतन्त्र पर बमबारी शुरू कर दी।

4 अगस्त, 1964 को उस अशुभ घडी में टोकिन की खाडी में अमरीकी जमी जहाज मेडीक्स और टनर जाय पर वास्तव में क्या घटा इसके बारे में जो प्रमाण वाद में मिले व बड़े रोचक हैं।

अमरीकी कांग्रेस की विदेश नीति की सलाहकार समिति के अध्यक्ष सनेटर फुलब्राइट को इन जमी जहाजों के अनेक अपमरों ने युद्ध नीति से विशुद्ध होकर यह बताया कि उस समय इन जहाजों पर तनात अपमरों को यह पता न था कि उन पर हमला हुआ है। जहाज के रेडियो सिगनल पर भयकर शोरगुल मच रहा था और कन्फ्यूजन मचा हुआ था लेकिन जहाज को कोई नुससान नहीं पहुँचा और न ही कोई सनिक मरा अथवा हताहत हुआ। किसने किस पर कब गोलियाँ चलायी इसका कोई प्रमाण नहीं मिलता। लेकिन फिर भी इन जहाजों के कप्तानों ने और अमरीकी सनिक अधिकारियों ने दुनिया को और स्वयं अमरीकी जनता को यह खबर दी कि उन पर उत्तरी वियतनाम की तटीय तोपों ने हमल किये हैं।

इतिहास यह पूछेगा कि क्या हमला हुआ था? जमी बेडे टनर जाँय के कप्तान का कहना है कि वह निश्चित रूप से इसके बारे में कुछ नहीं कह सकते। ज्या ही उन्हें जहाज के राडार पर कुछ गाली जसी चीज के सिगनल सुनाये जिसे उन्होंने पेंटागन को निम्न संदेश भेजा

ऐसे सकेत मिल रहे हैं जो कदाचित तारपीटो के हा लेविन निश्चित नहीं कहा जा सकता कि मौसम की ग्यराबी और अनिश्चित स्वर ध्वनियाँ भी इसके कारण हो सकती हैं। साथ ही जहाज मेडाक्स ने भी कोई स्पष्ट चीज नहीं देखी। हमारा सुझाव है कि कोई सनिक कारवाई करन से पहले स्थिति की पूरी जाँच करा ली जाय।

इस सदेश से पेंटागान और अमरीकी प्रेसिडेण्ट के "हाइट हाउस के अधि कारिया म आतक छा गया क्याकि वे बदले क हवाई हमला की पूरी तयारियाँ पहल स ही किय बठे थे। व तो यह कहना चाहते थे कि वास्तव म उन पर पहला हमला हो चुका है। उहान इस कपोल-कल्पित हमले की सच्चाई का दुनिया के सामन सिद्ध करने की ठानी हुई थी। इसलिए वे इस मूड म न थे कि कोई भी सनिक कारवाई करने से पहले वस्तुस्थिति की पूरी जाँच कर लें। यह वह समय था जबकि स्वय प्रेसिडेण्ट जानसन थोडे ही समय में और कुछ ही क्षणा म टलिविजन पर बदले की कारवाई करने की घोषणा करने को आतुर थे।

प्रजातन्त्रीय वियतनाम की राजधानी हनोई ने अमरीका के इस आरोप का खण्डन किया कि उसके समुद्री तटा की सुरक्षात्मक सेनाआ ने अमरीका क जगी जहाजो पर गोले बरसाये है। हावड विश्वविद्यालय के एक प्रोफेसर डा० रस्टोव, ने जो उस समय प्रेसिडेण्ट जानसन के विशेष सलाहकार थे बडे उत्साह स उत्तरी वियतनाम पर छूडवार बमबारी करने की नीति का प्रबल समर्थन किया और "हाइट हाउस के एक आपसी वार्तालाप म यह कहा कि "कितने मजे की बात है कि सारा घटनाचक्र हमारे इरादो का साथ दे रहा है।

अमरीका के एक दूसरे विद्वान विलियम बडी ने जो उस समय विदेश मन्त्रालय म एशियाई मामलो के विशेषज्ञ और एशियाई विभाग के प्रमुख थे इस प्रस्ताव का प्रारूप दा महान पहले से तयार किया हुआ था जिससे प्रसिडण्ट जानसन ने काप्रेस के सामने रखा। इस योजना क पीछे विलियम बडी के अलावा तत्कालीन रक्षामन्त्री श्री मैकनमारा के सलाहकार जान मैकनटन और विलियम सलेवान भी थे जिहाने कि लाओस म अमरीकी बमबारियों की नीति को कार्यान्वित किया था। इन अमरीकी विद्वानो ने मिलकर उत्तरी वियतनाम पर योजनाबद्ध बमबारी की रूपरेखाए तयार की थी।

उक्त घटना के 4 बष बाद जबकि हजारो अमरीकी हुताहत हो चुके और उत्तर और दक्षिण दोना ही वियतनामा के सेतो खलिहाना और किसाना के झापड और नागरिका के मकान धूलिसात किये जा चुके और लाखो वियतनामी मारे जा चुके तत्कालीन रक्षा सचिव श्री राबट मैकनमारा ने जो आजकल विश्व बँक के डायरेक्टर हैं सनेटर फुलब्राइट की अन्तर्राष्ट्रीय सम्बधा की समिति के सामने एक नासमझ के रूप म यह कहा कि उह यह याद नहीं कि उन्हाने या

अमरीकी आक्रमण का प्रभाव और 'टेट' का प्रत्याक्रमण

मुझ शोक होता है न केवल जब वियतनामों जनता मारी जाती है बल्कि तब भी जबकि अमरीकी सैनिक मारे जाते हैं। लेकिन यह मेरा देश तो नहीं जो अमरीका पर बम धरसा रहा है। यह तो अमरीका है जो मेरे देश पर बमबारियाँ कर रहा है। फिर वे बमबारी खत्म करने की बात करते हैं कि यशतों में भी उन्हें बदले में कुछ कम्पेन्सेशन दूँ। यह तो वैसे हुआ जैसे कि शिकागो में कोई गुण्डा आपको गले से पकड़ ले। फिर पूछे कि बताओ आप उसे क्या देने को तयार हैं कि वह आपको गोली न मारे।

तुम्हें हमारा यह दुःख निश्चय पता होना चाहिए हमने अपने देश की आजादी के लिए बहुत लम्बे समय से खून बहाया है और अब कोई शक्ति हमें आत्मसमर्पण करने को मजबूर नहीं कर सकती। नहीं, तुम्हारे परमाणु अस्त्र भी नहीं।

—प्रेसीडेंट हो ची मिन्ह

(एक अमरीकी पत्रकार से 1968 की बसन्त में हनोई में एक मुलाकात)

प्रसिद्ध कनेडी के सलाहकार जनरल मैकमवैल टेलर ने 1 नवम्बर 1961 का उत्तरी वियतनाम पर हमले की सलाह देते हुए यह कहा था कि हालांकि वियतनाम में इसी प्रकार की बड़े पैमाने पर सैनिक कारवाँ करने में खतरा जरूर है लेकिन उत्तरी वियतनाम की सबसे बड़ी कमजारी यह है कि वह विमानों द्वारा बमबारी के आगे ठहर नहीं सकेगा। इस कमजारी का फायदा उठाना चाहिए। बमबारी के डर से हवाई दक्षिण वियतनाम के भविष्य के बारे में अमरीका की शर्तों को स्वीकार कर लेगा। लेकिन फिर भी प्रेसिडेंट कनेडी ने

हवाई हमले की अनुमति नहीं दी और जय डियेम की हत्या कर दी गयी और उनकी सरकार का तख्ता उखाड़ दिया गया उम समय सगाँव म अमरीकी प्रति निधि हैनरी क्रेट लॉज ने अगस्त 29, 1963 को एक सरकारी दस्तावेज म यह कहा था कि हम एक ऐसे रास्ते पर चल पड़े हैं जिसस फिर वापस लौटना मुश्किल होगा। डियेम की सरकार का तख्ता पलट दिया गया और ज्या-ज्या रहम्या का पता लोमा को लगेगा त्या-त्या हमार लिए वियतनाम से बच निकलना और भी मुश्किल होता जायगा।

1964 म अमरीका ने वमवारी शुरू करके बड़ी सभ्या म अपनी वायुसेना और जल व थल सेनाए दक्षिण वियतनाम म उतारनी शुरू की। सारे का सारा वियतनाम युद्ध की आग म जल उठा। दक्षिण वियतनाम के नेशनल लिबरेशन फ्रण्ट ने वियतनाम के सभी वर्गों को साथ लेकर बनाय गये मोरच के नेतृत्व मे अमरीकी विदेशिया का और उनके पिछलग्गुआ को वियतनाम स निवालने का अपनी स्वतन्त्रता का सघष पूरे जोर शोर से शुरू कर दिया। उत्तरी वियतनाम ने हर सम्भव महायता अपने दक्षिण वियतनामी भाइया को देने का वचन दिया और विश्व के सभी मानवतावादी तथा प्रजातन्त्रीय आदर्शों स माह रखनेवाले देशो ने वियतनाम की जनता का समथन किया।

फ्रांस की सरकार न अमरीका के आक्रमण की खुलकर कडे शब्दा मे निंदा की और ब्रिटेन, हाल्लण्ड, इटली आदि देशो की जनता न अमरीकी आक्रमण के विरुद्ध बडे-बडे प्रदर्शन किय। नार्वे, स्वीडन, डेनमार्क आदि देशो ने विरोध के साथ साथ अनक प्रसार की सहायता सामग्री देने की घोषणा की और चीन मो वियत सघ चेकोस्लावाकिया, पूर्वी जर्मनी, क्यूबा आदि साम्यवादी देशो न शस्त्रास्त्र तथा हर प्रकार की सनिक व जन-जीवन उपयोगी सामग्री महायता के रूप मे भेजी।

उत्तरी वियतनाम तथा दक्षिणी वियतनाम के राष्ट्रीय मारचे के सानानिया 7 घीर घीरे सुरक्षात्मक उपाया द्वारा अपनी स्थिति को सुदढ बनाया और इसम साम्यवादी देशो की पूरी सहायता उह प्राप्त थी। 1965 और 1966 के आत आने हालीक साखा टन वम वियतनाम की घरती पर बरमाय जा चुके थे फिर भी वियतनामी जनता की ओर स बिनी प्रकार की वमजोरी या नि आक्रामक सरकार और उसके प्रतिनिधिया से ममनीते की भावना के कोई आसार निखायो नहीं दिय।

यूयाक टाइम्स के सुप्रसिद्ध विदेशी कमेंटेटर हरीसन साल्सवम का डा० हा ची मिह ने उत्तरी वियतनाम की यात्रा करने की विशेष अनुमति प्रदान की और उहाने वियतनाम की यात्रा के बाद यूयाक टाइम्स के स्तम्भा मे 1966 म जो कुछ लिखा और उसके जा सचित प्रमाण दिय उनसे अमरीकी जनता को पता

चला कि वियतनाम के चप्पे चप्पे को अमरीका के बमबारा ने विध्वस्त करके बड़े बड़े गड्डे पदा कर दिये हैं। वहाँ के पुला कारखाना, बिजलीघरा भवना स्कूलो जीर हस्पताला को धूलिसात कर दिया। श्री साल्सबग के लेखो के अनुसार हाई फाग का बंदरगाह और राजधानी हनोई के पाँच बगमोल के शहरी क्षेत्र को छोड़कर उत्तरी वियतनाम का कोई भी कस्बा या गाँव ऐसा नहीं बचा था जिस अमरीकी बमबारी ने जमीन में न मिला दिया हो।

साल्सबग के इस रहस्योदघाटन ने अमरीकी सरकार द्वारा तब तक दिये गये प्रकृत्या को चूठा साबित कर दिया जिनमे जानसन और सलाहकारो न हमेशा यह दावा किया था कि उनके बमबार उत्तरी वियतनाम की भयानक सैनिक तयारिया और उनके सैनिक जडडा को नष्ट करके दक्षिण वियतनाम पर उनके सम्भावित आक्रमणो की तयारियो को मिटा देने के प्रयत्न कर रहे हैं। श्री साल्सबग ने बताया कि ऐसे कोई बड़े सैनिक केन्द्र उत्तर वियतनाम में नहीं थे जिन पर कि इतने व्यापक रूप से बमबारी करने की आवश्यकता हाती।

1967 के अंत में वहाँ अमरीकी कमाण्डर ग्रांट शापन युद्ध स्थिति पर अपनी वार्षिक रिपोर्ट में यह लिखा था कि अमरीकी हवाई हमला के तीन उद्देश्य हैं पहला उत्तरी वियतनाम द्वारा दक्षिण वियतनाम, लाओस तथा दूसरे हिंद चीन के क्षत्रा में भेज जानेवाले सैनिक सामान को रोकना। दूसरा वियतनाम को मिलनेवाली बाहरी सहायता का उस तक न पहुँचने देना। और तीसरा उत्तरी वियतनाम की उन सब वस्तुओ चीजो और तत्त्वो को नष्ट करना जिनमें कि उसमें युद्ध करने की क्षमता न रहे। लेकिन फिर भी उन्होंने यह स्वीकार किया कि साम्यवादी देशों से मिलनेवाली सैनिक सहायता 1967 तक बराबर मिलती रही और उसमें कमी नहीं होनी पायी। इसी प्रकार जनरल शापन यह भी स्वीकारा कि उत्तरी वियतनाम द्वारा लाओस और दक्षिण वियतनाम को भेजी गयी सैनिक सहायता भी पूरी तरह से रोकी नहीं जा सकी हालांकि बमबारिया बहुत अधिक हुई और उनसे बहुत सा सामान गोदाम और यातायात के दूसरे साधनो को पूरी तरह से नष्ट कर दिया गया है।

9 जनवरी से लेकर 15 दिसम्बर 1967 तक कोई 1 लाख 22 हजार 960 हवाई हमले उत्तर वियतनाम पर किये गये। इसी बीच 1384 समुद्री हमले भी उस पर किये गये जिनमें 5246 टुक 2475 रेल डिब्बे तथा 11425 नौकाए नष्ट कर दी गयीं।

जनरल शापन ने यह भी बताया कि अमरीकी हवाई हमला के कारण उत्तर वियतनाम में कोई 6 लाख नागरिको को खेती और उद्योगों से हटाकर युद्धकालीन सैनिक रसत पहुँचाने और सेना की सहायता के लिए लगाया गया है। इससे उनकी सती और उद्योग धंधा पर बुरा असर पड़ेगा। उत्तर वियतनाम के लिए यह

युद्ध बहुत महंगा बन गया है।

जरनल शाप ने आक्रमण के तृतीय उद्देश्य का हवाला देते हुए यह कहा कि हमारे हवाई हमला के कारण उत्तर वियतनाम के विजली उत्पादन केंद्रों का पूरा तया नष्ट कर दिया गया है जिसके फलस्वरूप वहां के उद्योग घाघा का उत्पादन 15 प्रतिशत से भी अधिक घट गया है। उत्तर वियतनाम का एवमात्र इस्पात का कारखाना और हाई फाग स्थित उनका सोमेट वनाने का कारखाना भी बंद कर लिया गया है। (इसी कारखाने का 1972 में दुबारा नष्ट किया गया) इस भयंकर जीवोद्योग क्षति के कारण अब उत्तर वियतनाम का चीन और सोवियत संघ तथा अन्य पूर्व यूरोपीय मित्र देशों की सहायता पर आश्रित होना पड़ेगा। जीवन की आम आवश्यकताओं की वस्तुएँ भी विदेशों से आयात करने पर बड़ा विवश हो गया है जिसके फलस्वरूप युद्ध सामग्री के आयात में अधिक जम्बुविद्या पदा हो गयी है। आर्थिक दृष्टि से बस 1967 के साल में ही इस बमबारी के कारण उत्तर वियतनाम में उत्पादन 50 प्रतिशत घट गया।

एक जोर अमरीकी सनापति इस प्रकार के भयंकर विनाश और विध्वंस के आँडों के रहने और दूसरी जोर दक्षिण वियतनाम में राष्ट्रीय मुक्ति मोर्चे के स्वयंसेवक सैनिक छापाकारों से उलझने में असफलता के कारण अमरीकी प्रेसिडेंट से और अधिक सैनिक भेजने की मांग की जा रही थी। फलस्वरूप 1964 की घम वागे शुरू होने ही अमरीकी युवकों को अनिवार्य सैनिक सेवा कानून के अन्तर्गत विवश करके हज़ारों की संख्या में हर तीसरे महीने अमरीका से वियतनाम में भेजा जाना लगा। वियतनाम में अमरीकी सैनिकों की संख्या दिनोदिन बढ़ती गयी और 1967 के अंत तक काँई 4,00,000 से अधिक सशस्त्र अमरीकी सैनिक उत्तर वियतनाम में पहुँच चुके थे।

युद्ध और विनाश की कहानियाँ और अमरीकी अत्याचारों का दमन चक्र दुनिया के सभी भागों में भिन्न भिन्न प्रतित्रियाएँ पैदा कर रहा था। थाईलैंड फिलीपीन आस्ट्रेलिया यूजीलैंड तथा दक्षिण अफ्रीका की अलाकाप्रिय सरकारों अमरीकी आर्थिक सहायता के दबाव में अमरीकी सैनिक कारवाइया का वियतनाम में समर्थन कर रही थी जबकि बाकी सभी राष्ट्र अमरीकी प्रेसिडेंट से बमबारी रोकने और युद्ध बिराम करने की अपील कर रहे थे। अमरीका के प्रमुख सनापति जनरल चरल्ट मूरलैंड ने अमरीकी कांग्रेस के एक संयुक्त अधिवेशन में अपनी विजय के आँड प्रस्तुत करते हुए और अधिक सैनिक सहायता देकर उनके युद्ध-स्थल पर हाथ मजबूत करने की अपील की और यह आश्वामन किया कि यदि उन्हें थोड़ा और समय और 3 डिविजन और सैनिक सहायता तथा 15 स्क्वेडन वायुमना के दे दिये जायें तो वे पूरा रूप से दक्षिण वियतनाम को अपने अधीन करके उत्तर वियतनाम को समझौते के लिए विवश कर देंगे।

लेकिन समझौता किस बात का ? यह किसी भी अमरीका व प्रवक्ता या नेता को पता न था । फरवरी, 1968 का प्रथम सप्ताह वियतनाम में अमरीकी साम्राज्यवाद के लिए बड़ा अशुभ सिद्ध हुआ और उसको एक ऐतिहासिक घटना के रूप में याद किया जाता रहेगा । 'टेट' वियतनाम का एक सांस्कृतिक त्यौहार है और वसंत के दिन जबकि अमरीकी सेनापति विजय की घोषणाएँ कर रहे थे और कह रहे थे कि वसंत वियतनाम में अमरीका की विजय होने ही वाली है वियतनाम की जनता ने एन० एल० एफ० के स्वयंसेवकों और सेनानियों के साथ मिलकर एक व्यापक सैनिक कारवाही को बड़ी सफलता से कर लिया था ।

17वीं समानांतर रेखा जहाँ कि दक्षिण वियतनाम की सीमाएँ शुरू होती हैं वहाँ से लेकर दक्षिण में मकांग घाटी के मोहाना तक पूव से पश्चिम और उत्तर से दक्षिण और गावा वस्वा और शहरो पर वियतनाम की जनता ने अमरीकी पिठनमू सगाव सरकार के झण्डे उतारकर अपना राष्ट्रीय झण्डा एक साथ फहराया । ठीक एक ही समय एक ही घण्टे और मिनट पर हर अमरीकी चौकी हर अमरीकी हवाई जड्डे और हर अमरीकी सेनापति के शिविर पर हथगोला तोपा बंदूकों तथा दूसरे शस्त्रास्त्रों से वियतनामियों ने आक्रमण किया । सगाव स्थित अमरीकी राजदूतावास को कई घण्टा तक एन० एल० एफ० के स्वयंसेवकों ने अपना कब्जा में रखा और सगाव का जाधे से ज्यादा शहर मुक्तिवाहिनी ने स्वतंत्र करा लिया । सफ़ा अमरीकी विमान तापें टक तथा बख़तरबंद गाडियाँ नष्ट कर दी गयी और केवल मातर्वें बड के हवावाज सत्रिय रूप से सैनिक कारवाही कर उमका प्रतिकार कर सकत थे ।

विमान वाहक जगो वेडा से उडकर अमरीकी बमबारा न सगाव के मुक्त हुए शहरी भाग को बमा और राकेटो से तहस नहस कर डाला । अमरीकी सेनापतिया का एक ही आदेश था 'कवल मरा हुआ वियतनामी ही एक अच्छा वियतनामी है । शत्रु और मित्र पक्ष का कोई अन्तर न रहा और वियतनाम के धर्म स्थान बौद्धा के धर्म मंदिर गिरजाघर अस्पताल जनाथालय स्कूल आदि सभी भवना जिनका कि वियतनाम की जनता ने मुक्त करा लिया था बदले की हिंसा से नष्ट कर लिया ।

टेट जात्र मण की इस घटना से अमरीकी जनता में अपनी सरकार और सेना के प्रति अविश्वास और भी बढ़ गया । कुछ ही दिन पहले तक जबकि अमरीकी सेनापति इस बात का दावा कर रहे थे कि वे वसंत अब कुछ ही दिना में पूर्ण विजय प्राप्त करनवाले हैं अंत्य सिद्ध हुआ । दूसरी ओर विश्व में मानवाचित स्वतन्त्रता व अधिकारा के प्रति सहानुभूति रखनवाले देशों ने वियतनाम के स्वातन्त्र्य-संग्राम के सेनानियों की इस बात की मुक्त कण्ठ से प्रशंसा की कि उन्होंने बहुत ही मुस्तानी और माहम के साथ अमरीका के विशाल सैनिक-मगठन की नाक के बिनकुन नीचे

रहकर भी आक्रमण की योजना तैयार की और उसको बाधित कर दिखाया।

लेकिन टेट आक्रमण से जा सबसे बड़ी वान सिद्ध हुई वह यह कि जबकि अमरीका व जामूम वियतनाम व हर चप्पे चप्प पर मौजूद थे अमरीकी सैनिक हर क्षेत्र की नाकाबंदी किय हुए थे अमरीका के बमबार और सैनिक अड़्डे वियतनाम के हर वान पर मौजूद थे तब फिर कैसे वियतनाम के नागा तथा एन० एल० एफ० के स्वयमबका न मगाव का मरवार और अमरीका के सनापतिया की गध्र-दष्टि स बचकर ऐसी योजना का भप'नतापूर्वक कार्यान्वित किया। यह इमका प्रमाण है कि वियतनाम की जनता की सहानुभूति सगाव की सरकार और अमरीका व सैनिका के प्रति न हाकर एन० एल० एफ० व स्वातन्त्र्य संग्राम के सेना निवा क माथ ह।

टेट आक्रमण के बाद 27 फरवरी 1968 का प्रमुख अमरीकी सनापति जनरल अल व्हालर न प्रेसिडेंट जॉनसन का एक रिपोट म स्थिति का मूल्यावन करत हुए कहा था कि टेट आक्रमण से यह स्पष्ट हा गया है कि शत्रु ने अपनी हर कोशिश और सम्पूर्ण शक्ति लगाकर यह सिद्ध करन की कोशिश की है कि वह अब भी युद्ध करन की क्षमता रखता है। हालांकि शत्रु अपन उद्देश्यो का पूरा करन म असफल रहा ह क्यकि उनको अनेक सैनिक टुकडिया बुरी तरह मारी गयी है और अब बहुत कम्य अमें तक वे फिर युद्ध के काबिल न रहगे। फिर भी शत्रु का शहरा कस्वा और गावा म जनता का काफी समथन मिला। लेकिन इस सबवे बावजूद भी व उन पर सफलता व माथ अपना अधिकार न जमा सक। यह सच है कि वियतनाम की फौजा का नतिक स्तर और आत्मबल बहुत ऊँचा है, परन्तु शत्रु का बहुत नुबसान उठाना पडा है। लेकिन स्थिति से यह स्पष्ट हा जाता है कि वह बहुत शीघ्र ही वियतनामी जनता की सहायता स फिर हमने की तयारी कर सकता ह।

अनक स्थाना पर शत्रु ने बड़ी सफलता स कब्जा किया लेकिन वह सब सफलता अमराकी वायुसना की उचित और तज कारबाइ स असफल कर दी गयी। दक्षिण वियतनाम की जनता पर टेट आक्रमण का बहुत बुरा असर पडा है और सगाव शासन की लाकप्रियता और मर्यादा का इसम भारी ठेक पहुँची है।

जनरल व्हीलर ने शत्रु (उत्तर वियतनाम) और एन० एल० एफ० की सैनिक तयारिया की क्षमता का ब्यौरा देने हुए निखा ह कि हानाकि शहरी इलाका म शत्रु को बुरी तरह मार पची है ग्रामीण क्षेत्रो म उस काई नुकसान नहीं पहुँचा। 'टेट आक्रमण के समय एन० एल० एफ० न कार्ड 67 000 सैनिका को यद्ध म धकेला और हमारी जोर से मरनेवाला की संख्या 84 स अधिक न थी जबकि शत्रु व 40 000 लाग मारे गय, 3 000 स अधिक जिंदा पन्चे गय और काई 5 000 के करीब घायल हुए। टेट आक्रमण म पढ़ने दक्षिण वियतनाम म एन-एल० एफ० सैनिको की संख्या 2 40 000 के करीब थी। टेट आक्रमण के समय

व अपन सनिका का काई पाचवाँ भाग या बठ है। लेकिन उनरो उत्तर वियतनाम स सहायता बराबर मिल रही है और किसाना जोर खेता म काम करन वाले श्रमिका से भी बराबर लोगा का ब भरती कर रहे हैं। शत्रु के पास शस्त्रास्त्र पर्याप्त मात्रा म हैं जो उ हान जगला, खना और नाग्रोम और बम्माडिया म खिपा रये है। हो सकता है कि कभी-कभी उहे रसद मिलने की समस्या का मुकाबला करना पडता हा। लेकिन यदि जनता उनक साथ है तो यह समस्या उनक लिए ऐसी नहीं है जो वे हत न कर सकें।

जरनल व्हीलर ने दक्षिण वियतनाम पर टेट आक्रमण क दुष्प्रभाव पर अपने विचार लिखत हुए कहा था कि मनोबज्ञानिक दृष्टि म टेट आक्रमण ने दक्षिण वियतनाम को करारी चोट दी है विशेष तौर पर नागरिक क्षेत्रा म जहाँ क लोग जमरीनी सनिका क नजदीक होने के कारण अपन का सुरक्षित सममत थ। अब क किसी भी क्षण एन० एल० एफ० क हमला स भयभीत है। सगोन की सरकार का ढाचा पहने ही कमजार था अब और भी हिल चुका है। इसक अतिरिक्त अमरीकी बमबारियो क कारण कोई पाच लाख लोग बेघरदार हो गय है और इन लोगा की देखरख करना एक जोर नयी समस्या हो गयी है।

टेट आक्रमण से एक ऐसी भयकर निराशा अमरीकी सनिक और राजनीतिक क्षत्रा म फली जिसका परिणाम अमरीकी राष्ट्रपति जानमन की मानसिक स्थिति पर बुरा पडा। अमरीकी सेनापतिया ने प्रसिडेंट से जोर अधिक सनिक सहायता देने की माग की ताकि वे और भी अधिक तयारी क साथ टेट आक्रमण का बदला ले सकें। अब तक 5 25 000 स अधिक अमरीकी सनिक वियतनाम म पहुच चुके थे। अमरीकी सेनापतिया ने अब यह मांग की कि अमरीका मे पूर युद्ध की घोषणा कर दी जाय ताकि सभी बयस्का को फीजी टर्निंग के लिए विवश किया जा सकें।

3 फरवरी को जरनल व्हीलर ने वियतनाम म अमरीकी सेनापति जरनल वस्त मूरलण्ड का एक तार दिया कि क्या वे किसी प्रकार की और अधिक सनिक सहायता चाहत है जो कि वाशिंगटन उनको दन क लिए तयार है ? लेकिन जरनल वस्त मूरलण्ड वियतनाम क आजादी के सेनाबियो स उलझे हुए थे और उहान इस तार का काई उत्तर न दिया। 8 फरवरी को जरनल व्हीलर न एक दूसरा तार भेजा जिसम कहा कि ' क्या आपको और अधिन सनिक सहायता की आवश्यकता ह ? हम आपका 82वी हवाई टुकडी तथा नौसनिक फीजी भेज सकत है जिन दाना म ही ऐस सनिक भरे हुए हैं जो पहल ही वियतनाम म लडाई का अनुभव प्राप्त कर चुके हैं।

' पहल सनिक सहायता की जा व्यवस्था की गयी थी उससे आप अपन को बंधा न समझें कयाकि मयुक्त राज्य अमरीका की सरकार वियतनाम म हार मानन

के लिए तयार नहीं है। सक्षेप म, हम यह चाहते हैं विय दि तुम्ह और अधिक सनिक चाहिए तो मांगो, हम दे देंगे। ”

पहली मनिक व्यवस्था के अनुसार 1968 म 5,25,000 स अधिक सनिक न भेजे जाने की शन थी और 5,00 000 पहले से ही दक्षिण वियतनाम म पहुँच चुके थे। उमी दिन 8 फरवरी, 1968 को जरनल वस्ट मूरलण्ड ने सगाव स वार्शिंगटन को प्राथना की कि वे तुरत ही नाविक सनिक द्वारा उत्तर वियतनाम पर हपले के आदेश दें ताकि वियतनामी सनाया का ध्यान उत्तर वियतनाम की रक्षा की जोर माडा जा सके। जरनल वस्ट मूरलण्ड न 9 फरवरी को वार्शिंगटन का एक दूसरा म देण भजा जिसम कहा गया था

यह कहन की जरूरत नहीं कि यदि आप नुरत जोर सनिक भेज सके ता मैं उसका स्वागत करूँगा। शत्रु की बढ़ता हुइ कारवाइया का रावन व लिए यह आवश्यक है कि मुझे जोर अधिक सनिक दिय जाय।

13 फरवरी, 1968 को जमरीकी रक्षा सचिव मैकनमारा न एक जोर त्रिगड वियतनाम म भेजन के आदेश दिये और 14 फरवरी को प्रेसिडेण्ट जानगन न एक निजी विदाई समाराह देकर 82वें एयर बोन त्रिगड के 10,500 जमरीकी सनिका को दक्षिण वियतनाम के लिए खाना किया।

अधिकारिक सनिक तयारी और विनाश का आधार यह था कि अमरीका की सरकार के सलाहकारा म केवल सनिक शासका का बोलवाला था। किसी ने इमके मानवीय पथा पर विचार न किया। जरनल टेलर न जो उस समय अमरीका के सगाव म राजदूत थे किसी भी प्रकार के समझौते की बातचीत न करन की सलाह दा जोर उत्तर वियतनाम पर बमबारी जारी रखने को कहा। दूसरी जार हुनोइ की सरकार न अंतर्राष्ट्रीय शाति के प्रयत्ना का स्वागत किया और यह मांग की कि वे समझौते की बातचीत के लिए तयार है यदि अमरीका उत्तर वियतनाम पर बमबारी को रोक दे। लेकिन इन सभी शान्ति प्रस्तावा की अवहेलना करत हुए जरनल टेलर ने अमरीकी मनिक अड्डो का बढ़ाने तथा जोर अधिक सनिका का वियतनाम म भेजने का आग्रह किया।

1968 म 5,25 000 हजार सैनिक प्रतिवप कोई 4 00 000 हवाई हमले जिनम कोई 12 00 000 (1 2 मिलियन) टन की बमबारी द्वारा 2 00 000 स अधिक लोगो की हत्या 20 000 स अधिक जमरीकी सनिका के मारे जान के बावजूद जमरीकी सरकार वियतनाम म किसी भी प्रकार की शाति या राज नीतिक प्रभुमत्ता स्थापित करन म अममथ रहा। जत कुछ सलाहकारा का यह कहना था कि टेट आक्रमण म वियतनाम व लोगो न यह सिद्ध कर दिया है कि वियतनाम की समस्या का समाधान लडाई व मैदान म नहीं हो सक्ता। अमरीक

यू हैमशायर म यूजीन मैकार्थी को अमरीकी विश्वविद्यालय के छात्र द्वात्राआ न अपना तन मन प्रन लगाकर उनकी उम्मीदवारी को सफन बनान का जाशवा मन दिया । श्री यूजीन मैकार्थी की शान्ति के नाम पर का गयी घापणा से एक ओर अमरीका म शांति आदानन को बडा ममथन मिला तो दूसरी जोर 13 माच का व्हाइट हाउस से हुइ एक घापणा के अनुसार प्रेसिडण्ट जानसन न 30 000 और सनिका का वियतनाम भेजन का फसला किया और यह भी कहा कि अगल आनेवाले म के महीने म 30 000 और भी सनिक भेजे जायेंगे । इस प्रकार शीघ्र ही वियतनाम म अमरीकी सनिका की सम्था 5,80 000 के करीब हो जायेगी ।

माच 16 का यूजीन मैकार्थी द्वारा शांति के नाम पर हुई लाकप्रियता को देखते हुए भूतपूर्व प्रेसिडेण्ट जान कनेडी क भाई सनेटर राबट कनेडी ने डमात्रे टिक पार्टी के टिकट पर चुवाव नउने की घोषणा की । उसके अगले दिन 17 माच को 'यूयाक टाइम्स ने एक खबर छापी जिमक अनुसार जगने 6 महीने के भीतर भीतर 50 000 और अमरीकी सनिक दक्षिण वियतनाम म भेजे जाने की अनुमति प्रेसिडेण्ट जॉनसन दे चुके थे ।

18 माच को अमरीकी सनेट के 139 सदस्य ने जिनम 48 रिपब्लिकन दल और 41 प्रेसिडेण्ट जानसन की अपनी ही डेमोक्रेटिक पार्टी के सदस्य थे हस्ताक्षर करके एक प्रस्ताव म यह मांग की कि दक्षिण-पूर्व एशिया की नीति पर पुनर्विचार किया जाय । उसी दिन प्रेसिडेण्ट जॉनसन एक स्थान पर भाषण दे रहे थ और जब लागाने उनका विरोध किया और उनक विरुद्ध प्रदर्शन किया तो उहाने आवेश म आकर कहा कि 'लगता ऐसा है कि हनोई जा लडाई ह्वे और खेसान के युद्धस्थल मे नही जात मका उसे वाशिगटन म शांति जादोलना स जीतना चाहता है ।' उहाने कहा कि आप लोगाने से जो लाग मीत स बचने के उद्देश्य से नडाई का जगलो और पहाडा की बजाय अमरीका के शहराने म लाना चाहत हैं जहाँ कि हमारी सम्थ जनता बसती है उनका अभी कुछ और भी दखने का मिलगा ।'

लेकिन प्रेमिडेण्ट जॉनसन क इस शोधभरे बकनय के बावजूद देश के चिन्तका विचारका और ममाचारपत्रा क नेत्रका का यही कहना था कि प्रेमिडेण्ट जानसन टट आश्रमण और बतमान अमरीकी जनता के युद्ध विराधी विचारा से बटुन सन्नस्त हैं और कुछ न कुछ नया नीति और नया बदम उठान का माच रह हैं । इसी बीच सयुक्त राष्ट्र सघ स्थित अमरीकी प्रतिनिधि श्री गोडबग न प्रेमिडेण्ट जानसन का एन पत्र म यह सुनाव दिया कि ब अंतर्राष्ट्रीय जनमत का बादर करत हुए उत्तर वियतनाम म बमबारी को तुरत म्यगित कर दें । प्रेमिडेण्ट जॉनसन का इस पर बहुत शोध आया और दूसर दिन अपने मनाह्वारा की एक मीटिंग म

उहाने आवश म Tहा

जाप मबरा इम बात म आगाह है। जात नातिह नि में यह रह रहा है कि में बमबारी राखूंगा नहीं। आपम म बाई लगा है जिम यत्र तान स्पष्ट न हा ?

लेकिन इगी बीच प्रेमिडेण्ट जातमन 1 श्री गान्धम म बहाति व अपनी दलीला पर फिर स विचार करें और उत्र फिर मिनें। 22 माच को प्रमिडेण्ट जानमन न रागी म अपन सातापति जतरत वस्ट मूरसण्ट का युद्ध क्षत्र म हटा लिया जा। इस बात का प्रमाण था नि प्रमिडेण्ट एन नया नीति अपनाता चाहत हैं। 25 माच का जनरल जग्राहम न वस्ट मूरसण्ट व स्थान पर एत्र ग्रूण किया और आनेवाल मफ्नाहा म धीर धीर बमबारी बम करन की नीति अपनायी।

विश्व दशा की राजघातिया म अमरीका विराधा प्रणन और गाति जाणोन जारा स एत्र रह थ जीर वाशिगटन म ब्याइट हाउस व बमरा म प्रमिडेण्ट जानमन जनर दश विदेश व सनाह्वारा स मशविर म तातीन थ। प्रमिडेण्ट जानसन न 1 अप्रल को इम बात की घापणा की नि व धीरे धीर उत्तर वियतनाम एत्र बमबारी को बम करत जायगे। जीर यदि उसत्र उत्तर म उत्तरी वियतनाम न दक्षिणी वियतनाम व एन० एल० एफ० का महायता दना बंद कर लिया जीर समझौते की बातचीत के प्रति उमुक्ता दिग्गयी तो बमबारी पूरी तरह स राव दी जायगी। उहाने कहा

मैं आज अपने अमरीकी विमाना जीर जगी बेडा को यह आदेश द चुका हूँ कि व उत्तर वियतनाम के क्षेत्रा पर बमबारी बंद कर दें। लेकिन सीमा के नजदीक के क्षेत्रो पर जहाँ से उत्तर वियतनाम की सनिक सहायता दक्षिण वियतनाम को पहुँचती है हमारी सनिक बायबाहियाँ जारी रहगी। जिस क्षेत्र म हमने बमबारी रोफने का बादश दिया है उसम उत्तर वियतनाम की 90 प्रतिशत जनता रहती है और वह उसका प्रमुख क्षेत्र है। उत्तर वियतनाम व खेता पर और घने बस इलाका पर बमबारी नहा की जायगी।

उहाने यह भी कहा कि अमरीकी सनिको की सख्या 30 000 और बढ़ा दी जायगी। जीर फिर अत म दुनिया का आश्रय मे डाल देनवानी सबसे महत्वपूर्ण घापणा जिसका मुनन व लिए विश्व व शांतिवादी जीर अमरीका क करांडा लाग आतुर थ यह थी मैं अपनी पार्टी का प्रमिडेण्ट पद के लिए नाम जदगी स्वीकार नहीं करूंगा। जीर 3 अप्रल को प्रेमिडेण्ट जानसन ने अमरीकी जनता को यह प्रताया कि इनोने ने अमरीका द्वारा बमबारी को रोक देने क उत्तर म समझौते की बातचीत करने की तत्परता दिखायी है।

टेट आक्रमण द्वारा वियतनाम की जनता न अमरीका व मैनिंक सगठन के दावों को ही चूटा सिद्ध न किया वल्वि अमरीका की राजनीति को भी एक नयी दिशा की ओर माड दिया। जो हालत फ्रासीसी साम्राज्यवाद की दियी बीया फू म हुई थी उससे भी अधिक महत्वपूर्ण प्रभाव टेट आक्रमण का अमरीकी सनिक स्थिति और राजनीतिक मर्यादा पर पडा।

वियतनाम मे नर सहार

लखक चितव आदि जा अमरीकी वमबारी व समय उत्तर वियतनाम का दौरा करके लाटे हैं उन सभी का यह कहना है कि वमबारी की भयकरता का देखत हुए यह आश्चर्य की बात है कि वहाँ के नगरा और गाँवा म अनुपात मे बहुत कम लाग मारे गये हैं। किन्तु दक्षिण वियतनाम म जिस क्रूरता स वहाँ की जनता को अमरीकी नीतिया का स्वीकार करने व लिए विवश किया गया और वहा के वयस्का को लडन के लिए मजबूर किया गया और आय दिन वहा के स्त्री-पुरुषा के साथ अमरीकी सनिको न दुःखवहार किय उन सबकी एक लम्बी कहानी अत्या चारा की कहनी है जिसकी सुप्रसिद्ध दार्शनिक बर्ट्रेंड रमल और जीन पाल सात्र ने कडी निंदा की।

जीन पॉल सात्र न आखादेने प्रमाणा के आधार पर वियतनामी जनता के उपर किये गये अत्याचारो के विरुद्ध एक ट्रिब्यूनल का सगठन किया जिमके अधि वशना म व प्रमाण प्रस्तुत किय गये जिमस यह मिद्ध होता है कि अमरीका ने जान-बूझकर पाजनावद्ध रूप स वियतनाम की जाति का नाश करने की कोशिश की। कोपन हागन स इस ट्रिब्यूनल ने उन सभी प्रमाणो का एकत्र करव उन पर विचार किया और अंतर्राष्ट्रीय 'यायाधीशा के इस सम्मेलन न इस बात का निणय दिया कि जो प्रमाण उपलब्ध है उनस यह सिद्ध हाता है कि इसमे काइ सदेह नही कि सयुक्त राज्य अमरीका शांतिप्रिय निश्शस्त्र नागरिका स्त्री-मुख्या, वच्चा की हत्या का दापी है। इसके प्रमाण पाये जाते है कि अमरीकी सनाए एसे क्षेत्र पर आक्रमण करती है और उन लागों की हत्या करती ह और करवाती हैं तथा ऐस स्थाना पर गोले बरमाती हैं जिनका सनिक दष्टि से कोई महत्व नहा। एस जुल्मा का उद्देश्य वियतनाम की जाति का नाश करके उनकी युद्ध तथा सनिक तयारी म कमी लाना और इतना श्रातक बिछा देना है कि व लडन का साहम न कर सक और युद्ध जारी न रख सकें।

जीन पाल सात्र न पिछले ऐतिहासिक उदाहरणो का हवाला देत हुए कहा कि जेनेवा कनवे शन 1864 म यह कहा गया था कि यदि दो देशा या दो पक्षो म युद्ध हा ता के लाग जो निश्शस्त्र हा या जो सनिक दष्टि स महत्वपूर्ण स्थान न हो, उन पर किसी भी प्रकार की सनिक कारवाई करनेस परहज करेंगे। तटस्थ

नागरिका स्त्री बच्चा और जात-जावन व लिए उपयोगी व चीर ग्याना तथा अस्पताला स्कूला जादि का नष्ट करके अमरीका न अंतराष्ट्रीय मतिर नियमा और व्यवस्था क विपरीत काम किया ह। श्री सात न दूगरा उन्हाहरण दत हुए यह बताया कि अमरीका क आक्रमण का उद्देश्य क्या है ? तन्नालान विद्वज मत्री डीन रस्व ने एउ वक्तव्य म कहा था

हम (अमरीकी) अपनी सुरक्षा क लिए लड रहे हैं। यदि यह बात सही है तो पहल अमरीकी सरकार ने जो बकनव्य दिया था कि उत्तर वियतनाम क हमले स दक्षिण वियतनाम की सरकार को बचान क लिए अमरीका सनिक कारवाई कर रहा है वह झूठ ह। जब प्रश्न उठता है कि क्या भगांव म अमरीका की सुरक्षा का खतरा है ? इसका स्पष्ट उत्तर यह हुआ कि अमरीकी सना जहाँ कही भी हा उसका उद्देश्य किसी और क लिए खतरा पदा करता हाता है। साम्यवादी खतर स उत्पन स्थिति का मुकाबला करने के लिए वे दक्षिण-पूर्व एशिया पर अपना अधिकार जमाय रखना चाहत ह। लकिन यदि इस उद्देश्य स अमरीका ने हनाई म अपन सनिक अडडे तयार किय और व कम्बोडिया तथा लाओस को वियतनाम की तरह ही अपने अधिकार म बनाये रखना चाहते हैं और इसलिये एक सयुक्त वियतनाम की स्थापना नहा होने दते तो उनका उद्देश्य अमरीकी सुरक्षा नही किंतु उसस भी कुछ अधिक ह। जब डीन रस्व यह कहत है कि अमरीकी सेनाएँ वियतनाम म इसलिए लड रही है कि तृतीय महायुद्ध न हा तो उसका स्पष्ट जथ यह है कि व अमरीकी नीतिया को इन धत्ता पर कायम रखना चाहत हैं।

अमरीकी सेनाएँ वियतनाम म मजबूती स जमी हुई हैं। वमबारी तथा नर सहार भयकर रूप से जारी ह और लाओस म अपन अधिकार को कायम रखत हुए वे कम्बोडिया मे आक्रमण की याजना बना रही है। इस सबका यही नतीजा निकलता है कि अमरीका चाह वह कुछ भी कहे जाति सहार करन पर तुला हुआ है। वना कोई पूछे कि हिंद चीन क लोगो ने कब यह एलान किया कि वे अमरीका को हराना चाहते है या कि व अमरीका को नष्ट करन का दावा करत हैं। फिर वियतनाम, लाओस और कम्बोडिया के पास न हथियार है और न इतनी शक्ति कि व कभी भी अमरीका की सुरक्षा के लिए कोई खतरा पदा कर सकें।

अमरीका के इतिहास स परिचित लोगो को पता है कि अमरीका की गोरी जातिया ने अमरीका की आदिवासी रड इंडियन जाति का विनाश किया है। एशियाई जातिया के विरुद्ध और काली और अश्वेत जातिया क विरुद्ध अमरीकिया के निल और दिमाग म जो घणा और हीनता के भाव पाय जाते है व कहीं तक उनकी वतमान वियतनाम नीति क पीछे हं यह अमरीकी सनिका की हुरकता स स्पष्ट हा जाता है। अमरीकी सरकार ने अभी तक सयुक्त राष्ट्रसंघ के जनासाइड

वनवैज्ञानिक का अनुमोदन नहीं किया। इसका अनुमोदन न करने उगम यह मिथ्या पर किया है कि अमरीकी स्वयं को उस वचन से मुक्त रखना चाहना है जिसने द्वारा वह वियतनाम या दूमरी अश्वन जानिया के विरुद्ध महार की नीति अपना गये।

1966 के बाद स मेराग स लेकर मत्रहवा समानांतर रखा तब के क्षत्र म अमरीकी मनिरा ने जा व्यवहार किया वह उनकी रगभद नीति तथा सासृत्विक घणा भावना का ज्वन्त प्रमाण है। नौजवाग अमरीकी सनिक तरह-तगह की पीडा देनेवाले उपकरण का प्रयोग करते हैं। निशस्त्र स्त्री-मुग्धा का गोली का निशाना बनाते हैं। हुताहत वियतनामी सागा के गुप्त अमा पर व जूत स टाकरे मारत हैं। मुग्धा साशा के कान काटकर व ट्रापा ती तरह पर ल जान हैं। अमरीकी सनिक अफगरा की भी वसी ही कहानियाँ हैं। एक अफगर न डीग हाँरी कि हेलिकॉप्टर स उसन धान के सेत म काम करत हुए वियननामी कम्युनिस्टा का गानी का निशाना बनाया। वास्तव म व एन० एल० एफ० के सनिक नहीं थक्याकि व जानत हैं कि व हेलिकॉप्टर म अपनी आत्मरक्षा कम करें। किंतु य लोग वचारे साधारण किसान थे जो वियतनाम म अपनी परम्परागत मती म धान वात जीर काटत थे। अमरीकी सनिक के विवत्तय विमूढ निमाग इस याग्य नहा रहे कि व वियतनाग जीर वियतनामिया व बीच वाई अंतर कर सकें। आपस के मजाक और वातचीत म अमरीकी सनिक अफगर यह कहत हुए गुन जात हैं जो कि उनके पूवज अमरीका के आलिवामी रड इडियना व लिए कहा करत थ कि अच्छा वियतनामी वही ह जा मुर्दा वियतनामी है और जा मुर्दा वियतनामी है वह वियत नाग है। गोली व बमा की मार म मारा गया हर वियतनामी कम्युनिस्ट है यदि मरते समय नहीं तो कम स कम वाद म तो वह कम्युनिस्ट बन ही सता था।

• •

अमरीकी सैनिक वनाम दक्षिण-वियतनाम का मुक्ति-मोरचा और जन-विश्वास

‘ वियतनाम की राजनयिक पराजय असम्भव है और इसका कारण है—कि वे जनता के बहुत नजदीक हैं उन्हें वियतनाम की समस्याओं का चाप है और वे अपने राष्ट्रीय सम्मान और स्वतन्त्रता के प्रति सचेत हैं। सर्गिव का कोई शासन इन बातों में वियतनाम को नहीं हरा नहीं सकता ।

—“दी टाइम्स” (लण्डन)
माघ 42 1966।

अमरीका—विषय के इतिहास में इतने बड़े देश ने अपनी सैनिक शक्ति के बल पर वियतनाम का स्वच्छाचारिता का प्रयोग प्रारंभ करना चाहा। उसकी सैनिक कारबाई के पीछे बहुत अशांति तब उसकी ईसाइयत की धार्मिकता का अधविश्वास छुपा था कि वह साम्यवाद के शतान के चगुन से वियतनाम के एशिया की जनता को बचाना चाहता है। ऐसे ही अधविश्वास के कारण 1495 में पाप में धर्माधिकार प्राप्त कर पुनर्जातियों के स्पेनवासियों ने दुनिया के शक्ति प्रिय गरीब असाइ दशा का लूटा था। तब सहार किया था और भय के तात्त्विक के बल पर उन्हें ईसाई बनाने की वांछित की थी।

1858 में जब रानी विक्टोरिया ने भारत को अपने साम्राज्य का अंग घोषित किया तो उसकी घोषणा में भी ईसाइयत के पाक इरादा को कायाचित करने का हवाला था और अमरीका प्रसिद्धेण्ट मक्लिन्ने ने 1898 में जब हवाई फिलीपीन आदि देशों पर अधिकार जमाया तब उन्होंने भी मानव जाति के उद्धार में सहायक होने की भगवद इच्छा की पूर्ति को ही अपना आदर्श माना था।

पश्चिमी राष्ट्रों के साम्राज्यवादी पूँजीवादी शोषण का सद्भातिव आधार दुर्भाग्यवश महान मत्त ईसा मसीह का मानव सवापरक उपदेश रहा है। लेकिन अफ्रीकी देशों में एक बहावत प्रचलित है कि "जब गोरा आदमी आया उसके हाथ में बाईबल थी और हमारे पास जमीन। अब हमारे हाथ में बाईबल है और उसके पास जमीन।"

अफ्रीका, दक्षिण अमरीका तथा एशिया के राष्ट्रों में यही हुआ।

मिशनरी के साथ-साथ पहुँचे पश्चिमी देशों के पूँजीपति और धर्म और पूँजी की सुरक्षा के लिए जायी फौजें। शोषण का काम बना हमारे क्षेत्रों में राजे महाराजाओं के आपसी मत मुटाब में, तथा भापाई प्रांतीयवाद के विद्वेष में। और पश्चिमी साम्राज्यवादियों ने हमारे लोगों को लड़ाया और धर्म प्रचार के साथ साथ अपना व्यापारिक व सैनिक शासन स्थापित करते चले। जहाँ सम्भव हुआ स्थायी व्यापारियाँ और किसानों को किसी छोटे स या नये कानून की आड़ में स्थानांतरित किया और उनकी मटिया तथा उपजाऊ भूमि अपने व्यापारियों और यूरोप के भूमिहीन बेकारों का यात्रा अपने स्थानीय गुर्गों को दे डाली। पीछे स्वदेश स्थित जनता व विचारकों को स्थायित्व का प्रचार लोक उद्धार व पिछड़ी जातियों का आधुनिकीकरण सरीखी ऊँची ऊँची बात सुनायी जाती रही।

किंतु वास्तविकता यह थी कि पश्चिमी मानव अपनी पाशविक प्रवृत्तियाँ हिंसा, धर्म लिप्सा दम्भ व पाखण्ड की तृप्ति के लिए एशिया में शोषण, विनाश व नर-महार करके अपने अहंकार व लालुपता को ज्वाला का शांत करना चाहता था।

अमरीकी महाद्वीप पर गोरी जातियों के लोगों ने जा कुछ किया वह अफ्रीका व एशियाई देशों में घटित साम्राज्यवाद की ही दूसरी और उससे भी बड़ी अधिक क्रूरतापूर्ण इतिहास की एक कड़ी है।

पिछले 25 वर्षों में अमरीका ने हिंद चीन व वियतनाम में जो हरकतें की हैं उनकी आधारशिला गोरी जातियों के—फ्रांस जर्मनी, पुतगाल, स्पेन और अंग्रजों की प्रवृत्तियाँ का ही अत्यंत रूप है। अंतर केवल तब और जब का है। पहले 18-19वीं सदी में पश्चिमी साम्राज्यवादी सरकारें अपनी फौजों को जर्मनी, पिछड़ी जातियों को ईसा का शांति सन्देश सुनाने तथा आधुनिक अर्थ शासन व्यवस्था में विकास की ओर ले जान के लिए हमला का हुक्म देती थीं।

जब—वाशिंगटन का प्रेसिडेंट और सैनिक शासन एशिया के पिछड़े देशों को 'साम्यवाद से बचाकर' अमरीकी प्रजातंत्र का सम्य सिद्धांत मिशन के लिए हमला का हुक्म देता है।

अमरीका में साम्यवाद विरोधी भावना ने एक धार्मिक मताघता का रूप धारण कर लिया है। साम्यवाद विरोधी प्रोपगण्डा तथा पाखण्ड उन्नी अघ

सध्या 3 प्रतिगत रह गयी थी जो कि शांतिरालीन अनुपात में सबसे कम थी। किंतु अघापित वियतनाम युद्ध उस समय अपनी चरम सीमा पर था। जसकि हजारों वियतनामी प्रति सप्ताह मारे जा रहे थे और अमरीकी फौजें लापा की तादाद में हिन्द चीन पर उतर चुकीं थी, अमरीकी प्रेसिडेण्ट अपनी हृदयहीनता की पराकाष्ठा पर उतर आये थे जसकि उन्होंने कहा कि 'अमरीकिया न इतन अच्छे दिन कभी नहीं देखे।'

प्रजातन्त्र के दावेदार यह भूल गये थे कि प्रजातन्त्र का अर्थ है जनता का तन्त्र न कि मुट्ठीभर पूजीपतियों का मुनाफा। और विश्व की सबसे बड़ी सनिक शक्ति की वियतनाम के धान के सेता में मार खान का रहस्य इसी में छुपा हुआ है। वियतनाम का युद्ध जनता का युद्ध है और जब स्वतन्त्रता के याग की भांग पर अपना सबस्व यौद्धावर करने को जनता तन्द्रप्रतिन हा तो बड़ी स बड़ी ताकत भी उनके लाहे को नहीं झुका सकती। अपने जाधिक हिता और मुनाफ के लिए अगर अमरीका अपनी सीमाभा से 10 000 मील दूर लडने को तयार है तो वियतनाम की जनता अपने देश की आजादी अपने सेता की सुरक्षा और अपनी आनेवाली पीढी के भविष्य के लिए कितना त्याग करने को तयार है।

इसका अनुमान नहीं लगाया जा सकता और यही है अमरीका की हार का मुख्य कारण। उनकी लडाई का आधार असत्यमय है और वे चाहते हैं पाशविक शक्ति का भय दिखाकर वियतनाम के किसानों की आजादी के भविष्य का लक मेल कर लें जिसे वियतनाम के वीर सेनानियों ने अस्वीकार कर दिया है।

अपनी हर चाल में असफल होकर वार्शिंगटन ने वियतनाम और हिन्द चीन क्षेत्र का बमबारी और गसा के प्रयाग से विध्वस्त कर डालने की विभीषिका तयार की। अमरीकी सना और सिपाहियों ने जो जुल्मों मितम का खया अपनाया उसके सामने चगज के तमूरलगा याकि हिटलर के तोजा के सिपाहियों के अत्याचारा की कहानियां फीकी पड जाती है।

प्रस्तुत लखक को अनेक वियतनाम नागरिका, बौद्ध विद्वान भिक्षुजा और अमरीकी सनिका से बातचीत का अवसर मिला है। ऐसे सनिका स भी जो वियतनाम में 2 3 साल युद्ध में लडकर लौटे थे और ऐसे भी जो अभी जानेवाले थे। मरे एक गोरे विद्यार्थी ने जा अनिवाय सनिक भर्ती कानून के अधीन वियतनाम युद्ध में जानेवाला था का कहना था 'मैं डरपोक हूँ। कानून तोडकर 2 3 साल की जेल तो जा सकता हूँ पर जिन्दगी भर समाज का बहिष्कार सहन नहीं कर सकता। जेल का कलक लेकर मुझे न कोई अच्छी नौकरी मिलेगी न कार्ड अच्छी लडकी। और फिर 2 साल युद्ध में मुझे तनड्वाह मिलेगी देश विदेश की तर कहेगा और युद्ध स चोटकर भुझ पढाई का बजीपा और पेशन मिलेगी।

एक दिन एक रड इंडियन युवक से बात हुई जो 2 3 दिना में ही युद्ध क्षेत्र

म भेजा जानवाला था "हम तयार रहने के हुक्म आ गये हैं। (जून 1971 की बात है।) लेविन" मीने कहा, "निक्सन तो कहते हैं फौजें बुला रहे हैं।' तो वह बोला "वह सब तो दिखावा है। परमा ही हमारे कम्प स कोई 10,000 जवान वियतनाम का खाना होंगे।'

'आपके विचार मे अमरीका को युद्ध जारी रखना चाहिए ?'

उसका उत्तर था 'मुझे अंतर्राष्ट्रीय बात का पता नहीं। मैं एक रड इंडियन चीफ का बेटा हूँ। लोग ने हमारी बहुत सी जमीन लूटी है। अब जो कुछ हमारा बचा है उसे ये कम्युनिस्ट छीनना चाहते हैं। मैं तो वियतनाम म इह ही मिटाने जा रहा हू। वरना व आहायो (अमरीका का एक राज्य) म हम तग करेंगे।"

और एक काले अमरीकी युवक न युद्ध म जाने का कारण बतात हुए कहा

'इम गोरे के देश अमरीका म मेरी जिन्दगी की कीमत ही क्या है ? मैं कोई प्रेसिडेंट तो बनने से रहा। सारा जीवन किसी गली वस्ती (स्लम) म सड़ता रहूंगा वरना किसी गार सिपाही की गली का निशाना बना दिया जाऊंगा। वियतनाम म किसी का गली से मारन का मजा तो थायगा और फिर सरकार पेटभर खाना दगी शराब देगी हवाई जहाज का टिकट देगी लडकियाँ दगी, बजाफे देगी और अगर लडाइ म मारा गया ता भर वीवी-वच्चा का पेंशन देगी मुफ्त पढाई के बजाफे मिलेंगे और शायद मरन के बाद मरा कफन दूसरे गार सिपाहिया के साथ एक ही कब्रिस्तान म दफनाया भी जा सक्या। वरना अमरीका म हम काला को कब्रिस्तान मे भी समानता कब नसीब हाती है ?

अमरीका के सरकारी वक्तव्या के अनिरीक्त इस लेखक को कोई भी दा अमरीकी नागरिक एस नहा मिल जिन्हान यह स्वीकार किया हो कि अमरीका वियतनाम म प्रजातन्त्र की रक्षाथ लड रहा ह और प्रत्यक अमरीकी सत्त्व की कहानी तीन श्रेणिया म रखी जा सकती है —

(1) बहुत बडी सख्या एस गारो की है जा रोमास, और ओशील कारनामा की कहानिया पढ-पढकर अपन जीवना म कुछ रामाचक करना चाहत ह। उसाह और साहसिय कर देखने और खुलकर ठग ठाँग गालिया चलाने के मीने की तलाश म ये वियतनाम युद्ध म भाग लेत है। माना कि जीवन म कुछ और साहसिक करन को शेष नही रहा। एम युवक प्राय तलाशगुदा उजडे परिवारग के लडक होते है याकि हिमात्मक प्रवृत्तिया से भर रगभेद सञ्चति क पीछे जो अश्वेत जातिया को हीन भावना से देखत हैं। वेस्टन फिल्म देख-देखकर जिनम रड इंडियना को मार मारकर गारी जाति की श्रेष्ठता दिखायी गयी होती है वे उसी इतिहास को दोहराना चाहते है जिसेकि उनके पूवजा न रड इंडियना के खिलाफ किया था। और वियतनाम ऐसे ही कारनामा का मीडाक्षत है। युद्ध

सख्या 3 प्रतिशत रह गयी थी जो कि शांतिकालीन अनुपात में सबसे कम थी।
 किंतु अध्यापित वियतनाम युद्ध उस समय अपनी चरम सीमा पर था। जबकि
 हजारों वियतनामी प्रति सप्ताह मारे जा रहे थे और अमरीकी फौजे लाखों की
 तादाद में हिंद चीन पर उतर चुकी थी अमरीकी प्रेसिडेंट अपनी हृदयहीनता
 की पराकाष्ठा पर उतर आये थे जबकि उन्होंने कहा कि "अमरीकियों ने इतने
 अच्छे दिन कभी नहीं देखे।"

प्रजातंत्र के दावदार यह भूल गये थे कि 'प्रजातंत्र का अर्थ है जनता का
 तंत्र न कि मुट्ठीभर पूंजीपतियों का मुनाफा। और विश्व की सबसे बड़ी सैनिक
 शक्ति की वियतनाम के धान के खेतों में मार खाने का रहस्य इसी में छुपा हुआ
 है। वियतनाम का युद्ध जनता का युद्ध है और जब स्वतंत्रता के त्याग की मांग
 पर अपना सबस्व यथोच्चावर करने को जनता दबप्रतिन है तो बड़ी से बड़ी ताकत
 भी उनके लोहे को नहीं झुका सकती। अपने आर्थिक हिता और मुनाफ के लिए
 अगर अमरीका अपनी सीमाओं से 10 000 मील दूर लड़ने को तयार
 है तो वियतनाम की जनता अपने देश की आजादी अपने खेतों की सुरक्षा और
 अपनी आनेवाली पीढ़ी के भविष्य के लिए कितना त्याग करने को तयार है।

इसका अनुमान नहीं लगाया जा सकता और यही है अमरीका की हार का
 मुख्य कारण। उनकी लड़ाई का आधार असत्यमय है और वे चाहते हैं पाशविक
 शक्ति का भय दिखाकर वियतनाम के किसानों की आजादी के भविष्य का एक
 मेल कर लें जिसे वियतनाम के वीर सेनानियोंने अस्वीकार कर दिया है।

अपनी हर चाल में असफल होकर वार्षिकगणना में वियतनाम और हिंद चीन
 क्षेत्र को दमवारी और गसने के प्रयाग में विध्वस्त कर डालने की विभीषिका
 तयार की। अमरीकी सेना और सिपाहियों ने जो जुल्मों सितम का रचना अपनाया
 उसके सामने चगज के तमुरलगे या कि हिटर के ताजा के सिपाहियों के जत्या
 चारा की कहानियाँ फीकी पड़ जाती है।

प्रस्तुत लेखकों को उनके वियतनाम नागरिकों बौद्ध विद्वान भिक्षुओं और
 अमरीकी सैनिकों से बातचीत का अवसर मिला है। एक सैनिक से भी जा
 वियतनाम में 2 3 साल युद्ध में लड़कर लौटें और एम भी जा अभी जानेवाले
 थे। मर एक गोरे विद्यार्थी ने जा अनिवाय सैनिक भर्ती कानून के अधीन वियत
 नाम युद्ध में जानवाला था का कहना था मैं डरपाक हूँ। कानून तोड़कर 2 3
 साल की जल ता जा सरना हू पर जिंदगी भर समाज का बहिष्कार सहन नहा
 कर सरना। जन का कलक लेकर मुझे न कोई अच्छा नीतरी मिलगी न का
 अच्छी नडकी। और फिर 2 साल युद्ध में मुझे तनन्वाह मिनगा दश विश्व की
 मर बनेगा और युद्ध से लौटकर मुझे पगल का बजोफा और पेंशन मिलगी।

एक दिन एक रड इंडियन युवक में बात हुई जा 2 3 दिन में ही युद्ध-भय

म भेजा जानेवाला था 'हम तैयार रहने के हुक्म आ गये हैं। (जून 1971 की बात है।) 'लेकिन,' मैं ब्रह्मा, "निकमन तो कहते हैं फौजें बुला रहे हैं।' ता वह बोला वह सब ता दिखावा है। परमो ही हमार कम्प स काई 10 000 जवान बियतनाम को खाना होंगे।'

'आपके विचार म अमरीका को युद्ध जारी रखना चाहिए ?

उसका उत्तर था, 'पुसे अंतर्राष्ट्रीय वाता का पता नहीं। मैं एक रड इंडियन चीफ का बेटा हूँ। लोग ने हमारी बहुत सी जमीन चुराई है। अब जो कुछ हमारा बचा है उसे ये कम्युनिस्ट छीनना चाहते हैं। मैं ता बियतनाम मे इह ही मिटान जा रहा हूँ। वरना वे ओहायो (अमरीका का एक राज्य) म हमें तग करेंगे।

और एक काले अमरीकी युवक न युद्ध म जाने का कारण बताते हुए कहा

'इस गारे के देश अमरीका म भेरी जिन्दगी की कीमत ही क्या है ? मैं काइ प्रेसिडेण्ट ता बनने स रहा। सारा जीवन किसी गद्दी बस्ती (स्लम) म सदता रहूँगा वरना कसा गारे सिपाही की गाली का निशाना बना दिया जाऊँगा। बियतनाम म किसी को गोली स मारन का मजा तो आयगा आर फिर सरकार पटभर खाना देगी शराब देगी हवाई जहाज का टिकट देगी, सडकियाँ दगी बजाये दगी और अगर लडाइ म मारा गया ता मेर बाबा-बच्चा का पेंशन दगी मुफ्त पलाई के बजोफे मिलगे और शायद मरन के बाद मेरा कपन दूसरे गोर सिपाहिया व साथ एक ही कब्रिस्तान म दफनाया भी जा सकगा। वरना अमरीका म हम काला को कब्रिस्तान म भी समानता कब नमीब होती ह ?

अमरीका व सरकारी बक्तव्या के अनिरीक्त दस लख व को काई भी दो अमरीकी नागरिक ऐस नहीं मिले जिन्होंने यह स्वीकार किया हो कि अमरीका बियतनाम म प्रजातन्त्र की रक्षा लड रहा है और प्रत्येक अमरीकी सनिक की कहानी तीन श्रेणिया म रखी जा सकती है —

(1) वृत्त बडी सच्या ऐस गारा की जा रोमास जोर जाशीव कारनामा की कहानिया पढ-पढकर अपन जीवन म कुछ रामावक करना चाहते हैं। उमाह और साहसिक कर दखन और खुलकर ठाय ठाय गालिया चरान के माक का तलाश म व बियतनाम युद्ध म भाग लेते हैं। मानो कि जीवन म कुछ और साहसिक करन को शेष नहीं रहा। ऐम युवक प्राय तलाकशुदा उजड परिवार के लडके हान है याकि हिंसात्मक प्रवृत्तिया म भर रगभे मस्झति व पाथ म अशक्त जातिया को हीन भावना से दखते हैं। बस्टन फिल्म दख-खकर जिनम रड इंडियना का मार-मारकर गारी जाति की श्रेष्ठता दिखायी गयी हाना व उसी इतिहास का दोहराना चाहते हैं जिसकि उनक पूबजा न रड इन्डियना म खिलाफ किया था। और बियतनाम एमे ही कारनामा का कीर्णयत्र है। "ड

अपराधा और अत्याचारी हरकतों के लिए प्रायः इसी श्रेणी के सैनिक जिम्मेदार हैं।

(2) दूसरी श्रेणी उन लड़कों की है जो या तो गरीब गोरों के परिवारों के हैं या काले हैं या कि रड इंडियन घरों के हैं। शिक्षा स्तर निम्न और आर्थिक दृष्टि से हीन, अमरीका के डालर जीवन से नगण्य और भविष्यहीन। सैनिक वर्दी पहन कर वियतनाम में छोटे छोटे एशियाई किसानों पर रोब जमाने में याकि वियतनामी व हांगकांग व तोकिया की एशियाई वेश्याओं के शरीरों को खरीदकर जिनकी आत्महीनता को किंचित् मात्र जात्मगौरव का सहारा मिलता है।

अथवा प्रायः सम्पन्न परिवारों के गारे युवक ऊँचे पदा या उच्च शिक्षा प्राप्त ऊँची नौकरियाँ में लग होने से सैनिक सेवा से छुटकारा पा लेते हैं किन्तु गरीब परिवारों के बच्चों को ये सुविधाएँ हासिल नहीं।

(3) तीसरी श्रेणी उन बेबस युवकों का है जो अमरीका को प्यार करते हैं और अमरीकी उच्च आदर्शों को पन जेफसन और लिंकन के देश का मूर्खा पूजापतियाँ मता घा और पाखण्डियों के हाथ में पूणतया नहीं पडन देना चाहते। वे बौद्धिक दृष्टि से सजग हैं। जानते हैं कि यह युद्ध एन फरेव है झूठ व अत्याचार से भरा है और खुलकर युद्ध का विरोध करते हैं किन्तु कानून तोड़कर समाज व्यवस्था से बाहर निकल पडने में राष्ट्र का अहित जान पडता है। वे कानून का अधिनिक्रम से बचनना चाहते हैं और इसीलिए व्यवस्था का अंग बनकर यथा सम्भव युद्ध का विरोध करते हैं।

एक और जहाँ हिंजारा युवकों ने खुलकर शान्तिवादी माँग अपनाया है और सैनिक व्यवस्था का ताडफोड की बारबाइया द्वारा अव्यवस्थित करन का प्रयत्न किया है वहाँ दूसरी ओर 40 000 युवकों ने अपनी अमरीकी राष्ट्रियता का तिनजति देकर कनाडा मक्सिको और अन्य यूरोपीय देशों में शरण ली है जबकि अमरीका का भीतर से शान्तिपूर्वक बदलन में विश्वास रखनवालों ने वियतनाम में जाकर युद्ध का खिलाफ प्रचार किया है और यथामुम्भव सैनिकों में अगह्याग की भावना जगायी है। अन्य अमरीकी टुकड़ियाँ न रणभूमि में शान्ति का झण्डा गाडकर लडन में इन्तार कर दिया है और हजारों की संख्या में अमरीकी सैनिक अपने कम्पासों में भाग निकल गए हैं और तिनजति व कम्पासों में गायब हो जानेवाले फौजियों की संख्या जिन्हें भगोडा कहा जाता है— 50 000 प्रतिवर्ष में अधिक है।

सैनिक अमरीकी समाज में मताघात की संख्या अधिक है और सरकारी शासन-तंत्र तथा वहाँ के दा बडे राजनतिक दला—डेमाक्रेट तथा रिपब्लिकन—में अधिकतर लोग प्रतिश्रियावादी हैं। यहाँ तक कि गरीबी जाति की उच्चता में विश्वास करनेवाला धार प्रतिक्रियावादी जाज वासन जा दक्षिणी गणराज्य की

अततागत्वा निर्णायक नहा हाती ।

अमरीका की सन्निव योजनाआ और सिद्धाता व पण्डिता न जो भविष्य याणिया की वे एक के बाद एक वियतनाम मुक्ति मोरच के जवानो न झुठला दी । उन्हाहरण के लिए तत्कालीन रक्षा सचिव मकनमारा न अक्टूबर 1963 को कहा था

हमारी सन्निव कायवाही 1964 के अत तक पूण हा जायगी ।

जीर 18 फरवरी, 1964 को अमरीकी काग्रेस के मदन म बोलते हुए उन्हा न यही विश्वास दोहराया कि अमरीकी फौज मुक्ति मोरच को खम करके सगाव व शासन की नीव मजबूत करके 1965 के अत होन स पहले ही दक्षिण वियतनाम स हट जायेंगी ।

जीर फिर अक्टूबर 1965 म श्री मेकनमारा न सगाव म एलान किया ।

हमन लडाइ का पागा पलट दिया ह ।

इस प्रकार अमरीका सरकारी नता बार बार अपनी जनता को यही कहते रह कि दक्षिण वियतनाम मे हालत सुधर रही है । नय नय हथियार बमबार, हलि काण्टर तापें जीर जगी वेडे अमभ्य खूखार चीनिया के काले पजाम बाल एजटा दरिद वीटकाग कुत्ता को खत्म करने ही वाली है । परन्तु हर बार उनक किय दाव झूठ सिद्ध हुए और वियतनाम का अधिकार क्षत्र दिन व दिन फलता गया । ज्या ज्या अमरीकी सेनाआ ने सगाव के अलाकप्रिय शासन की हिमायत म गोलिया चनायी वम गिराय त्या-त्या हर वापडे गाव, गिरजे रकूल व मन्दिर स उठी आहा स वन्ती गयी लोनप्रियता मुक्ति मोरचे की और दक्षिण वियतनाम व नडक लडकिया बूढे जवाना म्त्री पुरपा वीढ दसाई भिक्षुआ न कचे स कथ मिलाकर वियतनाम की अस्थायी नातिकारी सरकार के प्रति अपनी आस्था नूढ की ।

अमरीका से मिले हथियार लेकर सगाव के सन्निव हतारा की तादाद म वियतनाम के मुक्ति मोरचे के छापामार दशभक्ता की आर जा मिलते हैं ।

गुयाक टाइम्स व 24 फरवरी 1966 अक म सगाव स्थित सवाददाता व अनुमार सन 1965 व वष 113 000 फौजी भाग गय थ । (1964 म उनकी सख्या 72 000 बूती गयी थी) जीर 1966 म भागनवाना की औमत और वढ गयी है । 11 म 1966 का तत्कालीन रक्षा सचिव मकनमारा न यह स्वीकार किया था कि 12 000 फौजी प्रति माह सगाव की सना स भाग जा रह हैं ।

सरकारी आँकडा व अनुमार 20 000 जवान हर माह सगाव की सना स भागकर मुक्ति मोरच म शामिल हा जान हैं । इस प्रकार सगाव की सना म भगाडा का सख्या 1 50 000 प्रनिवप हाता है ।

सन्निव तत्कालीन विदेश मन्त्रि डीन रम्ब न 23 अप्रैल 1965 का यह बहन

का साहम किया था कि इसका कोई प्रमाण नहीं कि वियतनाम को दक्षिण वियतनाम व लोमा वा गहरा सहयोग मिल रहा है।”

एम दुम्मारहितिक झूठे वक्तव्य देन का उद्देश्य क्या हो सकता है ? अमरीकी जनता का धाये म रखना । अथवा रम्ब सरीखा वार्षिकगटन मरकार का वारिण्ट अधिकारी क्या यह मय नहीं जानना था कि दक्षिण वियतनाम म जहा एक जोर अमरीका की 5 00 000 फौजें जन थल और वायुसेना और 70 000 मातवें वेड की मनाएँ तथा 70 000 थाईलण्ड म्थित हवाई फौज और 6 00 000 सैगाव की सेना जा अमरीकी हथियारों स लग और खाम द्वीप स्थित अमरीका के विशाल बी 52 बमबारा की इतनी दुधप शक्ति का प्रयाग अमरीका को थोडे से बगावतीया को कुचलन के लिए करना पडा—जि ह वियतनाम को जनता का कोई समयन प्राप्त न था ?

प्रस्तुत लेखकन एक बार जब दक्षिण वियतनाम मुक्ति मोरचे की नेता श्रीमती विहू स पूछा कि इतनी विशाल अमरीकी सैनिक मशीनरी से लडते रह सकने का रहस्य क्या है तो वे बोनी— ‘जनता का विश्वास । और इतिहास की विडम्बना यही है कि वार्षिकगटन के कम्प्यूटर अभी तक यह हिमात्र नहीं लगा पाय हैं कि जनता का विश्वास मिटाने के लिए कितने बड बमा की जरूरत पडती है ।

जन क्रांति आंदोलन का मुख्य कार्य यही होता है कि अपन आचरण और प्रोग्राम द्वारा जनता का विश्वास प्राप्त करें और प्रतित्रियावादी शक्तिया को और जनता के हितों के बीच की खाई को बढाने जावें । दक्षिण वियतनाम के भूमिहीन किमाना को भूमि सम्बन्धी कानूनो म दिनचस्पी थी । स्कूला और अस्पताला की उहू अपने गाँवा मे आवश्यकता थी । बजाय इसके कि सगाव के अमरीकी दूता वाम म कब एक बडे डिनर का आयोजन हुआ । या कि कितन अरब डालरा के हथियार सगाव क सैनिक डिक्टेटरा का अमरीका मुफ्त देन की तयार है । या कि कितने हजार वगफीट घरती पर अमरीकी नमूने क डाल हाल और सिनेमा क नाच घर दक्षिण वियतनाम म बनाय गय हैं ।

अमरीका और उसके कठपुतल फौजी डिक्टेटर जहा एक ओर अधिकाधिक सैनिक तयारिया और स्विटरजरलण्ड के बका म अपनी तिजारियों को बढाने की कोशिशो म लगे रहे और अल्पमत के गडम जमींदारा ने जो कि जनसट्टा का 2 प्रतिशत है—दक्षिण वियतनाम की उपजाऊ भूमि के 45 प्रतिशत भाग क मालिक है सामाजिक व आर्थिक सम्बन्ध म यथास्थिति बनाय रखने के लिए अमरीकी योजनाओं की सफलता म अपना हर धाग दिया वहा दूसरी ओर दक्षिण वियतनाम के गावा खतो खलिहाना और पहाडा जगला के दूर-दूर स्थित पिठनी जाणियों आदिवासियों और निधन भूमिहीन अशिक्षित कोटि-कोटि जनता म, मुक्ति मारचे क सेनानियों ने आन्तरिक सरकार के अधीन क्षेत्र म भूमि सुधार तथा

चिरापन्नित शिक्षा मवार व स्वाम्य मबाजा की स्थापना व सुधार की कवल कागजी योजनाएँ ही नही बनायो कि तु उह क्रियाचित कर दिखाया । वियतकाग अधशासित क्षेत्र म 2,500 से अधिक स्कूल स्थापित किय गये । हर गाव वस्व म चिकित्सा की सुविधाएँ मुहय्या की गयी और मुक्ति मारच के सनिका के शिविरा म ग्रामीणा का इलाज किया जाने लगा ।

निरक्षरता मिटाने का राष्ट्रव्यापी जादोलन संगठित किया गया जिमर अतगत वयस्का क लिए विशेष कक्षाएँ चलायी गया । जार सवमे महत्वपूण मुक्ति मोरच द्वारा अधिदृत क्षेत्र म तुर त भूमि सुधार क्रियाचित हुआ । हजारा एकड उपजाऊ भूमि जमींदारा से छीनकर भूमिहीना को हस्तातरित कर दी गयी । माक्षरता जादोलन की सफलता के हतु जमरीकी वमवारिया के बावजूद पहाडा की गुफाआ और भूमिगत प्रिंटिंग प्रेसा म छापकर 57 दिन व पाक्षि पत्र पत्रिकाए मुक्ति क्षेत्र म वसनवाला का मुहय्या की गयी ताकि उनकी साक्षरता व विकास हो । जन क्रतिकारी आदोलना की सफलता का यही मूल मंत्र ह कि वे सामाजिक व राजनीतिक मौलिक सुधार तजी से लाते है । यदि व एसा करन स शिक्षकते है तो वह क्रतिकारिता का दावा नही कर सकत । और एस मौलिक सुधारा का क्रियाचित करन क लिए जावश्यक होता है कि एक शासकीय प्रारूप तयार रह जिसकी बागडोर योग्य व ईमानदार यक्तिया के हाथा म हा । एसी शासन यवस्था यापक मुक्ति आदोलन का अभिन अग हाता चाहिए—अयथा गुरिल्ला सनिक और वदूकधारी लुटेरो म अधिज जतर नही रहता । और लुटेरा क साथ जनता नही चलती ।

वियतकाग क क्रतिकारी दक्षिण वियतनाम म जहाँ एक आर विदया अमरीनिया स अपनी आजादी की लडाइ लडने म हर कुवानी करन का दुस्साहस कर रह हैं वहाँ घूसखारी स रहित प्रगतिशील शासन यवस्था भी चला रह है । उहान जनता का अटूट विश्वास प्राप्त कर लिया है । और इस बात म जमरीका की फौजें और वदूका के सहार खडा सगाव क जनरता का भ्रष्ट शासन बुरा तरह जमफन रहा है ।

श्री जाज याल जा बनडी व जानसन क शासन म विदेश मन्त्रालय क उप मन्त्रि व न इम तय्य का बड स्पष्ट शब्दा मन्वीवार किया । उनका कहना ह कि मगाव क शासन म एक भी यकिन एसा नहा जिमन वियननाम क राष्ट्राय जाग लन म भाग दिया हो—और इमलिए हम (अमरीना) चाह जा कुछ करक दुनिया का यह स्थिना चाह कि वह वियननामिया की प्रतिनिधि मग्दार है— पर मच ता यह है कि मगाव का नाम हमार पम और हमार ही मून म चतना है । यदि हम अपनी फौजें हटा दें ता व 24 घण्ट म अधिज नया स्थि मकता ।

नयी स्थिनी क एक भारतीय पत्रकार न जा अमरीनी नीति क ममयक रह है

एक बार इस लेखक से कहा था कि

‘लेकिन वियतनाम की सफलता तो आतंक पर आधारित है। वे ता ठग है ठग। लोगो का कत्ल करके अपना शासन चलाते हैं।’

अमरीका के सरकारी प्रवक्ताआ ने भी ऐसे ही प्रचार का काफी बढ़ावा दिया है।

हालांकि इसमें कुछ सच्चाई का अंश हो सकता है कि त्रातिकारी जन आंदोलन जब तब आतंक का भी सहारा लेता है, किंतु सगाव के सैनिक डिकटेटर और अमरीकी सैनिक—जब इतने बर्मा और टैवा का आतंक दिखाकर जनता का अपन अधीन न कर सक तो वियतनाम की सफलता की ‘आतंकवादिता’ कह कर अस्वीकारना समझदारी की निशानी नहीं किंतु आत्मप्रवचना होगी।

प्रस्तुत लेखक ने श्रीमती बिह से ‘आतंक’ की बात पूछी थी, उनका कहना था

हमारा तो अस्तित्व ही जनता की सहानुभूति पर चलता है। हम बस आतंक पर जी सकते हैं।

मेरे मित्र भिक्षु थिक् हात हाड ने जो सगाव स्थित बौद्ध विश्वविद्यालय में सामाजिक शास्त्र संकाय के डान हैं, इसी प्रश्न पर, अपनी पुस्तक का हवाला देकर कहा था

‘गुरिल्ला युद्ध के सभी विशेषज्ञ इस तथ्य का स्वीकार करते हैं कि गुरिल्ला युद्ध कृपक जनता की सहायता के बिना नहीं लड़ा जा सकता। राष्ट्रीय मुक्ति मोर्चे की सफलता का आधार वियतनाम द्वारा किसानों पर अत्याचारों का ‘आतंक’ कहना गलत है। अमरीकी अधिकारियाँ और सगाव के जनरल यही बताते हैं कि किसान बुरी तरह भयभीत हैं और मुक्ति मोर्चे का साथ देने के जलावा व और कर भी क्या करते हैं। परंतु यह वास्तविकता नहीं है। सच्चाई यह है कि मुक्ति मोर्चे को किसानों का बहुत बड़ी सध्या में समर्थन प्राप्त है क्योंकि व उह यह बताने में सफल हुए हैं कि उनका संघर्ष राष्ट्रीय स्वतन्त्रता का युद्ध है। देशभक्ति की भावना हमारे किसानों के दिलों में बड़ी गहरी है। उह दुनिया के इतिहास या राजनतिक सिद्धांतों के बीच चल रहे शांतयुद्ध का न जान है और न ही कोई सरोकार। व तो स्पष्ट देखते हैं कि एक बहुत बड़ी पश्चिमी गारी जाति की मना उनके दशवामिया की मरवा डाला की हर सम्भव कोशिश कर रही है—और वह एक देशभक्ता को मरवा रही है जो देश की आजादी के लिए पहले फा सीसिया के खिलाफ भी लड़ चुके हैं। हमारे किसान अमरीकी गालियाँ म मरने वालों की मग हुआ माम्यवादी नहीं मानते। उनके लिए तो व है शहीद देश भक्त और यह ऐसा सत्य है जिसे अमरीकी सना नहीं समझ पाती।’

मुक्ति मारच के सदस्या जीर समयका म बहुमत उन देशभक्ता का है जा साम्यवादो' नहीं हैं और वियतनामिया का इतिहास ता इस बात की गवाही देता है कि व देशभक्त पहल हैं जीर फिर कुछ ओर । फिर चाह यह सहा है कि मोरच का सनिक सहायता साम्यवादी देशा स मिल रही है और उस पर साम्यवादियो का अधिकार अधिक है । लेकिन विरोधाभास जिस अमरीका नहीं समझ पाता यह है कि—साम्यवाद को मिटाने क त्रिए जितनी ही अधिक कारवाई करके वे वियतनामी देशभक्ता की हत्या करवायगे जीर जितनी अधिक पीजें भेजेंगे जितना अधिक बमबमारी करेंगे—उनक हर बम से हर विनाश से वही पनपेगा जीर बन्गा जिस कि वे मिटाना चाहते हैं । न कवल मारचे की शक्ति का बन्गा मिलता है बल्कि अधिकाधिका किसानो का समर्थन उस प्राप्त होता ह । जीर वियतनाम के किसान राष्ट्रीय स्वतंत्रता जादानन जीर साम्यवादी जन-आन्दोलन के बीच कोई अंतर नहीं मानते । यही कारण है कि मुक्ति मोरचे के नेता आ और मेनानियो का नेतृत्व भी किसानो के हाथ म है ।

इस सत्तम म यह सत्य भी ध्यान म रखना चाहिए कि वियतनाम के किसी भी धार्मिक नेता या धर्मगुरु न मुक्ति मोरचे या वियतनाम के खिलाफ कभी कोई वक्तव्य नहीं दिया है । यहा तक कि वहा के कथोलिक ईसाइया तन के एमोसिए शन तथा धर्मगुरु आच बिशप ने मगाव शासन जीर अमरीकी सनिक कारवाइयो क खिलाफ प्रदर्शन किय है । बन्नुत वहा की धार्मिक सस्थाएँ भी राष्ट्रीय आंदोलन मे अपनी जनता के साथ साथ मोरचे की सफलता म योग दे रही ह ।

भिन्नु थिक नात हाह के अनुसार अगर कोई साम्यवादियो की निन्दा करता है तो उसका मतलब है कि उस किसी न किसी रूप म अमरीकी डालरा न खरीद लिया ह । पिछले 10 वर्षों म सगाव म सबसे मुनाफे का व्यापार रहा है साम्यवाद को खुलकर गालिया देना जिसस गात्री देनेवाल रातोरात मालामाल हो जात हैं किन्तु साम्यवाद और मारच को उसस कोई क्षति नहीं पहुँचती ।

अमरीका मगाव के स्वार्थी जर्नलो जीर मुनाफाखारो को साम्यवाद विराधी अच्छे जादमी मानकर हथियारा और डालरो स लाद देता है ।

वियतनाम युद्ध का यदि अमरीका कोई राजनयिक हन चाहता है तो वाशिंग टन क नेताओ को कारे साम्यवाद और राष्ट्रभक्ति के बीच का अंतर समझना होगा । दुभाग्यवश पहले फ्रासीसी बसा करने मे असफल रहे और अब अमरीकी इम नहीं समझ पा रहे उठे उनकी नीतिया इन तो राष्ट्रीय महत्वपूर्ण तत्त्वा की एकता और घनिष्ठता को बन्गा दे रही हैं । और इसी कारण दक्षिण वियतनाम म मुक्ति मारचे की शक्ति व लोकप्रियता दिन-ब-दिन बढ़ता जाती है । आज स्थिति यहा तक पहुँच चुकी है कि गर-साम्यवादी राष्ट्रवादी शक्तिया के सामने भी कोई और चारा नहीं । एक विदेशी सेना जब आपके देश पर अधिकार जमा बठी हो और

जापने खेत खलिहाना को जला रही है विदेशी फौजें जब आपकी मा ब्रह्मा का सतीत्व लूट रही है आपके वच्चे और पशुवन का जग हनिकाँपटरा स बरसती गोलिया स धराशायी किया जा रहा हो तो कारे साम्यवाद और शुद्ध राष्ट्रवाद के बीच का अंतर बवल बौद्धिक विलास है। वह ता मानव द्राह एव राष्ट्र द्राह की परा सीमा है।

इससे भी अधिक मोरचे की सफलता का रहस्य है—राष्ट्र भक्ति के साथ-साथ आर्थिक सुधारों को त्रियाचित करने की क्षमता। जबकि इन प्रश्नों पर अमरीका और मगाव स्थित कठपुतले सवथा नाकामयाव रहे ह। जागे बढते वियतमिन्ह का सनाएँ फ़ामीसिया को हराकर जहा जहा पहुँचती थी बड-बड रइम जमींदारों स भूमि-अधिकार छीन उहें किसानों मे बाँटी जाती था। 1954 म वियतमिन्ह ने दक्षिणी क्षेत्र के जीत हुए इलाका स जनता समझौते क अंतगत अपनी सेनाएँ उत्तर म हटा ली थी। वियतमिन्ह शासन क हटते ही भगोडे जमींदार अमरीकी सगीना के साथ वापस लौट जाय और गावा और खेता की जमीने किमाता से वापस छीन ली।

फिर भी यह सच हो सकता है कि मुक्ति मोरचे के कायकर्ता जातक का सहारा लत हो किंतु केवल विशेष स्थितिया मे जाग याय के अनुकूल जोकि जन हिताय होता है। उदाहरणार्थ, मगाव की सरकार सी० आई० ए० और अमरीकी प्रशासन की सलाह पर गाँवो-कस्बा मे पंच व तहसीलदारों की नियुक्ति करती है। ये शहरी रईमा, सेनाधिकारिया और जमींदारों के लटके होत है जिह सर कार लडाई म मारे जाने से बचाकर ऊँचे पदा पर सिफारिश या रिश्वत की वजह से भिजवा देती है। ग्रामीणों का इन बाहरी उद्दण्ड नूर, रिश्वतखोरा से चिढ़ होना स्वाभाविक ह। जकसर ऐस भ्रष्ट अधिकारिया व पंचा को अनेक चेतानिया देने के बाद, उन पर जनता की अदालतों म मुकदमा चलाने मोरचे के कायकर्ता उनका वध करना देत है। जनता इस मगाव के अत्याचारी प्रतिनिधि को दिया प्राणदण्ड मानती है। किसानों के स्त्री-बच्चा और खेत-खलिहाना को इससे राहत मिलती है और वियतनाम की लोकप्रियता बढती है। दक्षिण वियतनाम क किसानों को एहसास होता है कि मारचे क 'गुरिल्ला' योद्धा एमे भी है जो केवल बात ही नहीं करत किन्तु जुल्मा क खिलाफ गहन म व अमरीका जमी शक्ति स भी लांघा लन स नहीं डरत। इम तरह प्रश्न आतक व साम्यवाद का नहीं रह जाता। मवाल है किसानों के अधिकारों उनके जीवन और उनकी इज्जत की सुरक्षा का जिस अमरीकी और सैगाँव की क्रूर नीतिया स खतरा है। मुक्ति मारचे के सिपाही उन ब्यक्तियों के खिलाफ कारवाई करत है जो जनता का शापण करते हैं और जिह पहल ही से स्थानीय जनता घणा करती है। और क्योंकि इस प्रकार आतंककारी कारवाई 'चुनकर की जाती है जनता उमरी भूरि भूरि प्रशंसा

वरती है। किन्तु अधाधु व नियम जमगीरी आतक की तुलना में इमना कोई स्थान नहीं जिनसे हजारा-नाखा की जाने वमा और गालिया व वरतन में लुट जाती है।

वियतनामी किसानों में 80 गाल व फ्रांसीसी शान में इतना अधिक विनाश और गोरे सनिक नहीं देखे जाते कि पिछले 3-4 माला में 500-000 से अधिक अमरीकी मिनिक और 2-3 लाख अमरीकी नागरिक वियतनाम पर उतर जाय और उस छात से दक्षिणी भाग के खेत, नलिया, तालावा व पहाडिया का उहान रौंद डाला है वूटा से बूटको से, गोला से और जाग उगलनवाले यत्ना, जहरीली गैसा और फसल व हरयाली को नष्ट करनेवाले रसायनों के टिकवाव से। आज वियतनामी किसानों के लिए सबसे बड़ा प्रश्न है—'जावन रक्षा। मैं जीऊ तो क्या खाकर? खेती करूँ तो कहाँ? अगर खाना भी पा लूँ—तो वमा और जहरीली गसा से बचकर कहाँ जाऊँ?'

अमरीकी नेता वियतनाम युद्ध का कम्प्यूटर की भाषा में और टेलिविजन की तस्वीरों में देखते हैं। अमरीकी लोग टेलिविजन के स्कीन पर डिनर खाते समय जब वियतनाम के युद्धों को देखते हैं—तो उह जलती हुई मानवता के बजाय सिलोसाइट द्वारा प्रदर्शित जलते हुए रामाचक दश्य (सीन) दिखलायी पड़ते हैं। किन्तु वियतनाम की जनता के लिए इस युद्ध का मतलब कुछ और है।

एक गांव की कच्ची सड़क पर बलगाड़ी चली जा रही थी जिसमें एक नौ जवान किसान लडकी गोद में अपने एक महीने के बच्चे को खिला रही थी। पास में बठी थी एक बच्ची—शायद उसकी सास रही होगी। पीछे गाड़ी में उनका सामान लदा हुआ था। जवानों ऊपर जाकाश से एक हेलिकाप्टर उतरने लगा। उसक बड़े-बड़े पंखे जोर-जोर से फडफडा रहे थे। बल बतहाशा भाग खड़े हुए और सवारिया व सामान उलट-पुलट—दायें-बायें गिर पड़े। सिनेमा के पर्दे पर यह दृश्य हास्यात्मक हो सकता है। किन्तु वस्तुस्थिति कुछ और थी। हेलिकाप्टर से अमरीकी सनिक उतरे और इशारों से स्पष्ट किया कि व युवती को साथ ले जाना चाहते हैं। दोना महिलाओं में विनती की। दया की प्रार्थना की। गिडगिडायी। पर अमरीकिया के पास दया कहाँ थी। युवती ने बच्चा को बच्चा थमा दिया और उस हेलिकाप्टर में घबेलकर ल उड—प्रजातंत्र के सिपाही।¹

यह है वियतनाम में अमरीकी युद्ध का वह रूप जिस वियतनाम की जनता, उनका निरीह किसान उनका धर्मगुरु और आतिकारी मुक्ति मारक के सनापति पिछले दो दशकों से देखते आ रहे हैं। हजारा-नाखा नागरिका की हत्या—किस लिए? उह प्रजातंत्र का सबसे सिखान के लिए! 1961-66 के बीच

5 00 000 म अधिन नानरिा मारे गय और वाशिंगटन के मरवारो वयाना म अमरीका के वमवार बवल 'कम्पुनिस्टा के सैनिक ठिराना और मम्भावित के द्रा पर वम गिराते है । और क्याकि मुक्ति मोर्चा जनता का आदोलन है इमनिण मिय तनाम का हर गाँव, हर बम्बा, हर जन मम्भावित कम्पुनिस्ट है । क्याकि वह अमरीकी फौजी की भाषा नहीं जानता क्याकि वह अमरीकी मविधान की धाराए नहीं जानता, क्याकि उसे अमरीकी इतिहास और उमकी व लोकवथाएँ निाम रड इन्गिना के जानि सहार और बाना की दासता की रोमाचक गाथाएँ हैं नहीं मालूम । और इम विदेशी अमरीकी का वियतनाम की भाषा का नान नहीं। वह नहीं जानता कि वियतनाम का सास्कृतिक इतिहास 2 000 वष पुराना है जबकि उमके पूवजा की धरती न जभा सम्यता की पहली किरण भी नहीं देखी थी । रगभेद के विद्वेष की संसृति मे पले अमरीकी फौजिया और उनके नेनाजा की निगाह म हर एक वियतनामी सन्तु है क्याकि वह वियतनाम की भाषा बोधता है और शान्ति शान्ति की पुकार करता है । जब हम इनस पूछते हैं कि वताओ वियतनाम कहा छुप हैं—तो ये गूमे की तरह खडे-खडे मत्र जाप का बहाना बनाते हैं । दरअसल ये सब प्रचन्द न कम्पुनिस्ट हैं—जा ऊपर स बौद्ध हाने का स्वाग भरत हैं । और इसलिण मनिन अधिवारी ने एक छोट-स गाँव (हेमलट) का वमा से उडा देन का हुकम दिया । भिक्षुक थिक नात हाट न गेमी ही एक और घटना का आयादेखा वणन म प्रकार किया है

मैं अपने 20 समाज स्वयसेवका के साथ एक गाव म ठहरा था । यह वही रात थी जबकि वियतनाम न सर्गाँव क हवाई अड्डे पर मोर्टर से हमला किया था । मोर्टर हम से कोई एक किलामीटर दूर छूट रहे हागे क्याकि हम उनक गोने गिरन की जावाज सुन सवने थे । हमला खम हाने के आधा घण्टे बाद और जबकि वियतनाम स्वय हमला रोककर लौट चुके व अमरीकी जहाज बदला नेने उड । उहोने प्रभेपणास्त्रो (राकेटा) और वमा स गाव की धून म मिना दिया । वहाँ काई वियतनाम नहीं था और न ही उस रात कोई वियतनाम मारा ही गया । किनु गाव उजाड डाला गया था और बहुत से ग्रामीण घायल हा गय । अनक मलवे के नीचे दखर भर गय । अ गर यह कोई छुटपुट घटना हो तो मान लिया जा सकता है कि युद्धा म गलती से ऐसी घटनाएँ अक्सर हो जाती हैं । परतु वास्तविकता तो यह है कि यह एन आम बात है कोई इक्की दुक्की नहीं । ऐसी घटनाएँ और इससे भी ज्यादा दलनाक, हर दिन दिन और रात, हमारे देश के हर भाग मे घटती हैं । और ज्या-ज्या बिनाश और जातक दढता जाता है त्या-त्यो अमरीकना के प्रति रिसाना के दिलो म नपरत की भावना भी । और अमरीकी मिपाही जोकि

समझता था कि वह सहायता करने जाया है घृणा, व निराशा के दण्ड में घसता जाता है । ¹

जन शक्ति के गुरिल्ला सनिक उस मछली की तरह होत हैं जो जनता रूपी जल में सुरक्षित रहते हैं । इसलिए कोई बाहरी शक्ति सनिक शक्ति से वियतकाग के जन आन्दोलन को कुचल नहीं सकती । शक्ति के मद में शायद अमरीका जनता को मिटा डालना चाहे लेकिन दक्षिण वियतनाम के मुक्ति मोर्चे के लड़ाके तो उसी जोश में हैं जिसमें व भी भारतीय स्वातन्त्र्य-योद्धाओं ने ग्लान किया था—

सर फरोशी की तमन्ना अब हमारे दिल में है,
दखना है त्रोर कितना बाजुए बातिल में है ।

• •

1 मित्र विक्रान्त हाह बरी प 67

प्रजातन्त्र के हिमायतियों की दुश्मन वियतनाम की जनता

भयानक पमाने पर की जा रही अधाधुंध बमबारी बुलडोजरों से बड़ पमाने पर धरती को समतल करना और जहरीले रसायन फलाकर खेती और हरियाली को नष्ट करके हिंद चीन में भयकर प्रजनन संहार (इकोसायड) किया जा रहा है।”

— श्री ओल्फ पामे (स्वीडन के प्रधान मंत्री)
(6 जन 1972 को राष्ट्र सभ के अंतर्राष्ट्रीय प्राकृतिक सम्पदा संरक्षण सम्मेलन में स्टॉकहोम में उद्घाटन भाषण से)।

‘अंतर्राष्ट्रीय सैनिक ट्रिब्यूनल के अनुसार निम्नलिखित कार्यों को अथवा उनमें से किसी भी एक को युद्धकालों अपराध माना जायेगा।

नागरिकों के साथ दुर्व्यवहार युद्धवादीयों के साथ दुर्व्यवहार, पीड़ा देना किंवा उनकी हत्या—गाँवों कस्बों और नगरों का मनचाहा विध्वंस करना। किसी नागरिक के साथ अमानवीय व्यवहार’

— तीसरे मासिक के अन्त में नूरे बग (जर्मनी) 1945-46 में स्थापित अंतर्राष्ट्रीय सैनिक ट्रिब्यूनल के संविधान की एक धारा।

दुनिया के सबसे धनी और सबसे शक्तिशाली देश का कुटिल नाथ आज हमारे युग के एक छोटे से शक्तिहीन निधन देश पर बरस रहा है। विश्व की काटि-कोटि जनता हतप्रभ और किन्नत यक्षिभूत मुह उठाये इस हृदयहीन विनाश का देख रही है। समाचारपत्रों में चित्रों में, फिल्मों में और अपन साफे पर नेट-लेटटलिविजन के पर्ले पर।

वाशिंगटन के सैनिक व सरकारी नेताओं व प्रवक्ताओं ने हमेशा यह दावा किया है कि उनके सैनिक व बमबारी ‘शत्रु’ के ‘कम्युनिस्ट हमलावरों के केवल

सामरिक महत्त्व व ठिकाना को ही नष्ट करने हैं। लेकिन स्वयं अमरीकी पत्रकारों के आँखों से क्या माना गया यह सिद्ध हो चुका है कि अमरीका की फौजों के पमान पर निर्भर नागरिकों के जानमान को नष्ट कर रही हैं और एमा करने का उद्देश्य सामरिक नहीं किन्तु वहाँ के लोग का जातिरित करना है।

यूयाक टाइम्स मेगजीन, नवम्बर 28, 1965

—युद्धबंदिया के मर पानी में डुबाये जाते हैं सगीने छुरियाँ उनके गला में गाड़ी जाती हैं।—अगर बन्नी बठिन हुआ तो वॉम की छपच्चियाँ उसके नाभूना व नीचे घुसायी गयीं विजली व तारा में भुजा स्तन या अण्डकोप बाँध लिये गये।—

दूसरे देशनेवान बन्दिया से रहस्य कहानों के लिए आतङ्कारी काय बाहियाँ में

बंदिया की उँगलियाँ नखून बान, और मूत्रत्रिय तब काट ली जाती हैं। अक्सर ऐसे काटे गये बानों की मालायें सनिका के ठिकानों पर जाभूषणा की तरह लटकती दिखलायी देती हैं। यूयाक हेराल्ड ट्री-यून, अप्रिल 25 1965। एमासियेटिड प्रेस व सवाद्दाता श्री मलवेम ग्राउन ने जिन्हें वियतनाम युद्धक्षेत्र से रिपोर्टिंग के लिए पुलित्ज़ेर पुरस्कार मिला अपनी यूफस ग्राफ वार (युद्ध की नयी सूरत) नामक पुस्तक में दक्षिण वियतनाम में चल रहे अत्याचारों की रिपोर्ट में लिखा है

बहुत से सवाद्दाता आ और स्वयं अमरीकी सनिक सलाहकारों ने कुल्हाडियाँ से बंदिया के कटे हाथ देखे हैं। अक्सर बंदियों के अण्डकोप काटे दिये जाते हैं और उनकी आँखें फोड़ डाली जाती हैं।

अनेक बार सम्भावित वियतनाम सनिक को पूछताछ के बाद अमरीकी बटरबन्द गाड़ी के पीछे बाँधकर जगला और गेता में घसीटा जाता है। इससे बड़ी वेत्नापूर्ण मृत्यु निश्चित होती है। (पृष्ठ 116)

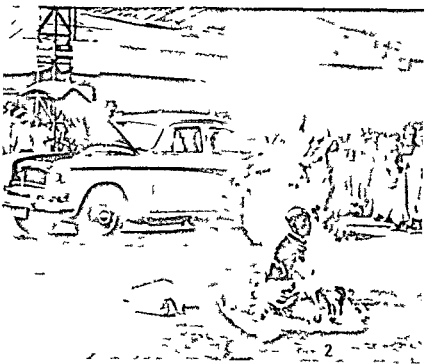
यूयाक हेराल्ड टिब्यून के सवाद्दाता वेबर्ली डाय ने 25 अप्रिल 1965 का एक डिस्पेच में लिखा

—का विएतनाम बंदिया को पूछताछ के लिए हेलिप्राटर में सगाव ले जाया जा रहा था। पहले ने कुछ भी बनाने से इन्कार कर दिया। उसे 3 000 फुट की ऊँचाई से उड़ते हुए बाहर फेंक दिया गया। दूसरे ने तुरंत सब सवाल के जवाब दे दिये। बाद में उसे भी फेंक दिया गया।

लेकिन यह कोई इक्की दुबकी घटना नहीं। 7 जुलाई 1965 यूयाक टाइम्स में एक रिपोर्ट

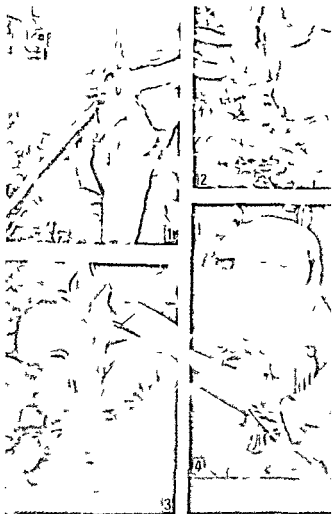


१९५१ ई. में एक युवा विद्वान् कर्मचारी को
 तत्कालीन की दुर्घटना के कारण में कालव्यय
 दुःख को शीघ्र खतरा में १५ अक्टूबर
 ३ मृत्यु की वार हो गयी पत्रकारों को
 देश में कटु का कर्मचारी के दुर्घटना
 है। किन्तु कर्मचारी को कालव्यय का
 का के विपदाय कर्मचारी की है। को
 ईश्वरानु कर्मचारी की विपदा और कर्म
 कर्म को कर्मचारी कर्मचारी की विपदाय



2

दक्षिण वियतनाम की ८५% बहुसंख्यक बौद्ध जनता ने अमराकी
 उपनिवेशवाद के विरोध में गुरु में शान्तिपूर्ण ढंग से आन्दोलन
 चलाया। बौद्ध भिक्षुओं ने आत्माहूति दत्तक डियाम के अत्याचारी
 शासन का विरोध किया।



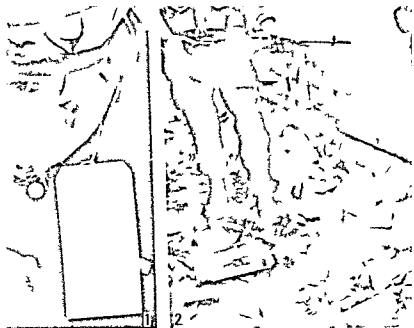
राष्ट्रीय मुक्ति मारच के रहस्य पान के लिए दक्षिण वियतनाम क
 तामरिका की तरह-तरह की यत्रणाए दी जाती है

१ लकड़ी से गंगा दवाकर दम तोड़ना ।

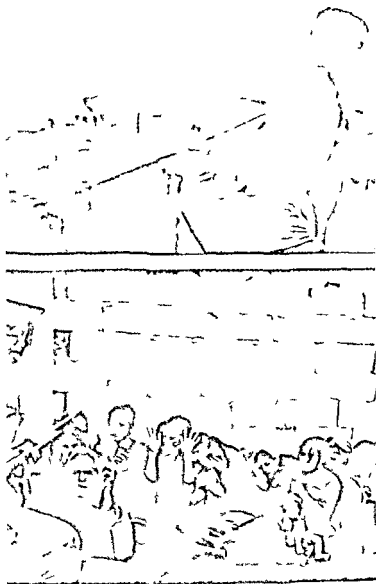
२ पेड स आँधा लटकाकर मारना ।

नथुगा जीर चेहर का कपड म डककर पानी म भिगोना
 ताकि साम लन म नक्लीफ हो ।

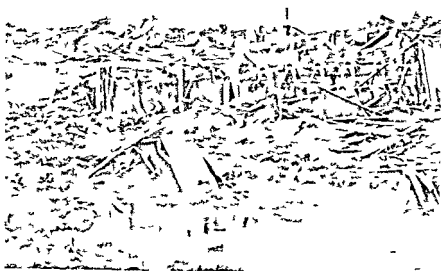
४ पत्र म तज चाक घापना ।



निम्ने वृत्ते नागरिका का भी राष्ट्रीय मुक्ति मार्च में महानुभूति
 ग्यन के सन्ध में लम्बी यातनाएँ सहनी पडती है।
 जनयुद्ध का एक ही जवाब है 'जनता का उनके
 घरा का खिया और बच्चा का मिना ना।
 जनेक यन्त्रणाओं के बाद पीछे हाथ बांधकर हम स्वयमवर के चेहर
 का माम छोटा गया। फिर भी हमन मुक्ति भारत के रहस्य न
 जनाय तब हम गाया गग नी गया।



अमरीका वियतनाम से सम्मानपूर्वक निकल आना चाहता है
 —राष्ट्रपति नक्सन। लेकिन सवाल तो अब वियतनाम की
 स्वतन्त्रता और उसके सम्मान का है जिम्मे युवका का गुणमा की
 तरह फटे डान्कर घसीटा जाना है।



१२ उत्तरी विद्यतनामक प्रायः सभा पक्के मकान हस्पताल स्कूल और कारखान बमा म नष्ट कर दिय गय हैं । बमा स बन गना म सारा दण भर गया है । चित्र म पानी म भर जाहए ।



१-२ द्वितीय महायुद्ध में पूरे विश्व में कुल बमबारी तकरीबन ६ करोड़ टन। वियतनाम में छाट-स प्रदश पर चौगुना २४ करोड़ टन बम बरसाय जा चुक है। यह चित्र १९७२ में उत्तरी वियतनाम पर हुए भयानक बमबारी का है।

३ 'उम वियतनामी क्षापक का आग लगा दो—अफसर ने हुक्म दिया। '१५' लपट दिवा दी। —अमरीकी सैनिक

टो कि न
1884

काशी नदी
गान नदी
हनु

1888

1904

बराह नदी
साजोरा

स्याम

1893

अनाम

1907

बराह

1904

1884

क

म्बो

डि

या

1867

न
1862

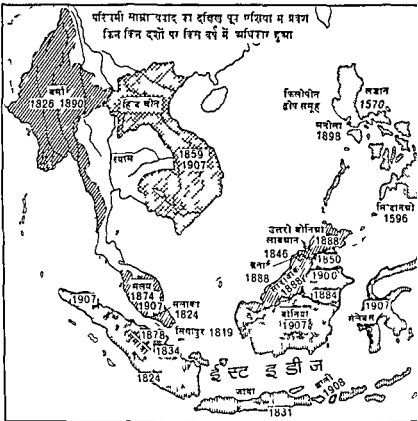
सगान 1859

को
1867






चीन
1862

प्रान्त गंगा हिन्दू पान धव पर
अधिकार 1859 म 1907 क बीच

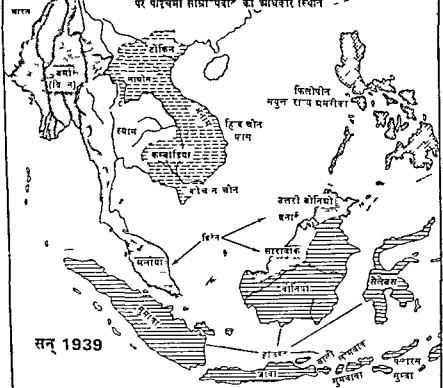
पश्चिमी साम्राज्यवाद का दक्षिण पूर्व एशिया में प्रवेश
 किन किन देशों पर किस वर्ष में अधिपत्य हुआ



पश्चिमी साम्राज्यवादियों के क्षेत्र

-  ब्रिटन
 -  फ्रांस
 -  1750 से पहले
 -  1750 के बाद
 -  स्पेन
- हॉलैंड
- 1898 के बाद अमेरिकी राज्य अधिपत्य

द्वितीय महायुद्ध के प्रारम्भ में (1939) दक्षिण पूर्व एशिया
 पर पश्चिमी साम्राज्यवाद की अधिपत्य स्थिति



जपानर म प्राप्त हुआ । श्री यम न वना रि

‘ जाज मैन सी० आर्० ए० व वायालय म दमरी तपनाता की है
वि यह सच है रि सी० आर्० ए० दशिय वियतनामी नागरिका वा
वियतनाम वा रूप अपनाय व रिण पमा देता है ।’

जय युद्ध की आग फैलती है तय निर्णय नागरिका वा गवम अधिा वष्ट
उठान पडत है और ववल वियानामी ही तही मग्न । विनाय और यन्ना युद्ध वे
दूगर ताम हैं विन्तु अमरीका द्वाग सडी गयी मय सडाइया स हिा चीा और
वियतनाम एव भिन तरह की लडाई है । अमरीका वा किमी अय दश न वभी
इतन अधिा शस्ताम्रा और गाना-यान्ता वा इतन छात्रे ता राष्ट्र व गिनाय इस्त
माल नही रिया । नगी मशीनी शूरता वे अनुगान म भा यह युद्ध दूगरा म विन्तु न
भिन है । इम युद्ध म पहल वभी भी अमरीकी नोजयाना वा अन्तर्राष्ट्रीय वानूत
वा उत्तपन वरनयान हथियारा और इतनी नू शगता स जा वानून और नति
वता व स्तर स हर वान म निन्तीय है सधय म लडन व मरन वा न जारा गया ।
इसलिए जमरीका जीर दशिय वियतनाम व युधवा म वाय और मानवीयता व
उदार तत्त्वा वा विनाय होना एव स्वाभाविक अनिवायता है ।

अमरीका की घृणित अनुगार शूर एव वुटिल सामरिा नीतिमा वे वनस्वरूप
जहाँ वियतनाम वा जन-जीवन परिवार प्रथा व सामृतिा विकाय वा तहस
नहस विया है वहाँ एमी अभुत एतिहासिा विभीषिा वा उपनरण मात्र अमरीका
नागरिक और युवक वा भी नतिा हास और मानसिा पतन होना अनिवाय
था ।—जमरीकी युवरा म भ्रष्टाचार रिश्वतग्वारी लूट उदृण्ता व्वराष्ट्र व
प्रति अश्रद्धा एव अविश्वास तथा निराशाजय हिात्मक प्रवृत्तिया वे वडावा
मिला है । आज अमरीका म अपराधी प्रवृत्तिया वनी हैं । चोरियाँ, डकतियाँ आत्म
हत्याए और वत्ल और अधिा हान लग हैं । नताभा की हत्याएँ और आन्तस्त्रि
विक्षाभ वे दावानल स अमरीका भी जल उठा है । वाटस शिवागो डिट्राय लाम
एजलिा सूयाक, अलवामा—सब बड छोटे शहर अशात हैं ।

वियतनाम युद्ध के दौरान पिछल 6 वर्षों म अमरीका म अपराधा और
भयानक हिात्मक अपराधा वतत लूट और वलात्कार तथा आत्महत्याभा म
भयानक अनुपात स वनेतरी हुई है । 1964 1969 वे कुछ आँकड इस प्रकार हैं

—1968 69 वे बीच 50 लाख भयवर अपराधा की रिपोट लिगी
गयी । 1967 68 की तुलना म 11 प्रतिशत की वृद्धि हुई ।

1969 म, पिस्तूल व वदूक आदि (आग्नेय अस्त्रा) के प्रयोग द्वारा
—9 400 वत्ल हुए 7 300 हमले हुए 1 27,000 डकतियाँ पडी । इन
आँकडा म बिना अग्निअस्त्रसे हुई घटनाएँ सम्मिलित नही ।

1964 से 1969 में पिस्तौल व बंदूक से की गयी हत्याओं में 80 प्रतिशत की वृद्धि हुई और नोघ में हमला करने में अस्त्र प्रयोग में 143 प्रतिशत की वृद्धि।

हथियार बन्द डकतियाँ में, 1964-69 में 147 प्रतिशत की वृद्धि। दिन में घरा में सँघमार आदि की घटनाओं में 1960-69 में 286 प्रतिशत की वृद्धि हुई।

1969 में 871,900 कारें चुरायी गयीं और 2,97,580 डकतियाँ तथा 19,49,800 चोरियाँ हुईं।

—गम्भीर अपराधों के लिए गिरफ्तार हुए नाबालिगा की संख्या 1960-69 में दुगुनी हो गयी और 10 साल से 17 के बच्चा के बीच औसत 27 प्रतिशत की वृद्धि हुई।

1969 के सरकारी आँकड़ों के आधार पर।

हर 36 मिनट में 1 बन्द होता है।

हर 2 मिनट में एक डाकेंजनी।

हर 2 मिनट में एक हमला।

हर 16 सेकिण्ड में एक चोरी।

हर 14 मिनट में एक बलात्कार।

हर 36 सेकिण्ड में एक कार चुरायी जाती है।

(—यूनाइटेड टाइम्स, इनसाईकिलोपीडिया अलमनक 1971, पृष्ठ 275 से।)

वियतनाम और हिन्द चीन को उजाड़ने की ऐसी महँगी कीमत ता उमें चुकानी ही पड़ेगी।

सन् 1918 के बाद, यह पहला मौका है जबकि एक प्रजातान्त्रिक देश ने जहरीली गैस का प्रयोग किया हो। लेकिन गैस का इस्तेमाल इतना बुरा नहीं जितना कि यह तथ्य की अमरीका के सैनिक अधिकारी नशीली गैसों और नये नये हथियारों का परीक्षणार्थक प्रयोग कर रहे हैं। मानो कि वियतनाम के नागरिक, स्त्री-बच्चे, नशी-नाशे खत-खलिहान और पशु पक्षी—हर जिंदा और बेजान अमरीका की किसी प्रयोगशाला के बेजुवान चूहे हो या कि कीड़े मकोड़े।

“—उस गाँव में एक औरत है जिसके गीना हाथ नपाम से जल गये हैं। और उसकी आँखा की पलकियाँ भी इतनी बुरी तरह झुलस गयी हैं कि वह आँख बंद नहीं कर पाती। जब उसके सोने का बकन होना है तो उसके सम्बन्धी उस बम्बल मत्क देते हैं। इस महिला का दा जवान बच्चे

भी उसी बमबारी में इसी की जाखा के मामले जल मर—जीर गांव के दूसरे पांच बच्चे भी उसने जलते देखे थे ।

(‘पूयाक टाइम्स 5 सितम्बर, 1956।)

लेकिन हवाई हमलों में ता निर्दोष नागरिक मरते ही हैं पर इस लड़ाई में अमरीकी आफिसरों को कहते सुना जाता है

“गाली मार दो मैं कुछ भी जीवित रेंगता नहीं देखना चाहता।”

जीर जवान दागते जाते हैं मशीनगनों सेता में धान बोते बच्चा स्त्रियों पर, छप्पर में बड़े बूने पर जीर पानन में पड़े शिशुओं पर, शांति की उपामना में ध्यानस्थित बौद्ध भिक्षुजा पर ।

वियतनाम के लड़ाके स्वयंसेका को गावा के खेत और जगलातो में रन बसेरा मिलता है । वे जनता के हैं और जनता की स्वतंत्रता व रक्षा के लिए लड़ रहे हैं । वे जनता के अपने बच्चे हैं जीर सत्रिण वियतनाम का हर घर छप्पर उनके अपने घर हैं । सारा वियतनाम दक्षिण वियतनाम ‘वियतनाम’ बनकर खड़ा है दुधध जीर अमरीकियों को अनात जीर इसीलिए अजेय । सभी तो अमरीका को मिटाना पड़ रहा है—हर गांव खेत जहा से ‘शत्रु’ को रसद मिलती है । पर दिन में खता में काम करती लड़कियाँ ही ता वियतनाम की लड़ाकू स्वयंसबि काएँ हैं । घरों के खलिहानों में पड़ी फसल के धान के मुह खुल हैं स्वतंत्रता के लड़ाके गांव के छाकरा के लिए । और गांव के लोगगीता में और प्रेम गीता में स्वतंत्रता संग्राम की जात जन ग्ही है । जनशांति को मिटाने के लिए मारे वियतनाम को ही मिटाना होगा जीर इसी आतंकवाद का मशीनी बम्प्यूटरी हिसाब बांशिंगटन में चलाया जा रहा है ।

‘अगर किमान अपने गांव में रहता है—तो उम्मीद है कि वह गोला बमों से मारा जाय । अगर वह भागता जाग बढ़ती सत्रिण टुकड़ी उसे भूत देगी क्योंकि वह डरकर भागता हुआ वियतनाम है ।

फिर उस किसान के हाथ में व टुक का हाना या कि किसी तरह की युद्धात्मक हरकत करना अमरीकी गांधी खान के लिए जरूरी नहीं । (सत्रिण दमी तरह गोरे अमरीकी अपने घर में काला व रड इण्डियना के साथ बरनाव करते हैं । अमरीका में पुलिस गोनी पहने चलाती है और बात पीछे पूछनी है । उह आत्मरक्षा का भय है । और क्योंकि वह डरपोर है इसीलिए अधिन हिसाब बपूखार ।)

मलकाम त्राउन न एनी हा एक और आंखा-देखी घटना का बणन किया है

—(अमरीकी टुकड़ी गांव की आर वर रही थी सगीनें ताने)

जवानों काई पचास गज की दूरी पर मामन एक आत्मी गीया वर भाग

घड़ा हुआ, जंगल की ओर। चार आर स हमारी मशीनगना, गमफलों, रिस्नाता टामीगना की गन्गडाहट से गाँव गूज उठा। उसकी ओर गोलियाँ बरस रही थी—पर वह भागा जा रहा था। कब तक ? मैं—। आखिर टुकड़ी का जाकर उसकी तलाश करने का हुक्म मिला जिस हमन गालिया की बौत्तार म गिरते देखा था।

हम बट पीठ क बल गार म पडा मिला—चार गालिया स उसवा ऊागे नगा सीना छिगा हुआ था। खाली काना जाँघिया पहना हुआ था उमन। अभी भी उमम जान थी हाय-गाँव हिल रहे थे और उरका मर जाग पीठ डाल रहा था। उमके मुह पर खून था। टुकड़ी न नीचे झुककर देखा—ठठाका मारकर हँम पडे—

शायद करणा की भावना म याकि केवल नगी दूरता स एक फौजी न एक बडी-सी पट्टी उठा ली और उसरा एक हिस्सा उसके गल क पाम गारे म गाड दिया। फिर दूसर हिस्से को घायल की गदन पर दबाकर दम घाटन लगा। वह अभी भी हिल रहा था। दूसरा सनिक दूसर छोर पर बूट स उछला ताकि गन्न टूट जाय। लेकिन लकड़ी टूट गयी। एर दूसर न घायल की गदन का बूट स दबा कर काम पूरा करने की काशिश की। लेकिन घायन म जीने की तइप अभी भी बाकी थी। आखिरकार, (अमरीकी) टुकड़ी के जवान जोर स हम जाँर जपनी राह पर आगे बढ गये।

—“मिन्नी दोना ने काना पाजामा और ब्नाऊज पहना हुआ एक झापडे स दौडी आयी। एर ने घायल को पहचाना और शोक म मुह पर हाथ रखा—कि वह, उमका पति है। झापडे म झपटनर लौटी और एक वाली लेकर उसमे घान क बत स मैला पानी भर लायी। पति का मस्तक गान म लेकर उसके जडमा पर जम खून को गदले पानी स घान लगी। कभी कभी वह उसके माथे को सहलाती और बुद्ध अस्पष्ट सा बोलती। कोई दस मिनट बाद वह मर गया। विधवा निस्तब्ध थी और पति की निष्प्राण आँखा को उमने ढक दिया था।

धीरे स उसन निगाह उठायी और सनिका की आर देखा, और फिर मुझे धूरते पाया। उसकी प्रश्नवाचक निगाह मुन पर टिक गयी थी। व आज भी मुझे चकौटती है—अमरीकना अमरीकनो ! क्या हो गया है तुम्ह वियतनाम म ? ’

(‘यू फोस जाफ वार पृष्ठ 5-6)

संज्ञित अमरीही सगरा का एग ज यापारा क गिनाए विग्रन और बानन की स्वतंत्रता है। जयति अमरीया क उपाधिगेग दलिन त्रिपताम म अमरीया की आलाचना याकि शांति की बात करना मना है। माना कि एगिया क सागा का उचित अनुचित का ज्ञान न हा। अमरीही परदार श्री मनराम काउन न जिम आंग्रिधी स्थिति का बपन किया है उमरी निजा अनुभूति हूँ क एग युवा कवि श्री त्रिन काँग सान की कविताआ और साङ्गीता म हुई है। आ गान की कविताएँ साया म बिनी हैं। लकिा उनकी रचनाआ पर साम्यवाणी और बागी कहकर सगाव शासन न पाङ्गी लगा दी है और म्यय श्री गान की हया करा न्यि जान की अपवाह हैं।

पगसियो के प्रमगीत

मरा एग प्रेमी है जो मर गया

अशउ क वृद्ध म।

मरा भी एग प्रेमी है जा मर गया

अमावधानी स लटे हुए घाटी म।

जा मर गया नग बदन

पुलिया क नीचे बटुता लिए मन म।

मरा एग प्रमी है जा मर गया

बाजा म (माई लाई म)।

मरा एग प्रमी जा मर गया

कल रात एग भयानक मौत।

किसी के लिए नफरत क दो बाल

बिन बोल।

स्वप्नवत शांति, मुर्दा लेटा रहा।

—युवाकवि बिन पाग सोन

(जिनक लावप्रिय युद्ध विरोधी गीता की एल्बम लाया म बिक चुक हैं किंतु सगाव के शासन न उनको बगावती कहकर पाबदी लगा दी है।)

उपनिबशवादी दशो ने सदा से प्रजातंत्र के ऊचे सिद्धान्ता की दुहाई देर निधन उपनिवेशा के लोगो को दबाया है। ब्रिटेन जब भारत म राष्ट्रीयतावादी लेख लिखन या भाषण दन के लिए तिलक, गांधी व जवाहरलाल नेहरू को 6-6 साल का कारावास देता था तब उही की राजधानी लंदन के हाइड पार्क पर श्री वृष्ण मनन अग्रेजी साम्राज्य की खुलकर निंदा कर सकते थे। बल्कि व सेंट पेंत्रास धात नगरपालिका के सदस्य भी चुने गये थे। जग्रजी साम्राज्य को उखाड फेंकने की बात भारत अफीका आदि ब्रिटिश उपनिवेशो म जहाँ बगावत मानी

जाती या इंग्लण्ड म उस अभिव्यक्ति स्वातन्त्र्य' कहा जाता था।

आज अमरीकी साम्राज्यवाद म भी यही होता है। अमरीका म लाखों लोग युद्ध के खिलाफ प्रदर्शन कर सकत हैं। दजना पुस्तकें और सैकड़ों लेख आय दिन 'स युद्ध आर अमरीकी सरकार क खिलाफ प्रकाशित होत हैं' किंतु अमरीका के उपनिवेशों म दक्षिण कोरिया फारमोसा, ग्वाम माइक्रोनेशिया ट्रीनिदाद पोर्टो रीका पनामा और दक्षिण वियतनाम मे लेखकों बुद्धिजीवियों व समाचारपत्रों तथा विश्वविद्यालयों पर ससर है। किसी भी प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप म शांति की बात करना अमरीकी नीति की आलोचना करना अथवा राष्ट्र की आर्थिक व सामाजिक व्यवस्था म सुधार की बात करना 'राष्ट्रद्रोह' है उसे साम्यवादी बगावत' कहकर लेखकों का जेलों म डाल दिया जाता है।

दक्षिण वियतनाम के अनेक विद्वान् लेखक, कवि तथा बौद्ध भिक्षु जिन्होंने अमरीकी युद्ध से अस्वहमति प्रकट की है—आज हज़ारा की सख्या म जेलों म बिना मुकदमा चलाय नजरबंद हैं याकि दश निष्क्रामित कर दिए गये हैं। एस ही हज़ारा म है एक बौद्ध भिक्षु श्री त्रि क्वांग जो वर्षों से सर्गाव शासन और युद्ध का विरोध करने क कारण नजरबंद है। उन्हीं के सहयोगी भिक्षु चिक नात हान्ह दश निष्क्रामित हैं और युद्ध विरोधी जनमत तयार करने के आरोप म विदेशों के दौर कर रहे हैं। अमरीका म इस मेखक को भिक्षु नात हान्ह की एक सभा का सभापतित्व करने का अवसर मिला था। उन्हीं सभा म बताया कि किस प्रकार वियतनाम की किसानोंवालागा को जिनके घर गाव व सत उजड़ गये हैं अमरीकी सैनिक अड्डों के इंद गिद फल बेश्यागारा म काम करना पड़ता है ताकि व धान खरीदन के पस नमा सकें। अनेक एसी लड़कियों का शरीर बचकर अपन अनाथ परिवार का पालन करना पड़ता है। और जिस देश का किमान विश्व की अंतर्राष्ट्रीय मण्डिया म खर, तल, धान, चाय का निर्यात करता था आज अपनी लड़कियों की राजी स विदेशों स आयात हुए अमरीकी अनाज का खाकर जीने की कोशिश कर रहा है। भिक्षु नात हान्ह न धीर धीर बड़ी शान्त आवाज़ म बोलते हुए कहा

दनाग की एक वश्या अमरीका सैनिकों स इतना कमा लती है कि चार व्यक्तियों को पिला सक जबकि एक मजदूर स्वय अपना ही पेट नहीं भर सकता।'

और सर्गाव शासन और अमरीकियों म जसा झूटाचार चल रहा है उसकी कहानियाँ सुनायी जिनके शरणार्थी शिविरों म रह रहे शरणार्थियों तक को लूटा जा रहा है। भिक्षु के भाषण क बाद एक अमरीकी श्रोता ने पूछा लेकिन अगर हमारी फौजें वियतनाम स निराल आर्थें ता कम्युनिस्ट सारे दक्षिण वियतनाम

का हृदय लेंग और आप सत्रका बल्ल जा म बर निया जायगा । फिर क्या आप चाहत है कि युद्ध रुक जाय और अमरीकी सगांव छोड जायें ?

बौद्ध भिक्षु न बड़ी गम्भीरता से किन्तु दृढता से उत्तर दिया कि वियतनाम व लाग आपस म एव-दूसरे से कसा सलुक करत हैं यह हमारा धरलू मामला ह । आपकी सरकार को इसम हस्तक्षेप का बाई अधिकार नही । फिर थिक नात हा ह न समझाया कि "वियतनाम की जनता का एर शांतिवादी संस्कृति विरासत म मिली है । हम शांतिप्रिय लोग ह और इसलिए अगर किसी भी पार्टी न हिंसात्मक नीति अपनायी ता जनता उसका समर्थन नही करगी । रक्तपात बहुत हो चुका । हमारा देश युद्ध से ऊब चुका ह । लेकिन विसा सम्भावित वियतनाम व रक्तपात व वहां अमरीकिया ने द्वितीय महायुद्ध से भी तिगुना अधिक घून वियतनाम म बहा दिया है । क्या आप सचमुच यह मानत ह कि वियतनाम इतनी अधिक बमबारी करके स्वय ही अपन देश को उजाड डालेगा । '

1963 म अमरीकी समर्थित टिकटेटर डियेम के जुल्मा से तग जावर जय दक्षिण वियतनाम की जनता ने डियेम हटाओ का आन्दोलन उलाया वह सबथा शांतिपूण था । हजारों लाप्या नागरिकान हूँ, सगांव और बवागत्नी म सगांव शासन और अमरीकी नीति के खिलाफ प्रदर्शन किये । फलस्वरूप अमरीकी अधिकारिया ने भयानक दमनचक्र चलाया । डियेम न हजारों शांतिवादी वियतनामिया को जेला म बन्द कर दिया—जिनम छात्र छात्राएँ, बौद्ध व कथोलिक भिक्षु, मजदूर नेता बुद्धिजीवी कवि-लेखक, किसान, सभी शामिल थे । वे 'वियतनाम' के सदस्य न थे । वे थे दक्षिण वियतनाम के नागरिक और उनका अपराध था अपने ही देश म 'याय व शांति की माग करना ।

1965 म, बौद्ध भिक्षु नात हा-हू ने पश्चिमी देशों की यात्रा कर लंदन, पेरिस, राम, यूवाक मे शान्ति के समर्थन म प्रचार किया और 1966 म अमरीका से (वियतनाम लोटस इन एसो आफ फायर) अर्थात् वियतनाम एक बमल आग के समुद्र म नामक पुस्तिका प्रकाशित की । कई पश्चिमी देशो म इससे अनुवाद छप चुके हैं और स्वय अमरीका मे 50 000 से अधिक प्रतियां विक्रि चुकी है । लेकिन दक्षिण वियतनाम म लेखक और उसकी पुस्तक दोनो पर पाबंदी है । फिर भी 1 00 000 से ज्यादा प्रतिया गुप्त रीति से छापकर वियतनाम के घर घर म पनी जा रही हैं । भिक्षु नात हा-हू के अनुसार 2 00 000 से अधिक लोग—अधिकांश म बौद्ध सभा के स्वयसेवक व धर्मगुरु आज दक्षिण वियतनाम म नजरबन्द हैं ।

'साखा अमरीकियों के लिए और वाशिंगटन के नेताओं के लिए वियतनाम युद्ध का उद्देश्य साम्यवाद के फलते प्रभाव को नष्ट करके उसके तथाकथित आक्रमण से एक छोटे एशियाई देश को बचाना है । जबकि

वियतनाम के लिए समस्या है सामाजिक गाय, राष्ट्रीय स्वतंत्रता या :
 आर्थिक विकास की । इन समस्याओं के साथ हमारे लोग का मिल
 जुनकर काम करना है । वम गिरान से हमारी कठिनाइयाँ और बढ़ता है
 उनका समाधान नहीं होता ।'—बौद्ध भिक्षु नात हान्ह की घोषणा है ।
 उनका कहना है कि

मैं एक बौद्ध भिक्षु हूँ, कम्युनिस्ट नहीं हूँ । मुझे मालूम है कि कम्युनिस्ट
 शासन तंत्र में मुझे कठिनाइयाँ का सामना करना होगा लेकिन अगर आज
 मैं नम प्लेटफॉर्म पर एक वियतनामी कम्युनिस्ट के साथ खड़ा होऊँ तो
 अमरीकियों का हम दोनों का एक ही जवाब होगा हमारे आपसी मतभेद
 हमारा घरलू मामला है तुम्हें हस्तक्षेप का कोई अधिकार नहीं ।

भिक्षु नात हान्ह के गुरु हैं दक्षिण वियतनाम के शक्तिशाली धर्माचार्य भिक्षु
 त्रि क्वांग जिन्होंने 1963 में डियम के विद्रोह जनता को संगठित किया था
 और 1968 में टट' प्रत्यागमण के समय जब हूँ की पुरानी राजधानी पूणतया
 मुक्त हो चुकी थी भिक्षु त्रि क्वांग और उनके सघ ने राष्ट्रीय संग्राम में महत्व
 पूर्ण भाग जदा किया था । बाद में अमरीकियों ने सारे नगर पर भयकर गानावारी
 करके नगर के बौद्ध मन्दिरा तंत्र को नष्ट कर दिया और धर्माचार्य का अनात
 स्थान पर नजरबंद कर दिया गया । सगाव के अधिकारियों का कहना था कि
 भिक्षु त्रि क्वांग को स्वयं उनकी ही सुरक्षा के लिए हूँ में अत्यन्त सुरक्षित जगह
 पर ले जाया गया है ।

धर्माचार्य त्रि क्वांग की एक शिष्या कुमारी काओ गाक फूआंग ने जो सगाव
 विश्वविद्यालय में वनस्पति शास्त्र (बोटनी) पढ़ती है मार्च 1967 में विश्व के
 शांतिवादी दला को एक अपील भिजवायी थी । इस अपील पर 59 प्राध्यापक
 और छात्र प्रतिनिधियों का भी हस्ताक्षर थे । जिनमें एक थी 33 वर्षीया कुमारी
 फाम थी माई । जब उनकी अपील का दुनिया के शक्तिशाली राष्ट्राँ पर बार्दे
 प्रभाव न पडा तो युद्ध की ज्वालाओं में अपने राष्ट्र की बचाने की उद्दाम भावना
 से कुमारी माई ने 16 मई 1967 को शांति के समर्थन में अमरीकी नेताओं का
 ध्यान आकर्षित करने के लिए, सगाव के एक चौराहे पर पत्रान उडैतकर स्वयं का
 जला डाला । इस आहूति दिन से पहले कुमारी माई ने प्रेसिडेण्ट जानसन के
 नाम सगाव स्थित अमरीकी राजदूत एल्मवथ बरर के द्वारा एक पत्र भेजा जिनमें
 लिखा था

'हमारे देश के बहुमूल्य 'लाग' अमरीकियों से बुरी तरह नफरत
 करते हैं क्योंकि उन्हां के कारण हमारे देश पर वर्तमान युद्ध की यातनाएँ
 थोपी गयी हैं ।

तुम अमरीकिया न लाखा टन वमा और डातरा की मार स हमारी राष्ट्रीय आत्मा और शरीर को तहम-नहम रिया है ।

कुमारी फूआग ने 'टोनि कुमारी भाई' का घनिष्ठ मित्र था 'गुयाक टाइम्स

(मई, 17 1967) के सवादगता श्री एप्ल स एक् भेंट म कृता कि यन्ि यह युद्ध जोर अविन चला तो उर है कि जहां लाखा की जानें जायेंगा उसक साथ ही हमार प्यारे देश की सस्कृति और मानव मूरया का भी विनाश हो जायेगा ।

बडी ही निर्भीकता के साथ सर्गाव विश्वविद्यालय की प्राध्यापिका कुमारी फूआग ने कृता कि वे और उनके सहयोगी इग युद्ध से सहमत नृता हैं । हम सर्गाव के शासन के लिए लडने म कोई लाभ नही दीखता । अमरीरा की लडाई हम क्या लडे ? और श्यू व की ने वियतनाम क किसाना क हित म किया ही क्या है ? कम्युनिस्टा स अधिक थ देश का क्या दे सकत हैं ? दक्षिण वियतनाम क जबान इसीलिए रणभेस म नही टिक पाते क्याकि उनक पास वह सच्चाई नही है जिसकी रक्षा के लिए कोई जान देता है ।

और कुमारी फूआग ने उस पश्चिमी साम्राज्यवादी मच्चाई का जोर सवेत किया जिसे अमरीकी नेताआ ने बराबर भुलाना चाहा है

उत्तरी वियतनाम और वियतकाग के साथ कई विदेशी सनिक नही लड रहे हैं लकिन हमारे साथ (दक्षिण वियतनाम) इतने सारे (उस समय 5 00,090 स अधिक) है । वियतनाम की बहुसख्यक जनता प्रासीसी उपनिवेशवादिया और हमारे अमरीकी मित्रा' म कोई अतर नही देखती और बहुसख्यक वियतनामिया का प्रेसिडण्ट जानसन (अब निक्सन) की सच्चाई पर भरोसा नही कि वह इस भयानक युद्ध का अंत करना चाहते हैं ।

उहाने आगे बताया कि उनके बहुत-स मित्र अमरीकी नीति से तग आकर वियतकाग के साथ जा मिले हैं । कुमारी फूआग के मत म वियतनाम की राष्ट्रीय सुरक्षा के लिए वियतकाग के अलावा कोई और दूसरा उपाय नही है । शांति के लिए यह आवश्यक है कि मुक्ति मोरचे से तुरंत समझौता वार्ता शुरू हो और ऐमा तभी सम्भव है जबकि सर्गाव मे भ्रष्ट सैनिको को शासन के स्थान पर सम्मानित नागरिका की शांतिवादी सरकार स्थापित होन दी जायें । लकिन जफसास अमरीका एसा नही करने देगा । कुमारी फूआग एक सम्पन्न परिवार की महिला है और सर्गाव सरकार म उनक सग-सम्बन्धी ऊँचे पदा पर है । उह ह्वे विश्वविद्यालय म एक विशेष भाषणमाला देने का आमन्त्रित किया गया था । जब व ह्वे के हवाई अड्ड पर उतरी—उह गिरपतार कर लिया गया और तीन दिन तक तजर

वदा म रखा गया। उह बताया गया कि उनकी गिरफ्तारी का कारण है कि वे मिथु नात हाह की शांतिवादी पुस्तक 'वियतनाम एक कमल आग के समुद्र म लिए घूमती है जा 'बगावती है।

तीन दिन बाद उह मगाव लाया गया और तीन दिन जेल म रखन के बाद उह सगाव पुलिस के सर्वोच्च चीफ, त्रिगाडियर जनरल 'यूयन ग्लोक लान के सामन पेश किया गया।

जनरल लान ने कुमारी फूआग स माग का रि वे ह्वे विश्वविद्यालय का पत्र लिखकर वहा भाषण देना अस्वीकार करदें। उस माग के ठुकरा दन पर जनरल लान न माग की कि एक शत पर उह ह्वे जाने दिया जा सकना है कि वे वहा किमी स राजनीति पर बातचीत न करें और न ही किमी पगाडे (बौद्ध मन्दिर) म जावें। और नियम से स्थानीय पुलिस स सम्बन्ध रखें ताकि सरकार का उनकी गतिविधिया का पता रह।

कुमारी फूआग न कहा कि व एक स्वतंत्र ल्श की स्वतन्त्र नागरिक हैं और यदि उह नागरिक स्वतन्त्रता नहीं मिलेगी ता वे ह्वे नहा जायेंगी। और फूआग ह्वे नहा गयी किन्तु सगाव म सरकार के सफेपोष गुप्तचर उन पर बराबर निगाह रखते है।

अमरीका न अक्तूबर 1967 म आम चुनाव का नाटक रचा था। और थ्यू का विराध करनेवात्रे एकमात्र उम्मीदवार टआग दिट्टू का जाकि सगाव क एक बडे धनीमानी वकील थ चुनाव म शान्ति क नाम पर छडे हुए थे। बडे लोकप्रिय हान पर भी 'प्रेसिडेण्ट पद के 11 उम्मीदवारा म 18 प्रतिशत मत स वे दूसरे नम्बर पर रहे। निम्नन्दह थ्यू विजयी रहे। लू न चुनाव पद्धति की आलाचना म कहा था कि बिना बईमानी विय थ्यू को 10 प्रतिशत स अधिज वोट नहा मिल सकत। यह चुनाव धाधा है।

फलस्वरूप लू का अस्पताल स उठाकर गिरफ्तार कर लिया गया और 5 साल के कठोर कारावास की सजा देकर सगाव स 80 मील दूर बाले दानी भिजवा दिया गया है।

एक दूसरे शांतिवादा प्रतिद्वन्दी मुप्रसिद्ध अयशास्त्री डा० आळ आग थान्ह का जा दान्तीन बार सगाव क भक्तिमण्डल म मन्त्रि पद पर रह चुक है— गिरफ्तार कर लिया गया। डा० थान्ह को लम्बे असे बाद इस शत पर रिहा किया कि व सपरिवार दश छाड जायंगे। जब वे हजाग अय निष्पासित दशवामिया का तरह सपरिवार परिस म रह रह है क्यकि दक्षिण वियतनाम म शांति व याय की बात करनवाला क लिए काइ जगह नही है।

दक्षिण वियतनाम क बाले पानी का कहत हैं डब्लिस आइलण्ड — भूना का द्वीप जाकि तट स 80 मील दूर समुद्र म एक छोट द्वीप 'वान सान पर है।

नापरवाही स कर सकती है इसका अनुमान लगाया जा सकता है।

इससे भी अधिक एक बड़े लोगो को नजरबंद करने का प्रभाव होता है आम जनता का आतंकित हो जाना। जोर शासन व्यवस्था पर दमका दुष्प्रभाव पड़ता है—रिश्वतखोरी और भ्रष्टाचार में बढोतरी से। छोटे छोटे सरकारी अफसरान भी छोटे छोटे लोगो का वियतकाग का एजेंट याकि कम्युनिस्टा का सहायक कहकर उनसे पस गँठने की हरकतें करते है और पारिवारिक एक धर्म व जाति की साम्प्रदायिक शत्रुता का बदला वियतकाग जोर 'कम्युनिस्ट शत्रुता की हत्या कर लिया जाता है।

कुमारी फूलाग का 'यूनायटेड टाइम्स को दिया गया वस्तुतव्य —कि इस युद्ध स्थिति से दक्षिण वियतनाम का मासृतिक व राष्ट्रीय 'यकितत्व नष्ट हो रहा है इसी तथ्य की जोर हमारा ध्यान आकर्षित करते हैं जिसका प्रमाण हम सगाव शासन के दमनचक्र की उक्त घटनाआ से मिलता है। य घटना उस स्थिति की जोर सबेते करती है जहा के वातावरण में बुद्धिजीविआ कवि-लेखका विचारका धार्मिक नायकताका धमगुआ और राजनीति म रचि रखनेवाला को नागरिक स्वतंत्रता के मूलभूत अधिकारा का प्रयाग करने पर जेल जाना पड़ता है याकि देश से निष्कासित किया जाता है। याकि उह सी० आई० ए० के एजेंट किसी वियतकाग कम्युनिस्टो की गोत्रिया में मरवा डालते हैं।

1968 फरवरी के डेट प्रत्याग्रमण के समय वियतकाग के स्वयंसबकसनिका ने जनता की राष्ट्रीय भावना का सहारा लेकर 140 शहर गाव और नम्दा को मुक्त कर लिया था। जमरीका की प्रतित्रिया थी हर उस मकान गाव जोर शहर को जिस पर मुक्ति मोरचे का झण्डा फहराता हो वमा ने मिट्टी में मिला दो। स्वयं सगाव शहर के एक बड़े व्यापारिक इलाक चालान पर वियतकाग का अधिकार हो चुका था जोर मुक्ति मोरचे की स्वतंत्र सरकार का शासनतंत्र दैनिक जीवन की व्यवस्था व नियंत्रण चलाने लगा था। ह्वे की पुरा में राजधानी में भी ऐसा ही हुआ। लेकिन फिर जमरीकी वमदारा ने स्वाम जापान फिलीपीन और थाईलैंड से उडानें भरनी शुरू की जोर वम बरमा-बरसाकर चालान (सगाव) और ह्वे के एतिहासिक नगरा को जमीनलाज कर डाला। सबडा निरीह नागरिका की स्त्री पुरुषा और बच्चे-बूटा की जाने गया जोर लाखा बेधरवार हो गये। लेकिन एक जमरीकी कमाण्डर ने डींग मारत हुए कहा

उन नगरा को प्रजातंत्र के लिए सुरक्षित रखने के लिए यह जरूरी था कि हम वमा से मिटा दें।

स्कोचट अथ

वियतकाग के अस्तित्व को नष्ट करने के उद्देश्य में जिन शत्रुता में मुक्ति मोरचे

का प्रभुत्व है, वहाँ अमरीकी और उाकी मित्त फौजा ने घरा खेता जोर खलि हाना को नष्ट करन की नीति अपनायी ह। शुए म यह काम दक्षिण वियतनामी और दक्षिण कोरियाई भाडे के फौजिया से लिया जाता था। लेकिन क्याकि वे लोग दिल मे काम नहीं करते और इसलिए बिनाश उतना प्रभावकारी नहीं हो पाता था। 1966 के बाद अमरीका क वीर सिपाहिया न स्वय अपने हाथा स बिनाश करना शुरू कर दिया है। नई याजना के अतगत वियतकाग प्रशासित इलाका को नक्शा पर बमबारी के लिए निशान लगाकर 'फ्री-बोमबिंग जोन' लिख दिया गया है। अर्थात अब उन क्षेत्रा पर कोई भी बमबार जब चाहे जितना चाह बमबारी कर सकेगा उभुक्त बमबारी क्षेत्र की हर चीज और हर जीवित साँस लेती वस्तु शत्रु है और उस बिना कारण, बिना हुकम, बिना अनुमति लिय नष्ट किया जा सकता है। घने उपजाऊ जगला जोर खेता को इस याजना क अतगत गाली स, गसा स जलाकर राख कर दिया गया है और बमा से शहर के शहर मिटा दिय गय है—जोर मोला तक अघजली काली दीवारें खडी हैं—मानो कि गवाही दे रही हा कि जफरमन और जवाइम लिबन के देश के लागे न इस देश पर भी प्रजातन्त्र की रक्षा के लिए 'धमयुद्ध' मइमाना की जस्मत स खिलवाड किया है।

सगाव के पतन की चिन्ता अमरीकियो की नीन् हराम किये रहती है। इस लिए सगाव क चारा आर के घने जगला की बमा स जलाकर साफ कर लिया गया है। लेकिन इदगिद क किमानो से भी तो खतरा है दी। इर्वनिग स्टार (पार्शिंगटन से प्रवाशित) 6 जनवरी 1966 म सगाव मे एक रिपट म बताया गया

'सगाव के पश्चिम म क्कापूर्वी नदी के दक्षिण म समतल भूमि पर जो घन और सहजहात खेत ह उही का 173वी हवाई (एयरबान) ब्रिगड के परा ट्रुपा न अपनी स्कोचड अय योजना का खास निशाना बनाया ह। जले हुए मकाना के खण्डहर म ब्रिगड क वहादुरा न अपना कम्प लगाया और उनक कम्प के 2 मील क अहाते म कोई भी मकान खडा नहीं रहने दिया गया। जट बमबारा और भया ँक तोपा क गोला की निरंतर मार म हर एक टाँचे को जले हुए मलवे म बदल दिया गया है। कोई भी मकान उनकी राह म जाया उस जलाकर मिट्टी म मिला लिया गया। अकनर ये रिहायशी ढाचे घास फूस के छप्पर थे। लेकिन कुछ बडे वटुत बडे भारी लकडिया के बने मकान भी थे जिाके सामन सुंदर फुलवाडिया और वगीचे लगे थे।

अमरीकी पराट्रुप्त न खाना बनान के हर बतन को कुचल लिया केल के हर खम्भे को काट ढाला, और हर दरी, गद्दे जोर चादर को फाड ढाला। पहले लिन सी' कम्पनिया के फौजिया का कोई 60 से अधिक स्त्री बच्चे राने हुए मिने थे। उनक मकान बमा से नष्ट किये जा चुक थे और वे खाइयो के चारा आर रोट

धिपाते पड़े थे। उन्हें हेन्रिगोट्टा मन्त्री के उत्तर में वाओ टार्ड जिन म पुा स्थापित करने के लिए भिन्ना किया गया था।

इलाक के प्राय सभी वयस्क पुंग नगी गाना गहरा और गन व गता म धुा हाग ताकि के जाग वस्त अमरीकी मन्त्रि का राह म गुरगें रिछा रे और छुगनर उन पर गोलियां बरमाय। इम जिन व कमिश्नर व अनुमार नगी व दग्गिन म रहनेवाला हर व्यक्ति त्रियतवाग है। या ता व हम पर गोलियां चलान हागे याकि ग्याइयां ग्यात हागे। एक अमरीकी मैनिक् न कहा—जयति वह एक ग्यन स दूमरी ग्यदर की आर बढ़ा। मराना व इ गिग जीर मता म नहरा के आम पास वमजारी म सुरक्षा व त्रिग एगी ग्याइयां चारा तरफ ग्युदी हुई थी। कुछ साला पुरानी (फागीमिया व ममय की) और बहूत-गा हाल की बनी।

अमराकी मैनिक् इम इनाक म कुछ समय जीर रग ताकि इम उजड (स्कोच अय) धव का विस्तार किया जा सगे। वयाकि जब हम इम इलाके को छोड ग्य विगतवाग फिर गौगे। वे उन फिर आग्रा करेग फिर स छपर बनायेगे मिट्टी के बतन तवार करेग फिर म मुगियां पानी जायेगी खाइयां ग्युदेंगी जीर खेत फिर स जान जायेगे।

कप्तान हनरी टाकर व टिप्पणी करत हुण कहा अगर हम विगतवाग को फिर म घर ग्यडे करन और गत जोतने म उलमाय रखें तो उसे हग पर गोनी चलान का मौका ही गही मिलगा।

सेंट लुइस पोस्ट डिस्पेच के सवालनाता न सगाव स 5 माच 1966 को निम्न दनान रिपाट भजी

घाम फूम व छपरा म लान जाग तजी स फन गयी। अमरीका फौजा ने घर के उम भाग पर जहां अभी आग नही जल रही थी हाथ की जलती मगाल फेक दी जीर लपकती हुई तपटा की अमह्य गर्मी से बचने को पीछे हट गय। घर की जलती हुई छत खाली पक्ष पर धल उडाती धसक गयी। और आग की लपटें तेजी स निगन गया घर व इष्ट दबता का। बौद्ध धम ग्रंथा व कुछ पृष्ठ धीरे धीरे धूएँ म मिमके स फिर भभक कर प्रदीप्त हो उठे। पूवजा—बाप दादा की लटकी तस्वीरा के शीशे पहन चटक फिर गर्माहट म टूटकर गिर पडे। जीर फिर स्वय चित्त भी जदृश्य हा गय।

व कहत हैं कि यह एक विगतवाग का घर है। बूद्ध की वजह से से और इस्के आसपास के घरों को नष्ट कर दिया गया है। गांविनाते चाह जो महसूस करें किन्तु विगतवाग ने इसी गांव स सगाव को सरकारी सनिका पर गालिया चलायी है।

कितने विगतवाग मारे जात हैं या कद होते है—इसका प्रतिदिन हिसाब लगाया जाता है। अमरीकी और उनकी भिन्न सेनाओं मे कितने मरे जीर हताहत

हुए या लापता हैं इसकी भी गिनती रखी जाती है। लेकिन कितने वियतनामी नागरिक मारे गए, हताहत हुए, लापता हैं और पिछले 10 सालों में कितने घर (और गाँव) जलाकर नष्ट कर दिए गये हैं—इसका सही-सही अनुमान कोई नहीं लगा सकता।

कुछ लोग का अनुमान है कि 1,00,000 नागरिक मार गए होंगे। लेकिन वे घर बर और उजड़े लोग की तादाद सन 1966 के शुरु में 1,30,00,000 से अधिक बढ़ती गयी है। दक्षिण वियतनाम के नागरिकों की यातनाएँ जाधुनिक युद्धों में सबसे अधिक हैं।

वियतनाम का दावा है कि उनके जोर दक्षिण वियतनाम की जनता के बीच मछली-जल का रिश्ता है। और अमरीकी जनरल का कहना है कि अगर जरूरी हुआ तो हम उम जल को ही जला दगे जिसमें मछली जीवित रहती है। जोर इस लिए स्कोच अथ नीति को अमल में लाया जाता है। घटनाक्रम इस प्रकार है—

वियतनाम की एक सशस्त्र टुकड़ी किसी जिले में पहुँचती है। उस इलाके पर सारी रात ताप से गले बरसाय जात है। फिर बमबारीया हाती ह। तब भोर स पहले ही हलिकाप्टरों से एक बटलियन या जोर अधिक अमरीकी गाँव के बाहर उतरत हैं। यदि ग्रामीण घरों में रहत हैं ता गोना जोर बमों से मारे जात है। अगर वे खेतों व जंगलों में भागत हैं ता अमरीका के बहादुर सिपाहियों की मशीन गना और ऊपर उडत हलिकाप्टरों की स्वयंचालित मशीनों की गोलियाँ और राकेटों से भून डाले जाते हैं। सेंट लुइस नगर के पोस्ट डिस्पेच के सवादनता ने ऐसी ही एक लड़ाई का आखान्खा हाल इस प्रकार वर्णित किया था

‘—अमरीकी सेना एक शत्रु गाँव से गुजर रही थी। कुछ दूर खेतों में एक किसान उठा और सात्वना भर भाव से उसने हाथ हिलाकर अमरीकियों का अभिवादन किया। एक अमरीकी सैनिक ने तुरंत गोली दाग दी और दा जोर सैनिक ने उसका साथ दिया। दूसरे सैनिकों ने इन तीनों के निशानेबाजी का जहाँ मजाक उड़ाया—किसान ने अपना छत्रोनुमा टैट एक आर फेंकत हुए प्याडिया से सगौन उठा ली और सुरक्षा के अमफल प्रयत्न से पहले अमरीकियों पर गोलियाँ बरसायी और धराशयी हा गया।

बचारे ग्रामीणों का शत्रु का नाम देकर उनके गाँव का हवाई हमला तोपा जोर मार्टारों से उजाड़ दिया जाता है।

जब किसी गाँव के खिलाफ अमरीकी फौज सैनिक कारवाई करती है—तो उसका मतलब होता है—कि हर स्वस्थ पुरुष को गिरफ्तार कर लेना, गोलीबारी से बच स्त्री-बच्चों को शरणार्थी कम्प में भिजवाना और गाँव की भसा को और जानवरों को सूट लेना और गाली मार देना धान के खलिहानों का नष्ट करना बिखेर देना और रौं डालना एव पशुओं के धारा भूसे का, ग्रामीणों के छप्परा को

जला डालना। क्याकि इन सबका उपयोग वियतनाम भी कर सकत है। मलयशिया म 20 साल पहले अंग्रेजा ने भी ऐसा ही किया था। और स्वयं अमरीका म रड इंडियनो के खिलाफ गोरे अमरीकना ने भी यही किया था जो आज के वियतनाम म कर रहे है। अन्तिम लक्ष्य यही है कि जनता को इतना अधिक आतंकित किया जाये जिससे कि वियतनाम को सफलता की कभी कोई आशा न रहे। गाँवा से उहे घाना न मिले पनाह न मिले और उनके साथ अमरीकिया से लडने के लिए स्वयंसबक न मिलें। और के अल्पसंख्यक लोग जो स्वाध्वश सगाँव मे अमरीकी शासन का समर्थन करते हैं—गाँवा से हटाकर वियतनाम क प्रभाव से दूर वही सुरक्षित इलाका म बसा दिय जाते है।

बुलडोजरा से मीला के मील जगलो गावा और ऊबड-खाबड खेतो को सपाट कर दिया गया है। वासा के जगलो रबर के पौधा और गने के खेतो को उजाड दिया गया है। और पजातंत्र की रक्षा के इस महान ऐतिहासिक प्रयत्न मे ग्रामीणा को अपन पूवजना की उस थाती से सदा के लिए अलग किया जा रहा है—जहाँ पर उनक पितरा की समाधियाँ बनी हैं—जा कि उनने बौद्ध धम विश्वास का अतगत दैनिक जीवन में विशेष महत्त्व रखती है।

सबसे भयावह विनाश अमरीकी वायुमना ने किया है और सनिक दृष्टि से लगता है कि कोई और चारा ही नहा है क्याकि वियतनाम व्यापक है ऐस सुदूर स्थित ग्रामीणा म जो दक्षिणी पूर्वी एशिया क घने जगला व पहाडा के दुग्म्य व दुर्भेद्य प्रन्धेजा म बग है।

माधारण तया 300 से अधिक दिन हवाई हमने दक्षिण वियतनामी ठिकानो पर किय जाते हैं। वियतनाम के सम्भावित सनिक अडडा अथवा उनसे प्रभावित सन्धिघ इलाका पर बमा नपामा और तोपा के गोत्र बरसाय जाते हैं। लेकिन वियतनाम का सम्भावित क्षेत्र याकि सन्धिघ प्रभाव क्षेत्र का अर्थ है दक्षिण वियतनाम का अभागा काई भी गाँव और उमम रहनवाले निरीह किसान-स्त्री पुरुष बूने-बच्चे और उनकी मुगियाँ भक्ष और घान क खेत-पतिहान।

अमरीकी सना न जनवरी 1967 म सीडर फात नामक एक बडा सया भिधान किया था जिसका उद्देश्य लाहे का त्रिवाण नामक 60 बगमील क क्षेत्र का वियतनाम क लडाका म साफ करना था। 'यूयार टाइम्स' क सवालनाता न 29 जनवरी 1967 क जन म उम बहुचर्चित हमले का वणन इन शब्दा म किया है

पिछन बृहस्पतिवार का आपरशा गीटर फात समाप्त हुआ जिगना उद्देश्य था उम क्षेत्र का तहम-तहम कर डालना जहाँ कि वियतनाम को आराम और पनाह मिलनी है। यह सनिक अभिधान (आपरशन) मगाँव म 30 मील उत्तर पश्चिम म काद 60 बगमील का क्षेत्र है जिस का नाम त्रिवाण कटा जाना है

जिसमें खर के बागान हैं घनी झाड़ियाँ हैं और धान के खेत हैं ।

इस इलाके के सभी गावों को जला डाला गया और फिर बुलडोजरों से उन्हें समतल बना दिया गया । 6,000 लोगों का जिनमें कुछ को छोड़कर प्रायः स्त्रियाँ बच्चे और बूढ़ थे बमबारी का डर दिखाकर स्थानन्तरित शरणार्थी कैंप में भिजवा दिया गया ।

खर के खेतों को जलाकर भस्मसात कर दिया गया है ताकि वियतनाम की हस्तता को खुले में देखा जा सके । जगह-जगह हेलिकाप्टर उतारने के प्लेटफार्म तयार किये गये हैं जहाँ कि जरूरत पड़ने पर तुरंत ही फौजें उतारी जा सकें ।

वियतनाम के गुरिल्ला सैनिकों ने पिछले 20 मालों में इस इलाके में जमीन के भीतरे खाइयाँ खोद रखी थी । (हजारों वियतनाम स्वयंसेवक यहाँ ट्रेनिंग व विश्राम पाते थे ।) उन खाइयों में शत्रु के दस्तावेज पाये गये हैं और खदकों को उड़ा दिया गया है ।

3 709 टन चावल पकड़ा गया है जो कि 10 000 आदमियों को 1 साल तक खिलाने के लिए पर्याप्त है । 9 000 पौण्ड नमक भी हाथ लगा है और 720 शत्रु मार गये हैं ।

प्रेक्षकों का विचार है कि विमानों से रासायनिक छिन्नकाव करके—जो कि चुपचाप असें से चलता रहा है—एक ओर जनसम्पत्तों को साफ किया जा रहा है दूसरी ओर 'सीडर फाल' की स्कोचड अथ वारवार्ड अपनाकर अमरीका ने एक युद्धनीति अपनायी है जिसका उद्देश्य है कि वियतनाम को देहाता की महायत्ना में सक्षित करने के लिए देहाता को ही मिटा देना ।

एक और अमरीकी पत्रकार ने 24 मार्च, 1967 को दक्षिण वियतनाम के गि जाय दिह' नामक स्थान से अमरीकी सैनिक वारवार्डों का आखानेखा बणन करते हुए लिखा

—एक वियतनामी ग्रामीण महिला ने बाहुओं में रात बालक की उपेक्षा की और अमरीकी सैनिकों की ओर उग्र नोध से घूरा । सैनिक बहूना से उसकी बतखा और मुर्गिया का गोलिया से मार रहे थे । दूसरे सैनिक ने उसकी भसा को और घर के पालतू कुत्त का गालिया दाग दी ।

उसके पति पिता और जवान लडके को पकड़कर ले गये और सब सामान सहित घर के छप्पर को आग लगा दी गई । आग की ज्वाला में लीज लिया सब कुछ—पितरों व श्राद्ध का पूजास्थल भी ।

अमरीकी सैनिकों को हुकम मिला हर चीज को मिटा दो जिसका वियतनाम इस्तेमाल में ला सकता है ।

—वियतनाम के लिए कुछ मत छोड़ना—न खाना, न छप्पर । सब नागरिकों

को यहाँ मे हटा दो ताकि वियतकांग को कोई सहायक (स्वयसक्क) न मिल सके ।

—100 बगमील के क्षेत्र को इसी प्रकार साफ कर दिया गया है ।

“अगर कही मेरी पत्नी देख ले जो मैं यहाँ कर रहा हूँ—तो बेहोश हो जायेगी ।’ एक अमरीकी सनिक ने कहा बूडे चार्ली (वियतकांग) को मारना और बात है । पर कुत्ते के पिल्लो और मुर्गी-बत्तखा के बच्चा को मारना—कुछ और । एक दूसर अमरीकी पत्रकार ने सर्गाँव के दौरे पर एक उच्च सनिक अधि कारी से युद्ध स्थिति पर बातचीत करते हुए पूछा “आपके विचार म इम युद्ध का हल क्या हो सकता है ?

उसने बडे उत्सास मन से कहा—आतक, वियतकांग न आतक द्वारा स्थानीय जनता का सहयोग प्राप्त किया है । यदि कम-से-कम उनका विरोध खत्म कर दिया है । हम (अमरीकीया) को उसस भी अधिक दतना आतक फलाना चाहिए कि लागा को इसका एहसास हो जाय कि उनका हित इसी म है कि व हमारा माथ दें । जा भी गाँव भगाँव के प्रति दास्ती का भाव न दशाय उस वमा जीर रावेटा से उडा देना होगा ।

और इम लडार्ड म एक अमरीकी सनिक किसी झोपडे को इमलिए जाग लगा देता है कि उमनी निगाह म वह वियतकांग का हेडक्वाटर मा लिखलायी पन्ता है ।

19 सितम्बर 1968

(यूसाक टाइम्स भगजोन)

साग व डाम्म-आ वाजा लाग माई माई-साई 1 2 3-अनगिनती-गाँव और जिन हैं समन्त वियतनाम व जिह अमरीकी जट बमबारा ने गिरा डाला है । सयुरशन बमबारी म वियतनाम क पहाडा को रत म बटल किया गया है और हजारों टन रामायना का विमाना म डिक्कवारर जगला का नष्ट कर लिया गया है । गँडा हाथी भम उमुक्क लगूर व बनमानुप हिरण बघर सब मिटा लिय गय है वियतनाम म । कयाकि रामायण की बानरसना सी अमराकिया का विश्वास था कि वियतकांग जगनी जानबरा का शस्त्र चलान की ट निग द रह है और हाथिया का लगान व काम ला रह हैं । वियतनाम का उपजाऊ भूमि बजड हा गयो है जीर ही टूट हूण हवाई जहाज व टुकड ध्वस्त टन मनुष्या और पशुआ व अनगिनती कवान चारा आर जहाँ-नहीं विग्रर पड हैं । भूकत हूण पागन कुत्त जीर बीपर व छाती तिन और काजाफाना की गानी बानना म भर हैं लाग्या कराडा गडडे—जिहें अमरीका क बमान अनापाम छा टाना है वियतनाम की धरती का चारकर ।

अमानवीयता क्रूरता और हत्यहीनता का जानम ताण्व अमरीका ।

वियतनाम म किया है उमका पूरा लेखा तो किसी भी मानव की लेखनी की शक्ति स पर है किन्तु अमरीका का एक सम्पादकीय इस युद्ध व अनेक पक्षा पर बड़ी सजीदगी से प्रकाश डालने म ममथ हुआ है और हम उसे यहाँ उद्धृत करत हैं —

‘सम्पादकीय और सम्पादक के नाम पत्र। सम्पादकीय अमरीकी युद्ध के मैदान म वियतनाम युद्ध पर आज तक लिखे हमारे सम्पादकिया स कहीं अधिः प्रभावपूर्ण और शब्द चित्र खीचन म समय सम्पादक के नाम आया एक पत्र है जिसे आज हम इस पृष्ठ पर छाप रहे हैं। हमार नगर व एक नौजवान की प्रतिक्रिया जिमने अपने देश की सेवा के लिए सनिक बर्दी पहनी—।

हत्या व विनाश का जो साहारिक चक्र चलाने का सनिक आदेश उभे मिला उससे उसकी अन्तरात्मा म विक्षोभ और वेदना भडक उठी है। यह एक पिता की भी चिट्ठी है जो एक ओर अपनी राष्ट्रभक्ति और दूसरी ओर प्राध म बँटा है कि उसक जवान बडके को ऐसे घिनौन वृत्य म डाला गया है।

और एक 16 वर्षीय बहन जिसे विश्वास नहीं होता कि उसी का बडा भाई निरीह निश्शस्त्र लोग का क्लेआम कर रहा होगा। इसी तरह सयुक्त राज्य अमरीका शप दुनिया को रक्षा कर रहा है? यह पत्र पडिय—और आसू बहाइय।

श्री सम्पादक जी

वियतनाम से हाल ही म मुझे एक पत्र मिला है जिसके कुछ निम्न अंश आपका भेज रहा हूँ —

मेरा बेटा सेना म भर्ती हुआ था और उसने वियतनाम भेजे जाने की स्वय भाग की थी। वह हमारी सरकार की वियतनाम नीति का बडा समर्थक था—कम-से-कम स्वदेश छोडने तक पिछल नवम्बर म। मेरा विश्वास है कि जो कुछ उसने यहाँ लिखा है उसमे आपको और आपके पाठका का रचि हांगी

प्रिय माताजी और पिताजी

आज हम एक मिशन पर गय और मैं लज्जित हूँ स्वय पर अपन मित्रा पर और अपन दश पर। हम जा भी वापडी लिखाई दी उमका जाग लगा दी।

वहा देहाती गाँवा का एक जमघट-सा था और लोग जापका विश्वास न आयगा कि कितन गरीब थे। हमारी टुकडी ने उनको जा कुछ भी थोडी-सी चीजें था उनको लूग और आग लगा दी। मैं सारी स्थिति का विस्तार स समझाने की कोशिश करूगा।

कुछ बुढ़तुगया और लपका मेरे साथी की ओर और खटक की जोर। एक दूसरे साथी न पूरी स्थिति को न समझते हुए फुटवाल की तडगो लगाकर बूटे को रोक लिया और उधर साथी न खटक म हथगाला फेंक दिया। (पिन खींचने क बाद हथगोले के फटने म कोई चार सेकिण्ड का अंतर होता है।)

उसन जब हथगाला फेंका और (इन चार सेकिण्ड के अंतर म) हम सुरक्षा के लिए दौड़े खटक मे हम एक बच्चे की चीख सुनाई दी। लेकिन तब हम कुछ भी नहीं कर सकत थे। गाला फट चुकन के बाद हम खटक म पड़े मिले एक माता, दो बच्चे (आयु करीब 6 आर 12 एक लडका एक लडकी) और एक नवजात शिशु। तो वह बूढा आदमी यही हम बताने की काशिश कर रहा था। खन्दक छोटी और तग थी। वे सब लाशें जापस म सटी पडी थी। हम तीना न उन लाशा का ऊपर चापडे के फश पर खीच लिया।

दृश्य बडा बीमत्स था। बच्चा के कोमल शरीर चिथडा चिथडा हा गये थ और क्षत विक्षत होने से पहचाने नहीं जा सकत थे। हमने (अमरी कियो न) एक-दूसरे की ओर देखा और झापडे को आग लगा दी।

वह बूढा आदमी पागला की तरह बुढ़बुढा रहा था अपन जलत झापडे के पास माना कि उसे विश्वास नहीं हा कि एक पल म उसका सबस्व सुट चुका है। हमने उस वही खडा छोड दिया और आग बढ गये।

मेरी अंतिम दृष्टि थी एक वृत्त एक बूढा आदमी, फट मैले कपडो म लिपटा जलते हुए छप्पर क सामने भगवान बुद्ध की प्राथना म घुटन टेके। उसक चादी-से सफेद बाल हवा क झाके म इधर-उधर उड रहे थ और उसके झुरीदार गालो पर आसुआ की धाराएँ आगे वह रही थी।

हम चलत रहे, फिर आगे जाकर हम तीना (सैनिक) अलग-अलग हो गय। सामने कुछ दूरी पर एक झापडी दिखाई गी। मेरी टुकडी के कप्तान ने मुझे आडर दिया कि 'जाआ उसको नष्ट कर दो। एक अघेड सा आदमी झापडे से बाहर निकला।

मैंन सावधाना स जाच-पडताल की कि कोई आदमी ता उसके भीतर नहीं है। फिर मैंन अपनी माचिस निकाली। वह अघेड मर पास जाया और हाथ जाडकर बिनती करने लगा। वह हाथ जोडे बराबर मर चुकाता था।

वह कितना दु खी था उसका अनुमान नहीं लगाया जा सकता। वह

वाला कुछ नहीं। बग मर भुत्कर बिननी करता रहा कि उमरा छपर न जलाऊँ। हम दाना थ वहाँ उस जगह अगन। और, पिताजी, वह आपकी ही उमर का रहा होगा। मैं शिक्षकत हुए झापड को माचिस दिग्या दी और भारी बदमा स अपनी टुकडी म लौट आया।

पिताजी मैं उसकी ओर मुँह उठाकर नहीं दग्य पा रहा था। फिर ना मैंने मुँह फरकर देग्या। बाण कि मैं दहान मारकर रा पाता लकिन अग मैं रा भी नहीं सबता।

मैंने अपनी रायफन फेंक दी और जलती झापडी की ओर लपका। और मैंने वह सब कुछ बचान की बाशिश की जो कुछ बचा सजता था— फूस को घघवती जाग स बचाया घान का सामान कपड वगरह।

बाद म उस जघेड न मरा हाथ अपन हाथ म धाम लिया और सिर झुकाकर मरे हाथ म बार-बार अपन मस्तक को छता रहा।

जब हमारे गाव (कम्प)की ओर मशीनगनें चल रही हैं। और जबकि मैं यह लिख रहा हूँ हम पर हमला हो रहा है। मुय अवश्य जाना चाहिए।

जगले न्ति अब सब कुछ शांत है। वह कोई घास हमला न था। मामूनी-सी गोलाबारी। लकिन फिर भी मुझे देर रात ड्यूटी पर जागना पडा। खर, पिताजी आप जानना चाहते थे कि यहाँ (वियतनाम) म कसा लगता है। जब आपकी यहा की स्थिति का कुछ अनुमान होगा।

मेरा लेख ठीक नहीं बन पडा। क्षमा करना। मैं कुछ भावुक अधिक हा उठा था और शायद कुछ सहम भी गया था।

आपका बेटा

यूयाक टाइम्स 18 अगस्त, 1967

हमने उम गाव क हर मकान को जला डाला है। वियतनाम याद रहेगा एम उनके यहा आन से डरत नहीं।

लेफ्टिनेण्ट विलयम बिशप आयु 26 वष शिकागो निवासी न कहा हमन 14 टन चावल नष्ट कर दिया। 53 मकान जला डाल और 14 सुरंग कर दा 6 नौकाएँ डुबो दी।

इस लेफ्टिनेण्ट ने कहा।

दक्षिण वियतनाम के राष्ट्रीय सभ्राम के सेनानिया के सषटन वियतनाम को करन के लिए जहा जमरीकिया ने वियतनाम की जन-जाति वन सम्पदा प्राकृतिक व साम्कृतिक वातावरण को ही समाप्त कर डालन की क्रूर नीति

✦ वियतनाम का स्वातन्त्र्य-सघष

अपनायी ह वहाँ अपनी जनता और अपन देश को भयंकर विनाश स बचाने क लिए वियतनाम ने एक नयी नीति का सहारा लिया है और वह है ठहरो मत । शत्रु के ठिकाना पर हमला बातो । उसे मिटा दा, और अदशय हो जाओ । क्योंकि एक जगह जमे रहन का मतलब है बमबारी स मिटा दिया जाना और वियतनाम के पाम न वायुसेना है और न ही जलसेना ।

फरवरी 1968 के टेट प्रयाक्रमण के अंत म दक्षिण वियतनाम के दो तिहाई भाग पर मुक्ति मोरचे का अधिकार हो चुका था । किंतु उसके बाद अमरीकिया द्वारा अपने क्षेत्रा को विनाश स बचाने के उद्देश्य स उहान उह खासी कर दिया । लेकिन वियतनाम की जड़ें बहुत गहरी हैं । वे जनता क हैं जनता के लिए है और जनता म है । इसीलिए उनका भूमिगत शासन बराबर स्र्त्रिय है और वे जब चाह तब अमरीकी ठिकाना पर हमले कर सकते है । नूरेम्बग अंतर्राष्ट्रीय सनिक याय सविधान जिमके अतगत अमन और जापान क सनिक अधिकारिया को उनकी अनुपस्थिति और उनक विना जान भी उनके आधीन सनिका द्वारा किये गये अपराधा क लिए दोषी ठहराकर प्राणदण्ड दिया गया था उसी याय सविधान म क कहा गया है

“—नागरिका क साथ दुःखवहार—युद्धबिद्या के साथ दुष्यवहार पीडा दना किचा उनकी हत्या—गावा कस्वा और नगरा का मनचाहा विध्वंस करना—किमी नागरिक क साथ अमानवीय व्यवहार—को अंतर्राष्ट्रीय सनिक यायानय म युद्धकालीन अपराध माना जायगा ।

लेकिन इतने अधिक प्रमाणा के प्रकाशित होन क बावजूद जबकि दुनिया हर काने म लोगा न माइ लार्ड क सचित्र प्रमाण देखे हैं—एक भी अमरीकी सनिक या कमाण्डर को निश्चस्त्र निरीह न नागरिकों की हत्या दुष्यवहार याकि उनके ज्ञान मान्य का आग लगाने क दोष मे सजा नहीं दी गई । इसी स्थिति पर यूयाक टाइम्स क एक सम्पाकाय न कहा

माई लार्ड क हयाकाण्ड म—जिहाने भाग लिया उनम स कुछ थोडे ही—केवल 13 सनिका और आफिमरा क विरुद्ध शुरू मे कारवाई की गयी थी । उनमे स भी केवल रेफटिनेट कली को दापी माना गया और जब स्वय प्रेसिडण्ट (निकसन) क हस्तक्षेप म उसकी सजा का भी घटाकर मात्र 20 साल के (साधारण) कारावास म बदन दिया गया है ।

(याय के इस नाटक स) सना विभाग या उसक सर्वोच्च सनापति (प्रेसिडेण्ट) का मान नहीं बढ़ता । बल्कि इसम एक बार फिर अमरीका क झरादा क प्रति सदह उठता हे कि कहां तक अमरीका अंतर्राष्ट्रीय युद्ध नियमा का पालन करने को तयार है । एक जोर तो रेफटिनेट कमाण्डर एथानी हवट की वियतनाम म निरीह लोगा पर सनिका द्वारा जाय दिन

किये जा रहे अत्याचारा को रद्दवाने के अधिकारिक प्रयत्न करने के लिए वियतनाम से हटाकर रिटायर्ड किया जा रहा है और दूसरी ओर दापिया का बरी किया जा रहा है।

पूयाक टाइम्स, शुक्रवार, 24 सितम्बर, 1971

लगता ऐसा है जिस देश की जनता स्वयं ही अशांत हो उससे यह आशा कैसे की जा सकती है कि वह किसी दूसरे के साथ शांति से रह सकेगी। आज अमरीका स्वयं ही भीतर भीतर सुलग रहा है। यदि उसकी राष्ट्रीय हिंसक प्रवृत्तियों को वियतनाम और कम्बोडिया व लाओस सरीखा विकास न मिल तो सम्भव है कि वे स्वयं अमरीकी समाज को ही मिटा दें।

लेकिन वियतनाम हिंद चीन और एशिया के लिए हमारे लिए सवाल अमरीका के पतन और विनाश का नहीं बल्कि दक्षिण-पूर्वी एशिया के विकास और सुरक्षा का है।

अमरीकियो, अमरीकियो ! तुम्हें वियतनाम में क्या हो गया है ! ! !

• •

अमरीकी साम्राज्यवाद का

अन्तिम पड़ाव

(1964-1972)

पेरिस में शान्ति-सम्मेलन

प्रथम अप्रैल 1968 को प्रेसिडेंट जॉनसन द्वारा यह घोषणा कि वियतनाम के वाद विषय उत्तरी वियतनाम पर बमबारी को रोकने का हुक्म द चुका है—उत्तरी वियतनाम ने परिम में शान्ति वार्ताओं में भाग लेना स्वीकार किया। अब तक राष्ट्रपति हॉकी सरकार का यही कहना था कि जब तक उनके देश पर हवाई हमलें चालू हैं व हमलावरों में किसी प्रकार के समझौते की बातचीत नहीं कर सकते।

मई में पेरिस में शान्ति-सम्मेलन का सिलसिला शुरू हुआ। कई सप्ताह तक तो सम्मेलन में भाग लेनेवाले पक्षा और टेबल के आकर प्रकार पर ही बहस होती रही क्योंकि एक ओर अमरीका केवल उत्तरी वियतनाम को प्रतिद्वंद्वी मानने को तयार था जबकि उत्तरी वियतनाम सगाव में अमरीकी समर्थित शासन को दक्षिण वियतनाम का प्रतिनिधि न मानकर केवल अमरीका से ही बातचीत करना चाहता था। लम्बी वार्ताओं के बाद यह समझौता हुआ कि मुख्य रूप में केवल दो ही पक्ष रहेंगे अमरीका और वियतनाम (उत्तरी)। लेकिन टेबल के अमरीकी पक्ष की ओर अमरीका और दक्षिण वियतनाम (सगाव) के प्रतिनिधि बैठेंगे।

दूसरी ओर वियतनाम और नेशनल लिबरेशन फ्रंट के प्रतिनिधि दक्षिण वियतनाम की राष्ट्रीय अस्थायी सरकार के रूप में भाग लेंगे। आधिकारिक रूप में अमरीका ने केवल सगाव के शासन का मान्यता दी जबकि उत्तरी वियतनाम ने केवल मुक्ति मारचे को ही दक्षिण का सच्चा प्रतिनिधि माना। 1968-72 के बीच पेरिस में शान्ति का विवाद चलता रहा। उधर जानमन न उनकी वियतनाम युद्ध

नीति का देश विशेष म प्रबल विरोध होने के कारण फिर से चुनाव म न खड़े होने का निश्चय किया और रिचर्ड निक्सन 1969 मे अमरीका क प्रेसिडेंट चुने गये । कोई 50 000 से अधिक अमरीकी वियतनाम म मारे जा चुके थे और 2 00 000 से अधिक हताहत हुए । हजारो नापता थे याकि युद्धबंदी बन चुके थे ।

उत्तरी वियतनाम की विमानभदी तोपो ने 6 000 से अधिक अमरीकी जेट मार गिराये थे और सत्रहो अमरीकी हवावाज उसके कब्जे म आ चुके थे । दक्षिण वियतनाम म भी लगभग 4 000 हेलिकाप्टरो को मुक्ति मोरचे के सैनिको ने नष्ट कर डाला था । फनस्वरूप अमरीका मे रोष और विश्वाभ बढ़ता जा रहा था और उत्तरी वियतनाम म बंद हवाबाजो की पत्निया न अमरीका म आदालन शुरू किया कि किमी भी प्रकार उनके पतिया को वापस लाया जाव । उत्तरी वियतनाम ने मानवीय भावना का परिचय देकर कुछ बंदियो का रिहा भी किया और अमरीकी शांतिवादी कार्यकर्ताओ के हाथो युद्धबंदिया की पत्नियो को सदेश के पत्र भिजवाये । साथ ही उत्तरी वियतनाम ने कुछ एस भी मुझावो का स्वागत किया कि यदि निक्सन वियतनाम से अमरीकी फौजा को पूरी तरह हटा लेने की तारीख निश्चित कर द तो वे अमरीकी बंदियो का रिहा कर देंगे । लेकिन वाशिंगटन सरकार ने ऐमा न करक मनिको को धीरे धीरे हटा लेन की घोषणा की । और युद्ध कारवाइया के वियतनामीकरण की नीति अपनायी । इसक अंतगत सगाव शासन द्वारा 10 00,000 गरीब दक्षिण वियतनामी नागरिका का जबरनस्ती मेना मे भरती करक अमरीकी फौजिया क स्थान पर लडाई का भार सँभालन को विवश किया गया ।

एक ओर अमरीकी सैनिको की सख्या घटान की घोषणा की जान लगी ता दूसरी ओर—कम्बोडिया लाओस और दक्षिण उत्तर वियतनाम म अमरीकी हवाई हमलो की सख्या 12 000 प्रति माह से उठकर औसतन 25 000 प्रति माह कर दी गयी । अमरीकी सैनिक मशीनरी जब दक्षिण वियतनाम से लाओस और कम्बोडिया म भी सक्रिय हो गयी ।

फरवरी 1971 के पहले सप्ताह प्रेसिडेंट निक्सन क जादेश पर 30 000 से अधिक अमरीकी व सगाव क मनिको ने टका और जेट बमबारा और हेलिकाप्टरो की सहायता से लाओस के दक्षिणी भाग पर आक्रमण किया । राष्ट्र सभ के महा मन्त्री श्री ऊया त न कहा इस हमले से 1962 म हुए जेनेवा समझौते का उल्लंघन हुआ है । और रूस फ्रांस भारत व चीन ने इसकी भनना की । लेकिन निक्सन अप्रैल 1970 म कम्बोडिया पर भी ऐमा ही एक हमला कर चुके थे और अब संप्रबुद्ध हिन्द चीन म अमरीका की देखरेख म इन दशा क अल्पसंख्यक संप्रदाय व जातिया के लोगो तथा भ्रष्ट एवं स्वार्थी अधिकाारिया के बडे सैनिक संगठन तयार किय जान लग । पिछन 3 साला म लाखो लोगो को अमरीकी रसद गाला

वामन नय शस्त्रास्त्रा की ट्रेनिंग देकर उन्हें मनोयुद्ध के तरीका में साम्यवाद विरोधी प्रवृत्तियाँ और भावनाओं से भरा जा रहा है।

अप्रैल, 1970 के बाद में निक्सन की वियतनामीकरण नीति के अधीन दक्षिणी वियतनाम में 10,00,000 सैनिक तैयार किये जा रहे हैं।

कम्बोडिया में 5 00 000

लाओस में 5 00 000

गरीब दशा में सामाजिक व आर्थिक 'यथास्थिति' का बनाये रखने और अमरीकी आर्थिक व सैनिक हितों को बनाये रखने के लिए इतनी बनी-बड़ी सेनाओं का भार लाद देने का अर्थ होगा कि वे देश पुराने तरह अमरीकी सैनिक सहायता पर आधारित हो जायेंगे। उनका आर्थिक व औद्योगिक विकास नहीं हो पायगा और नये अर्थ तक वे अमरीकी पूँजीवादी व्यवस्था के पुर्जे मात्र बने रहेंगे।

1968-72 तक जबकि अमरीका पेरिस की शान्तिवार्ताओं में भाग लेते रहने का नाटक करता रहा उसने युद्ध विराम का लाभ उठाकर हिन्दू चीन के क्षेत्रों में और अधिक सैनिक तैयारियाँ की और मी० आई० ए० की सहायता से इस बात को पूरा करने के लिए कि कम्बोडिया और लाओस की तटस्थतावादी शासकों का पलटकर अमरीकी समर्थक सरकारें स्थापित की जायें। फिर जब उनकी सनाएँ अमरीकी सनाहकारों के अधीन बड़े-बड़े शस्त्रास्त्रों से लैस हो चुके तब अमरीकी पेरिस में वियतनाम से सनाएँ हटा ले जाना को तैयार हो जायेंगे। इसी बीच सैनिक दृष्टि से पूरे हिन्दू चीन और दक्षिणपूर्व एशिया में उसने हवाई अड्डों का जाल बिछा चुका होगा। इस प्रकार पेरिस की शान्तिवार्ता अमरीका को सैनिक तैयारियाँ के लिए समय पाने की चाल सिद्ध हुई।

लेकिन उत्तरी वियतनाम और दक्षिण वियतनाम के राष्ट्रीय मुक्ति मारचों का इन चालों का पता था। उन्होंने अपने राष्ट्रनिर्माण और सैनिक तैयारियों में कमी न आने दी। साथ ही साथ लाओस और कम्बोडिया में भी उन देशों के मुक्ति मारचों में श्रेयभक्ता और वामपंथी तत्त्वों के समुक्त मारचों द्वारा अमरीकी हत्या और याजनाओं को विफल करने की काशिशें कीं। मुठभेड़ें चलती रही और अमरीका के खुले और गुप्त हवाई हमले व सैनिक कारवाइयाँ भी होती रहीं।

पिछले 20 वर्षों में युद्धरत होकर भी उत्तरी वियतनाम में एक स्वतंत्र राष्ट्रीय प्रगतिशील समाजवादी शासकीय व्यवस्था में जो चमत्कारी सामाजिक आर्थिक और औद्योगिक विकास दिखाया वह भी स्वयं में एक अजूबी मिसाल है। और इसका प्रभाव पडासी राष्ट्रों के जीवन पर पड़े गिना नहीं रहे सकता था। दक्षिणपूर्व एशिया में एक मात्र आधुनिक रूपांतर का कारखाना उत्तरी वियतनाम में चीन की सहायता से बनाया गया था। गाव-गाँव और शहर-कस्बों में स्कूल और चिकित्सा की सुविधाएँ मूढैय्या की जा चुकी थीं। कृषि और भूमि में सुधार किये

गय। नय-नय उद्योग धंधे मैडिकल एजिज और नय राष्ट्र की नयी पीढ़ी तयार हो चुकी थी जिसका मौं ती पुट्टी म युद्ध और गणप का पाठ पडा था। दक्षिण वियतनाम जा 1954 स अमरीका उपनिवेशवादी, मन नीतिमा व नीच पिस रहा था, उत्तर वियतनाम की तुलना म पिछड चुका था। जा लोग कभी प्रांतीयी सेनाभा म ऊंचे पदा पर थ व अब अमरीकी शासन म दक्षिण वियतनाम राय व प्रेमिडण्ट वाइम प्रसिडण्ट और उच्चाधिकारी व नेता थ जिनक प्रति दश की जनता का थ थदा थी थ विश्वास। बुद्धिजीविया और दशभक्ता को हजारों की सख्या म जला म तजरद दिया जा चुका था। शांति युद्ध विराम ममनीना या 'तटस्थता' की बात बरना दक्षिण वियतनाम म 'कम्युनिस्ट' हान का लक्षण थ और इसीलिए दशद्रोह माना गया।

स्कूल और जस्पताना व स्थान पर दक्षिण वियतनाम म खाल गय नजरवानी कम्प शरणार्थी वस्तियां जोर लाया पोजिया व लिए वेस्मालय। हारा गरीब जपग सडका पर लाटने लग जसकि च्ठ अमीरा के लडके अनिवाय सतिव भर्ती वानून स बचकर किसी ऊंच सरकारी पद पर या फिर परिम 'यूयाक' म उच्च शिक्षा पान निवत्त गय। सगांव के वायस प्रसिडण्ट थी ने एक प्रेस सवाददाता सम्मेलन म कहा था

मेर धका म पसा प्रहृत जमा हो चुका थ। मैं वियानाम होकर जा सकता हूँ। लेकिन अगर अमरीका हमसे अपना काम बरवाना चाहता है तो उमे उसकी कीमत तो नेनी ही पडेगी।

और सगांव का शासन उपर स नीचे तक भरा गया है भ्रष्ट सनिव जफसरास जिनके प्रति दक्षिण वियतनाम के लोग के मन म नफरत है घणा है भय है जोर अबिश्वास भरा हुआ है। सनटर फुनराइट ने इसी स्थिति पर बोलत हुए कहा था कि

राष्ट्रीय मुक्ति मारचे की भांग उचित है कि वे सगांव म हमारे बठ पुतली अफसरा से किसी तरह की बातचीत नहीं करना चाहत। सगांव का शासन हमारी (अमरीका की) सहायता के बिना छ घण्टे से अधिक नहीं टिक सकता।

अमरीका के राजनीतिक सम्बन्धा के सुप्रसिद्ध वाक्याकार श्री जेम्स रस्टिन ने भी इस स्थिति पर टिप्पणी करत हुए लिखा था

हमारा हाथ बढा था एक बधानिक सरकार की रक्षा के लिए। लेकिन सगांव न ता बधानिक है न वही कान् 'सरकार' है। हमन बचन

दिया था दक्षिण वियतनाम की महायता का, उस मिटा देने का नहीं ।'

यूपाक टाइम्स

18 मई 1966

निकसन की वियतनामीकरण नीति

अमरीकी शासका को इस बात का एहसास है कि उनकी सेनाओं के हटते ही इस क्षेत्र के लोग भी उत्तरी वियतनाम का ही अनुसरण करना चाहेंगे और पनस्वरूप यथास्थिति कायम नहीं रह सकेगी। फलस्वरूप अमरीकी हिता का राष्ट्रीयकरण होगा और अमरीकी माल के बाजार घटने में जायेंगे। उत्तरी वियतनाम की विकासो-मुखी आर्थिक व्यवस्था तजी से पनपेगी और कुछ ही सालों में पूरे दक्षिण-पूर्व एशिया की मण्डिया में अमरीकी माल की तुलना में सस्ता और अच्छा उत्तरी वियतनाम में बना सामान बिकने लगेगा। वर्तमान में दक्षिण-पूर्व एशिया के देशों में उनकी आवश्यकता का 85% प्रतिशत से अधिक लोहा, टीन व मशीनों का निर्यात जापान, अमरीका तथा पश्चिमी पूँजीपति देशों से होता है। अमरीकी मनीषा के हट जाने के बाद इन पूँजीवादी देशों को उत्तरी वियतनाम और चीन से भी प्रतियोगिता करनी पड़ सकती है। और इसीलिए उत्तरी वियतनाम पर ऐसी भयानक वमवारी का लक्ष्य है—उनकी तेजी से बढ़ती हुई औद्योगिक शक्ति को तहस-नहस कर डालना।

सन 1965-1966 में उत्तरी वियतनाम के बड़े-बड़े कारखानों और वििल्डिंगों को नष्ट कर डाला गया था और एकमात्र आधुनिक इस्पात के कारखानों का भी वमों से उड़ा दिया गया था। 1968 में वमवारी के रक जाने के बाद 23 सालों में ही उनका पुनर्निर्माण हो चुका था। मई 1972 में निकसन के आदेश पर उनको दुबारा नष्ट कर दिया गया है।

वियतनाम अभी भी एक कृषि प्रधान देश है और उसके पूरे के पूरे सैनिक सुरक्षा के शास्त्रास्त्र चीन, सोवियत संघ तथा अन्य साम्यवादी देशों से आते हैं। ऐसी स्थिति में उसके एकमात्र इस्पात के कारखानों का नष्ट करने का उद्देश्य—स्पष्ट ही सामरिक नहीं है। बल्कि उत्तरी वियतनाम की औद्योगिक क्षमता को मिटाना है।

1972 के शुरू में भी उत्तरी वियतनाम पर घोषित-अघोषित हवाई हमले चलते रहे। और जब-जब परिणाम वियतनाम प्रतिनिधियों ने इसका विरोध किया तो वार्शिंगटन ने उनका प्राटेक्टिव एक्शन अर्थात् 'सम्भावित हमले से पहले ही सुरक्षात्मक कार्रवाही' बताया। 1970-1972 के बीच निकसन की 'वियतनामीकरण नीति' के अन्तर्गत सैंगैप के फौजिया का लकर अमरीकी कमाण्डरों ने

गय। नय-नय उद्योग धंधे मैडिकल वनिज और 75 राष्ट्र की नयी पीढ़ी तयार हो चुकी थी जिनमें माँ की छुट्टी में युद्ध और गणप का गाठ पड़ा था। दक्षिण वियतनाम जो 1954 में अमरीकी उपनिवेशवादी दमन नीतियाँ व नीचे पिग रहा था उत्तर वियतनाम की तुलना में पिछड़ा चुका था। जो लोग अभी प्रांसीसी सनाजाम ऊँचे पदा पर थे अब अमरीकी शासन में दक्षिण वियतनाम राज्य व प्रसिडेंट वाइन प्रसिडेंट और उच्चाधिकारी व नेता थे जिनके प्रति देश की जनता को न श्रद्धा थी न विश्वास। बुद्धिजीवियाँ और दशभक्ता को हजारों की संख्या में जला में नजरबंद किया जा चुका था। शांति युद्ध विराम गमग्रीना या तटस्थता की बात करना दक्षिण वियतनाम में 'कम्युनिस्ट हान का लक्षण है और इसीलिए देशद्रोह माना गया।

स्कूल और अस्पतालों के स्थान पर दक्षिण वियतनाम में खोल गये नजरबंदी कम्प शरणार्थी वस्त्रियाँ और नाया पीजिया व निरा वेश्यालय। हानारा गरीब अपग सड़का पर लाटने लग ज़रूरी चीजें खमीरा व लडके जनिवाय सनिज भर्ती कानून से बचकर किसी ऊँचे सरकारी पद पर या फिर परिम 'यूयाक' में उच्च शिक्षा पाने निकल गये। सगाव व वायस प्रेसिडेंट थी न एक प्रेस सवादात्मता सम्मेलन में कहा था

मेरे वक्ता में पसा बहुत जमा हो चुका है। मैं वियतनाम छाड़कर जा सकता हूँ। लेकिन अगर अमरीका हमसे अपना काम करवाना चाहता है तो उसे उसकी कीमत तो देनी ही पड़ेगी।

और सगाव का शासन ऊपर से नीचे तक भरा गया है भ्रष्ट सनिज अपसरास जिनके प्रति दक्षिण वियतनाम के लोगो के मन में नफरत है घणा है भय है और अविश्वास भरा हुआ है। सनटर फुलब्राउट ने इसी स्थिति पर बोलते हुए कहा था कि

राष्ट्रीय मुक्ति मोरचे की मांग उचित है कि वे सगाव में हमारे कठ पुतली अफमरो से किसी तरह की बातचीत नहीं करना चाहते। सगाव का शासन हमारी (अमरीका की) सहायता के बिना छ घण्टे से अधिक नहीं टिक सकता।

अमरीका के राजनीतिक सम्बन्धों के मुप्रसिद्ध व्याख्याकार श्री जेम्स रस्टिन ने भी इस स्थिति पर टिप्पणी करते हुए लिखा था

हमारा हाथ बड़ा था एक वधानिक सरकार की रक्षा के लिए। लेकिन सगाव न तो वधानिक है न वहाकोई सरकार है। हमने वचन

निकमन की वियतनामीकरण नीति

अमरीकी शासकों को इस बात का एहसास है कि उनकी सनाआ के हटते ही इस क्षेत्र के लोग भी उत्तरी वियतनाम का ही अनुसरण करना चाहेंगे और फनस्वरूप यथास्थिति कायम नहीं रह सकेगी। फलस्वरूप अमरीकी हिता का राष्ट्रीयकरण होगा और अमरीकी माल के बाजार खम हा जायेंगे। उत्तरी वियतनाम की विकासो-मुखी आर्थिक व्यवस्था तजी से बनपगी और कुछ ही सालों में पूर दक्षिण-पूर्व एशिया की मण्डिया म अमरीकी माल की तुलना म सस्ता और अच्छा उत्तरी वियतनाम म बना सामान विकने लगगा। वतमान म दक्षिण-पूर्व एशिया के देश म उनकी आवश्यकता का 85% प्रतिशत में अधिक लोहा टिन व मशीनों का निर्यात जापान अमरीका तथा पश्चिमी पूजोपति देशों से हाता है। अमरीकी मनिफ सत्ता क हट जान व बाद इन पूजोवादी देशों का उत्तरी वियतनाम और चीन से भी प्रतिपागिता करनी पड मक्नी है। और इमीनिफ उत्तरी वियतनाम पर ऐसी भवानक बमबारी का सप्य है—उनकी तजी से बन्नी हूँ औद्योगिक शक्ति का तहम-नहस कर डालना।

सन् 1965-1966 म उत्तरी वियतनाम के बडे-बडे कारखाना और विल्डिंगों को नष्ट कर डाला गया था और एकमात्र आधुनिक इस्पात के कारखान का भी बमा म उडा दिया गया था। 1968 म बमबारी के रक जान के बाद 23 सालों म ही उसका पुनर्निर्माण हा चुका था। मइ 1972 म निकमन के आदेश पर उमको दुबारा नष्ट कर दिया गया है।

वियतनाम अभी भी एक वृषि प्रधानदेश है और उमके पूरे के पूर सनिक सुरक्षा के शम्त्रात्र चीन, सोवियत संघ तथा अन्य साम्यवादी देशों स आत हैं। ऐसी स्थिति म उसके एकमात्र इस्पात के कारखान को नष्ट करने का उद्देश्य—स्पष्ट ही सामरिक नहीं है। बल्कि उत्तरी वियतनाम की औद्योगिक क्षमता को मिटाना है।

1972 के शुरू म भी उत्तरी वियतनाम पर घोषित-अधोषित हवाई हमले चलते रहे। और जब-जब परिम म वियतनाम प्रतिनिधियों ने इसका विरोध किया तो वाशिगटन न उनकी प्राटेक्टिव एक्शन अथात सम्भावित हमले स पहन ही सुरक्षात्मक कायवाही बताया। 1970-1972 के बीच निकमन की 'वियतनामीकरण नीति' क अन्तगत सैगवि के फौजिया को लेकर अमरीकी बमाणरा ने

आठ बार उत्तरी वियतनाम में गुप्त सशस्त्र कारवाइयाँ भी कीं। और 1971 में कम-कम एक बार गुप्त रूप में उत्तरी वियतनाम में घुसकर इन्फैंट्री में अमरीकी सुदृढबलियाँ का निशान लाने का अभियान प्रयत्न किया गया। उम्रगत जब अमरीकी विशेष सैनिक दस्त हेलिकॉप्टरों में राबर्ट छाड़ते हुनाई सचबवन 10 मील दूर एक बग्गी कम्प पर उतरते तब उन्हें अपने मिशन की भयङ्कता पर पूरा विश्वास था। तबिन उत्तरी वियतनाम की राष्ट्रीय सुरक्षा सैनिकों की मुस्तदी से उन्हें कामयाबी न मिली। कम्प पूरी तरह घाली था। हम हमने ही तयारी और ट्रेनिंग में कई महीने लग थे और निष्कम का भरोसा था कि व हमें सँ छुड़ाये गये अमरीकी बलियों को अमरीका लाकर अपनी लासप्रियता को बढ़ा पायेंगे।

सर्गाव और वाशिंगटन के अधिनारी कवन इन हमलाकार कारवाइयाँ से ही सतुष्ट न थे बल्कि आय दिन इस बात के जासूस दिग्राई देते लगते कि किसी भी दिन सर्गाव के फौजिया को अमरीकी हवाई मना के साथ में उत्तरी वियतनाम पर चलाई कराने का हुक्म मिल सकता है। ऐसी स्थिति में अप्रैल 1972 को उत्तरी वियतनाम और राष्ट्रीय मुक्ति मारच—वियतनाम की सनाआ का प्रत्याश्रमण कराने का आदेश दिया गया और देखते ही देखते एक लाख क्वाली हूँ और सर्गाव के इन्गिद के जिला का मुक्त करा लिया गया। सर्गाव के फौजिया में भगदड़ मच गयी और हजारों की तादाद में उन्हें हथियार डाल दिये। और कई हजारों ने अमरीकी बलियाँ उतार फेंकी और वियतनाम की राष्ट्रीय सना में जा मिले।

वियतनामीकरण नाति की इस भयानक असफलता पर प्रसिडेण्ट निक्सन ने खीजवर और अधिक विनाशक शक्ति का प्रदान किया। 21 फरवरी 1972 को वे पीकिंग में माआरस तुंग से मिल चुके थे और मई के महीने में अमरीकी प्रसिडेण्ट मास्को में क्रमलिन के नेताओं से मिलने वाले थे। 8-9 मई को उन्होंने उत्तरी वियतनाम के समुद्री तट पर सुरंगें खिड़ी दीं। सारे देश की रेलगाडियाँ पटरियाँ और कच्ची पक्की सड़कें का दिन रात की घमासान बमबारियाँ से उड़ा डालने की काशिशें की गयीं। 21 मई का जब वे मास्को में रूसी नेताओं से मिल रहे थे उस समय उत्तरी वियतनाम पर हजारों टन बम बरसा रहे थे और उसने एक सप्ताह पहले ही सारे वियतनाम की नाकबंदी की जा चुकी थी। और इसी प्रकार निक्सन की पीकिंग यात्रा के दौरान भी उत्तरी वियतनाम को भयङ्कर बमबारी का सामना करना पड़ा था। जून 1972 के प्रथम सप्ताह तक उत्तरी वियतनाम के हस्पताला स्कूलों गिरजाघरों तथा सभी बड़े-बड़े भवनों का ध्वस्त किया जा चुका था। 25 जून 1972 का इस्पात का कारखाना नष्ट करने के बाद 26 जून को अमरीकी फेटम जेट बमबारा ने थार्डरण्ड के अड्डों से उड़ान

भरकर हनोइ के प्रमुख मिजलीघर को उड़ा दिया ।

उत्तरी वियतनाम की रेल यातायात व्यवस्था को तहमनहस कर डाला गया । उसके छाटे-बड़े पुलों को, औद्योगिक केंद्रों को संग्राम की यूनिवर्सिटी और अपगा के हस्पताल का उसके बन्दरगाहों को हाईफांग के बन्दरगाह को हजारों, लाखों टन बमों से उड़ा दिया गया है ।

और अब समाचार आ रहे हैं कि फिर अमरीका न जहरीली गसा के बमों तथा बीमारियाँ को फलानेवाने अस्त्रों के परीक्षण भी वियतनाम में शुरू कर दिये हैं । वाशिंगटन के एक सरकारी प्रवक्ता ने स्वीकार किया है कि पिछले कुछ वर्षों में पेटागान न वियतनाम में जलवायु युद्धात्मक अस्त्रों के भी परीक्षण किये हैं । इन अस्त्रों से जलवायु में सैनिक आवश्यकतानुसार परिवर्तन लाया जा सकता है । अमरीका ने घनी बारिशों और सूखा लाने के लिए हिन्द चीन में अनेक नय-नय अस्त्रों का प्रयोग किया है ।

जून 1972 के दिना में उत्तरी वियतनाम ने कई बार समाचार प्रसारित किये कि अमरीकी विमान बरसाती नदियाँ के बाधा को नष्ट कर रहे हैं जिनसे उत्तर वियतनाम में लाखों लोगों की जान-माल को खतरा पड़ा हुआ गया है । इसके उत्तर में निवमन के विशेष सलाकार हावर्ड यूनिवर्सिटी के भूतपूजक प्राफेसर डा० किंसिंगरन एक प्रेस इण्टरव्यू में इस आरोप को खूँटा बताया और कहा कि अमरीकी केवल सामरिक महत्त्व के ठिकानों पर ही हमले कर रहे हैं । लेकिन हनोई स्थित स्वीडेन के राजदूत ने एक बक्तव्य में अमरीका की कुछ आलोचना करते हुए कहा कि उन्होंने स्वयं अपनी आँखाँ में अमरीकी जेटों को बाधा पर बम व राकेट बरसाने देखा है । अमरीका उत्तरी वियतनाम के आर्थिक व औद्योगिक ठिकानों पर हमले कर रहा है । वास्तव में तो वह उनकी हर चीज का मिटा डाल रहा है ताकि उनका विध्वंस हमेशा के लिए पूरी तरह से कर डाला जाय । लेकिन जहाँ एक ओर उत्तर और दक्षिण वियतनाम पर नाकेबन्दी करके अमरीका हजारों टन बमों में जहरीली गसा और जलवायु अस्त्रों से बस छाटे-स अभाग देश का उजाड़न में लगा रहा—दूरी और पीकिंग और मास्को वाशिंगटन से अपने-अपने मन्व-घ मुधारने की हाड में लग रहे और उत्तरी वियतनाम के सैनिक और दक्षिण वियतनाम के मुक्ति मारचे के सैनिकों को अपने राष्ट्रीय सम्मान की लड़ाई के मारचे में अमरीकी महाशक्ति को चुनौती देने लड़ाई के मैदानों में अकेले डटे रहे हैं—अजय एवं अपराजित ।

टेमोशेटक रिपब्लिक ऑफ वियतनाम तथा दक्षिण की अस्थायी क्रांतिकारी सरकार की सनाथा का समूचे वियतनाम की जनता का समर्थन प्राप्त है । इसी-लिए उनका राष्ट्रीय सैनिक—बराबर संग्राम की ओर बढ़ रहे हैं । हिन्द चीन की जन शक्तियाँ इतनी सज्जन हैं कि वे जब चाहें सगाव, नामपन (कम्बोडिया की

राजधानी) और विप्लव तिआन (लाजाग की राजधानी) को मुकाबला सत्रती हैं। किन्तु मुक्त करा लेने के बाद थार्डलण्ड और 7वें बड़े व विमानवाहक से उड़कर अमरीकी जेट इन सब नगरों को उनका नागरिकों समेत धूल में मिला देंगे। परवरी 1968 में सर्गाव के चोलान भाग को, ह्वे के इतिहासिक नगर को ऐसा ही मिटा दिया गया था। लेकिन हिन्द चीन के एशियाई राष्ट्रीय सैनिकों के पास जल व नभ सना का अभाव है। और इन्हीं कारणों से अमरीकी सनाओं का वियतनाम से घटेडना कठिन सिद्ध हो रहा है। किन्तु जनता का समयन अमरीका के साथ नहीं है—और इसीलिए वह इतना विनाश करके भी वियतनाम को दक्षिण वियतनाम से मिटा नहीं सकता। परन्तु कभी इतिहासकार पूछेंगे कि 1972 में सोवियत संघ के जगो जहाज और वायुसेना के उड़ान वहाँ पर? महा भारत की तरह वियतनाम के देशभक्त अभिमन्यु आज अमरीकी यूख्वार मशीनों से घिरे ता खड़े हैं किन्तु महाभारत के अभिमन्यु की तरह वे दबाय न जा सकेंगे। यह उनके इतिहास और जमीन सहनशीलता के पराक्रम से स्पष्ट है।

साम्प्रदायिक मतान्धता

एक अमरीकी प्रोफेसर ने एक बार इस लक्ष्य से पूछा कि —

अगर उत्तर वियतनाम चाहे/तो शांति तुरंत स्थापित हो सकती है। व ही तो पेरिस में हमारी शर्तों का ठुकराया जात है। जबकि वार्शिंगटन बार-बार समझौते की कोशिशें कर रहा है। क्या आप मचमुच समझते हैं कि अमरीका इस युद्ध को चालू रखना चाहता है। और यही बात एक भारतीय जनसंघी नेता ने इस लेखक से कही थी। उन दिनों वे हमारी लोकसभा के सदस्य थे।

हनाई से अधिक शांति का आतुर कौन हो सकता है? जिसके घर पर चारों ओर से आग बरस रही हो वह शांति नहीं तो और क्या चाहेगा? लेकिन वार्शिंगटन को ऐसी किसी आग का खतरा नहीं और लड़ाई चल रही है उसकी सीमाओं से 10 000 मील दूर और उसकी बड़ी बड़ा कम्पनियों का काम बढ़ रहा है। वियतनाम, हिन्द चीन व दक्षिणपूर्व एशियाई देश अब अमरीका के सैनिक व आर्थिक प्रभाव क्षेत्र बन चके हैं। ता जब तक वार्शिंगटन को प्रत्याक्रमण की आवाज का खतरा न दिखलायी दे उम पेरिस में समझौते की उत्सुकता क्यों होगी? और आज जा कुछ हिन्द चीन में हो रहा है (और जा कुछ ही माल पहले स्पेनगिया में हुआ अप्रति कोई 10 00 000 लोगों का कत्ल हुआ जिन पर कि साम्यवादिता से सहानुभूति रखने का सदेह था) ठीक वही है जिसकी कि याचना अमरीका की नेशनल सिक्यूरिटी कौंसिल ने 1952 में बनायी थी जिसमें कहा गया था कि अमरीका के दक्षिण पूर्व एशिया में आर्थिक व सैनिक हितों की रक्षा के लिए टाकिन पर अधिकार रखना जरूरी है। (अप्रिय 1952 का दस्तावेज पृष्ठ 30)

वियतनाम की जनता न 80 साल मे अधिक और अकेले ही फ्रांसीसी सा ग्रन्थ-
 वात् के खिलाफ लड़ाई लड़ी है। उमके हजारा नौनिहाल इसलिए स्वतंत्रता
 की वेदी पर बलिदान नहीं हुए कि उनका छोटा-मा देश अमरीकी साम्राज्यवाद
 के हवाल कर दिया जाये।

हमार युग की यह एक विशेष धन है कि जब अपन अधिकारा के प्रति सजग
 लोग सघठित हाकर अपनी स्वतंत्रता की मांग करते हैं तब साम्राज्यवाद के
 विरुद्ध गुरिल्ला जन युद्ध ही एकमात्र उपाय रह जाता है क्यकि रूस व अमरीका
 दोना महाशक्तिया एक-दूसर के विराघ्न म सीधी कारवाई नहीं करत और ऐसे
 जनयुद्ध के विरुद्ध दो ही समाधान सम्भव हैं, या ता आक्राता वाम्पक्षिकता
 स्वीकार कर ले कि मारा राष्ट्र उसके खिलाफ है और पीछे हट जाये। और
 शांति और समन्वित स्वीकार कर ले। अथवा सनिक परम्परा की सामरिक
 व्यवस्था को जन-युद्ध व खिलाफ बेकार समझकर अपन 'स्वार्थों' को क्षति पहुचाय
 बिना यदि सम्भव हो तो सारी जनता का ही सीधा और स्पष्ट सफाया कर
 डाल। बोइ और तीसरा हल नहीं है और जब तब वाशिंगटन के स्वार्थों को क्षति
 पहुँचने का कोई अदेशा नहीं तब तक अमरीका शांति की चाहना नहीं करेगा।
 सुप्रसिद्ध दाशनिक सात्र क अनुसार — जबकि अमरीकी सनाए पूरी शक्ति के
 साथ वियतनाम म जम रही हैं भयानक बमबारी और जन-महार बगती जा
 रही है लाओम को अपन अधीन करने की कोशिशें कर रही हैं कम्बोडिया पर
 आक्रमण कर रही हैं—इम बात म कोई सदेह नहीं रह जाता कि—अमरीकी
 सरकार हिंद चीन म नर-सहारे का निश्चय कर चुकी है फिर चाहे वह इस
 तथ्य को झुठलाने का कितना ही स्वांग क्या न रहे।'

अमरीकी सरकार की वियतनाम नीति का आधार उमके आर्थिक व सनिक
 स्वाथ है कि तु उसके पीछे जा बोद्धिक व राजनीतिक समथन उस प्राप्त है उसका
 कारण है अमरीकी जीवन म साम्प्रदायिक मता-धना की अद्विकता। एक बार
 एक अमराकी विश्वविद्यालय म दाशनिक नतिकता पर बोलत हुए इम
 लेखक न कहा था

हर आस्तिक व्यक्ति धर्मात्मा नहीं होता।
 हर धर्मात्मा आस्तिक नहीं होता।
 हर नास्तिक बुरा नहीं होता।
 हर बुरा व्यक्ति नास्तिक नहीं होता।
 और हर कम्युनिष्ट बुरा नहीं होता।
 हर बुरा व्यक्ति कम्युनिस्ट नहीं होता।

मेरे समिनार म कुछ अमरीकी दाशनिक भी उपस्थित थे। उन्हें मर तक

मे तो बार्ड शिष्यायत न थी किन्तु मेरे दो अंतिम उन्हाहरण वाक्या म काफी बठिनाई महसूस हो रही थी ।

इसी प्रकार एक अमरीकी प्रोफेसर ने एक बार मुझे टानकर कहा

“आप धट्टेण्ड रसल की बात करते हैं वह तो नास्तिक हैं।

मानो कि भगवान के अस्तित्व म विश्वास न करनेवाले सत्यपरक विचार करने की क्षमता ही नष्ट कर बैठते हैं। और अमरीकिया को यह बात समझ नहा आती कि बौद्ध और जैन दाशनित्र दष्टि म नास्तिक हैं। और एक नास्त्रि भी मानवाचित कम करने की क्षमता रखता है ।

इसी कारण अमरीका का राष्ट्रीय वाक्य है ।

“भगवान म हम विश्वास करते हैं।” (इन गाड व्ही ट्रस्ट)

जबकि निजी जीवन म अमरीकिया का विश्वास भगवान स अधिक डालर और ब दूको पर है। और वे इसे अपना धार्मिक कतय समझते हैं कि डालर यवस्था के शत्रुआ नो नष्ट कर दिया जाना चाहिए क्पाकि व नास्तिक रम्यु निष्ट है। फिर जिस किसीको भी पेंटागान और सी० आई० ए० अमरीका का णनु मान ले—वही भगवान और अमरीका का दुश्मन बन जाता है। जिसका अर्थ होता है कि भगवान की रक्षा के लिए उसके दत्त पुत्र अमरीका की सुरक्षा तथा अमराका की सुरक्षा का मतलब है—प्रजातन्त्र की रक्षा। और प्रजातन्त्र का अर्थ है डालर को बढावा और क्पाकि अमरीकी राष्ट्र भगवान म विश्वास रखता है अतएव यह उसका धार्मिक कतय है कि वह भगवान के दिय मिशन को पूरा करे अर्थात् सारी पृथ्वी को नास्तिको क षगुल से मुक्त कर दे।

प्रसिडेण्ट जानसन और निक्सन दानो क धार्मिक गुरु है बिली ग्राहम। बिली ग्राहम युद्ध के दिना मे विरोध प्रवचन प्रसारित करके घोषणा करते है कि—

प्रभु यीसू का पुनर्निगम होने वाला है।

तब तक इस पृथ्वी को बचाये रखना हागा। शतान के दूत कहा इस पृथ्वी पर कजा न कर लें इसलिए हमे (अमरीकनो) अपने भयानक राकेट तयार रखने होंगे। वियतनाम मे विजय हमारी होगी। मिस्टर प्रेसिडेण्ट । हम आपको विश्वास दिलाते है कि हम आपके साथ है।

एक रविवासीय प्रा रना सभा म 1966 म इस प्रवचन के समय प्रेसिडेण्ट जानसन उपस्थित थे। और यह मता ध धमप्रचारक प्रेसिडेण्ट निक्सन का घनिष्ठ मित्र व गुरु माना जाता है।

1 मई 1972 को जब प्रेसिडेण्ट निक्सन ने उत्तरी वियतनाम के समुष्ठी तटो पर सुरग विद्या देन और हवाई हमला को बगान का हुक्म दिया उस त्तिन भी उन्हाने प्रजातन्त्र की सुरक्षा और भगवान के नाम की दुहाई दी थी।

इसी प्रकार 1898 में अमरीकी प्रेसिडेंट मैकिनल ने जय ह्वार्ड, पाटोरीओ और समाजा द्वीप-समूहों को हड़पने के बाद फिलीपीन पर आक्रमण किया था तब उन्होंने भी भगवान की दुहाई दी थी और कहा था कि भगवान ने ही अमरीकी सैनिकों का मनोला (फिलीपीन की राजधानी) में विजयी बनाया है। फिलीपीन और वियतनाम में काफी समानताएँ हैं।

जून 23, 1898 में फिलीपीन की जनता ने डा० आगिनाल्डो के नेतृत्व में सबसे प्रथम अपने स्वतन्त्र गणतंत्र की स्थापना की थी। प्रेसिडेंट आगिनाल्डो ने एक राष्ट्रीय मेला का समर्थन करके अमरीका से सैनिकों को स्पेन की उपनिवेशवादी सैनिकों के खिलाफ मदद दी थी क्योंकि उनका विश्वास था कि अमरीका फिलीपीन की आजादी में सहयोग देगा। लेकिन अमरीका ने स्पेन को हराकर फिलीपीन पर अपना जाग्रितत्व जमाया और वहाँ की गुफाओं से गुरिल्ला युद्ध जारी रखा। मार्च 1901 में आगिनाल्डो को घाबरे से पकड़ लिया गया, फिलीपीन गणतंत्र का पतन हुआ। इस युद्ध में 16,000 फिलीपीन लड़ने हुए मरे और 2,00,000 में अधिक अनाथ बच्चे महाभारत के कारण मारे गए। करोड़ों की सम्पत्ति का नाश हुआ।

इसी प्रकार डा० हो ची मिन्ह ने भी द्वितीय महायुद्ध के समय वियतनाम में राष्ट्रीय सत्ता का समर्थन करके जापानियों का हराने में अमरीकियों का साथ दिया था किन्तु युद्ध की समाप्ति पर अमरीका ने अपनी सैन्य शक्ति वियतनाम में स्वतन्त्रता-आन्दोलन के खिलाफ जोड़ दी।

इतिहास इसका साक्ष्य है कि जब कभी समझौते और युद्ध के बीच का सवाल आया, अमरीकी सरकार ने युद्ध चुना। 1898 में स्पेन स्थित अमरीकी राजदूत द्वारा स्पेन ने वाशिंगटन की शर्त मानकर समझौते की अपील की थी। किन्तु प्रेसिडेंट मैकिनले ने उसकी नितान्त उपेक्षा करके कप्तान ड्यूवी को स्पेन पर उपनिवेश पर हमलों का हुकम दिया—जिनमें क्यूबा भी शामिल था। द्वितीय महायुद्ध के अन्तिम चरण में जापानी सरकार ने मास्को द्वारा अमरीका को समझौते की शर्त भिजवायी थी, लेकिन प्रेसिडेंट ट्रूमैन की सरकार ने शक्ति के मद में और एटोमिक विनाश के प्रदर्शनायक, हीरोशिमा और नागासाकी पर आणविक बम गिराये। अब, वियतनाम में भी ठीक ऐसी ही स्थिति है। पिछले 10 वर्षों से वाशिंगटन ने समझौते के और राजनीतिक हल ढूँढने के हर सुझाव का ठुकराकर युद्ध की आग और वियतनाम के विनाश का बढ़ावा दिया है। अमरीका ने इतिहास का यह पाठ नहीं सीखा कि समझौता से नर-संहार और विनाश को भयंकर पीड़ा से मानव-जाति को बचाया जा सकता है।

प्रेसिडेंट ट्रूमैन या किसी भी अमरीकी अधिकारी ने इस बात में इन्कार नहीं किया कि वाशिंगटन ने अन्तर्राष्ट्रीय संधियाँ और कानून की अवहेलना की

है। निक्सन इस बात से भी भली भाँति अवगत हैं कि उनकी वियतनामीकरण की नीति बिलकुल निष्फल रही है। लेकिन 'याप और राजनीतिक हल' के स्थान पर अमरीकी प्रसिडेंट, अब अमरीकी मान रक्षा की दृष्टि से दृष्टे हैं और प्रजातंत्र के पवित्र नाम पर दक्षिण व उत्तर वियतनाम लाओस तथा कम्बोडिया के समाधी आग में झुलस रहे हैं। लगता है कि किसीने निक्सन का पेंटागन के दस्तावेज नहीं दिखाए हैं जिनसे यह सिद्ध होता है कि अमरीका ने वियतनाम जनता की इज्जत में पिलवाड़ किया है। उसी न जनवा-साधिका झुटलाया सोटो का सनिक-सगठन छुड़ा किया। मिशीगन स्टेट यूनिवर्सिटी की जाड में सी० आई० ए० द्वारा शिक्षा सामग्री के नाम पर हथियार भिजवाय और डिपेमें नामक अत्याचारी डिक्टेटर को दक्षिणी वियतनाम पर थापा।

1954 में अमरीकी विदेशमन्त्री डेलस ने कहा था कि व वियतनाम और हिन्द चीन को साम्यवादी प्रभाव में नहीं जाने देंगे और युद्ध के लिए तयार रहेंगे। वियतनामी स्वातन्त्र्य संग्राम के विरुद्ध फ्रांस के सनिक खूब का 80 प्रतिशत खर्च अमरीका उठाता रहा और दीर्घा दीर्घा फू के प्राणण में जय फ्रांसीसिया ने हथियार डाले, अमरीका ने फ्रांस को एटम बम तक देने की तत्परता दिखायी थी। लेकिन जहाँ फ्रांस ने हार मानकर राजनीतिक समझौता करना उचित समझा वाशिगटन ने युद्ध और विनाश का रास्ता अपनाया।

जनवा समझौते के अंतर्गत वियतनाम के दक्षिणी भाग में 1956 में आम चुनाव किए जाने थे जिसके आधार पर वियतनाम का भविष्य निर्धारित होता। लेकिन प्रेसिडेंट आइज़नहावर ने स्वयं अपने सम्मरणार्थ स्वीकारा कि उनकी सरकार ने चुनाव इसीलिए नहीं होने दिये क्योंकि उनको यह पता था कि डा० हो ची मिन्ह 80 प्रतिशत के बहुमत से जीत जायेंगे। वाश कि वाशिगटन सरकार ने तब दक्षिणी भाग के जनमत का जादर किया होता तो आज वह अभागा देश युद्ध की ज्वाला में न जलाया जाता और एक संयुक्त स्वतंत्र एक सगल वियतनाम हमारे बीच तटस्थ राज्य होता।

आज 2 000 से अधिक अमरीकी सनिक अड्डे एशिया और प्रशांत महासागरीय क्षेत्र में स्थापित हैं। कोरिया में 65 000 अमरीकी फौजें हैं जापान में 60 000 फारमोसा में 50 000 ओकीनावा तथा ग्वाम द्वीपों में 60 000 वियतनाम में 100 000 75 000 थाईलैण्ड में 60 000 फिलीपीन में और 60 70 हजार आस्ट्रेलिया में और 7वें वेडे के जगो जहाजा पर। इसके अलावा अमरीका ने सगाव के पास एक भूमिगत मिनि-वेंटागन केंद्र का 10 अरब डॉलर की लागत से निर्माण किया है जिसमें आधुनिकतम कम्प्यूटर नियंत्रित परमाणु-युद्ध सज्जा साधन किसी सम्भावित तृतीय युद्ध के लिए कमाण्ड पास्ट के रूप में तयार हैं। 1954 में ही एक वरिष्ठ अधिकारी ने वहाँ की सनिक-उपमिति के

समक्ष सैनिक वज्रट की मागा पर बालते हुए कहा था

अमरीका सुदूर पूव मे, अनिश्चित काल तक अपनी सैनिक प्रभुसत्ता बनाय रखन की तयारियाँ कर रहा है।' इसमे यह स्पष्ट है कि वार्शिंगटन के एशियाई नीति निर्धारको १ एशिया म पश्चिम साम्राज्यवाणिया के निकल जान के बाद अमरीकी साम्राज्यवाद को फलान की साजिशों की। उन्हें कभी हमारी जनता की मान मर्यादा, या हमार प्रजातांत्रिक विकास की चिन्ता नही हुई।

1965 म वहा के सना विभाग न एक विनापन छपा जिसम कहा गया था आवश्यकता है म्वाएँ और साधना की जिमम अमरीकी साम्राज्य शीपक योजना पर अनुसंधान किया जा मके। इमक अतगत निम्न वाता पर काय किया जायगा (क) राष्ट्रीय शक्ति तत्व (ख) चुन हुए देशा की क्षमता जिन पर हमार राष्ट्रीय शक्ति-तत्त्वा का प्रयोग किया जा सके (ग) अनक प्रकार के विश्वयुद्धा की सम्भावनाएँ जिनम अमरीकी प्रभुसत्ता का भविष्य म अय दशा पर हावी रखा जा मके।

फरवरी, 1971 म अमरीकी विश्वविद्यालया म एक विनापन प्रकाशित

हुआ

एक ज्ञानदार अवसर

यदि आपका कोई विदेशी भाषा आती हा तो सुरक्षा विभाग के गुप्तचर विभाग आपकी सवाएँ विदशा म इस्तेमाल कर सकत हैं। दुनिया क बहुत-स मागा म—और आप स्वय चुन सकत हैं अपना कायलेश

इम प्रकार अमरीकी सरकार न पिछले 20 वर्षों स अधिक शांति क स्थान पर युद्ध मित्रता क स्थान पर शत्रुता और विश्वास क स्थान पर अविश्वास के किले खडे किये हैं ताकि वह अपन साम्राज्य को लम्ब असें तक एशिया मे जमाय रखें। यही कारण है कि एशिया की स्वातन्त्र्य शक्तिया व आन्दोलन पश्चिमी साम्राज्यवाद के पुनजागरण की सम्भावना से उत्पन्न हो उठे हैं।

अमरीका को किसी मिद्धात विशय का प्रचार करने के अधिकार स किसी को इकार नही। ना ही इम बात म किमाको शिकायत हागी कि वह अपने आर्थिक व अय राष्ट्रीय हिता की रक्षा कर। लकिन आपति उनके मन स्वये पर है कि 'हाइट हाउम म बठा एक जादमी यह कहे कि तुम एशियाइया के लिए मैं एक योजना बना लाया हूँ। अगर तुम लाग ने मुझ ठुकराया और साम्यवाण का बोट लिये ता मैं तुम्हें धूलिसात कर दूगा। तुम्ह साम्यवादी देखन की उजाय मैं तुम्हारी मुर्दा लाश देखना पसन्द करूँगा। और अपने किमी गुणों का धाप दे सँगाव पर। सैनिक तानाशाही पनपता है वार्शिंगटन की छत्रछाया म। यहा हुआ फार्मासा म कोरिया म क्यूबा म पश्चिमी वियतनाम म। और याज्ञा खा भी

तो इही के बूते अकडे थे। अमरीका के सैनिक अधिकारिया ने इतनी बमबारी की घमकिया दी हैं कि 'हम बियतनाम को पापाण-युग म पहुँचा दग। लेकिन दुघप बियतनाम का जवाब ह पराधीनता स हम पापाण युग म जाना पसाद है।

1898 म फिलीपीन पर अमरीकी जायमण के समय एशियाई देश म राजनतिक जाप्रति न थी। ना ही हमारे बीच एकता का भाव था। हमारे सभी देश पश्चिम साम्राज्यवाद के डर से 'आत्मरक्षा की आपाधापी म लग थ। लकिन आज एशिया की हालत कुछ और ह। एकता है जाप्रति है और जहाँ तक बियतनाम म अमरीकी हस्तक्षप का सम्बन्ध है—एशिया म पूण ऐक्य मत है। कुछ एक फौजी जनरलो को छोडकर—किसी एशियाई प्रजातातिक राष्ट्र का समथन अमरीका को नहीं मिला। सोबियत सघ की सनिक महायता तथा बियतनामी जनता की बिजय म दन आस्था इस सघप व दान बड महत्वपूण तत्व है।

अमरीकी फौजें लडाई के मैदान म जो जीत न पायी—उस प्रसिडेण्ट निक्सन पेरिस की भेज पर पाना चाहते हैं। जब 10 00 000 स अधिक सगाँव व पमा छोर' सनिको ने अपनी स्वतंत्रता व सेनानियो के सामने लडने स इबार कर लिया तब सबसे बडी समस्या है वाशिंगटन की कि सगाँव का अमरीकी कजे म कस बनाये रखा जाये। वरना वहाँ की सरकार दक्षिणी भाग की जनता को स्वय अपना भाग्य निणय क्या नगी करने देगी ? यही कारण है कि निवतन राजनीतिर समझौत स बचना चाहत हैं। और जब जब भी हनोई तथा दक्षिण की अस्थायी सरकार समझौत की बात करती है अमरीका सनिक कारवाई को बढाना देता है।

आप सोन की जगा सकते हैं। पर जब कोई जागते हुए माये ता उम क्या किया जाय ? पिछन 10 वर्षों म अनक बार हनोई न शाति व मुगाव रम। 1963 म डॉ० हो ची मिन्ह एक तटस्थ दक्षिण बियतनाम मानन व निणेतयार थ। 1965 और 1966 म उन्होंने कनाडा सरकार द्वारा समझौत की बात चलायी। जिनका जवाब जानमन ने 5 00 000 सनिक और 6 000 विमान मुड म झानकर दिया। 1967 म सनेटर राबट कनेडी यूरोप की राजधानिया म परामश करव और उत्तरी बियतनामी प्रतिनिधिया स मिनकर एक ठोस मतविण सनर प्रसिडेण्ट जागन व पाग ल गय। जवाब आया—उत्तरी बियतनाम पर भयकर बमबारी। शाति व प्रस्तावा का हनोई की दुबनता माना गया। राष्ट्र सघ के तत्कालीन महा मन्त्रि श्री लु थान न मय शाति प्रयना की जगकनता पर दुधित शाकर रहा था कि अमरीकी जनता का मन्थार् का पान नहा। यनि उर पता हा ता थ इन मुड की जाग म बियतनाम को झुनगन न देगे। राजनीतिक हन व समझौता सम्भव है।

कुछ हा निना तर यत कहा जाता था कि अमरीका बगारे फँस गय और अब ब आत्ममन्मान व भाप एशिया म निरन जाना चाहत हैं। य एव मनसाही

जात्म प्रवचना है। यदि व ऐसा चाहत ता उन्हें बहुत से ऐस अवसर दिये जा चुके है। वियतनामी जनता न इतना बलिदान और अपमान सहा है कि अब सवाल निक्सन और जमरीका की इज्जत का नहीं बल्कि वियतनाम की इज्जत और विजय का है। भारत की तरह वियतनाम भी शांतिपूर्वक स्वतंत्र हो सकता था। किंतु फ्रांस व अमरीकी साम्राज्यवादी शक्तियां न ऐसा नहीं होन दिया। वियतनाम और हिंद चीन में शांति स्थापना तभी सम्भव है जबकि एक संयुक्त व स्वतंत्र वियतनाम की स्थापना हो और उसकी प्रभुसत्ता की अक्षुण्णता की अंत र्नाष्ट्रीय गारंटी दी जाय। अमरीकी साम्राज्यवाद का हर अवशेष वियतनाम वम्बाडिया, लाओस से हटा दिया जाय और अमरीकी वायुसेना के सैनिक अड्डे थाईलैण्ड और जय एशियाई क्षेत्रों से उठा लिय जायें।

हम अमरीका के पतन और पराजय से सरोकार नहीं। हम ता वियतनाम व ग्रामीण किसानों के उज्ज्वल भविष्य की दरकार है।

स्वतंत्रता और प्रजातंत्र के पवित्र नाम अपवित्र हो जात है जब उनके हाथ निर्दोष लोगों के खून से सने हो।

—महात्मा गांधी

उपसंहार

उत्तर वियतनाम तथा दक्षिण वियतनाम के राष्ट्रीय मुक्ति मारचे के नेताओं ने अनवरत हम बात की घोषणा की है कि वे दोनों भागों की एकता चाहते हैं किंतु उस शांतिपूर्वक धीरे धीरे ही 15-20 वर्षों में प्राप्त किया जा सकता है। उत्तर दक्षिण का विभाजन अप्रावृत्तिक व अस्वाभाविक है। आर्थिक पहलू से भी दोनों की एकता विकास और समृद्धि के लिए अनिवार्य है। किन्तु किसी भी प्रकार का राजनीतिक नियंत्रण करने का अधिकार वहां की जनता को है।

सर्गाव के बौद्ध नेता भिन्नु नाह हात का कहना है

‘वियतनाम के घौंढा जीन वियतकांग का अमरीकिया का एक ही जवाब है आपसी मतभेद हमारा घरलू मामला है। तुम्हें हस्तक्षेप का कोई अधिकार नहीं।’

दक्षिण वियतनाम का अस्थायी क्रान्तिकारी सरकार पी० जार० जी० की विदेश मन्त्री श्रीमती युयन थी विह ने पेरिस शांति-सम्मेलन के 119वें अधिवेशन में जुलाई 1971 को एक सप्त सूत्री प्रस्ताव रखा था जिसमें कहा गया था

वियतनामी जनता की शान्ति और स्वतंत्रता की इच्छा व अनुसार अमरीकी जनता और विश्व जनमत की शान्ति चाहना का ध्यान में रखत हुए, और पेरिस

मार्च 1971 में ही भारत के दक्षिण पूर्व दिशा में एक नए देश के रूप में दक्षिण
विद्यतनाम की स्थापना की जा सकती है।

1. अमरीका सरकार के पूर्ण सहयोग से ही हीन विद्यतनाम की स्थापना की जा सकती है।

अमरीका सरकार विद्यतनाम में आक्रमण करने वाले विद्यतनामों के
रूप में हीन विद्यतनाम में आती और भारत विद्यतनामों की मातृ गीत
भारत में गायने पर विद्यतनामों को हीन विद्यतनामों के अमरीकी
गीतों के रूप में।

अमरीकी सरकार भारत और अन्तर्गत गीतों की पूर्ण गीतों के
हीन विद्यतनाम में हीन विद्यतनामों की स्थापना की जा सकती है।

अगर अमरीका 1971 में पूर्ण गीतों के मातृ गीतों के रूप में—

(क) हीन गीतों की स्थापना

(ख) गीतों की स्थापना (उत्तरी विद्यतनाम में अमरीका
हवावाजा) का गीतों की स्थापना के लिए समझौता हो सकता है। अमरीका
को हीन गीतों की स्थापना की स्थापना हीन विद्यतनामों में हीन गीतों
और अमरीका गीतों की स्थापना के लिए हीन विद्यतनामों की स्थापना
की जा सकती है।

2. दक्षिण विद्यतनाम में राजनीति सत्ता के प्रदा पर।

अमरीकी सरकार हीन विद्यतनामों की स्थापना के आत्मनिर्णय के अधिकार
के सिद्धांतों के सम्मान के साथ ही आन्तरिक मामलों में हीन गीतों के
सर्वांगीण शासन पर पड़ने वाली बाधाओं द्वारा हीन विद्यतनामों के स्थापना
की जा सकती है।

दक्षिण विद्यतनामों की राजनीति सामाजिक एक धार्मिक शक्ति
के स्वतंत्रता की भावना से आपस में मिलकर ही सम्भव उपायों से हीन प्रजा
तांत्रिक स्वतंत्र तटस्थ शान्तिवादी शासन की स्थापना करें। हीन विद्यतनामों
की अस्थायी शान्तिवादी सरकार एक शासन में हीन प्रजा पर
वातचीत के लिए तैयार रहेंगी।

(क) हीन प्रजा शान्ति स्थापना और आम चुनावों के मध्यस्थता में विभिन्न
राष्ट्रीय तत्त्वों का मिला-जुला शासन कायम हो जाये शान्ति स्थापना और आम
चुनावों का उत्तरदायित्व सभाल सके। एसा एक राष्ट्रीय सरकार के स्थापित
होने ही दक्षिण विद्यतनामों के मुक्ति मार्ग और सर्वांगीण शासन के स्थापना के बीच
युद्धविराम स्थिति रहेगी।

(ख) हीन सरकार ऐस वदम उठायेगी हीनसे ही देश में अराजकता न

फले, बढ़ने की कारवाइयाँ न की जा सकें, राजनीतिक विद्वेष का रिहा कर दिया जाय, नजरबंदी बन्द समाप्त कर दिया जाय और जनता को फिर से दैनिक जीवन के कार्यों में उन्मुक्तता का एहसास हो गया।

(ग) लागावै दैनिक जीवन में स्थिरता और विश्वास पैदा किया जा सके ताकि वे अपनी याग्यता व सामर्थ्य को युद्ध विध्वस्त देश के पुनर्निर्माण में लगा सकें।

(घ) दक्षिण वियतनाम में स्वतंत्र व प्रजातांत्रिक आम चुनावों की व्यवस्था की जा सके।

3 दक्षिण वियतनाम सनाओ के भविष्य के बारे में।

वियतनामी पार्टियाँ विदेशी हस्तक्षेप के बिना राष्ट्रीय एकता समानता आपसी सम्मान, तथा युद्धोपरांत स्थिति का देखन हुए दक्षिण वियतनाम की सुरक्षा सनाओ के प्रश्न पर हल आपस में ढूँढ निकालेंगे।

4 उत्तर व दक्षिण भागों के शान्तिपूर्ण एकीकरण के बारे में।

(क) वियतनाम का पुनः एकीकरण धीरे धीरे शान्तिपूर्ण तरीका में आपसी बातचीत व दाना क्षेत्रों के बीच समझौते से ही किया जायेगा।

पुनः एकीकरण में सैनिक कारवाइ तथा विदेशी हस्तक्षेप नहीं होने दिया जायेगा।

जब तक पुनः एकीकरण नहीं होता दोनों भागों के बीच लोगों का जावागमन पक्ष-व्यवहार आदि की पूर्ण स्वतंत्रता होगी।

(ख) जेनेवा सम्मेलन की शर्तों के अनुसार जब तक पुनः एकीकरण नहीं होता, उत्तर-दक्षिण के दो अस्थायी भागों में बंटा रहेगा। किंतु कोई भी किमी सैनिक गुट में शामिल नहीं होगा कोई विदेशी सैनिक अड्डे नहीं बनने देगा ना ही विदेशी सनाओ का किमी भी प्रकार की तयारियाँ व कारवाइयाँ आदि की अनुमति देगा।

5 दक्षिण वियतनाम की शान्ति तथा तटस्थतावादी विदेश नीति के बारे में।

दक्षिण वियतनाम शान्तिपूर्ण तटस्थतावादी विदेशनीति अपनायेगा राजनीतिक सिद्धांतों में भेदभाव किए बिना सभी स्वतंत्र राष्ट्रों से कूटनीतिक सम्बंध रहेगा। 'पञ्चशील' के शान्तिपूर्ण सह-अस्तित्व सिद्धांत के आधार पर।

इही सिद्धांतों के आधार पर युद्धोपरांत दक्षिणी वियतनाम समुक्त राज्य अमेरिका से राजनीतिक, आर्थिक व सांस्कृतिक सम्बंध स्थापित करेगा।

6 अमरीका द्वारा वियतनाम के दोनो भागो मे किये गये विध्वंस के बारे मे ।

अमरीकी सरकार दोना भागा की वियतनामी जनता के जान व माल का उस द्वारा पहुँचायी गयी क्षति की जिम्मेवार होगी ।

7 ममझोते को पालना के प्रति अंतराष्ट्रीय गारंटी के बारे मे ।

सम्मेलन म भाग लेनेवाले सभी पक्ष इस समझौते को त्रियावित करन की अंतराष्ट्रीय गारंटी देगे ताकि इसका भली प्रकार पालन किया जा सक ।

इस सप्तसूत्री प्रस्ताव को डेमोनेटिक रिपब्लिक आफ वियतनाम का समयन प्राप्त है ।

किंतु अमरीका को यह स्वीकार नही । वार्शिंगटन क नेताओ और पेंटागॉन व सी० आई० ए० की इच्छा है कि वे सगाव म किसी न किसी रूप मे अपना सैनिक बन्जा बनाये रख ताकि उस क्षत्र म उपन्यस्त कच्चे माल तेल व खनिज पदार्थों पर अमरीकी कम्पनिया का अधिकार बना रहे । अथवा इस प्रस्ताव मे किसी के भी प्रति बदले की भावना नही है और उत्तर दक्षिण के झगडे को शांतिपूर्वक सुलझान की तत्परता स्पष्ट रूप म बही गयी है । लेकिन अमरीका अब किसी भी कीमत पर इस क्षेत्र से हटना नही चाहता । यहाँ तक कि उत्तरी वियतनाम का आर्थिक सहायता देने का लालच अमरीका दिखा चुका है । लेकिन वियतनाम क राष्ट्रीय तत्त्वा का अब तो एक हा आग्रह है और वह यह कि अमरीका की सेनाएँ हिन्द चीन के क्षत्र स पूरी तरह हटा ली जावे । इसके बिना दक्षिण-पूर्व एशिया और हिन्द चीन क देशो की स्वतन्त्रता का कोई वास्तविक महत्त्व नही है ।

इन पक्षितया क लिखत समय भी अमरीका का जल, थल व वायु सेनाएँ एशिया तथा दक्षिण अमरीकी देशा म अपने शत्रुओ को मिटा देने म लगी हैं । दुनिया क दूसरे भागा म भी सम्भावित अमरीकी सैनिक कारवाइयो की योजनाएँ पहले स तयार हैं । प्रेमिडेण्ट निकसन ने हार्डिट हाऊम म घुसने क बाद प्रशांत महासागर म जापान क नीचे स्थित ग्वाम द्वीप पर अमरीकी सलाहकारा व सैनिक अपमरा का एक सम्मेलन बुनाया था । उसके बाद जिन नीतियो की घोषणा की गयी उह ग्वाम का मिद्धात कहा जाता है ।

इस ग्वाम घाषणा क अनुसार एशिया क किसी भी दश म और जत्र कभी वार्शिंगटन क विचार म स्वतन्त्रता (अमरीकी हित) को छतरा नित्यायी द ता अमरीकी स्वच्छा म सनिष्ठ कायवाही करेगे ।

यद्यपि अमरीकी नेताओ न एशिया की स्वतन्त्रता का दावा किया है, लेकिन

आश्चर्य इस बात का है कि 'ग्वाम सम्मेलन में भी किसी एशियाई देश के प्रति निधि या सरकार से कोई परामर्श नहीं लिया गया। तथाकथित 'ग्वाम सिद्धांत' और वियतनामी युद्ध से निम्न और अमरीकी सरकार जो कुछ करना चाहती है उसका लक्ष्य है कि एशिया की उन राजनीतिक व सामाजिक प्रवृत्तियों को घमकाना जिन्हें सी० आई० ए० के मत में अमरीका विरोधी ठहरा लिया गया है। एशियाई महाद्वीप के जो देश वाशिंगटन-पेंटागन की नीतियों से सहमत नहीं होते उन्हें ग्वाम घोषणा से डरकर सीधे रास्ते पर लान का कोशिश की गयी है।

ग्वाम सम्मेलन के बाद ही अमरीकी सरकार के अधिकारियों ने यह भी प्रकट किया कि अमरीका हिंद महासागर के 'दिए एक गामिया द्वीप में अपने सैनिक अड्डे स्थापित करने की तयारियां कर रहा है। और यह घोषणा तब की गयी है जबकि भारत और श्रीलंका—दो प्रमुख प्रजातान्त्रिक देशों ने यह स्पष्ट बह दिया है कि वे हिंद महासागर को 'शांति का सागर' बनाये रखकर ठंडे या गम युद्ध से इस बचाये रखना चाहती हैं। लेकिन सम्भव है अमरीकी सरकार की नीयत एशियाई सम्बंधों में सचमुच भ्रमनासाहत से भरी है। मानवतावादी भावना ने उदीप्त होकर व करोड़ों एशियावासियों और विशेषकर वियतनाम के पिछड़े हुए किसानों के 'प्रजातान्त्रिक अधिकारों की रक्षा करना चाहत है। परंतु दक्षिण पूर्व एशिया और दक्षिण एशिया के देशों में पिछले 150 साल पश्चिमी उपनिवेशवाद से सघष किया है और उस सघष में इन देशों को अमरीका से कभी कोई सहायता नहीं मिली। और आज भी दक्षिण अफ्रीका रोडेशिया जंगोला और मोजाम्बीक में अश्वेत जातियों के मानवीय व प्रजातान्त्रिक अधिकारों का अल्पसंख्यक गोरी जाति के देश कुचल रहे हैं। अमरीका की आर्थिक व सैनिक सहायता अत्याचारी साम्राज्यवादी को खुले रूप में उपलब्ध है। लेकिन अश्वेत लोगों के स्वातन्त्र्य सघष के समय में अमरीकी सरकार कोई कदम नहीं उठाती। वियतनाम और हिंद चीन के देशभक्त पूछते हैं कि जब फ्रांसिसियों साम्राज्यवादियों ने हंगरी देशभक्तों का जेलों में डूब दिया था, जिन हमारी जनता के नागरिक अधिकारों का उन्होंने 80 साल तक अपहरण किया था—तब अमरीका के बमबार कहीं थे? अश्वेत जातियों के राजनीतिक हितों की रक्षा में, अमरीका ने आज तक कभी एक भी गोली नहीं चलायी। बल्कि वास्तविकता तो यह है कि जब यूरोपीय देश एशिया, अफ्रीका और लटिन अमरीका पर फल रहे थे उसी समय अमरीका भी उनकी प्रतियोगिता में अपना विस्तार करने की होड़ में लगा था।

चीन की मण्डियां में अमरीका प्रवेश छा चुका था और यूरोपीयों की तरह हा उसने वहाँ पर विशेषाधिकार पा लिये थे जिनके आधार पर अमरीकीया पर भी चीनी कानून लागू नहीं होते थे और 1853 में अमरीकी जमी बड़ा न जापानी

समुद्र में घुसकर अल्टीमेटम दिया था। जिन दिना फ्रांस हिंद चीन पर अपने पाव जमा रहा था उसी समय जफसन का प्रजातांत्रिक अमरीका क्यूबा पनामा हवाई द्वीप समूह ग्वाम कारिया और फिलीपीन पर सैनिक कारवाइया करत म लगा था।

लेकिन सम्भव है कि तब से जब तक वाशिंगटन की एशियाई विदेश नीति म परिवर्तन आ चुका हो। 1950 से वियतनाम में उसने जा नीति अपनायी है और बाद के वर्षों में हिन्द चीन के पूरे क्षेत्र म उसने आक्रमणों और अत्याचारा और का जो नग्न रूप दिखाया है उससे उसके पवित्र इरादा का इजहार नहीं होता।

संयुक्त राज्य अमरीका का इतिहास दूसरा पर हमले करत और उनकी जमीनें हड़पकर अमरीका के नक्शे का फलाते जाने की लम्बी कहानी है। और क्योंकि अभी तक उनका झण्डा कहीं झुका नहीं। इससे उनके धमाधम लागा का यह विश्वास और भी दृढ़ हो गया है कि वे भगवान के दत्त पुत्र हैं जिन्हें इस पृथ्वी पर धन और धर्म की रक्षा का भार नियति से मिला है।

1776 में जब अमरीका ने ब्रिटिश साम्राज्य से स्वतंत्रता छीन ली तब संयुक्त राज्य अमरीका केवल 13 राज्या का एक छोटा सा सभ था। अब वह 50 राज्या और बीसियों उपनिवेशों (टेरिटरीज) का एक विशाल साम्राज्य बन चुका है। उसके कूटनीतिक व सैनिक इतिहास से पता चलता है कि उसने अब तक 200 से अधिक बार विदेशी सीमाओं पर हमले किये हैं। 50 से अधिक बार थोड़े बहुत समय तक दूसरे देशों पर अधिकार जमाय रखा है और 30 से अधिक बार आक्रमण करके हथियाई गई जमीन को बाद में अमरीका का संधीय भाग बना लिया गया है।

ऐसी विस्तारवादी जायिक व सैनिक पृष्ठभूमि में जब हम प्रसिद्धेण्डे निक्सन की ग्वाम घोषणा को पढ़ते हैं उनकी वियतनामीकरण नीति उत्तरी वियतनाम के समुद्री तट पर सुरगों विछाना और समूच क्षेत्र को नेपामा और लेसर वमा से उल्टे-सीधे विध्वस्त करन के बरकर बाण्डा के समाचार पढ़ने हैं तो ममज्ञ नहीं जाता कि आधिर इन सबका मनलय यह कसे निकलता है कि अमरीका दक्षिण पूर्वी एशिया से धर लौट जाना चाहता है? अमरीका के दत्त पुत्र सैनिक उपकरणों नय-नय विध्वंसक शस्त्रान्त्रा व परीक्षणों और सैनिक कारवाइया का कम्बालिया नाओम धार्चलण्ड मिगापुर और अत्र हिन्द महासागर में फनाने का मनलय यह कसे निकलन निया जाय कि पेंटागान व नता जब इम लडाई म उत्र चुक ह। उनका नश्यता अमरीका की सुरक्षा प्रजातंत्र की सुरक्षा और सम्मानपूर्वक गानि स्थापित करन पर लौट जाना है?

1969-71 के बीच प्रसिद्धेण्डे निक्सन ने जा वियतनामीकरण की नीति अपनायी उमरा नश्य दा एण-पूर्वी एशिया में युद्ध की जाग का कम करना नहा था

वल्कि अमरीकी जवाना की जान बचाना था ताकि अमरीकीया के वपन वाशिंग टन लौटने बन्द हो जायें और युवका को उनके घरा, स्कूला व बॉनेजा सं जबर-दस्ती भर्ती बरके वियतनाम न भेजना पडे । तब अमरीका मे बढते हुए युद्ध-विरोधी आंदोलन को, जनता का सहयोग भी कम मिलने लगया । और अमरीकी बंदूकें वियतनामियो के बंधा पर रखकर चलायी जा सकेंगी ।

अमरीकी अधिकारी चीन वारिया भारत, जादि की तरह ही वियतनाम को भी दो भागा मे बाँटे रखना चाहते हैं ताकि उस क्षेत्र म अमरीकी स्वाथ बने रह और आपसी मनमुटाव के कारण अमरीकी शास्त्रास्त्रा का व्यापार चलता रहे । पिछ्ने बप, वाशिंगटन की एक रिपोर्ट म बताया गया था कि अमरीका दक्षिण पूर्वी एशिया जप्रीका और लटिन अमरीका के 25 देशो म सनिक सहायता बन्नायगा जिसके अंतगत उन देशा म भीतरी शत्रुओ का नष्ट करन और 'गुरिल्ला छापामार,' का कुचलन की गुप्त ट्रेनिंग दी जायेगी । उक्त देशो की सूची म जो नाम है उनम कुछ मुख्य ये हैं

ट्यूनिशिया, कागो कालम्बिया, होण्डुरास, जमका, पनामा और दक्षिण वियतनाम । अमरीकी सेना विभाग (जिस डिफेन्स अर्थात सुरक्षा विभाग कहते है) न ए० आई० डी० के द्वारा पिछ्ले 10 वर्षों स अनेक देशा म पडयत्नकारी कामा की गुप्त ट्रेनिंग दी है । अबेले दक्षिण वियतनाम म उहान कोई 2 00 000 विशेष पुलिस तयार की है जिसने 1970 म कोई 1,53 000 नागरिका का गिरफ्तार किया जिनम अधिकतर एम लोग थे जिन पर' वियत काग हान का सदेह कवल सदेह था । (यूयाक टाइम्स जून 14 1971)

प्रेसिडेण्ट निकसन के वियतनामीकरण नीति के काल म ही 15 कराड डालर से 129 नय जस्त्रो को तयार किया गया है जिनके परीक्षण वियतनाम और लाओम मे किये गये हैं और बतमान म किये जा रहे है ।

(यूयाक टाइम्स, मार्च 22 1971)

एसी बारबाइया और सनिक तयारिया स लगता है कि अमरीका जो कुछ पेरिस की टेबल पर नही पा सफा उसे वह लडाई के मदान म लेना चाहता है और जो उसे लडाई के मदान म प्राप्त न हुआ उस वह पडयत्ना से हिन् चीन के दशो म जदरनी मनमुटाव व अशांति फलाकर पाने की कोशिश कर रहा है । जयथा यदि अमरीकी नीतिया को जनता व बहुमत का समथन प्राप्त भे तो उनके बीच गुप्त पडयत्नकारी कारवाई करन की उसे आवश्यकता क्या हो ?

पेंटागन दस्तावेजो के अनुसार अमरीका के एक जासूसी दस्त न दक्षिण वियतनाम के कुछ नामी ज्योतिपियो को पसा खिलाकर उनस ऐसे पचास लिख वाये जिनम वियतमिंह की राष्ट्रीय सनाआ और हा ची मिह की स्वतंत्र सरकार विरोधी भविष्यवाणिया की गयी थी । इन पचासो को अमरीका रक्षा विभाग के

गर्भे ग गगाय न द्यवायान् गत् 1954 म गुप्त रीति म ह्यो^२ भिन्नवाया गया और सी० आई० ए० क गुप्त एजन्टा द्वारा उग लाग म बँटवा किया गया। इसी प्रकार वियतमिन्ह के नाम म झूठे पत्रे बाँटे गये तथा अफ़्सा, पत्रवापी गयी कि उत्तरी वियतनाम म फांगीगिया क हस्त ही वियतमिन्ह की सरकार लोग का जनता म वक्त पर दगी जमीने छीन ली जायेंगी चीनी कम्युनिस्ट। क साथ उत्तरी वियतनाम मित्रा किया जायगा चीनी फौजी वियतनामी नडरिया का उठा ल जायेंगे—आदि आदि।

(पेंटागान पेपस)

पत्रम्बरूप लोग म आतर द्या गया और भगण्ड मच गयी। हजारों लोग उत्तरी वियतनाम म दक्षिण की आर भाग छोड़े हुए और वाशिंगटन की प्रचार एजन्तिया ने कहना शुरू कर दिया कि उत्तरी वियतनाम म लोग का वक्तआम हा रहा है। लाग शरणार्थी दक्षिण म आ रहे हैं। ऐसी स्थिति म वियतमिन्ह की नयी राष्ट्रीय सरकार को जनता को फिर से जायवस्त करन म बापी समय लगाना पडा।

प्रश्न यह है कि जब एक छाना-सा देश फ्रान्सीसी साम्राज्यवात् म स्वतन्त्रता पा रहा हो उस समय की उथल-पुथल और अशांत वातावरण म एन गमृद्ध देश की सन्तान जोर गुप्तचर एजन्तियाँ ऐसी हरकतें करके प्रजातन्त्र क रिम पत्र की रक्षा करती है ?

आज दक्षिण-पूर्व एशिया और विशेषकर वियतनाम और हिन्द चीन एक ऐस युग से गुजर रहे हैं जिससे पश्चिम के देश 18वी और 19वी सदी म गुजर रहे थे। क राजनीतिक व सामाजिक उथल पुथल के दिन थ। पश्चिमी दशो मे धर्म जमीन राष्ट्रीय उच्चता प्रातीयता व राजनीति क ढाँचे और सामाजिक न्याय व युद्ध व त्रातिया चल रही थी। विद्वान क नये चमत्कारा के कारण लोगो की परम्परागत जास्थाय हिल चुकी थी और पुराने जीवन मूल्य नष्टप्राय हो रहे थे। आम जनता निधन थी अशिक्षित थी और शापित व पददलित। लोग ने नये अधिकारा को पान और नयी अथ समाज व्यवस्था को स्थापित करन की उग्र लालसा थी।

पश्चिमी साम्राज्यवाद के कारण एशियाई होन क कारण हम पश्चिमी देशा की लडाइया नडत रहे। इसीलिए भारत के जवान हमशा अग्रजी राज की ओर से नडत थ वियतनामी फ्रांस की तरफ मे जोर फिनीपीनवासी अमरीका की ओर स।

एशियाई देशा का आर्थिक व सामाजिक ढाँचा 20 21वी शताब्दी की माँगा क साथ मेल नहीं खाता। और हमारे देश स्वतन्त्रता प्राप्ति के बाद उथल पुथल प्रातीयता तथा उग्र परिवतनवादी तत्त्वो के कारण अनेक प्रकार के भीतरी व बाहरी सघर्षो म लगे हैं। ये प्रगति और विकास के अनिवाय लक्षण हैं। यथा

स्थिति या स्टेटस को इस पिछड़ेपन से तो जाड़े रखा जा सकता है किंतु एक मुष्ठी व 'यायप्रिय समाज-व्यवस्था लाने के लिए यथास्थिति न तो आवश्यक है और न ही वाछनीय। क्या अमरीका 1776 में यथास्थिति की अंग्रेजी मांग को स्वीकार कर सकता था ? यदि नहीं तो वियतनाम की जनता से यह कैसे अपेक्षा की जा सकती है कि वह अमरीका की यथास्थिति को स्वीकार कर ले ?

किन्तु 19वीं शताब्दी के पश्चिम की उद्यम-पुण्यल में किसी बाहरी शक्ति का हस्तक्षेप नहीं हुआ। जबकि आज एशियाई देशों की जनतान्तिया के अशांत वातावरण में बाहरी शक्तियों का हस्तक्षेप हमारे विकास और परिवर्तन की गति का धीमा किये डाल रहा है। और स्थानीय प्रजातान्त्रिक शक्तियों के विकास में बाधक बन रहा है। जिस प्रकार 1962 में भारतीय सीमाओं पर चीनी सेनाओं के आगमन से भारत में साम्यवादीयों की लोकप्रियता को आघात पहुँचा ठीक उसी तरह अमरीका द्वारा वियतनाम तथा एशिया में स्वच्छाचारिता में सैनिकी कार्रवाइयाँ करने से इस क्षेत्र की गर-साम्यवादी शक्तियों को भयानक चोट पहुँची है। वियतनाम और एशिया तथा अफ्रीका और लटिन अमरीका की जनता के सामने प्रश्न सद्भाषितक विवाद का नहीं है—वह एक बौद्धिक विलास या फि एक्झेडेमिक सवाल हो सकता है। उनका सामने का वास्तविकता आर्थिक 'याय, मुद्धार तथा विराम की है। और अफनास इस बात का है जहाँ विज्ञान और तकनीकी में सतत गति अमरीका बड़ा ही प्राथिकारी देश है—(सकम और फशन का मामला में भी) वहीं अमरीका राजनीति और घम के मामले पर भयानक रूप से पिछड़ा हुआ और दक्षिणानुसी है।

एशिया और वियतनाम में शांति स्थापना के लिए यह आवश्यक है कि अमरीका के नेताओं के राजनीतिक चिंतन और एशिया के प्रति उनके दृष्टिकोण में सद्भाषितक परिवर्तन लाया जाये। वरना सनेटर जॉर्ज मेकगवर्न का रूम वष 1972 नवम्बर में वियतनाम में शांति स्थापना के नार पर अमरीकी प्रसिद्धेण्ट पर के उम्मीदवार और निक्सन के प्रतिद्वन्दी थे अगर चुनाव जीत भी जाते और उनकी हत्या न हो पाती तो भी वे पेंटागन के विशाल सैनिकी संगठन और उसकी जामूनी कार्रवाइयाँ खतवाने में समर्थ हो सकते हैं।

लेकिन थाईलैण्ड की जनता वहाँ के सैनिक डिक्टेटर्स के शासन को नष्ट कर प्रजातन्त्र की स्थापना को लालायित है। किसी सम्भावित शांति की स्थिति में थाईलैण्ड स्थित अमरीकी बी 52 के सैनिकी जड्डा का भविष्य क्या होगा ? क्या अमरीका उनकी रक्षा के लिए सैनिकी कार्रवाई नहीं करेगा ? इसी प्रकार सगाव के दक्षिणी तट पर अमरीकी तेल कम्पनियों ने जो विश्वाधिकार ले लिये हैं—उनकी रक्षा कस होगी ? थाईलैण्ड में अमरीका के आर्थिक हितों का कौन वचापगा ?

पूर्वजीवानी अथर्व्यवस्था प्रजातन्त्र का पर्याय गढ़ा जाती। और अमरीकी उम पर्यायवाची माना सम हैं। अमरीकी नाशा का यह एहमाग कराना हागा नि गैरपूर्वजीवानी भी प्रजातांत्रित हा साता है।

वियतनाम का स्वातन्त्र्य सप्राग अभी समाप्त नहीं हुआ है। सयुक्त्त राज्य अमरीका का हिन्द चीन म हस्तगत अभी भी जारी है।

छपते-छपते

अमरीकी प्रवक्ता ने वाशिंगटा की एक प्रग दृष्टरव्यू म यह मान लिया है कि अमरीकी जट बमपारो ने गवती म उत्तर वियतनाम के बाँघा को उडा लिया है।

हनोई के ग्राटवास्ट म कहा गया है कि डाइवा के टूट जान स भयानक बाहँ आ गयी है और 10 00 000 स अधिक लागा क जान माल का गहरा छतरा पना हा गया है। हाय फाग और हनोई पर भयकर बमवारी हुई हैं।

अमरीकी लोग टेलिविजन के स्त्रीन पर डिनर छाल समय जब वियतनाम के युद्धा की फिमे देखते हैं तो उह जलती हुई मानवता के बजाय मिलाक्राइट द्वारा चित्रित जनते हुए रोमाटिक लश्य (सीन) लिखनाई पडते हैं। अत्र उह लाग डूबते, तरत बनाराजियाँ खात भी लिखलायी देंगे। परतु वियतनाम की जनता क लिए इम युद्ध का मतलब है—मौत या जिन्दगी जाजादी या दासता राष्ट्र का अस्तित्व या विनाश उनके नौनिहाला ना भविष्य। हनोई और बाघा का घूल में मिलाने क याद अमरीका और क्या कर सता है। पर वियतनाम के लोग लडते रहेगे। वियतनाम की विजय सत्य याय और मानवता की विजय है।

• •

वियतनामी स्वतन्त्रता का घोषणा-पत्र

2 सितम्बर, 1945

(द्वितीय महायुद्ध के अंतिम चरण में दक्षिण पूर्वी क्षेत्र स्थित जापानी मनाजो द्वारा हथियार डाल देने पर जो उथल-पुथल मची उसमें अनेक राष्ट्रों की स्वतन्त्रता का उन्मूलन हुआ। इसी एतिहासिक घड़ी में हर्षोल्लास में डूब वियतनाम में स्वयं का फ्रांस की दासता से मुक्त एक पूर्ण स्वतन्त्र राष्ट्र हान की घोषणा की थी।

इस घोषणा-पत्र पर हस्ताक्षर हैं वियतनाम के राष्ट्रपिता प्रेमिञ्जेण्ट हो ची मिन्ह के और इसका प्रारम्भ हुआ है संयुक्त राज्य अमरीका के 1776 में हुए स्वतन्त्रता घोषणा पत्र के उद्धरण में जो हमारे युग में अनेक देशों के राष्ट्रीय स्वातन्त्र्य सश्रम का प्रेरणा स्रोत रहा है।

‘सब मनुष्य समान ही जन्म लेते हैं। उन्हें स्रष्टा ने अविभाज्य जन्मसिद्धाधिकार दिये हैं जिनमें प्रसन्नता प्राप्ति के प्रयत्न स्वतन्त्रता एवं जीवन-अस्तित्व प्रमुख हैं।’

इस अमर वाक्य का उल्थाप 1776 में संयुक्त राज्य अमरीका के स्वातन्त्र्य घोषणा पत्र में हुआ था। —1791 में फ्रांसीसी क्रांति के मानव जाति व नागरिकों के अधिकारों की घोषणा में भी कहा गया है

सब मनुष्यों को स्वतन्त्रता व समानाधिकार जन्म से प्राप्त हैं और इसलिए उन्हें हमेशा स्वतन्त्र व समान रहना चाहिए। इस घोषणा के बावजूद, पिछले 80 वर्षों से अधिक फ्रान्सीसी साम्राज्यवाद्याने स्वतन्त्रता भ्रमान्ता और भ्रान्तृक कर, झण्डा फहराने का दाग, रक्त-रक्षारी फिलभूमि का अपमान किया है और हमारे नागरिकों को कुचला गया है। उन्होंने मानवता व इसाफ के आदर्शों की हत्या की है।

राजनीति के क्षेत्र में उन्होंने हमारी जनता को हर प्रकार की ग़्वांत-व्रता से बचिात किया ।

अमानवीय कानून हम पर घोषे गये हमारी एकता को नष्ट करने हेतु उत्तर, मध्य व दक्षिणी प्रांता में उन्होंने तीन नीतियाँ अपनायी ।

उन्होंने—स्कूलों से ज्यादा जेलखाने खोले । हमारे देशभक्ता को क्रूरता से मार डाला । उन्होंने हमारे आतिकारी जिलों को निर्दोष खून की बाढ़ों से डुबो दिया । उन्होंने हमारे जनमत को ठुकराया निरक्षरता को बढ़ावा दिया ।

हमारी जाति के ह्रास हेतु अपने देश में उत्पादित अफीम व शराब का इस्तेमाल हमारी जनता पर घोषा ।

आर्थिक क्षेत्र में हमारे नागरिकों को उनकी हर सम्पत्ति से बचिात किया व्यक्तियों को निधनता में जकड़ा और हमारी धरती को उजाड़ा ।

उन्होंने हमारे धान के खेतों को हमारी खानों को हमारे जगलाता को और हमारी खनिज सम्पदा को लूटा है । बक नोटा के छापने पर निर्यात आयात व्यापार पर अपना स्वत्वाधिकार रखा । ग़ैर कानूनी टक्स लगाकर हमारी जनता को विशेषकर हमारे ग्रामीणों को भयानक गरीबी की यातनाओं में बदल दिया । उन्होंने हमारे व्यापारी वर्ग के विकास को रोका । हमारे मजदूरों को बड़े ही घट्टियाना तरीका में शापित किया । 1940 की पतझड़ में जब जापानी फासिस्टों ने हमारी भूमि को अपवित्र किया फ्रान्सीसी साम्राज्यवातियों ने घुटन टेक लिये और आत्म समर्पण करके हमारे देश को फासिस्टों के हवाले कर दिया और फ्रान्सीसी बेडिया के साथ-साथ ही जापानी बेडिया में भी हम जख्म लिये थे । उस दिन से आज तक विपतनामी जनता ने जिा बठिा यातनाओं को सहा है मानव जाति के इतिहास में उमका अत्य उदाहरण नहीं है ।

इस दोधारा दमन का परिणाम भयंकर था प्रायः सभी से उत्तरी सीमा के बीच 20 00 00 लोग का 1945 के शुरू में भूखा की मौत मार डाला गया ।

9 मार्च 1945 का जापानिया ने फ्रान्सीसी सना के हथियार छीन लिये । एक बार फिर फ्रान्सीसी भाग घड़े हुए या जिना शत हथियार डाल लिये । इस प्रकार उन्होंने यह मिद्ध कर लिया कि वह हमारी सुरक्षा करने में सक्षम जमस्य हैं । इसमें बुरी बात उन्होंने हम लो बार जापान को बेच डाला ।

एक विपरात मार्च में पहल बंद बार कीमतमिहू न फ्रान्सीसीया में मौग की थी कि वह जापानिया के विरुद्ध वायुमिहू की मनाआ का साथ दें । साम्राज्यवादी फ्रान्सीसीया ने जवाब नर न लिये । इसमें बत्राय उन्होंने अपनी आनरवाणी हरकतों और बने पमान पर शुरू कर ली । भागन में पहल उन्होंने हमारे बटून-न गभक्षता का जा पनर तथा काआव में बंध मार डाला ।

इन गरर वाक्जू हमारा जनता ने प्राग के प्राग के प्रति हमारा ग

मानवता एवं सहनशीलता का रूख अपनाया है। मार्च, 1945 के जापानी प्रत्याग्रमण के समय में वीयतमिन्ह मनिंका ने बहुत-से फ्रांसीसीया का मीमा पर मुरथित पहुँचाया, कुछ का जापानी जेता से छुटाया और कभी भी फ्रांसिसिया की जान मान की रक्षा में आच नही आन दी।

आज वियतनाम की सम्पूर्ण जनता इस प्रजातन्त्री सरकार के प्रति राजभक्ति की आम भावना से एकता के सूत्र में प्रतिबद्ध है और फ्रांसीसी साम्राज्यवादिया के नापाक इरादा का मिटाने के लिए समुक्त एवं दृढ़प्रतिन है।

हम इसका भरोसा है कि मित्र राष्ट्र—तहरान तथा मान फ्रांसिसको में स्वीकृत आमनिणय तथा राष्ट्रों की समानता के सिद्धान्तों के अनुसार वियतनाम की स्वतन्त्रता को मायता देने से इनकार न करेंगे।

जिन लोगों ने 80 साल फ्रांसीसीया की दासता का उखाड़ फेंकने के लिए लम्बी जद्दाजहद की है जिन्होंने पिछले (द्वितीय महायुद्ध) वर्षों में फामिस्टा के खिलाफ मित्र राष्ट्रों के साथ कंधे से कंधा मिलाकर वीरता से लड़ाई की है ऐसे लोगों को कोई गुलाम नहीं रख सकता ऐसा राष्ट्र अवश्यमेव स्वतंत्र रहेगा।

उन कारणों से हम, वियतनाम—अंतरिम सरकार के सदस्य दुनिया का बता देना चाहते हैं कि आज्ञानी वियतनाम का जन्मदिन अधिकार है। वास्तव में अब वह एक मुक्त एवं स्वतंत्र देश बन चुका है।

हम दुनिया को यह भी बता देना चाहते हैं कि वियतनाम की जनता अपनी आज्ञानी को बनाय रखने के लिए दृढ़ प्रतिन है और अपनी स्वतन्त्रता की रक्षा के लिए वह बड़ी बुर्बानी करने के लिए तयार है।

2 सितम्बर, 1945

हस्ताक्षर (राष्ट्रपति) हो ची मिन्ह तथा अन्य सदस्य

• •

जेनेवा-सम्मेलन का अन्तिम घोषणा-पत्र

21 जुलाई 1954

(जून 16 से जुलाई 21 1954 कम्बोडिया प्रजातान्त्रिक वियतनामी गणतंत्र प्राय लाओस चीनी गणतन्त्र वियतनाम राज्य गमाजवाणी सोवियत संघ गणराज्य ब्रिटेन संयुक्त राज्य अमराका व प्रतिनिधियों का हिंद चीन कम्बोडिया लाओस तथा वियतनाम म युद्ध विराम तथा शांति की स्थापना व उद्देश्य से एक सम्मेलन हुआ था।

इसका घोषणा-पत्र जेनेवा सम्मेलन 1954 का नाम से विख्यात है। इस सम्मेलन के अनुसार उपस्थित राष्ट्रों ने सिद्धान्तरूपण कम्बोडिया लाओस तथा वियतनाम तीन देशों की स्वतंत्र इकाइयों की मान्यता दी तथा उन्हें अन्तर्राष्ट्रीय गुटबन्दी से तटस्थ रहकर अपना विकास करने का मौका देने का आश्वासन दिया। वियतनाम को उत्तर व दक्षिण के दो प्रांतों (देशों या राष्ट्रों में नहीं) में अस्थायी रूप से 17वीं समानान्तर रेखा पर विभाजित किया गया। 1956 में एक आम चुनाव द्वारा उत्तर दक्षिण को एक संयुक्त शासन के अंतर्गत एक इकाई के सिद्धान्त को मान्यता दी गयी थी।

किंतु दीर्घ बीया फू में कंगरी हार खाने के बाद फ्रांस की सरकार जहाँ समझौते के साथ वियतनाम और हिंद चीन के उपनिवेशों को छोड़ने के लिए तत्पर थी अमरीकियों के इरादों के कुछ और थे। अमरीकी प्रतिनिधि ने सम्मेलन के घोषणा-पत्र को नहीं स्वीकारा। उसकी कठपुतली वियतनाम राज्य (सगाव) सरकार ने भी जेनेवा सम्मेलन के सिद्धान्तों की अवहेलना का दखल अनायास।

जेनेवा-सम्मेलन की इस घोषणा से फ्रांसीसी साम्राज्य का जहाँ हिंद चीन में

अन्त हुआ वहा युद्धात्मक इतिहास के एक बड़े अध्याय की भी समाप्ति हुई। किन्तु अमरीकी सनिकवाद तथा साम्राज्यवादिया न जेनवा सम्मेलन के मिद्धाता को कुचलकर हिन्द चीन म युद्ध व अयावारी का एक नया अध्याय जोडा।)

(1) यह सम्मेलन उन समझौता का नोट करता है जिनके अन्तगत कम्बोडिया लाओम और वियतनाम म युद्ध-समाप्ति, जोर समझौत व ममविण का कार्याचित करने हेतु अन्तर्राष्ट्रीय कटोल व पर्यवर्णन की व्यवस्था की गयी है।

(2) यह सम्मेलन, कम्बोडिया, लाओस व वियतनाम म युद्ध-समाप्ति पर मतोप प्रकट करता है। सम्मेलन यह विश्वास करता है कि यदि इस घोषणा की धाराओ तथा युद्ध-समाप्ति के समझौते की शर्तों को नियाचित किया गया तो भविष्य म कम्बोडिया, लाओस व वियतनाम अपनी स्वतन्त्रता व प्रभुमत्ता का बनाय रख सकेंगे तथा शांतिपूण राष्ठा के बीच अपना उचित यागदान दे सकेंगे।

(3) यह सम्मेलन कम्बोडिया व लाओस सरकारा की इस धापणा को नोट करता है कि व अपन अपन देश के हर नागरिक को राष्ट्रीय जीवन का जग बनकर रहन देन के उपाय करेंगे, विशेषकर सबकी मून (बेमिक) स्वतन्त्रता की रक्षा की जायगी और उन सबको गुप्त मनदान द्वारा आम चुनाव म अभिव्यक्ति का अधिकार होगा जो कि उन देशा व विधानानुसार 1956 क साल म किये जायेंगे।

(4) यह सम्मेलन वियतनाम म युद्ध-समाप्ति समझौते की उन धाराओ को नाट करता है कि वियतनाम म विदेशी मन्त्राओ, सनिक कायकत्ताओ तथा हर प्रकार के सनिक शस्त्रास्त्रो के प्रवेश पर पात्र दी लगायी गयी है।

(5) यह सम्मेलन युद्ध-समाप्ति समझौते की उन धाराओ को नाट करता है जिनक अन्तगत वियतनाम म लडाई बंद हुई और जिनम कहा गया है कि— काई भी विदेशा सरकार अपन सनिक अड्डे वियतनाम क किमी भाग (उत्तर, दक्षिणी क्षेत्र) म जहाँ कि ए त्त्रा ने अपने पुन मगठन के क्षेत्र स्थापित किय हैं— नही बनायगी। ना ही य मोना दल अपने दा (उत्तर-दक्षिण) क्षेत्रो का किमी सनिक गुट का भाग या अड्डा बनायेंगे ना ही वे अपने क्षत्रो को पुनयुद्ध की तथा तथा कि का किसी प्रकार की युद्धात्मक नाति के लिए इस्तमाल होने देंगे।

(6) यह सम्मेलन स्थावार करता है कि वियतनाम म युद्ध-समाप्ति समझौते का मुख्य उद्देश्य वियतनाम म लडाई खतम करना तथा सनिक समस्या का

डिया, लाओस और वियतनाम से अपने सम्बन्धों में उक्त देशों की प्रभुसत्ता, स्वतंत्रता, एकता तथा भौगोलिक सीमाओं की जक्षुण्णता का आदर करेंगे तथा उनके आंतरिक मामलों में हस्तक्षेप से बचेंगे।

(13) इस सम्मेलन के सदस्य राष्ट्र स्वीकार करते हैं कि अंतर्राष्ट्रीय सुपरवाइजरी कमीशन द्वारा भेजी गयी किसी भी समस्या पर वे आपस में एक दूसरे से सलाह-मशवरा करेंगे ताकि कम्बोडिया, लाओस और वियतनाम में हुए युद्ध समाप्ति समझौते को सफल बनाने सम्बन्धी आवश्यकताओं को समझा जा सके।

जेनेवा 21 जुलाई, 1954।

• •

लाओस सम्बन्धी जेनेवा घोषणा 1962 के कुछ अंश

लाओस में शांति स्थापना के एक अन्तर्राष्ट्रीय सम्मेलन हुआ। 23 जुलाई 1962 को 13 राष्ट्रों ने जिनमें संयुक्त राज्य अमेरिका उत्तर वियतनाम तथा दक्षिण वियतनाम भी सम्मिलित थे एक घोषणा-पत्र पर हस्ताक्षर किए जिसके मुख्य अंश निम्न थे

1

(भाग लेनेवाले राष्ट्र) सजीवों के साथ घोषणा करते हैं कि लाओस राज्य की सरकार व जनता की इच्छा का आदर करते हुए लाओस की प्रभुसत्ता स्वतन्त्रता तटस्थता, एकता तथा सीमाओं की अक्षुण्णता को स्वीकारते हैं और हर प्रकार से इनकी प्रतिष्ठा बनाये रखेंगे।

2

व वचनबद्ध हैं विनाशपूर्ण निम्न बातों के लिए

(क) वे किसी भी रूप में ऐसी कारवाइयें न करेंगे जिससे प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप में लाओस की प्रभुसत्ता स्वतन्त्रता तटस्थता एकता किंवा सीमाओं को किसी प्रकार का आघात पहुँचे।

(ख) वे कोई सैनिक कारवाइयें न करेंगे। ना ही शक्ति प्रयोग की धमकी या कारवाइयें और ऐसा कदम उठावेंगे जिससे कि लाओस में शान्ति का खतरा पहुँचे।

(ग) वे लाओस के घरेलू सम्बन्धों में प्रत्यक्ष-अप्रत्यक्ष हर प्रकार के हस्तक्षेप से बचेंगे।

(घ) लाओस को दी गयी किसी प्रकार की सहायता पर कोई राजनीतिक शर्त नहीं लगावेंगे।

(च) वे लाओस को किसी प्रकार के सैनिक गुट में शामिल नहीं करेंगे ना ही किसी ऐसे समन्वय में जिससे कि उनकी तटस्थता को धक्का पहुँचे।

(घ) व लाओस की इस इच्छा को मायता देंग कि वह किसी भी सनिक गुट की सुरक्षा नही चाहता, सीटा गुट भी एसा ही एक गुट है।

(ज) वे किसी भी विदेशी सनिक अथवा सनिक कायकर्ताआ को किसी भी रूप म लाओस म नही भेजेंगे जीर नही उह गुप्त रूप मे घुसान का कोड पड्यत्र रखेंगे ना ही एसी किसी कारवाई म भागीदार बनगें।

(झ) व कोई विदेशी सनिक अडडा नही बनायेंगे अडडे या किसी प्रकार की सनिक शक्ति को बढावा देने की काशिश नही करग, ना ही बैसा करने के पडयन्त्रो का रचगे न एसे किसी पत्रयत्र म भागीदार बनेंगे।

(ण) वे किसी और देश के घरेलू मामलो म हस्तक्षेप करने क लिए लाओस की भूमि का प्रयोग नही करेंगे।

(फ) व लाओस के घरेलू मामलो मे हस्तक्षेप करने हेतु अपनी अथवा किसी अय देश की भूमि का प्रयोग नही करेंगे।

3

व जय सभी राष्ट्रो मे जपीन करते है कि व भी लाओस की प्रभुसत्ता, स्वतन्त्रता तटस्थता तथा एकता एव सीमाओ की अभुणता को मायता द जीर कोई ऐसा काम न करे जिनम इनका क्षति हा अथवा जोकि इस घोषणा के मिद्धाता के विपरीत हो।

लाओस मे अमरीकी हस्तक्षेप का कैलेण्डर

जुलाई 21 1954 जेनेवा सम्मेलन म एक समझौते के अंतगत हिंद चीन युद्ध समाप्त हुआ और लाओस कम्वाडिया और वियतनाम—तीन स्वतंत्र एव तटस्थ देश स्थापित हुए।

सयुक्त राज्य अमरीका न सम्मेलन की घोषणाआ का जादर करन का आश्वा मन तो दिया किन्तु हस्ताक्षर करन से इन्कार किया।

दिसम्बर 31, 1960 लाओस की मिली-जुली सरकार भग हुई और वाममध्य-क्षिणपथी दना म शक्ति परीक्षण मघप आरम्भ हुआ।

प्रेसिडेंट आइडजनआवर न घोषणा की कि हम लाओस को साम्यवाद के चगुल म नगे जाने के गवत पिर चाह हम युद्ध ही क्या न करना हो।

अप्रैल 19 1961 प्रेसिडेंट कनेडी न 300 अमरीकी सनिक मलाह्वारा का दस्ता लाओम भेजने की अनुमति ली। बाद म 300 और सनिक भेज गय।

जुला 23 1962 अमरीका न 12 अय दगो क साथ जनवा म एक समझौते पर हस्ताक्षर किय जिनम लाओस की तटस्थता का मायता दी गयी थी। बाद म लाओम स्थित 600 अमरीकी सनिक वापस बुला लन की घोषणा की गयी।

जुलाई 1962 1963 के जेनवा समझौते क बाद एक ओर 600 सनिक का

मनिक 20 000 दक्षिण वियतनामी भाडे के फौजिया न लाओस के दक्षिणी भागा पर हमला किया है।

यह हमला अमरीकी सनिक ब्रमान के मतानुमार लाओम स्थित उत्तरी वियतनाम के रसद के अड्डा को खत्म करना तथा उनकी रसद के 'हो ची मिह' दुर्भेद्य जंगली रास्ता को मिटाना था।

फरवरी 8 लाओस की वामपंथी सरकार 'पयेटलाओ' ने सोवियत सघ और ब्रिटेन से अमरीकी द्वारा लाओस पर किये गये हमले का रक्वाने के लिए गुरत कदम उठाने की अपील की है।

चीन, साविमत सघ फ्रान्स, भारत आदि बडे देश ने अमरीकी आक्रमण की कटु आलोचना की। राष्ट्र सघ के महामन्त्री ऊयात ने कहा "दक्षिण वियतनाम की सेनाआने अमरीकी वायुसेना की सहायता से लाओस पर हमला बोल दिया है। इससे 1962 के जेनेवा सम्मेलिते की हत्या की गयी है और क्रूर व सन्वे हिन्द चीन के बबर युद्धात्मक इतिहास म एक और घार निन्दनीय घटना है।

• •

पृथ्वी पर अमरीका की सैनिक स्थिति के आँकड़े

(क) एशिया 1968-69

दक्षिण वियतनाम	5 60 000	सैनिक
दक्षिण कोरिया	60 000	सैनिक
थाईलैण्ड	75 000	सैनिक
फिलीपीन	35 000	सैनिक
जोर्जिया	35 000	सैनिक
ग्वाम	35 000	सैनिक
जापान	36 000	सैनिक
प्रशांत महासागर	2 25 000	
7व जगी बेडे पर	50 000	
	<hr/>	
	11 11 000	सैनिक

(ख) यूरोप

पश्चिमी जर्मनी	2 25 000
पश्चिमी बर्लिन	5 000
इटली	10 000
स्पेन	25 000
फ्रान्स	15 000
ब्रिटेन	35 000
आइसलैण्ड	5 000
ग्रानलैण्ड	6 000
ग्रीस (यूनान)	25 000

अतलातिक महासागर	2,25,000
भूमध्यसागर	35 000
यूरोप मे कुल	<u>6 16 000</u>

(ग)

अमरीकी महाद्वीपीय क्षेत्र	
संयुक्त राज्यअमरीका	17,20 027
डोमिनिकनरिपब्लिक	8 000
वरिबियन समुद्र	10 000
	<u>17 38,027</u>

(क)	11,11 000
(ख)	6,16 000
(ग)	17,38 027
	<u>34 65 027</u>

इनने अतिरिक्त टर्की आस्ट्रिया ग्रीस पुतगाल तथा दक्षिणी अमरीका तथा दक्षिण अफ्रीका रोडेशिया जादि स गुप्त सनिक संधियो के अतगत कितने और सनिक अडडे कहा कहा है ये तथ्य सरकारी रहस्य है।

• •

पृथ्वी पर अमरीका की सैनिक स्थिति के आँकड़े

(क) एशिया 1968-69

दक्षिण वियतनाम	5 60 000	सैनिक
दक्षिण कोरिया	60 000	सैनिक
थाईलैण्ड	75 000	सैनिक
फिलीपीन	35 000	सैनिक
आरिनावा	35 000	सैनिक
ग्नाम	35 000	सैनिक
जापान	36 000	सैनिक
प्रशांत महासागर	2 25 000	
7व जमी बट्ट पर	50 000	
	<hr/>	
	11 11 000	सैनिक

(ख) यूरोप

पश्चिमी जर्मनी	2 25 000
पश्चिमी बर्लिन	5 000
एस्ट्रिया	10 000
ग्नाम	25 000
फ्रांस	15 000
इटली	35 000
ऑस्ट्रिया	5 000
दानिया	6 000
साम (यूनान)	25 000

अतलांतिक महासागर	2,25 000
भूमध्यसागर	35,000
यूरोप म कुल	<u>6,16,000</u>

(ग)

अमरीकी महाद्वीपीय क्षेत्र	
मयुक्न राज्यअमरीका	17,20 027
डामिनिकनरिपब्लिक	8 000
वरिबियन समुद्र	10 000
	<u>17 38,027</u>

(क)	11 11,000
(ख)	6 16 000
(ग)	17 38 027
	<u>34 65 027</u>

इनक जतिरिक्त टर्की आस्ट्रेनिया ग्रीस, पुतगाल तथा दक्षिणी अमरीका तथा दक्षिण अफ्रीका राटेशिया आदि से गुप्त सनिक सघिया के अतगत कितने और सनिक अच्डे कहा-वहाँ है य तथ्य सरकारी रहस्य हैं ।

• •

अमरीकी युद्ध-नीति हिन्द चीन और अमरीकी जीवन पर दुष्प्रभाव

हिन्द चीन में अमरीकी आक्रमण में बेघरवार हुए शरणार्थियों की सन्ध्या	
दक्षिण विषयनाम	13 000 00 000
नाओम	7 50 000
कम्बोडिया	10 00 000

—पूपाक टाइम्स अप्रैल 21 1971

30 अप्रैल 1971 का कम्बोडिया पर अमरीकी सीधे हमले से वार्ड 5 00 000 शरणार्थी जोर बने हैं और 9 फरवरी 1972 में उत्तरी विषयनाम पर भयंकर बमबारी का जोर और प्रसिद्धि निष्पन्न के हृत्तम पर शुरू हुआ है उभय वार्ड 10 00 000 में अधिक लागत का जोर उद्घटन का अनुमान है।

- (2) कम्बोडिया पर अमरीकी हमले के बाद वहाँ की 80 000 की छाती-नी पीठ का ज्वरवाशिंगटन में 2 50 000 कर दिया है और इतना बगी गंगा का माता गुरु के दर्शन का भार अमरीका उठा रहा है।
- (3) द्वितीय गंगायुद्ध में जापान जोर जमनी पर कुद मित्रावर वार्ड 60 00 000 टन बम बरमाय गया है। जर्मि विषयनाम के राष्ट्रे-म रण पर 1 80 00 000 टन बम बरमाय का शुरू है। जाति मित्रावर गंगायुद्ध की बमबारी में निम्नता है।
- (4) विषयनाम का औसत आय है 50 डॉलर प्रतिव्यक्ति और एक जाम अमरीका का औसत आय 50 डॉलर प्रति मन्वत्। अमरीका का युद्ध व्यय है 10 00 000 डॉलर प्रति घण्टा। एक विषयनाम का माता पर अमरीका का खर्च होता है 4 00 000 डॉलर प्रति मन्वत्ता त्रिमय वार्ड 8 000 विषयनामिका का पूरे एक मात की रात्रा का जा सकता है।
- (5) बमा की सन्ध में पचास गिनका करण 1 00 00 000 में ग्याग्य वार्डे विषयनाम की घटना पर ग्याग्य का शुरू है।
- (6) वार्डिंग युद्ध के 3^म साल में 17 000 टन बम विगार रण पर। द्वितीय

160 + विषयनाम का विषयनाम-मध्य

महायुद्ध के दौरान यूरोप और अफ्रीका में 48,000 टन। केवल मार्च 1966 के महीने में 50,000 टन वम उत्तरी वियतनाम पर गिराये गये और हिन्द चीन पर 61,000 टन।

—थी मकनमारा (अप्रैल 20, 1966)

तत्कालीन अमरीकी रक्षा सचिव

127,000 बगमील के क्षेत्र और 2,50,00,000 की आबादी के अनुपात से श्मका अथ होता है—प्रति बगमील के क्षेत्र पर 5 टन और हर 40 व्यक्तियों के लिए 1 टन वम गिराये गये। 1966 और 1972 के बीच यह वमवारी कोई पांच गुना बढ़ गयी है।

अमरीकी इतिहास में सबसे पहला और अरुणा देश है जिसने परमाणु शक्ति का युद्धात्मक प्रयोग किया है। लेकिन हीरोशिमा और नागासाकी पर एटम बम गिराने के बाद से पदा हुए अमरीकी बच्चा न शांति के दिन नहीं देखे हैं। द्वितीय महायुद्ध के बाद कारिया और फिर हिन्द चीन और वियतनाम—अमरीका एशिया भूमि पर 1941 से बराबर लड़ता आ रहा है। अमरीकिया को जहाँ तक याद आता है वह लड़त ही रहें हैं। सन 1964 में जा बच्च 6 साल के रहें हुए—उहान तब में जब तक लड़ाई बबरता खून यातनाएँ उजड़े हुए जगल और गाव अधजती नाशा के डर तथा व वात की सच्च्युरशन वमवारिया के चित्त और वणन पर र्ध और मुन ह। अमरीका की फिल्मों में टेलिविजन के पर्नों पर व पत्र पत्रिकाओं में—कोई 54,000 से अधिक बार।

परमाणु युद्ध की विभीषिका की अनिश्चिन्ता और अमरीकी परम्परा की हिंसामय प्रवृत्तियों का उनके जीवन की वर्तमान वास्तविकताओं ने इतना तर्कचोर किया है कि अमरीकी जीवन के भौतिक सुख उठे अब अभिशाप लपन लग ह। उनके सामने इन निरन्तर चलते चले जानेवाले लक्ष्यहीन युद्धों के कारण स्वयं अमरीकी राष्ट्र के जीवन मृत्यु के प्रति अनास्था पदा हो चली है। विश्वासहीन व पृथ्वी है— अमरीका क्या है? हम जीवें तो किमलिए? हम क्या है?—हत्याएँ। बबर हमलावर। प्रसिद्ध मनोवैज्ञानिक ममाजशास्त्री माशल मैन्सलूहान का कहना है कि— टेलिविजन से पली (अमरीकी) पीनी का न अपना कोई स्वरूप है और ना ही उनका निजी व्यक्तित्व। इमीलिए एक नये स्वरूप और व्यक्तित्व का पान की तातमा में व भयानक हिंसामय प्रवृत्तियाँ का महारा लेत हें।

स्वयं अमरीका के जन जीवन में जपराधी प्रवृत्तियाँ बढ़ चुकी हैं। और उस राष्ट्र का सत्तुलन नष्टप्राय हुआ दिखनाई पडता है। इतिहासकार उसे शायद वियतनाम का अभिशाप कहेंगे। याकि फिर—वियतनाम और हिन्द चीन का विनाश अमरीका को शांति शांति का एक दूसरा बाहरी रूप है। ••

वियतनाम के राष्ट्रपिता

डॉ० हो ची मिन्ह

(जन्म 1890 मृत्यु 1969)

वियतनाम का स्वातन्त्र्य युद्ध और डॉ० हो ची मिन्ह एक-दूसरे का पर्याय बन गए हैं। और उसका कारण है कि हो ची की जीवनी को वियतनाम की आत्मा और जन जाति में जनम नहीं किया जा सकता। इतिहास में हो का नाम वियतनाम का गाय उसी तरह जड़ा हुआ है जिस तरह कि महात्मा गांधी का भारत का साथ।

हो ची मिन्ह एक साधारण परिवार में वियतनाम का मध्य प्रान्त में एक छोटे से गाँव किम-न्यन में पैदा हुए थे।

उनका पिता कृषक परिवार का था। न्यून परिश्रम से उन्होंने द्वितीय प्राप्ति की

दूरदर्शी थे। लखरू, कवि विचारक, चिन्तक योद्धा, पडयत्नकारी नातिकारी वनी असहायक सहायक जीर जततो गत्वा एक स्वतंत्र राष्ट्र क जमदाता वियतनाम के राष्ट्रपिता थ।

माक्स व रानिन का तत्कालीन मध्यमवित्त जीवन की सुविधाएँ उपलब्ध थी। लेनिन ने स्विट्जरलण्ड के प्रवास का लाभ उठाकर गहरा चिंतन जीर लेखन किया तो माक्स न जमनी से निवाल जाकर इंग्लण्ड म बठकर दास कपिटल लिखा। गादी और जवाहरनाल नेहरू को अंग्रेजा के कदखानो म भी समय व सुविधाएँ प्राप्त हुइ जहा बठकर व अपन विचारा का निख मकत थे। माओत्से तुग यद्यपि साधारण परिवार के थे उह यनान के सुरक्षित क्षत्र म अपन अनुसायिया का सहयोग प्राप्त था। उह मरान का किराया देने की फिन्न हाती थी और कभी भूख रह ता जकेले नही, सभी सायिया के साथ। लेकिन हो ची मिन्ह की जीवनी कठिनाइया स अकेले जूझने की एक लम्बी कहानी है और प्रतीन रूप म वह स्वय वियतनाम की आजादी की लम्बी लड़ाई के अकेलेपन का प्रति निधित्व करती है।

हा ची मिन्ह को विदेशिया के बीच जमींदारीपूण दातावरण म किसी तरह रोजी कमानो पडी। उन दिना वियतनाम म भी ऊँची शिक्षा और धन कमान के लिए 'विनायत जाना भाग्यशाली माना जाता था। लेकिन विदेश जाना केवल रइसा का ही नमीव हाता था। महत्वाकांक्षी हा न एक फ्रच जहाजी कम्पनी म वावर्ची के सहायक की नौकरी कर ली जीर समुद्री मालवाहक जहाज म 1911 म विदेशा का निक्ल पडे। इमी जहाज पर व अफ्रीका दक्षिण अमरीका क बंदरगाहा पर रुक और मधुक्त राज्य अमरीका क पूर्वी तथा पश्चिमी तटा पर भी उतरे। इमी नौकरी मे उह मवम पहली बार गरीब फ्रान्सीसी लोगो म मिलन का मौका मिता जीर उह पता चला कि वियतनाम म जा गारे साहब शापण जीर दमन का राज्य चलाते हैं आम जनता आर निवन फ्रान्सीसी उससे भिन ह। गरीबी का सघप किमी देश व जाति की सीमाएँ नही मानता।

हां ने अमरीका भी देखा जीर पाया कि वहा भी कराडा लोग गरीबी म पिस रहे हैं। अमरीका म खासकर रेट इण्डियन जीर काली जातिया के लोगो की पिछडी हातत और गोरा द्वाग उन पर किय जाते अत्याचारा म युवा हा को गार फ्रान्सीसीया द्वारा अफ्रीकी उपनिवेशो जीर हिन्द चीन म किय जात शोपण व अत्याचारा की प्रतिच्छाया दिखलायी दी। उहने अमरीका और फ्रान्स के सहहारा लोगो की दुदशा पर नेख लिखे जीर निजी जीवन को दैनिक जरूरता के सघप म युवक हो को दुनिया के हर कोने म जूझत असहाय नवयुवका के सघप का अनुभव हुआ। उह पता चला कि गरीबी जीर पूजीवादी शोपण अधव्यवस्था रग और राष्ट्रीय सीमाजा म मुन्कर रहना नही जानती।

हा ची मिह ने विलायत की मर म अंतर्राष्ट्रीय नीवपेन की वास्तविकताया वा निजी अध्ययन किया और उह एहमास हुआ रि वियतनाम की जाजादी की लडाई पश्चिम उपनिवेशवाद और पूजीवाती अथव्यवस्था के खिलाफ जो ध्यापक अंतर्राष्ट्रीय सघप चल रहा है—उमी का एव रूप ह। डा० हा के लेखा म अभीवा मध्य एशिया तथा दक्षिण अमरीका के ेशा मे पश्चिमी साम्राज्यवाद के विरुद्ध सघप का दुनिया के लोगा का याय व मानव अधिकारो का युद्ध माना। उह लगा रि साम्राज्यवाती पूजीवाद के खिलाफ हिंद चीन की लडाई लडने म व अकेल नही हैं—और जत्र वियतनाम की जनता विदेशी जूये और अथ व्यवस्था से मुक्ति युद्ध कर रही है—तो इम प्रयत्न म वह स्वार्थी नही है—वह तो एव अंतर्राष्ट्रीय मुक्ति-सघप है। यत्रि वियतनाम म साम्राज्यवातिया को मात दी जाती है ता उससे अगाला और दक्षिण अमरीका राडेशिया ग्वाटेमाला गयाना पेर और मक्मिको व लोगा के सघप म भी सहायता मिलती है।

पश्चिमी प्रजातांत्रिक पूजीवादी देशा म रग भेद की जा साम्प्रतिक परम्परा चली आयी है एव हद तक धीद्विक दष्टि स साम्राज्यवादी नीतिया का वह भी आधार रही है। पश्चिमी जाका ताआ न सत्त्व यह माना कि गार होन का अथ है श्रेष्ठ और भगवान न गारी जानिया का अश्वत लोगा पर शासन करन के लिए इस पृथ्वी पर पदा किया है। स्वय हा को पश्चिमी देशा म रग भेद नीतियो का शिकार होना पडा। गारा के प्रजातांत्रिक सम्राज म अश्वत बलड' लोगा को मानवीय स्तर से कुछ कम समया जाता है और हा न उके आदर्शों—मानवीय एकता के उच्च सिद्धांता को दष्टि स ओवल क्रिय बिना पश्चिमी साम्राज्यवाद के इस विपल जाघार का ठीक ठीक समझा। क्याकि 13 वष के बाद स्कूल स निकाले जाकर उहाने दुनिया के विशाल बलासहम म पश्चिमी 'प्रजातंत्र का नग्न रूप स्वय देखा था। उह पश्चिमी प्रजातंत्र से भयकर निराशा हुई क्याकि उपनिवेशा गरीबा और अश्वत जातिया क लिए उसरी वास्तविकता बिल्कुल अप्रजातांत्रिक थी।

प्रथम महायुद्ध की शुरुआत क र्तिना अनव वष समुद्र म खानाबन्गशी करन क वाद नौकरी की तलाश म युवक हा लन्दन पहुचे और हजारों अश्वत गरीब हिट्लरस्तानिया और वस्ट इण्डीज लागी की तरह हाको घकर घान पने। एव गाधारण रमोइय की नौकरी उहें मिली। सदिया म लन्दन के स्कूला के मैताना म वष साफ करन व कुछ अतिश्वित पस कमा गत थ। लरिन राजी कमान और जवानो आन क बीच क महत्त्वपूर्ण साता म उस हानहार की त्रिदगी म क्या कुछ गुजरा हम इमका पना नही। लकिन 25 वष क हान युवक हा लन्दन स परिम चले गय। प्रथम महायुद्ध का अंत हा चुका था और फाम युद्ध की बमवारिया म ध्वस्त था। उम समय लगभग 80 000 वियतनामी जिन अनाम वामी जनामी

कहा जाता था फ्रांस में थे। इनमें से अधिकतर जनता फ्रांस की सुरक्षा बनाम थी और उनकी स्त्रियाँ लड़ाई के सामान बनानेवाली फ़ैक्टोरियों में मजदूरी करती थीं।

चित्तक हो न यहा देखा कि एक फ्रांसीसी साहब जा पीछे हिंद चीन में एशियाई किमाना पर रीव डालता है—यहा वही गोग माहव एक साधारण मजदूर भी है और जमनी की बढती हुई फौजा के सामन वही फ्रांसीसी पराजित भी हो सकता है।

प्रथम महायुद्ध पश्चिम के पूजीवादी साम्राज्यवादी देशों के बीच स्वयं और लालच की लड़ाई थी। प्रजातंत्र व रूसी सिद्धांत की रक्षा की लड़ाई नहीं थी। हाँ के विचारक मन न समझा कि गरीब जातियाँ पश्चिम में सभ्य 'ईसाई' और विज्ञान में बढ़ता हुआ इंसान इतना लालची और खूबवार है कि जब अश्वेत लाग न रहे तो वह आपस में एक दूसरे का गला काटने से भी नहीं झिपकता। यूरोप और पश्चिम एक निधन एशियाई युवक का स्वप्नलाक विलायत हो के लिए अब एक मुखद स्वप्न न होकर वास्तविकता की अपूर्णता बन चुका था।

और इसी समय पश्चिमी देशों में सामाजिक आर्थिक व राजनीतिक उथल-पुथल मच गयी थी। जनता सामंती व राजशाही का नष्ट कर सामाजिक न्याय व शासन व्यवस्था में नातिकारी परिवर्तन को उतावली थी। रूस में लेनिन के नेतृत्व में शक्ति सफल हो चुकी थी और जर्मन साम्राज्य के खिलाफ क्रान्ति के लान झण्टे चारा आरफहरा रहे थे। अमरीका में हजारा लोगों का सरकार उलटने के पड्यत्त के मन्हेह में देश निकाला दिया गया और नजरबंद कर लिया गया था। मजदूरों के नेता साको तथा वजती को झूठे आरोप लगाकर फौसी पर चढा दिया गया था और इन बातों के पूरे आसार दिखलायी पडत थे कि स्वयं फ्रांस में समाजवादी शक्तियाँ भाकमवादी अर्थ-व्यवस्था को त्रियावित करने ही वाली हैं।

यूरोप की समाजवादी पार्टियों में उपनिवेश के लागे के प्रति समानता की नीति अपनाने का भाकमवादी आग्रह था। इसीलिए विशेषकर फ्रांस और ब्रिटेन की समाजवादी पार्टियों में उनके उपनिवेशों के राजनयिक कायकताओं का आलाननो में प्रमुखता में शामिल करने की नीति रही थी। श्री जवाहरलाल नेहरू और कृष्ण मेनन का ब्रिटिश लेबर पार्टी का काफी समर्थन मिला था और फ्रांस में एक उत्साही अनामी युवक टा को वहाँ की समाजवादी पार्टी ने राजनीति में आगे बढ़ने का अवसर दिया।

फ्रांस के समाजवादी आंदोलन में मजिरी भाग लेने के बावजूद युवक हाँ के भी अपनी राष्ट्रीय पुवार का जनमुना न कर सके। उनकी जीवनी में एमा लगता है कि मानो किमी ऐम साधन की तनाश में हाँ जिसमें वियतनाम का मुक्ति

दिला मक । लखिन समाजवाद्या स निगश हावर व 'अतराष्ट्रीय साम्यवादी जा दालन की जोर झुके । किंतु वे चाहे किसी भी दल या विचार क समय रह हा अपनी जनता की आजादी उह कचोटती रहा । अतराष्ट्रीय कम्युनिस्ट सम्मेलना म उनके भाषण पश्चिमी साम्राज्यवाद के विरोध पर केन्द्रित होते थ । अपन राजनीतिक आंदोलना के समय हो न जनक नाम वाले किंतु प्रत्येक का अभिप्राय देशभक्ति स भरा था ।

उनका सबसे अधिक प्रचलित नाम था 'यूयन आई क्वोन' । 'यूयन वियत नाम का एक आम नाम है जोर आम जनता स सम्बन्ध का दानर । आई क्वोन —का अर्थ है दशभक्ति यानी कि जिस दश सप्यार हो । 'यूयन उनका पारिवारिक नाम भी था जोर बाल्यकाल म उनका नाम रखा गया था 'यूयन यत याह । 1920 म हा ने एक और नाम स लेख लिख थे जोर वह था 'यूयन जो फप जिसका मतलब होता है । 'यूयन जिस फ्रांसीसिया स घणा है ।

डा० हा की मिह का चिंतन और व्यक्तित्व स्वतंत्रताप्रिय था । उह अपन राष्ट्र जोर दूसर दलित देशा की स्वतंत्रता म ही प्यार न था किंतु विचारा की स्वतंत्रता से भी । 1930 के बाद क वर्षों म और द्वितीय महायुद्ध के दौरान अंतराष्ट्रीय साम्यवादी आंदोलना का 1935 जुलाई अगस्त म हुए 7वे कमिंटम सम्मेलन न, यूरोप जर्मनी और इटली के फासिस्टो और जापान क खिलाफ एक संयुक्त माचा तयार करन का आदेश दिया था । जोर स्टालिन क निर्देश म उपनिवेशा की कम्युनिस्ट पार्टिया का मित्रराष्ट्रा की साम्राज्यवादी सरकारा स सहयोग करन का हुक्म मिला था । लेकिन हो की मिह ने हि द चीन जोर उप निवेशा की जनता की आजादी के सवाल को प्रमुखता दी जाने की नीति अपनायी । 1940 45 के बीच जहाँ उहोने जापान के विरुद्ध मित्र राष्ट्रा का साथ दिया वहाँ वियतनाम क राष्ट्रीय मोरचे वियतमिह का कभी कमजोर न पड़न दिया । जोर जाजम क चीन क बीच सद्भावितक मन मुटाव म भी वियतनाम न जिस स्वतंत्रता का परिचय दिया है वह इसका सबूत है कि हा की नीतिया म उनका स्वतंत्रताप्रिय व्यक्तित्व झलकता है ।

हा की मिह क जीवन म एक महान उगात्ता पायी जाती है—जाकि उनकी भीतरी मरुचाइ जोर निर्भरिता का प्रतीक है । उनका जीवन बड़ा साधा, निडर और गंयनिष्ठ था । साधगी की तुलना म जोर 'व्यक्तित्व की उगारता म उनकी तुलना गांधीजी म की जा सकती है अन्तर कवल स्टाइल का था । जहाँ गांधी जी का निवाम अक्मर अमीर मित्र-मास्त्रिा और ठक्करा क यहाँ टाना था—हा की मिह का रन बमरा गरीब किमाना और मजदूरा क यहाँ होता था ।

18 अगस्त 1956 का राष्ट्रपति हा की मिह न डमाकृत्रिक रिफिनिश जाफ वियतनाम क रडिया स्तान म राष्ट्र क नाम एक भाषण म खुन रूप म स्वीकारा

कि 'उनकी सरकार और पार्टी की सटल कमटी न भूमि-मुधार नीतियां म अनुभवशून्यता व कारण बड़ी भारी भूलों की हैं। और य व दिन थ जबकि स्वय उत्तरी वियतनाम के विमान साम्यवादी गुधारा म अशांत हो उठे थे।

17 जुना, 1966 का जत्रकि अमरावी वमजार वियननाम पर दिन रात हमल कर रह थ राष्ट्रपति हान राष्ट्र व नाम एक स-दश ब्राडकास्ट करत हुए वहा था कि 'सयुक्त राज्य अमरीका उत्तरी वियतनाम के हर शहर-बस्त्र का मिता देगा।' उम ममय त्रबकि दुश्मन के जहाज वम बरसा रहे हा, एमी घापणा स जनता म आतक छान की पूरी सम्भावना थी। लकिन हा अपनी जनता स सच्चाई नहा छुपा सरत थे। उमी ब्राडकास्ट म उहनि यह भी एलान किया कि "युद्ध के जल्दी घटम हान व जासार नही लिघायी दत और 5 10 और 20 मान तक लडाई चल मक्ती है।

साम्यवाणी और गर साम्यवादी विस्ता देश व मुखिया म इतना गहरा जात्मविश्वास और इतनी जन निष्ठा नही लिघायी देता जो एमा छुला सत्य बान सर। गर साम्यवाणी देशा म लूठे वायदे करके वाट प्राप्त किय जाते हे ता साम्यवादो देशा म मन्च झूठे आँकड़े दकर सागा को बुद्धू बनाया जाना है। कि-तु हो जनता स डरत न थ। वे तो स्वय जनता के थे, जनता के लिए थे और जनता पर थ। इमीलिए उहें जनता का प्रेम, विश्वास और अटूट थद्धा प्राप्त थी।

उनके मन म किसी के प्रति शत्रुता या बदल की भावना न थी। जब फ्रांस की सनाआ ने हजारो वियतनामी देशमक्ता का कल किया तत्र भी राष्ट्रपति हान फ्रांससिया व प्रति मित्रता और क्षमा की नीति अपनायी। सन 1946 म उहान एक आदश म कहा (स्वतन्त्रता व युद्ध म लडत हुए) सनिका नागरिक सुरक्षा गड, स्वयसवका अध-सनिका तथा देश व तीना भागा म युद्धगत दशमक्ता को डेमोश्रेटिक रिपब्लिक आफ वियतनाम की सरकार की जोर स में हूकम देता हें कि—

(1) अगर फ्रांसीसी फौजें हम पर हमला करें ता हर सम्भव हथियार स उनका मुकाबना किया जाय। सारी वियतनाम जनता को पितृभूमि की रक्षा के लिए समुक्त हाकर रहना है।

(2) हर एक विदेशी की जो हमार बीच रह रहे ह की जान मान का रक्षा करनी चाहिए और युद्ध-बदिद्या के साथ मानवाचिन व्यवहार करना चाहिए।

हो ची मिह

दिसम्बर 21 1946।

प्रगिडण्ट हा न 7 जनवरी, 1947 को फ्रांस की सरकार नेशनल एम्बली और फ्रांसीसी जनता के नाम एक सदश म वियतनाम की मत्रीपूण भावना का दुहरात हुए कहा था

वियतनाम की जनता और सरकार की आर स म पूरी मजींगी क साथ यह घोषणा करता हूँ कि—

(1) वियतनाम की जनता फ्रांस और उनके लाग क खिलाफ नहीं लड रही ह । वियतनाम की जनता अब भी फ्रांस और फ्रांसीसिया क प्रति मित्रता और प्रशसा की भावना रखती है । और—

(2) वियतनाम की जनता सजीदगी और समानता क आधार पर भाइया की तरह फ्रांस की जनता क साथ सहयोग करना चाहती है ।

(3) वियतनाम की जनता फ्रांसीसी यूनिया (फ्रांस क उपनिवेश क कामनवेल्थ) का भाग बने रहकर अपनी राष्ट्रीय स्वतंत्रता और एकता बनाय रखना चाहती है ।

(4) वियतनाम की जनता कवल शांति चाहती है । सच्ची शांति जिसस कि वह ईमानदार फ्रांसीसी मित्रा के सहयोग स अपन राष्ट्र का विकास एव निर्माण कर सके ।

(5) वियतनाम की जनता फ्रांस क आर्थिक क सांस्कृतिक हिता का वियतनाम म सुरक्षा की क केवन गारण्टी देती है—कल्कि दाना देशा के हिता म उनके विकास क लिए भी प्रयत्न करेगी ।

हमारे बहुत से गाँव और शहर नष्ट कर डाल गय ह हजारों वियतनामी स्त्रिया कच्चे क बूडो की हवाई हमला और तोपा की मार स मौत क घाट उतार दिया गया है । बहुत-से फ्रांसीसी और वियतनामी सनिक मारे गय है और घायल हुए है । विनाश पर विनाश फल रहा ह और पून की नदियाँ बहा दी गयी हैं । हम फ्रांस की सरकार क जनता स कवल एक भाग करत हैं—वियतनाम की आजादी और एकता की मांगता । वियतनाम और फ्रांस की मैत्री जिन्दाबाद ।

डा० हा क जीवन म एक महामानव और सत सरीस उंचे विचारा का ध्यकित्व था । जहाँ एक ओर उनका बाहरी रूप बडा ही सादा कामल दुमला-पतला तथा मट्ट निश्चल आश्वस्त प्रम क आदर का भाव उत्पन करता था—जिस कारण वियतनाम की कोटि-कोटि जनता उह प्यार म चाचा हा पुकारती थी, वहीं उमी तीन-गन एशियाई किमान क दुमन शरीर म छुपा था एक लौह पुष्प,

पौलानी प्रातिवारी की वीर दुषप आत्मा । सस्कृत की यह उक्ति कि महात्माओं का चित्त "वज्रादपि कठारानि मृदूनि कुसुमादपि" (वज्र से भी कठोर और फूल से भी कामल होता है) — चाचा हा के चरित्र पर शत प्रतिशत सही उतरती थी ।

1945-46 के बीच जबकि फ्रांसीसी सनायास वियतमिंह की लड़ाई चल रही थी और फ्रांसीसी विदेशी फौजें तरह-तरह के अत्याचार कर रही थी डा० हा ची मिन्ह ने अपने देशवासियों से एक अपील की वहाँ था

जहाँ तक फ्रांसीसी युद्धबन्धियों का गवान है हम बड़ी मावधानी बरतनी चाहिए कि वे भाग न जावें बल्कि इमके साथ ही हम उनको प्रति उदारता से वर्ताव करना चाहिए । हम दुनिया की विशेषकर फ्रांस की जनता को दिखा देना है कि हम बस स्वतंत्रता और मुक्ति के लिए लड़ रहे हैं । हम किसी में निजी शत्रुता और मामुटाव के लिए नहीं लड़ रहे हैं ।

हम सारी दुनिया को दिखा देना है कि हम (वियतनामी) लाग एनी बुद्धिमान जाति के लोग हैं जाकि पश्चिमी खूबवार हमलावरों से कहीं ज्यादा सम्पन्न हैं ।
(मिनम्बर 26 1945)

5 अप्रैल, 1948 का प्रेसिडेंट हा ची मिन्ह ने वियतनाम की आजादी की लड़ाई में विदेशियों और जन-जीवन के शत्रुओं के लिए हानिकारक तत्त्वा के विरुद्ध सघन में लगे मिनियों, स्वयंसेवकों और दशभक्ता का बारह मुझाव नामक एक आदेश जारी किया था जिसमें छ नकारात्मक नियम थे जोकि सतिका का नही करने चाहिए और छ विधि नियम जिन्हें करना चाहिए । इस मुझाव पत्र का अंत एक कविता से हुआ है । चाचा हा ची मिन्ह की यह एक विशेषता थी कि वे कविता से लोगो को दिना में राज किया करते थे ।

बारह मुझाव

राष्ट्र की शक्ति का आधार जनता हानी है ।

आजादी की लड़ाई और राष्ट्रीय पुनर्निर्माण जनता के सहयोग पर निर्भर करते हैं । इसलिए हमारे सैनिकों, सरकारी बाबुओं और राष्ट्रीय संगठना के सभी कार्यकर्ताओं को जो आम जनता के बीच रहते हैं याकि उनके सम्पर्क में आते हैं निम्न बारह मुझावों को भली प्रकार पालन करना चाहिए ।

छ नकारात्मक नियम

(1) मत करा—वाई एसा कम जिससे जनता की चीजा और उनके मकाना

कायुक्तता पर ध्यान देना और भी अधिक प्रचार करना है।

(2) मासिकी—यह उधार का कार्य तथा भीड़-भाड़ का व्यवस्थापन मासिकी के माध्यम से करना है।

(3) मासिकी—जिसे मुद्रा के माध्यम से आर्थिक व्यवस्थापन के माध्यम से (यथासंभव उच्च अनुभव प्राप्त है)

(4) मतदान का।

(5) मत अपमान करना—जनता के विश्वास और रुढ़ रिवाजों का (जैसे कि पूजा के देवता के सामने सतना चूल्हा पर पाँव रखना बुरा के सामने अभद्रता से बहना आदि)।

(6) मत वालों के उधार के माध्यम से मतदान की प्रतीति जनता के भावनाओं का ठस पहुँच।

छ विधि नियम

(1) जनता के दैनिक कामों में हाथ बटाना चाहिए (जैसे कि फल काटना जगल से लकड़ियाँ ढोना पानी लाना कपड़े सीना बच्चा की देखभाल करना आदि)।

(2) जब सम्भव हो दूर गाँवों में बस लाना के लिए मण्डियाँ से जल्दी सामान खरीदकर ले जाना चाहिए। (जैसे कि नमक तेल सूई धागा चाबू कागज पेंसिल आदि)।

(3) फुरसत के समय ग्रामीणों का मीठी-सानी रोचक छोटो-छोटो एमी कहाँ नियाँ सुनानी चाहिए जिसे 'आजादी की लड़ाई में उनका सहयोग बढ़े लेकिन कहानियों में हमारे युद्ध-याचना के रहस्य न खुलने पायें।

(4) जनता को हमारी राष्ट्रीय लिपि और स्वास्थ्य-मफाइ के नियम पढ़ाने चाहिए।

(5) हर प्रश्न के रीति रिवाजों को समझना चाहिए ताकि उस शत्रु के साथ के साथ पहले महानुभूतिपरक वातावरण तैयार किया जा सके और फिर धीरे-धीरे उनके अधविश्वासों से छुटकारा पाने के लिए उन्हें तैयार किया जा सके।

(6) जनता को इस बात का एहसास करा दना चाहिए कि तुम्हारा व्यवहार उचित है, तुम अपने कर्तव्य में सजग हो और अनुशासननिष्ठ हो।

प्रेरणादायक कविता (स्मरणार्थ)

ऐस हैं ये वारह नियम
जिनका पालन बहुत सरल
जगर तुम्हें है प्यार वतन से
याद रहग ये तुम्हें स्वयंम।
जिनकी आदत एक सरीखी
वे बँध जाते एक मूल में।
सफलता उनके चरण चूमती
जिनका जनता मच्ची
और सैनिक महान।

गहरी जड़ के पड़ ही होते हैं ऊँचे, चिरजीवी
देश की जय के मूनस्तम्भ जन जन महान ॥

(अंग्रेजी से हिंदी भावानुवाद—श्याम विमल)

हिंद चीन में साम्राज्यवाद का अन्त तथा वहाँ की जनता का उज्ज्वल भविष्य वहाँ की माघना में ही मिह का सारा जीवन लगा। विमान की झापड़ी में 19 मई 1890 का मध्य विपतनाम में जिन बालक का जन्म हुआ था वही यूयन थत थान्ह परिश्रम और लगन से अपने राष्ट्र और दुनिया के सबहारा बग की मुक्ति के लिए कोई 70 वर्ष निरंतर लड़ता रहा। विश्व जन जाति की प्रेरणा का मसीहा, काटि-काटि जनता का हृदय सम्राट चाचा हैं अपने समय की तीन बड़ी साम्राज्यवादी शक्तियाँ से लड़ा—फ्रांस जापान और अमरीका। संयोग कुछ ऐसा बना कि यूयन थत थान्ह को आजीवन सघप करने पड़े—निजी भूख के खिलाफ, और हिंद चीन की आजादी के दुश्मना के खिलाफ।

3 सितम्बर 1969 का जन्म 80 वर्ष की आयु में उनका देहावसान हुआ वह डेमोक्रेटिक रिपब्लिक आफ विपतनाम का राष्ट्रपति थे और दुनिया की सबसे बड़ी ताकत अमरीका की फौजान उनका देश के दक्षिणी भाग पर कब्जा किया हुआ था। उनका देश पर वमवारियाँ चल रही थी। हाँ की मिह का जीवन सफलता असफलता की गीधी-गी भाषा में नहीं आँका जा सकता। विपतनाम की आजादी की लड़ाई में उनका निवाह हुआ था और दुनिया का हर सबहारा उनका विशाल परिवार का सदस्य था।

हो था जिसके देनाइसात के अवसर पर कहा कि इन श्रुतियों का सम्पूर्ण
विषय था

व उम्मीद विद्यमान है कि यह बात यदि हो सके तो यह कि अन्त में यह बात
सर्वत्र प्रतीक है। उम्मीद और निम्न जाति का। — (5 मार्च
1969) प्रधानमंत्री श्रीमती इन्दिरा गांधी द्वारा दत्तचित्तमि मंत्र

उत्तरी कश्मीर मांगी भारत के प्रति प्रेम सम्बन्ध और
उत्तरी भागों की परिधि के लिए प्रेरणा प्राप्त होगी।

हो तो था कि यह कि शीतल मन्त्र, गुरुमन्त्र और अन्तर्गत का वाक्य
और विचार मांगी और उत्तरी कश्मीर का विचार मांगी वाक्य और कृष्णोक्ति का
सम्बन्ध था।

• •

दार्शनिक वर्ट्रेण्ड रसल की अपील

20वाँ शताब्दी के महान दार्शनिक वर्ट्रेण्ड रसल (1872-1969) न जून 1966 को एक अंतर्राष्ट्रीय 'याय पनल' की स्थापना की जिसके समक्ष अमरीकी प्रेमिडण्ट जानसन तथा अन्य अमरीकी नेताओं पर, द्वितीय महायुद्धापरात हुए नृसम्बन्ध अभियाग का तरफ वियतनाम मे ही रहे युद्ध-अपराधा के लिए मुकदमा चलान की व्यवस्था की गयी। उस अवसर पर रसल ने अमरीकी जनता के नाम एक मन्देश लिखा था जिमके कुछ अंश हैं

अमरीका के नागरिका ! एक ऐसा इमान हान के नात जिस स्वतन्त्रता और सामाजिक 'याय से लगाव है आपमे अपील करता हूँ। आपमे से बहुतो का यह एन्सास हागा कि आपका अपना देश भी इही आदर्शों का हामी है और यह सच भी है कि अमरीका स्वयं एक नातिकारी परम्परा का देश रहा है जिसकी स्थापना मानव स्वतन्त्रता तथा सामाजिक 'याय के लिए हुई थी। जफमोस यही है कि आज उही आदर्शों की हत्या—अमरीका के कुछ थोडे म शासक कर रहे है।

आपको यह भती प्रकार नात नही है कि किस हद तक आपके देश का जीवन घाड-मे उद्यागपतिया के चगुन मे है—और जिनकी शक्ति अमरीका के नुनिया पर आर्थिक विस्तार मे निहित है।

यद्यपि अमरीकी जनसंख्या विश्व का केवन 6 प्रतिशत है—इस पथ्वी के 60 प्रतिशत मे अधिक् प्राकृतिक सम्पदा व स्रोता पर इसका अधिकार है। इस ग्रह के खनिज पदार्थों तथा इमकी सम्पदा पर बहुत घाडे-म अमरीकी उद्यागपतिया ने कजा जमाया हुआ है। मैं चाहता हूँ कि आप अपने ही नेताओं व वक्ताओं का भली प्रकार समर्थे जिनमे उन द्वारा किये गये शापण का रहस्य खुलता है।

20 जनवरी 1956 को 'न्यूयार्क टाइम्स' ने लिखा था

वियतनाम एक कीमती चीज है जिमके लिए बाजी खेली जा सकती है। इससे उत्तरी भाग मे टीन मैग्नीज टंगस्टोन कायला इमारती लकड़ी चावन

की जनता पर कम निदयता में अत्याचार किये हैं। जहरीली गस व रासायनिक पदार्थ तथा जली गैसानीन व फास्फोरस व बमों में सम्पूर्ण वियतनाम को भस्ती नाबूद किया जा रहा है। क्या किसी भी तक में एम विनाश का उचित ठहराया जा सकता है? यद्यपि अमरीकी समाचार पत्र इन गसा और रासायनिक पदार्थों के बारे में झूठ बोलते हैं—इनके सहा रूप और प्रभाव के बारे में जो प्रमाण उपलब्ध हैं—वे बड़े ही भयंकर हैं। नेपाम और फामपोरम बमों की जाग शरीर से चिपट जाती है और तब तब जलाती है जब तक कि सारा का सारा जिम्मे जन वर राख नहीं बन जाता। अमरीका बड़े भयानक अम्ना का प्रयोग कर रहा है जिनमें एक कहलाता है 'नेजी डाग'—आलसी कुत्ता। इस बम में 10 000 तज छोटी छुरिया रहती है जो कि पैनी छुरी की तरह निरीह किमाना व शरीर को छोटी-छोटी घाम की पत्ती की भाँति काट डालती है। उत्तरी वियतनाम के एक बहु महत्वक जिले पर पिछले 13 महीना में 100 करोड़ से भी ज्यादा—एसी छुरिया नागरिका पर बरसायी गयी है।

अमरीकी अखबार जिसे—'वियतनाम कहते हैं वह वास्तव में बहुत में राष्ट्रीयतावादी राजनीतिक तत्त्वा का एक मित्र जुला मघन है—टीक बमों ही जमाकि यूरोप व सारप्रिय स्वतंत्रता आन्दोलन (द्वितीय महायुद्ध में नामी शासन के विरुद्ध) जिनमें कथालिक ईसाइया में लेकर साम्यवादिया तब मभी एक साथ है। राष्ट्रीय मुक्ति आन्दोलन (नगनन निवर्गन फ्रण्ट) का वियतनामी जनता का अडिग ममथन प्राप्त है। इस वास्तविकता में कम कोइ जाख मूद सकता है। क्या आपका पता है कि 70 लाख वियतनामियों को कैंटिनार तारा व नजबन्ती कम्पा में मगीना व बन वद कर उनमें मजदूरी करवायी गयी? क्या आपका मान्य है कि इन कम्पा में भयंकर याननाएँ दी गयी। राजनीतिज्ञा, व आन्दोलनकारिया सम्भ्रा त नागरिका और ग्रीड भिन्नुजा का निमम हत्याएँ की गयी।—और यह मत्र कुछ चलता है अमरीकी सरकार के इशारा पर? क्या आपको पता है कि—जहरीली गसा और रासायनिक तत्त्वा के छिडकाव में जो पिछले पाँच साला से निरंतर किया जाता रहा है—वहा के ग्रामीणा में जो घापन लक्षुवा और म मक्कर निश्चित मात की विभीषका छा गयी है? कम्पना कीजिये उम दुदशा की जबकि कोई विदेशी सेना आपके देश पर 12 साला से अधिकार जमाय हो और बराबर अमरीका की धरता पर गोले बरसा रही हो? तब आपका क्या लगेगा—अगर कोई विदेशी आपका 'यूपाक' शिवांग तास एजनिम सेष्ट दुदसे नगरा पर फास्फोरस तथा लेजी डाग बमों की मयतर बमवारी में पिछा डाले? तब आप क्या बंगे यदि वह विदेशी सेना आपके हर गात्र-वस्त्र में धुमकर जहरीली गसा व रासायनिक तत्त्वा का फनाव। क्या आप मचमुच यह मानते हैं कि अमरीकी जनता एमे अत्याचारी आनाता का स्वागत

सक्ती जो वास्तव में उन लोगों पर शासन करते हैं।

शक्ति के ऐसे केन्द्रीयकरण की वजह से स्वयं पेंटागान तथा बड़े औद्योगिक संस्थान के लिए यह अनिवाय हो जाता है कि वे शस्त्रास्त्रों के निर्माण की होड़ बनाये रखें। ये बड़े-बड़े औद्योगिक संस्थान बड़े-बड़े सैनिक ठेका से छोटी कम्पनियाँ की छोटे छोटे ठेक देती हैं और इस प्रकार युद्धपरक ठेका से अमरीका के हर शहर, कस्बे में उद्योग धंधे चलते हैं और इस प्रकार करोड़ों लोगों की राजी पर इसका असर पड़ता है। 40 लाख से अधिक लोग अमरीकी सेना विभाग से राजी करते हैं जिनका कुल बतन एक अरब बीस करोड़ डालर बनता है। यह अमरीका का मोटर उद्योग (जो दुनिया में सबसे बड़ा है) के कुल बतन व्यय का दुगुना है।

इसके अतिरिक्त और चालीस लाख व्यक्ति सीधे शस्त्रास्त्रों के कारखानों में काम करते हैं। अनेक शहरों के उद्योग धंधों का 80 प्रतिशत सैनिक उत्पादन है और अमरीका के कुल राष्ट्रीय उत्पादन का 50 प्रतिशत मेना पर खर्च किया जाता है। इस विशाल सैनिक व्यवस्था ने इस धरती पर 3 000 सैनिक अड्डों का एक विशाल जाल बिछाया हुआ है। और इसका उद्देश्य केवल वही एक है जिस प्रेमिडेंट आइजनहावर, विदेश मंत्रालय के सलाहकार तथा 'यूनाइटेड टाइम्स' के उद्धरणों से मैं ऊपर जापका बता आया हूँ। वियतनाम से लेकर डोमिनियन रिपब्लिक, मध्यपूर्व से कागो तक कुछ एक बड़े व्यापार संस्थानों का हिता को अक्षुण्ण बनाये रखना। और यही संस्थान है जो सैनिक उत्पादन के ठेकों से चल रहे हैं और सेना विभाग का स्वयं अमरीकी जन-जीवन का भाग्य विधाता बना हुआ है। यही हैं वे वगैरे और व्यक्ति जिनकी आत्मा पर अमरीका भूखी व असहाय मानवता पर हमले करता है और उन्हें दासता में जकड़ता है।

विजय सत्य की होती है

इन सबके बावजूद कि अमरीका भयानक रूपेण धनी है बावजूद इसके कि वह पृथ्वी का 6 प्रतिशत हिस्से हुए भी धरती के दो तिहाई नसर्गिक पदार्थ सम्पदा स्रोतों पर अधिकार जमाय हुए हैं बावजूद इसके कि दुनिया का तेल खर टगस्टान, कोराल्ट, कच्चा लोहा तथा अन्य खनिज पदार्थों पर इनका कब्जा है बावजूद इसके कि छोड़े-से अमरीकी व्यापार संस्थान दुनिया में कोटि-कॉटि जनता का भूखा भारत जल्दा का मुनाफा कमा रहे हैं— इन सबके बावजूद स्वयं संयुक्त राज्य अमरीका के 6 करोड़ 60 लाख नागरिक गरीबी की चक्की में पिस रहे हैं। अमरीका के शहर कंगाला की झुग्गियाँ (स्लम्स) से भरे हुए हैं। इन गरीबों पर लदा हुआ है—युद्धों के कारण का भार जिन्होंने वृत्त साम्राज्यवादी मुद्धों और नये आक्रमण विय जाते हैं। मैं आप सबसे अपील करता हूँ कि आप इनका बौद्धिक विश्लेषण करें और देखें कि किस तरह आपके चारों ओर होनेवाली दैनिक

जीवन की घटनाओं का आपसी सम्बन्ध क्या है। साक्ष्य है कि किस प्रकार हम सैनिक औद्योगिक व्यवस्था ने अमरीकी जन जीवन पर हावी होकर उसकी प्रगतिवादी राष्ट्रीय व्यवस्था को एक विश्व साम्राज्य के उपकरण में बदल डाला है।

तीन महाद्वीपों की निधन जनता अमरीकी की इसी विशाल सैनिक व्यवस्था को, उसने औद्योगिक संस्थानों तथा उनकी गुप्तचर एजेंसियों को—जपनी भूख और कठिनाइयों का स्रोत और जन-जीवन का सबसे बड़ा शत्रु मानती है।

विदेशों की ऐसी सरकार जो अमरीकी सैनिक सहायता पर जीवित हैं अनिवाय रूप से हमें जमींदारों और बड़े पूँजीपतियों का ही समर्थन करनेवाले शासन हैं और सच्चाई है कि ब्राजील में परम वेनजुएला में थाईलैंड में दक्षिण कोरिया में जापान में और दुनिया के हर हिस्से में यही वास्तविकता है। इसका परिणाम यह होता है कि एक राष्ट्रीय शक्ति को कुचलने के लिए जसा कि वियतनाम में हो रहा है अमरीकी का वे ही हथकण्डे जपाने पड़ते हैं जो कि जापानियों ने दक्षिण-पूर्वी एशिया में अपनाये थे। यह अक्षरशः सत्य है।

दक्षिण वियतनाम में नजरबंदी कम्पा में 60 प्रतिशत ग्रामीण जनता को बंद करके उनकी भयंकर यातनाएँ दी जाती हैं उन्हें सताया जाता है और बहुतों की सामूहिक हत्याएँ की जाती हैं। नये-नये शस्त्रास्त्रों—गसस जेली-बम्ब आदि का प्रयोग वहाँ किया जा रहा है जो द्वितीय महायुद्ध में नात्सियों द्वारा इस्तेमाल किये गये किसी जघन्य हथियार से कहीं अधिक भयानक हैं। हालांकि यह सच है कि जिस प्रकार जर्मन नात्सियों ने व्यवस्थापूर्वक यहूदियों का जाति संहार किया था वसा अमरीकी नहीं कर रहे। परन्तु जर्मनों ने पूर्वी यूरोपीय देशों पर जस घणित जुल्म दिये थे उन्हें अमरीकी वियतनाम में दोहरा चुके हैं कई हजार गुना पमाने पर और इस निपुणता से कि वे कहीं अधिक भयानक और कहीं ज्यादा प्रभावशाली हैं।

अन्तर्राष्ट्रीय संधियों की हत्या

एसे सभी अन्तर्राष्ट्रीय समझौतों की अवहेलना करके जिन पर अमरीकी राष्ट्रपतियों ने हस्ताक्षर किये और जिन्हें अमरीकी कांग्रेस (संसद) ने अनुमोदित किया जानसन् की सरकार ने युद्धकालीन अपराध किये हैं मानव जाति के खिलाफ जुल्म किये हैं और शांति की हत्या की है। जानसन् शासन ने ये सब अपराध इसलिए किये हैं क्योंकि अमरीकी शासन का अस्तित्व वहाँ के पूँजीवादियों द्वारा दूसरों के आर्थिक शोषण को बनाय रखने तथा दूसरों पर अमरीकी सैनिक प्रभुसत्ता करने के निमित्त है। सेण्टल इन्डिपेंडेंस एजेंसी (सी० आई० ए०) जिसका बजट विश्व में अमरीकी दूतावासों के कुल खर्च का 15 गुना है अथवा दशों की सरकारों का तख्ता पलटन तथा अथवा देशों के अधिकांशों की हत्या के पडपत्र में

सगा हुआ है। सी० आई० ए० की षमी जघन्य हरकत का उद्देश्य उन लोगों के राजनयिक सघटन तथा नेतृत्व को नष्ट करना है जोकि अमरीका के आर्थिक व राजनीतिक पदे से छूटने की कोशिश कर रहे हैं।

अमरीकी सनिकवाद सडे गले पूजीवाद से पथक नहीं किया जा सकता जिसन स्वयं अमरीकी जनता को हमारे युग की भयकर निधनत के स्तर पर ला खडा किया है। और इही अनिवाय कारणा से वियतनाम पर कहीं बडे पमान पर धवर एव दानवीय अत्याचार किय जा रहे हैं।

अंतर्राष्ट्रीय न्यायालय

मैंने दुनिया के बुद्धिजीविया तथा प्रसिद्ध स्वतन्त्र चिंतका से अपील करके एक ऐसे अंतर्राष्ट्रीय युद्ध-अपराध-न्यायालय (टिब्यूनल) की स्थापना की ह जिसके सामने अमरीकी सरकार द्वारा वियतनाम म किय गये जुल्मा के प्रमाण प्रस्तुत किये जायेंगे।

आपको ध्यान होगा कि उन जमना को—जिहाने अपनी सरकार की नीति से सहमति की थी याकि उसकी वस्तुता को स्वीकारा था—युद्धकालीन अपराधा का दोषी माना गया था। जमना की इस दनील को कि उहे गम की भट्टिया का नजरबंदी कम्पा का उनम दी गई यातनाआ और अगभग किय जाने का पता तो था लेकिन व उह रोक्ने म अममथ थे—किसी न जमना को क्षमा करने का पर्याप्त कारण नहीं माना।

अमरीकियो अपनी मानवीयता को याद करो

मैं आपसे एक इसान के नाते दूसर इसान से अपील करता हूँ। याद करो अपनी मानवीयता को और स्वयं के आत्म-सम्मान को। वियतनामी जनता के विरुद्ध छेडा गया यह युद्ध बबरतामय है। यह दूसरा के अधिकार का हडपने की भावना से प्रेरित एक हमलावर युद्ध है। अमरीकी स्वातन्त्र्य-युद्ध के समय (1776) किसी को यह बनान की जरूरत नहीं थी कि वह किस उद्देश्य के लिए लड रहे हैं ना ही किसी को जबरदस्ती भरती करना पडता था और ना ही अमरीकी फोजिया को 10 000 मील दूर किसी अय देश की भूमि पर जाकर लडना होता था। स्वातन्त्र्य युद्ध के उन दिना म अमरीकी सनिका ने खेता और जगला म फटे टाट पहनकर अपन समय की सबसे शक्तिशाली विदेशी सेनाआ के दात खट्टे किय थे। हालांकि अमरीकी गरीब और भूख थे—उनका मुकाबला था साम्राज्यवादी सेनाआ से जिनसे उहाने हर घर-द्वार पर लडाई लडी थी।

उस मुक्ति युद्ध म लडनेवाले अमरीकी शान्तिकारिया का अग्रेजा की साम्राज्यवादी सरकार ने जातकवाणी व बगावती के फलके लिय थे। अमरीका के

राष्ट्रीय वीरा को नाथन हेल व पेटिक हेनरी सरीगा के यचना से प्रेरणा मिलती थी। "मुझे मुक्ति दो, या मौत जमी उद्दात्त भावनाएँ उापी भावना सोंत थी। ठीक ऐसी ही भावनाएँ वियतनाम की जनता को अमरीकी आक्रमण व अधिकार के खिलाफ लड़ने मरने को प्रोत्साहित करती हैं।

वियतनाम के नाथन हेल एव पेटिक हनरी अमरीकी पौजा म नहीं हैं। राष्ट्र भक्ति, वीरता और याय, आजादी म अटूट विश्वास—भायता के इन गुणान 1776 म अमरीकी जनता को प्रेरित किया था, आज व वियतनामी जन-जीवन की प्रेरणा हैं और इसलिए ये राष्ट्रीय मुक्ति मोरचे के नातिकारी नतत्व म स्वतंत्रता सग्राम म जूझ रहे हैं। और थोड़े-से लोग जो न केवल वियतनामिया को बल्कि स्वयं अमरीकी जनता का शोषण कर रहे हैं—अमरीका के युवकों को तोपा का बाहूद बनाने को तयार है।

ये अमरीकी ही हैं जोकि वियतनामिया की हत्या कर रहे हैं, उनके गावा पर हमले कर रहे हैं शहरा पर खेता पर बन्जा किये हुए हैं। जहरीली गसा व रासायन फला रहे हैं। वियतनाम के स्कूला व हस्पताला पर बमबारियाँ कर रहे हैं। और नशसताजा का उद्देश्य अमरीकी पूजीवाद के मुनाफे को बनाये रखना है। अनिवाय सनिक भर्ती क जादेश बही अधिकारी देते हैं जो अपन ही लाभ हेतु उडे वडे सनिक ठेका के आडर देते हैं। य ही हैं वे जा बडी-बडी कम्पनिया के चौकी दार की भाँति नौजवाना को वियतनाम म लडन भेजते हैं—और चोरी व शोषण क मुनाफे की दौलत को सुरभित बनाये रखना चाहते हैं।

अमरीका मे क्रांति की आवश्यकता

इस प्रकार आजादी व प्रजातन्त्र के लिए वास्तविक सघप तो स्वयं अमरीका के भीतर होना है जहाँ कि कुछ स्वार्थी वर्गों ने अमरीकी समाज को हथिया लिया है।

मुझे इसम रत्तीभर भी स देह नहीं कि यदि कोई विदेशी कभी अमरीका पर आक्रमण कर और यत्नशाओ और जुल्मा का ताँता बाध दे, जैसाकि अमरीकी सरकार व सेना न वियतनाम म किया है तो अमरीका की जनता का जवाब बसा ही हागा जसाकि वियतनाम की जनता न अमरीकी सेना व सरकार के जुल्मा के खिलाफ दिया है।

शांति आन्दोलन

अमरीका के शांति आन्दोलन ने विश्वभर म मुद्ध विरोधी भावना का बनाव दिया है। व्यक्ति-स्वातन्त्र्य एव सामाजिक याय के प्रति अमरीकी सहानुभूति का बबलमात्र प्रतिनिधित्व इसी आन्दोलन म सिधायी देता है। स्वातन्त्र्य

युद्ध की रणभूमि तो वास्तव में स्वयं वाशिंगटन में है—जहाँ कि युद्धात्मक जुलम करने के दापी जॉनसन, रस्क, भक्तनमारा बठने हैं—जिन्होंने अमरीका के अमरीकी जनता के नाम की बदनाम किया है। यही है वे अपराधी जिन्होंने अमरीका का उसकी जनता से छीनकर अपवित्र कर डाला है और आज दुनिया के लोगो का उस महान देश के नाम से सडक की बू आती है।

यह एक कटु सत्य है। लेकिन ऐसा सत्य है जिसका निरंतर व जट्ट प्रभाव अमरीकी जन-जीवन पर पड़े बिना रह नहीं सकता। इस सच्चाई से मुह छुपाया नहीं जा सकता। इससे इनकार नहीं किया जा सकता कि युद्धात्मक अपराध नहीं है कि जहरीली गसा और रासायनिक का इस्तमाल नहीं हो रहा या कि यत्रणाएँ व नेपाभा में निशस्त्र निरीह स्त्री-बच्चे नहीं सताये जा रहे और नि अमरीकी मरिक् व अमरीकी बमवार वियतनाम के वीर ग्रामीणा के। हजारों की सख्या में बत्ले आम नहीं कर रहे। यदि साहस के साथ तथ्या को निरीक्षण करके अयाय का विरोध न किया गया तो उसमें आपकी मानवता के गव को धक्का पहुंचेगा। अब तो केवल एक ही उपाय है अमरीकी जनता का स्वयं ही उन अत्याचारियों के चंगुल से छुटकारा पाना होगा जोकि उस महान देश की जनता के प्रतिनिधि के रूप में उनकी कीर्ति का बलुपित कर रहे हैं। आशा की विरण इसी में छुपी है कि अब अमरीकी जनता भी जाग रही है और वियतनामियों की तरह ही दृढता व साहस के साथ शांति के समथन में उग्र हाती जा रही है। वाटस हालत तथा अमरीका के दक्षिणी राज्यो में काली जाति के (नीग्रो) लोगो का सघप अमरीकी छात्रा का विद्रोह और इस घणित युद्ध के प्रति आम जनता में बढ़ता हुआ रोप सम्पूर्ण मानव जाति के लिए आशा का मम्बल है। क्रूर व लालची अब और अधिक दिन अमरीकी राष्ट्र को धोखा देकर उसकी शक्ति का दुम्पयोग नहीं कर पायेंगे।

मुझे इस बात का पूरा एहसास है कि अमरीका के शासकों ने प्रापेण्डे के हर साधना को प्रयोग में लाकर शासकों के गद रूप को तथा उनके नियम व्यवहार की सच्चाइया को अमरीकी जनता में छुपाने का भरसक प्रयत्न किया है। अब्राहम लिंकन ने इस मिद्धान्त की घोषणा की थी कि जब जनता जाग जाती है तब कोई शक्ति उसे धोखा नहीं दे सकती। मैं उन सब अमरीकनो से अपील करता हूँ जिन्हें वियतनाम में हो रहे जुल्मा का स्वयं अनुभव है—(क्याकि वे सनिच की हैसियत से लड़ चुके हैं)—या कि जिन्होंने अपन मित्र-मम्ब्विधिया से तथ्या को सुना है—कि यह समय है कि वे सामाजिक आबों। विश्व के हर भाग में फले हुए युद्ध विरोधी आन्दोलन में लग अपने भाइया का साथ दें और सच्चाई की प्रकाश में लावें। आपका सघप स्वयं अमरीका को विनाश के शम्त्रास्त्रा के निर्माण से मुक्त करना है हत्यारा और युद्ध-अपराधियों से बचाना है शोषण से मुक्ति मिलानी है और

औपनिवेशिक जन जाति के प्रति घृणा व हीन भावना से अमराता का निमुक्ता करना है। य लोग अमरीका के जन-माधारण की जार आस लगाय हैं कि आप उनकी कठिनाइया को समझ सकेंगे और आप उनसे सघष में अपना योग स्वयं अमरीका में सुधार द्वारा व्यक्ति-स्वान्त्य एवं सामाजिक शांति की पुन स्थापना स देग। अंतर्राष्ट्रीय मुद्ध अपराध ट्रिबूनल इस सघष में अमरीकी जनता के प्रयत्ना का ही एक दूसरा रूप है।

इस ट्रिबूनल में हम विषयनाम में किध भय अत्याचारा का खुला चिट्ठा सप्रमाण प्रस्तुत करव एउ सभी अंतर्राष्ट्रीय प्रतिनिधा पत्र करना चाहग जिसस कि फिर कभी किसी और भूभाग में ऐसे अमानवीय वृत्त्य न किय जा सके।

• •

ऐतिहासिक तिथियाँ

1450 हिन्द चीन में स्पेनिश, पुतमाली और यूरोपीय इसाई मिशनरियाँ व्यापारियाँ और सैनिकों का पहला आगमन।

1858-1884 फ्रांसीसी सेनाओं का हिन्द चीन पर आक्रमण कोचीन चीन, कम्बोडिया अनाम लाओस पर कब्जा।

1940 जापान का आक्रमण फ्रांस की वीची सरकार के आदेश पर स्थानीय फ्रांसीसियों द्वारा बिना युद्ध शक्ति हस्तांतरण शुरू के वर्षों में फ्रांसीसी अधिकारियों द्वारा जापानी शासन चलाया।

1941 वियतनामी देशभक्ता द्वारा साम्यवादी नेता हो ची मिन्ह के नेतृत्व में राष्ट्रीय कांग्रेस वियतमिन्ह की स्थापना। वियतमिन्ह की राष्ट्रीय सेना द्वारा गुरिल्ला युद्ध द्वारा जापानी शासन का खिलाफ संघर्ष।

9 अगस्त, 1945 हीरोशिमा नागासाकी पर एटम बम। जापान का बिना शर्त आत्मसमर्पण।

2 सितम्बर, 1945 डा० हो ची मिन्ह द्वारा स्वतंत्र वियतनाम गणतंत्र की घोषणा इण्डोनेशिया में डा० मुक्ता द्वारा हालण्ड के विरुद्ध स्वातन्त्र्य-युद्ध।

8 मार्च 1946 फ्रांस द्वारा वियतनामी गणतंत्र को मान्यता और फ्रांसीसी सेनाओं के पाँच वर्षों में हटा लेने का समझौता।

नवम्बर 1946 फ्रांस की सेनाओं द्वारा हायफांग और हनोई पर अचानक हमला फ्रांस हिन्द चीन युद्ध का पुनरारम्भ।

6 जनवरी 1947 वियतनाम गणतंत्र की राष्ट्रीय सभ का पहला आम चुनाव जिसमें हो ची मिन्ह की मिली-जुली राष्ट्रीय पार्टी का 300 में से 230 सीटें प्राप्त हुई।

13 फरवरी 1947 फ्रान्स के प्रधान मंत्री पाल रेमेदियर ने 6 मार्च 1946 के समझौते से मुश्किलों का एलान किया।

15 अगस्त, 1947 श्री जवाहरलाल नेहरू द्वारा भारत की स्वतन्त्रता की

घोषणा और भारत-पाकिस्तान विभाजन ।

1949 चीन म माओत्स तुंग की जन शक्ति की विजय जीर पराजित च्यांग काई शेक का अमरीकी सहायता से फारमोसा द्वीप पर बग्जा ।

1950 (क) जनवरा 1950, सोवियत सघ और चीन द्वारा लोकतन्त्रा वियतनाम गणतन्त्र को भायता प्रदान ।

(ख) स्वतन्त्र इण्डोनेशियाई गणतन्त्र की स्थापना और डा० सुरण राष्ट्रपति चुने गय ।

(ग) अमरीका द्वारा फ्रान्स को वियतमिंह व विम्ड सनिक सहायता की घोषणा ।

(घ) जून 1950 कोरिया म गहयुद्ध और अमरीका द्वारा सनिक कारवाई ।

27 जुलाई 1953 कोरिया म युद्ध विराम समझौता ।

1954 (क) मार्च 7 12 दीर्घा वीयाफू वियतनाम म फ्रांस की सनाआ द्वारा, वियतनामी जनरल वो यूयन जियेप की फौजा के सामने आत्मसमर्पण ।

(ख) मई जौलाई जेनेवा सम्मेलन लाओस, कम्बोडिया व वियतनाम का पूण स्वतन्त्रता व तटस्थता की घोषणा । तथा वियतनाम मे 17वीं समाजातर रेखा पर युद्ध विराम एव उत्तर-दक्षिण वियतनाम का 1956 व चुनाव तक अस्थायी विभाजन ।

(ग) अमरीका द्वारा दक्षिण-पूर्वी एशिया सुरक्षा (सनिक)संधि सीटो सगठन की स्थापना ।

1955 (क) बद्दुग इण्डोनेशिया मे अफ्रीका व एशिया के स्वतन्त्र देशो का पश्चिमी उपनिवेशवाद व आपसी समस्याओ पर प्रथम अफेशियाई बद्दुग का फ्रांस ।

(ख) सी० आई० ए० (अमरीका) की सहायता से 'गो दिह डियेम का वियतनाम क दक्षिण भाग का प्रेसिडेण्ट बनना ।

(ग) अमरीकी सनिक सलाहकार महायता ग्रुप माग द्वारा दक्षिण वियतनाम मे सनिक ट्रेनिंग शुरू ।

(घ) प्रधान मन्त्री डियेम द्वारा उत्तरी वियतनाम का 1956 म होने वाले चुनाव व्यवस्था सम्बन्धी वार्ता का निमन्त्रण अस्वीकार ।

(च) डियेम द्वारा राजा वा ओ दाई का पदच्युत करके स्वयं प्रेसिडेण्ट बनन की घोषणा ।

1956 प्रेसिडेण्ट आइजनहावर और प्रेसिडेण्ट डियेम द्वारा जेनेवा सम्मेलन म स्वीकृत चुनाव करवाने से इन्कार ।

1957 मलयशिया सघ स्वतन्त्र हुआ ।

1959 (क) जन नातिकारी 'पयट लाओ' दल न लाओस म भूमि सुधार आन्दोलन छेडा ।

(ख) दक्षिण अमरीका, क्यूबा मे जन नातिकारी शक्तिया द्वारा अमरीकी समर्थित बतीरता की आततायी सरकार का पतन और अमरीका म गहरी प्रतिक्रिया ।

1960 20 दिसम्बर 1960 को अमरीकी उपनिवेशवाद और उसकी बठपुतली डियेम की डिक्टेटरशाही से मुक्त कराने के लिए दक्षिण वियतनामी बौद्धो ममाजवादिवा और साम्यवादी देशभक्ता द्वारा मिलकर एक संयुक्त राष्ट्रीय मुक्ति मोरचे की स्थापना और उसके सैनिक संगठन 'वियतकांग' द्वारा डियेम विरोधी कारवाई ।

1961 (क) भारत द्वारा पुतगालिया क शासन से गांआ दमन और द्यू की मुक्ति ।

(ख) वियतनाम म अमरीका द्वारा हजारों की सख्या म सैनिक सलाहकार भेजना ।

1963 (क) जून अक्टूबर सगाव विरोधी प्रदर्शन, सात बौद्ध भिक्षु विराध प्रदर्शनाथ जि दा जले डिक्टेटर डियेम की हत्या और सगांव शासन का पतन (नवम्बर) ।

(ख) उदारवादी प्रेसिडेण्ट कनेडी की टक्सेस म हत्या कर दी गई (23 अगस्त) ।

1964 (क) चीन द्वारा प्रथम सफा परमाणु परीक्षण ।

(ख) फ्रांस द्वारा चीन का भायता ।

(ग) 27 अगस्त 1964 का 7वें जगा वेडे द्वारा उत्तरी वियतनाम पर हमलवार हरकत ।

(घ) अमरीकी कांग्रेस द्वारा टाकिन का खाडी प्रस्ताव पास कर उत्तरी वियतनाम के तथाकथित आक्रमण के प्रतिशोध पर प्रेसिडेण्ट जॉनसन को सैनिक कारवाई का अधिकार ।

1965 (क) 13 फरवरी 1965 अमरीका द्वारा उत्तरी वियतनाम पर भयकर बमबारी शुरू ।

(ख) इण्डोनेशिया म अमरीकी सहायता प्राप्त मनिवा द्वारा डा० सुवण की सरकार का पलटा पलट और करीब 5 00 000 कम्युनिस्ट और गर मुसलमाना का मना द्वारा बत्लेआम ।

(ग) चीन म लाल स्वयमेवकी द्वारा माओत्स तुंग क सिद्धांत पर सांस्कृतिक नाति आन्दोलन की शुरुआत जो 1968 तक चली ।

1966 (क) हनोई हायफांग क्षेत्र पर भयकर बमबारी ।

(ख) श्रीमती इंदिरा गांधी भारत की प्रधान मंत्री बनीं ।

1967 (क) चीन द्वारा उल्जन बम का प्रथम सफल विस्फोट ।

(ख) अमरीका द्वारा सर्गांव में यूयन पान थ्यू और हवाई कमाण्डर यूयन काओ घो क्रमशः प्रेसिडेंट और वाइस प्रेसिडेंट पदा पर नियुक्ति ।

(ग) अमरीका में युद्ध विरोधी आन्दोलन भड़क ।

1968 (क) जनवरी 30 31 1968 को मुक्ति मोरचे ने टेट प्रयात्रण कर 140 नगर व कस्बों को अमरीकी शासन से मुक्त कर दिखाया । सर्गांव में अमरीकी दूतावास पर भी कुछ समय तक बरबाद ।

(ख) 1 अप्रैल को जानसन द्वारा दुबारा चुनाव न लड़ने और उत्तर वियतनाम पर बमबारी राक देने की घोषणा । 8 जनवरी 1965 से 1968 तक अमरीका ने 60 00 000 टन से अधिक बम गिराये ।

(ग) 3 अप्रैल उत्तर वियतनाम और राष्ट्रीय मुक्ति मोरचे द्वारा पेरिस में शांति वार्ता में भाग लेना स्वीकार ।

(घ) शांतिवादी मार्टिन लूथर किंग जीर राबर्ट काडी की अमरीका में हत्या ।

1969 (क) रिचर्ड निक्सन अमरीकी प्रेसिडेंट चुने गये 25000 अमरीकी सैनिकों को घर बुलाया ।

(ख) कम्बोडिया में राष्ट्रपति सिहानूक की अनुपस्थिति में उनकी लोकप्रिय तटस्थतावादी सरकार की सी० आई० ए० की सहायता से सैनिक जनरल द्वारा पलटा पलटा ।

(ग) वियतनाम में 1961 से जून 1969 तक अमरीका के 5586 हवाई जहाज मार गिराये गये और पेंटागन के एक वक्तव्यानुसार 1960 में 17 मई 1969 तक दक्षिण वियतनाम के 81 536 सैनिक मारे गये । उत्तरी वियतनाम और राष्ट्रीय मुक्ति मोरचे के 5 06 178 सैनिक शहीद हुए ।

1961 70 के बीच अमरीकी सना के 38 866 सैनिक मारे गये 1,19 376 घायल हुए ।

प्रेसिडेंट निक्सन ने वियतनाम में सैनिकों को सम्बोधित कर कहा इतिहास का यह एक शानदार अध्याय है क्योंकि हमने एक बहुत ही मुश्किल काम उठाया था और उसे पूरा किया है ।

(घ) राष्ट्रपति हो ची मिन्ह का देहावसान (3 सितम्बर 1969) वियतनामियों ने स्वतन्त्रता युद्ध जारी रखने की प्रतिज्ञा दोहराया ।

1970 अप्रैल में निक्सन द्वारा कम्बोडिया में सैनिक भेजने की घोषणा । निक्सन सरकार द्वारा 1971 के मध्य तक अमरीकी सेनायों वियतनाम से हटा लेने का एलान ।

1971 (क) मार्च 1971 पाकिस्तानी डिक्टेटर जनरल याह्या खा द्वारा तात्कालिक पूर्वी बंगाल में हुए प्रथम आम चुनावों में चुने गये जन-नेता मुजीबुररहमान की मांगों को ठुकराया जाना और उन्हें जनात ध्यान पर नजर बंद करना।

(ख) मार्च नवम्बर 1971 पाकिस्तानी फौजा द्वारा बंगाल पर भयंकर दमन 1,00,00,000 शरणार्थियों को भारत में शरण।

(ग) बंगाल की मुक्तिवाहिनी' और भारतीय सेना द्वारा 3 18 दिमम्बर 1971 ढाका को कूच बंगला देश की मुक्ति घोषणा अमरीकी 7वें वेडे के विमानवाहन पोत 'एटरप्राइज' का वियतनाम में हटकर बंगाल की खाड़ी में प्रवेश।

1972 (क) 21 फरवरी 1972 पेरिंग में निक्मन माओ भेंट।

(ख) भारत द्वारा उत्तरी वियतनाम का पूरा कूटनीतिक मायता।

(ग) अप्रैल, 1972 'राष्ट्रीय मुक्ति मारचे' द्वारा ब्वांगली, एनलाक और कोन्तुम की मुक्ति।

(घ) 8 9 मई, मास्को में 21 मई की सरकारी वार्ता के पूर्व निक्मन द्वारा उत्तरी वियतनाम में भयंकर बमबर्षा और नाकेबंदी।

(घ) 10 जून, 1972 अमरीकी बी 52 और जेट बमबारी ने पिछले 48 घण्टों में 500 हवाई हमला में लाल नदी के 29 महत्वपूर्ण बाधा और 32 ऊँची दीवारों का नष्ट करके मानवरचित बाधा से जान माल का भयंकर नुकसान पहुँचाया है। अमरीका के कुल 390 बी 52 विशाल बमबारी में से 200 से अधिक हिंद चीन में बमबारी के लिए भेजे गये हैं और 1968 के टेट प्रयात्रमण के बाद पहली बार सगाव की सुरक्षा के लिए उसके इर्द गिद 25 मील के क्षेत्र में बी 52 विमानों से बमबारियाँ की गयीं।

उत्तरी वियतनाम और वियतनाम की राष्ट्रीय सनाजा ने 6 अप्रैल से शुरू हुई बमबारी के दौरान 135 से अधिक अमरीकी विमान मार गिराये।

जुलाई, 1972

••

(ख) श्रीमती इंदिरा गांधी भारत की प्रधान मंत्री बनीं।

1967 (क) चीन द्वारा उदजन बम का प्रथम सफल विस्फोट।

(ख) अमरीका द्वारा सर्गांव में यूयन पाण्डू और हवाई कमाण्डर यूयन काओ ची क्रमशः प्रेसिडेंट और वाइस प्रेसिडेंट पदा पर नियुक्ति।

(ग) अमरीका में युद्ध विरोधी आन्दोलन भड़के।

1968 (क) जनवरी 30 31 1968 का मुक्ति मोर्चे ने टट प्रत्याक्रमण कर 140 नगर व कस्बों को अमरीकी शासन से मुक्त कर दिया। सर्गांव में अमरीकी दूतावास पर भी कुछ समय तक कब्जा।

(ख) 1 अप्रैल का जानसन द्वारा दुबारा चुनाव न लड़ने और उत्तर वियतनाम पर बमबारी बंद करने की घोषणा। 8 जनवरी 1965 से 1968 तक अमरीका ने 60 00 000 टन से अधिक बम गिराये।

(ग) 3 अप्रैल उत्तर वियतनाम और राष्ट्रीय मुक्ति मोर्चे द्वारा पेरिस में शांति वार्ता में भाग लेना स्वीकार।

(घ) शांतिवादी मार्टिन लूथर किंग और राष्ट्र बन्दी की अमरीका में हत्या।

1969 (क) रिचर्ड निक्सन अमरीकी प्रेसिडेंट चुने गये, 25000 अमरीकी सैनिकों को घर बुलाया।

(ख) कम्बोडिया में राष्ट्रपति सिहानुक की अनुपस्थिति में उनकी लोकप्रिय तटस्थतावादी सरकार की सी० आई० ए० की सहायता से सैनिक जनरल द्वारा पलट पलट।

(ग) वियतनाम में 1961 से जून 1969 तक अमरीका ने 5586 हवाई जहाज मार गिराये गये और पेटागान के एक बन्दरगाहनुसार 1960 से 17 मई 1969 तक दक्षिण वियतनाम के 81 536 सैनिक मारे गये। उत्तरी वियतनाम और राष्ट्रीय मुक्ति मोर्चे के 5 06 178 सैनिक शहीद हुए।

1961 70 के बीच अमरीकी सेना के 38 866 सैनिक मारे गये, 1,19 376 घायल हुए।

प्रेसिडेंट निक्सन ने वियतनाम में सैनिकों को सम्बोधित कर कहा इतिहास का यह एक शानदार अध्याय है क्योंकि हमने एक बहुत ही मुश्किल काम उठाया था और उसे पूरा किया है।

(घ) राष्ट्रपति हो ची मिन्ह का गिरावट (3 सितम्बर 1969) वियतनामियों ने स्वतन्त्रता युद्ध जारी रखने की प्रतिज्ञा दोहरायी।

1970 अप्रैल में निक्सन द्वारा कम्बोडिया में सैनिक भेजने की घोषणा। निक्सन सरकार द्वारा 1971 के मध्य तक अमरीकी सेनाओं वियतनाम से हटा लेने का एलान।

1971 (क) मार्च 1971 पाकिस्तानी डिक्टेटर जनरल याह्या ख़ां द्वारा तात्कालिक पूर्वी बंगाल में हुए प्रथम आम चुनावों में चुन गये जन-नता मुजाबुररहमान की माया का ठुकराया जाना और उन्हें अनात स्थान पर नजर-बंद करना।

(ख) मार्च-नवम्बर 1971 पाकिस्तानी फौजा द्वारा बंगाल पर भयंकर दमन 1 00 00 000 शरणार्थियों को भारत में शरण।

(ग) बंगाल की 'मुक्तिवाहिनी' और भारतीय सेना द्वारा 3 18 नवम्बर 1971 छात्रों को कूच बंगला देश की मुक्ति घोषणा, अमरीकी 7वें बड़े के विमानबाहक पोत 'एट्रप्रान्ज' का वियतनाम में हटकर बंगाल की खाड़ी में प्रवेश।

1972 (क) 21 फरवरी, 1972 पेरिंग में निकमन माओ बैठें।

(ख) भारत द्वारा उत्तरी वियतनाम का पूण कूटनयिक मायता।

(ग) अप्रैल, 1972 'राष्ट्रीय मुक्ति मोर्चे' द्वारा बवागत्री एनलाक और बान्गुम की मुक्ति।

(घ) 8 9 मई, मास्का में 21 मई की सरकारी बाता के पूर्व निकमन द्वारा उत्तरी वियतनाम में भयंकर प्रमवपा और ताकेवदी।

(घ) 10 जून, 1972 अमरीकी बी 52 और जेट बमबारा ने पिछले 48 घण्टा में 500 हवाई हमला में बाल नगी व 29 महत्वपूर्ण बाधा और 32 ऊंची दीशारा का नष्ट करके मानवरचित बाल में जान-माल को भयंकर नुकसान पहुँचाया है। अमरीकी व कुल 390 बी 52 विशाल बमबारा में से 200 से अधिक हिन्द चीन में बमबारी के लिए भेजे गये हैं और 1968 के टेक प्रयाक्रमण के बाद पहली बार सगाव की सुरक्षा के लिए उमक 27 गिद 25 मील व क्षेत्र में बी 52 विमानों से बमबारियाँ की गयी।

उत्तरी वियतनाम और वियतनाम की राष्ट्रीय सनाआ न 6 अप्रैल में शुरू हुई बमबारी के दौरान 135 से अधिक अमरीकी विमान मार गिरायें।

जुलाई, 1972

••

(ख) श्रीमती इंदिरा गांधी भारत की प्रधान मंत्री बनीं।

1967 (क) चीन द्वारा उदजन बम का प्रथम सफल विस्फोट।

(ख) अमरीका द्वारा सर्गाव बम 'यूयन पांग ध्यू और हवाई कमाण्डर 'यूयन काओ थी प्रमश प्रेसिडेण्ट और 'वाइम प्रेसिडेण्ट पंग पर नियुक्ति।

(ग) अमरीका में युद्ध विरोधी आंदोलन भडक।

1968 (क) जनवरी 30 31 1968 का मुक्ति मोरच न टेट प्रत्याग्रमण कर 140 नगर व कस्बा को अमरीकी शासन से मुक्त कर लियाया। सर्गाव बम अमरीकी दूतावास पर भी कुछ समय तक बज्जा।

(ख) 1 अप्रैल को जानसन द्वारा दुजारा चुनाव न उडन और उत्तर वियतनाम पर बमबारी रोब देने की घोषणा। 8 जनवरी 1965 न 1968 तक अमरीका न 60 00 000 टन से अधिक बम गिराय।

(ग) 3 अप्रैल उत्तर वियतनाम और राष्ट्रीय मुक्ति मोरच द्वारा परिस म शांति वार्ता म भाग लेना स्वीकार।

(घ) शांतिवाणी मार्टिन लूथर किंग और राम्प कनेडी की अमरीका में हत्या।

1969 (क) रिचर्ड निक्सन अमरीकी प्रेसिडेण्ट चुन गये 25000 अमरीकी सैनिकों को घर बुलाया।

(ख) कम्बोडिया म राष्ट्रपति सिंहानुक की अनुपस्थिति म उनकी लोकप्रिय तटस्थतावादी सरकार की सी० आई० ए० की सहायता से सैनिक जनरलो द्वारा पलडा पलट।

(ग) वियतनाम म 1961 से जून 1969 तक अमरीका क 5586 हवाई जहाज मार गिराय गये और पेंटागन क एक बकन यानुमार 1960 स 17 मई 1969 तक दक्षिण वियतनाम के 81 536 सैनिक मार गये। उत्तरी वियतनाम और राष्ट्रीय मुक्ति मोरचे के 5 06 178 सैनिक शहीद हुए।

1961 70 के बीच अमरीकी सेना के 38 866 सैनिक मार गये 1,19 376 घायल हुए।

प्रेसिडेण्ट निक्सन न वियतनाम म सैनिकों का सम्बाधित कर बहा इतिहास का यह एक शानदार अध्याय है क्योंकि हमने एक बहुत ही मुश्किल काम उठाया था और उसे पूरा किया है।

(घ) राष्ट्रपति हॉ ची मिन्ह का देहावसान (3 सितम्बर, 1969) वियत नामियों न स्वतन्त्रता युद्ध जारी रखने की प्रतिपा मोहरायी।

1970 अप्रैल म निक्सन द्वारा कम्बोडिया म सैनिक भेजने की घोषणा। निक्सन सरकार द्वारा 1971 के मध्य तक अमरीकी सैनिकों वियतनाम स हटा लेने का एलान।

1971 (क) मार्च 1971 पाकिस्तानी डिक्रेटर जनरल याह्या ख़ाँ द्वारा तान्त्रिक पूर्वी बंगाल में हुए प्रथम आम चुनावों में चुन गये जन-नता मुजाबुर-रमान की मांग का ठुकराया जाना और उन्हें अज्ञात स्थान पर नजर-बन्द करना।

(ख) मार्च-नवम्बर 1971 पाकिस्तानी फौजा द्वारा बंगाल पर भयंकर दमन, 1,00,00,000 शरणार्थियों को भारत में शरण।

(ग) बंगाल की मुक्तिवाहिनी और भारतीय सेना द्वारा 3-18 दिसम्बर 1971 ढाका का कूच बंगला देश की मुक्ति घोषणा, अमरीकी 7वें बड़े के विमानवाहक पान 'एन्टरप्राइज' का वियतनाम में हटकर बंगाल की खाड़ी में प्रवेश।

1972 (क) 21 फरवरी, 1972 पेरिंग में निकमन माओ भेंट।

(ख) भारत द्वारा उत्तरी वियतनाम को पूर्ण कूटनयिक मान्यता।

(ग) अप्रैल, 1972 'राष्ट्रीय मुक्ति मारच' द्वारा 'बवागती, एनलाक' और कोचुम की मुक्ति।

(घ) 8-9 मई, मास्को में 21 मई की सरकारी वाता के पूर्व निकमन द्वारा उत्तरा वियतनाम में भयंकर बमबर्षा और नाकेबंदी।

(घ) 10 जून 1972 अमरीकी बी 52 और जेट बमबारा ने पिछले 48 घण्टा में 500 हवाई हमला में लाल नदी के 29 महत्वपूर्ण बाँधों और 32 ऊँची दीवारों का नष्ट करके मानवरचित बाढ़ों में जान माल को भयंकर नुनमान पहुँचाया है। अमरीका के कुल 390 बी 52 विशाल बमबारी में से 200 में अधिक हिन्दू चीन में बमबारी के लिए भेजे गये हैं और 1968 के डेट प्रघातमण के बाद पहली बार सगाव की सुरक्षा के लिए उनके इतने गिद 25 मील के क्षेत्र में बी 52 विमानों से बमबारी की गयीं।

उत्तरी वियतनाम और वियतकांग की राष्ट्रीय सेनाओं ने 6 अप्रैल में शुरू हुए बमबारी के दौरान 135 से अधिक अमरीकी विमान मार गिराये।

जुलाई, 1972

सहायक ग्रन्थ-सूची

America In the Name of America

The conduct of the war in Vietnam by the armed forces of the United States as shown by published reports compared with the Laws of War binding on the United States Govt and on its citizens

With contributions by Seymour Melman and Richard Folk, (A Study commissioned and published by Clergy and Laymen Concerned about Vietnam) January 1968

Browne, Malcolm W

The New Face of War New York Bobbs Merrill 1965

Burchett, Wilfred G

Vietnam Will Win New York Monthly Review Press 1968
(A Guardian Book)

Buss, Claude A

Southeast Asia And The World Today New York Van Nostrand Reinhold Co 1958 (An Anvil Original)

Chomsky, Noam

At War With Asia New York Pantheon 1969

Cole, Allan B

Conflict in Indo China and International Repercussions A Documentary History 1945-1955 (Ithica Cornell University Press 1956)

Cook, Fred J

The Warfare State (Foreword by Bertrand Russell) New York The Macmillan Co 1964 (A Collier Books ed)

Dellinger, David

Revolutionary Non Violence Indianapolis & New York
Bobbs—Merrill (An Anchor Book)

Domhoff William G

Who Rules America ? Englewood Cliffs New Jersey Prentice
Hall Inc 1967 (A Spectrum Book)

Draper, Theodore

Abuse of Power—US Foreign Policy from Cuba to Vietnam
London Pelican Books 1969

Fall, Bernard B

The Viet Minh Regime Rev ed New York Institute of
Pacific Relations 1956

Fal Bernard B (Ed)

Ho Chi Minh On Revolution Selected writings 1920 66
New York The New American Library Inc 1968 (A Signet
Book)

Fall, Bernard B

Last Reflections On A War Preface by Dorothy Fall New
York Doubleday & Co 1967 (ed)

Fulbright, William J

The Arrogance of Power New York Random House 1966
(A Vintage Book)

Great Britain

*Further Documents relating to the Discussion of Indo China
at the Geneva Conference* June 16—July 21 1954 Miscella
neous No 20 (1954) Cmd 9239 (London 1954)

Greene, Felix

Vietnam Vietnam In photographs & text Palo Alto (Cali
fornia) Fulton Publishing Co 1966

Hanh Thich Nhat

Vietnam Lotus In A Sea of Fire A Buddhist Proposal for
Peace (Foreword by the late Father Thomas Merton) New
York Hill & Wang 1967

Hersh, Seymour M

My Lai 4 New York Random House (A Vintage Book)

Hofstadter, Richard

The Paranoid Style in American Politics & Other Essays New York Random House 1965 (Vintage Books)

Ho Chi Minh

On Revolution Selected writings 1920-66 edited with an introduction by Bernard B Fall New York The New American Library Inc 1968 (A Signet Book) (See also Fall Bernard B)

Indo China

The Destruction of Indo China By the Stanford Biology Study Group Box 3724 Stanford California 94305 (paper)

Lach Donald F

Asia in the Making of Europe (16th Century of Discovery Vol 1 Book one) Chicago University of Chicago Press 1965 (Vol 1 Books 1 2 Vol 1 book one)

Lacouture Jean

Vietnam Between Two Truces New York Random House 1966

Myers Gustavus

History of Bigotry in the United States (Revised by Henry M Christman) New York Random House (Capricorn Book) 1960

Oglesby, Carl & (Shaul Richard)

Containment and Change New York The Macmillan Co 1967

Scheer Robert

How The United States Got Involved In Vietnam A Report to the Center for the Study of Democratic Institutions Box 4068 Santa Barbara California 1965

Sheehan Neil

Should We have War Crime Trials *The New York Times Book Review* March 28 1971

Sheehan Neil and Messrs Smith, Kenworthy and Butterfield

The Pentagon Papers as published by *The New York Times*

The Secret History of the Vietnam War New York Bantam Books Inc , July 1971 (A Bantam Book)

Sheinbaum Stanley K

The University on the Make (or how Michigan State University helped arm Madame Nhu) *Ramparts* Vol 4 No 12 April 1966

Snow, Edgar

War and Peace in Vietnam New York Marzani and Munsell 1965

Steel Ronald

Pax Americana The Cold war empire—how it grew and what it means New York The Viking Press 1968 (Viking Compass ed)

Swomley, John M , Jr

American Empire the Political Ethics of Twentieth Century Conquest New York The Macmillan Co 1970

Taylor, Telford (US Chief Counsel at Nuremberg)

Nuremberg and Vietnam An American Tragedy New York Bantam Books Inc May 1971 second printing

Weisberg Barry

Ecocide In Indo China New York Canfield Press—Harper & Row (Illustrated)

Williams William Appleman

The Tragedy of American Diplomacy Rev enlarged ed New York Dell Publishing Co Inc 1962 (A Delta Book)

Wise, David and Thomas B Ross

The Invisible Government (CIA) New York Random House Inc 1965 (A Bantam Book)



The Secret History of the Vietnam War New York Bantam Books Inc July 1971 (A Bantam Book)

Sheinbaum, Stanley K

The University on the Make (or how Michigan State University helped arm Madame Nhu) *Ramparts* Vol 4 No 12 April 1966

Snow, Edgar

War and Peace in Vietnam New York Marzani and Munsell 1965

Steel, Ronald

Pax Americana The Cold war empire—how it grew and what it means New York The Viking Press 1968 (Viking Compass ed)

Swomley, John M, Jr

American Empire the Political Ethics of Twentieth Century Conquest New York The Macmillan Co 1970

Taylor, Telford (US Chief Counsel at Nuremberg)

Nuremberg and Vietnam An American Tragedy New York Bantam Books Inc May 1971 second printing

Weisberg Barry

Ecocide In Indo China New York Canfield Press—Harper & Row (Illustrated)

Williams William Appleman

The Tragedy of American Diplomacy Rev enlarged ed New York Dell Publishing Co Inc 1962 (A Delta Book)

Wise David and Thomas B Ross

The Invisible Government (CIA) New York Random House Inc 1965 (A Bantam Book)

